कटी

(मनोवैज्ञानिक उपन्यास)

डॉ पुष्कर शर्मा

प्रकाशक
गाडोदिया पुस्तक भण्डार
बीकानेर

प्रकाशक

किशनलाल गाडोदिया
गाडोदिया पुस्तक भण्डार
बड बाजार
बीकानेर (राजस्थान)
फोन न १०८०

ब्राच
स्टेशन रोड, चूरू (राजस्थान)

मूल्य ग्यारह रुपये　　　　प्रथम संस्करण १९७३

KANTI

(A Psychological Novel)

By

Dr Pushkar sharma

Price : Rupees Eleven Only

मुद्रक—चांद प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर

धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी

को

समर्पित

दो शब्द

इस उपन्यास के सभी पात्र व स्थितियाँ सर्वथा कल्पित हैं। नामों का साम्य होना भी आकस्मिकता मात्र है।

यह प्रथम औपन्यासिक कृति पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। पाठकों की स्पष्ट प्रतिक्रिया अपेक्षित रहेगी।

इस उपन्यास के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन एवं सहयोग के लिए श्री किशनलाल गाडोदिया के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

गणतन्त्र दिवस
१९७१

पुष्कर शर्मा

लिया। स्कूल खुलने में अभी तीन दिन बाकी थे। और स्कूल वर्क तो एक दिन पहले ही कर लिया जायगा।

कटी घर पहुँची तो पाया कि पापा नाराज हैं। वे एक दिन पहले ही दौरे से लौट आये थे। वर्ना लौटना तो उन्हें आज था। कटी की माता जी भी घर नहीं थीं। कटी के पिता मि समर सक्सेना मेडिकेल रिप्रेजेन्टेटिव थे और उन्हें महीने में २० २५ दिन बाहर रहना पड़ता था। अच्छा वेतन था। टी ए डी ए अच्छा बन जाता था। डेढ़ दो हजार रुपये माहवार की आमदनी और घर में केवल तीन प्राणी स्वयं, पत्नी और कटी। पत्नी को स्टेज एक्टिंग का शौक था। वह भी पांच सात सौ रुपये हर महीने ले आती थी। घर में फ्रिज, रेडियोग्राम और कार आदि सब कुछ। घर का काम करने को एक बूढ़ा नौकर शंभू था। ईमानदार और मेहनती। कटी के लिए आया भी थी। नाम था विमला। उम्र करीब २८ साल। बाल विधवा। रूप रंग औसत। शरीर में कसावट थी। सीधे कह तो आकर्षक व्यक्तित्व। सीधा-साधा पहनावा। कटी की देखभाल के अलावा घर के काम में भी हाथ बँटा देती थी। इसके लिए कुछ इनाम आदि मिल जाता था। कटी को स्कूल पहुँचाने और लाने साथ जाती थी। वह कटी से दबती थी। ऐसा ही कुछ कारण था। कटी ने दबा लिया था। और अब कटी उसकी परवाह नहीं करती थी। शंभू का लिहाज जरूर करती थी। पुराना नौकर था। बिलकुल सीधा सादा। कटी को बिटिया कहता। बहुत ध्यान रखता। कटी उसे बाबा कहती।

मि सक्सेना ने आते ही शंभू से पूछा था

"मैडम और कटी कहां हैं ?

मैडम रिहर्सल पर गई हैं। देर से लौटेंगी। कटी प्रात नाश्ता करके फ्री के यहां जाने का कह रही थी। वहां होगी।"

मि सक्सेना ने पत्नी का पता लिया था। पत्नी ने उन्हें बताया कि बच्ची अभी तक गृहस्थी से मिलने पड़ोस में गई है। वह शाम उसी के पास रहेगी। रात को भी शायद बच्ची उसी के पास रहेगी। मि सक्सेना आश्वस्त हो गये थे। बच्ची अभी सभा पत्नी के यहाँ रात भर रह जाती थी। उन्हें क्षण भर को भी सन्देह नहीं हुआ कि पत्नी और कहीं होगी। घंटे भर में तैयार होकर वे घर से ऑफिस चले गये। शाम को लौटे तो मैडम के बारे में पूछा। वे अभी तक नहीं आई थी। रात को ९ बजे उन्होंने थियेटर से फोन पर पता किया। क्लब के चौकीदार ने फोन उठाया और कहा कि रिहर्सल देर तक चलेगा। शायद सुबह तक लौट पायेंगी।

मि सक्सेना ने फोन रख दिया। उनका दिल कुछ उखड़ा उखड़ा रहा, अच्छा नहीं लगा। खाना कुछ खा लेने पर वे अपने कमरे में चले गये। पर कुछ करने की इच्छा नहीं हुई तो वे बाहर निकले और कार में बैठकर घूमने चल दिये। अचानक उनकी इच्छा हुई कि क्लब जाकर आज रात की रिहर्सल देखें।

सक्सेना क्लब पहुँचा तो सारा मामला अंधेरा नजर आया। चौकीदार ने डरते डरते बताया कि उस दिन रिहर्सल था ही नहीं। उसने मिसेज सक्सेना को दो दिन से देखा ही नहीं था। सक्सेना ने चौकीदार को टिप दी तो उसने यह भी बताया कि इन दिनों मैडम और गांगुली महाशय काफी साथ रहते हैं। गांगुली स्टेज डाइरेक्टर था।

सक्सेना क्लब से चला तो माथा भन्ना रहा था। उसे पत्नी से यह आशा नहीं थी कि उसकी अनुपस्थिति में वह रंगरलियाँ करती होगी। शादी के बाद इन १८ वर्षों में वह अपने काम में व्यस्त रहा था। और अच्छी खासी कमाई करने लगा था। किंतु आज उसे यह अर्जन उपार्जन व्यर्थ लग रहे थे। वह किसके लिये इतनी भागदौड कर रहा था? परिवार के लिये! और परिवार ऐसा कि उसकी पर

बाह ही नहीं करता । क्टी क्लब म गायब है । पता, नहीं, वहाँ क्या कर रही होगी । और श्रीमतीजी रोमास म लगी हैं ।

सक्सेना अनजाने ही गागुली के घर तक आ पहुँचा था । वह कार से बाहर निकलने की सोचा ही रहा था कि गागुली और श्रीमती सक्सेना खिलखिलाते हुए गट पर दिखाई दिय । श्रीमती सक्सना विदा ले रही थी । गागुली न उसका हाथ अपन हाथ म लेकर कुछ दबा दिया । श्रीमती सक्सेना अपनी कार म बठकर चल पडी । मि सक्सना भी कार म उसके पीछे पीछे चलत रहे । पत्नी का घर पहुँचता देखकर अपनी कार कुछ दूरी पर रोक दी । पाच मिनट बाद व घर म घुस ।

श्रीमती सक्सना चाय ल रही थी । १५ मिनट बाद आइ तो मिस्टर सक्सना को देखकर नाटकीय ढग से मुस्कुरा उठी । पति को फिर भी गभीर पाया तो पास आकर बठ गइ ।

'नाराज हो ?'

'नहीं तो । आय कितनी देर हुई ?'

"करीब आधा घटा पहले । रिहसल जल्दी ही खत्म हो गया ।'

'तो क्लब स सीधे आ रही हो ?'

"हाँ नहीं । रास्ते में कुछ मार्केटिंग भी की ।'

"क्या बात है ? इतने वर्षों का अभिनय झूठ को सच बनाने म असफल क्या है ?'

मिस्टर सक्सना का यह प्रश्न एक चपत की तरह लगा और श्रीमती जी तिलमिला उठी । तमक कर बोली—

'तो मैं झूठ बोलती हू ?'

झूठ और सच की तो छोडो । तुम बोल रही हो, यही काफी है । कुछ न्या होगी तो चुप रहती । और हाँ ? और भी बोलो, तो मैं सुन लूँगा । तग म मत आओ ।"

'तुम मुझ पर झूठ का आरोप लगाओ और मुझे तैश भी न आय ? आज तुम्हें हो क्या गया है ! श्रीमतीजी कुछ दबी हुई सी।

मैडम ? गुस्से को धोखा मत दो। मैं गांगुली के घर से तुम्हारा पीछा करते हुए आया हूं। मि. सक्सेना निर्भय हो उठे। जो देखा है उसे मत झुठलाओ।

तो अब आप जासूसी करने लगे। पत्नी पर विश्वास नहीं रहा ? कहते हुए श्रीमतीजी भावुकता का सहारा ले रही थी।

विश्वास तो श्रीमतीजी ? मुझे खुद पर ही नहीं रह गया है। आज जैसे भ्रम हो गया हूं। अब तक तो समझ रहा था कि मैं ही परिवार का केंद्र हूं। पर आज लगता है कि मैं एक भार ढोने वाला ट्रक हूं। जिसपर पत्नी और लड़की सवार हैं। आज इस ट्रक का एंजिन बैठ गया है। अब इसका बोरिंग नहीं हो सकता। ढांचा तो जर्जर हो ही चुका है। अच्छा हो अब कोई नया ट्रक ढूंढ लो। गांगुली बुरा नहीं है। साल छः महीने तो चल ही जायगा।

श्रीमती रोने लगी। प्रतीक्षा भी करती रही कि पतिदेव उनको रोते देखकर उनके चरणों में आ गिरेंगे। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। उनके आंसू अपने आप रुक गये जैसे अमरीका की आलोचना करने पर भारत को विदेशी सहायता रुक जाती है। उन्होंने पति की ओर कनखियों से देखा। मि. सक्सेना सर्वथा शान्त बैठे थे। उनके दुर्बोध आचरण को देखकर श्रीमतीजी का दिल बर्स्ट हुए टायर की तरह पिचक गया।

मुझे क्षमा कर दीजिये

क्षमा तो बेवकूफ करते हैं। मैं स्वयं को यह सम्मान नहीं देना चाहता।

आप क्या चाहते हैं ! स्वर में आजिजी थी।

आत्म विश्वास ! कि तुम्हें या गांगुली को गोली न मार दूं। अच्छा हो कि तुम इस तथ्य को समझ जाओ।'

'तो मैं चली जाऊं'।

'दाम का तकाजा तो यही है, बशर्ते कि राम कुछ बची हो।"
और कटी! उसका क्या होगा?'

"होगा क्या! वह अभी से रोमांस सीख रही होगी। सुबह की निकली हुई है। फकी से पूछा तो वह कहने लगी कि कटी उसके साथ है। पर उसकी आवाज कांप रही थी। कटी उसके यहां शायद ही हो। पर तुम्हें क्या? तुम उसके प्रति जिम्मेवार थोड़े ही हो। बस तसल्ली करना चाहो तो फोन करके देखलो।' मि सक्सेना ने चलेंज सा दिया।

मिसेज सक्सेना ने फकी के घर फोन किया। फकी सो चुकी थी। उसके पिता ने बताया कि कटी उनके यहां नहीं है। मिसेज सक्सेना ने फोन तुरत रख दिया। घबडाकर बोली—

कुछ कीजिये ना। कटी वहां नहीं है। कुछ हो गया तो!

जो होना था। हो चुका बेटी मां बाप का ही तो अनुसरण करती है। बाप बाहर रहे और मां गुल छर्रे उड़ाये। बाहर। शायद घर पर भी। क्या वह देखती नहीं होगी! समझती नहीं होगी? और तुम्हें तो प्रसन्नता होनी चाहिये कि वह तुम्हारे रास्ते पर चल पड़ी है। कहते कहते मि सक्सेना की इच्छा हुई कि अट्टहास करें। फिर चिरलायें अभिनेता सप्रू की तरह। पर वे दोनों में कुछ भी नहीं कर पाये।

मिसेज सक्सेना ने प्रस्ताव किया कि फकी के यहां जाकर कटी के बारे में कुछ जानने की कोशिश की जाय किन्तु मि सक्सेना ने मना कर दिया। वे जानते थे कि इससे बात बढ़ सकती है। यहीं या बाहर। कल सुबह तक प्रतीक्षा करना ही ठीक होगा।

पति के ठंडे उत्तर से मिसेज सक्सेना कुछ आवश्वस्त हुई। उन्हें लगा कि पति का क्रोध शांत हो गया है और स्थिति सामान्य हो गई है। उन्होंने इसका लाभ उठाना चाहा। वे पति के पास आकर बैठ गई। मि सक्सेना ने उठने का उपक्रम सा किया, किन्तु फिर बैठे

रह ।

मुझे क्षमा कर दीजिये । मिसेज सक्सेना ने झुकते हुए कहा ।

वह प्रसंग समाप्त हो चुका है । इसे दुबारा शुरू मत करो ।'

"मैं सब कुछ दुबारा शुरू करने को तयार हूँ । पिछला सब कुछ छोड़कर भुलाकर । एक मौका तो दीजिये ।" वे अनुनय कर रही थी । उसके स्वर में पश्चात्ताप उग रहा था । शायद भय के कारण । शायद भविष्य के अनिश्चय के कारण ।

स्टेज का धधा बद कर सकोगी ! सर्वथा बन्द करना होगा । उस सपूर्ण परिचय को भुलाना पडेगा । मन से । और ध्यान रहे कि अब से मैं आँखें खुली रक्खूँगा । बहुत दिन बन्द रक्खी । अब नही । यहाँ रहूँ चाहे बाहर । यहाँ की खबर मुझे रहेगी । अब तुम सोच लो । मैं तुम्हे मौका दे रहा हूँ । तुम स्वय को बदलना चाहो तो बदलो मैं तुम्हें विवश नही करना चाहता । हाँ ! इस रियायत को मेरी कमजोरी मत समझना । बस ! तुम्हें मौका दे रहा हूँ । अपना नही रहा हूँ ।

मुझे मजूर है । सब कुछ । पर कभी को मालूम पडा तो ? नौकर भी समझ जायगे । इसके बारे में क्या सोचा है ? मिसेज सक्सेना के कथन में स्त्री सुलभ चातुर्य था और सत्य का अंश भी ।

समझते हैं तो समझने दो । जो कुछ है, वही तो समझेंगे । इससे तुम्हें स्वय को बदलने की आवश्यकता अधिक अनुभव होगी ।

मिसेज याशिता सक्सेना समझ गई कि अब छल-कपट या भुलावे में काम नहीं चलेगा । अब या तो स्वय को बदलना होगा या फिर इस घर को छोडना होगा । सोचने का समय अलबत्ता मिल गया है । लोगों को परखने का भी । विशेषत स्टेज डाइरेक्टर को देखना है कि वह अपने वचन का निर्वाह कहाँ तक करता है !

मिसेज सक्सेना यह सब सोच ही रही थी कि उनके पति उठकर अपने कमरे में चले गये । दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया । स्पष्टत !

यह एक सकेत था । अलगाव का । मिसेज सक्सेना भी अपने कमरे म चली गइ । डाइनिंग टबल पर पन्ना डिनर ठ डा होता रहा । आखिर शभू ने टेबल साफ कर दी ।

कटी दूसर दिन घर पहुँची ता वातावरण का खिचाव अनुभव किया । पहने भी वह कई बार एमा दख चुकी थी । खासकर त जबब उसके डैडी बाहर म आकर दखते कि घर पर कोइ नही है । वह समझ गई कि ममी भी घर पर नही मिली होगी और डैडी का पारा चढ गया होगा । कटी सदा की तरह आज भी परेशान नही हुइ ।

। थोटी देर बाद मिस्टर सक्सेना ने कन्नी को अपने कमरे म बुलाया । श्रीमतीजी भी वहाँ वैठी थी । एक ओर । मिस्टर सक्सना ने चार मिनट कटी की आर दखते रहे । कटी उनसे आँख मिलाये रहे इतना साहस किसी अपराधी म नही हो सकता, मि सक्सेना न साचा । फिर भी तह म जाना जरूरी था ।

"चौबीस घटे बाहर रहती हो कटी । कहाँ रही अब तक ! -

आपको पता तो है डडी । आपने फोन पर पूछा था न !"

'फन्नी के यहाँ गई थी ?'

हाँ डडी । और कहा जाती !

तुम्ही बताओ

'बता तो दिया डडी !"

हाँ ! तुमने बता तो दिया । पर मैं तो सच जानना चाहता हूँ ।'

अब कटी की आँखें क्षण भर को झुकी । पलक पुन उठी, तब तक वह सोच चुकी थी कि झूठ नही चलेगा ।

'क्या करोगे जानकर डडी ! <u>इट्स माइ पर्सनल अफेयर</u> ।"

मिस्टर सक्सेना पत्नी का इशारा करके बोले—

"लो सुनलो बेटी की बात । इस उम्र म ही यह पर्सनल और प्राइवट अफेयर्स की दुहाई दन लग गई है ।'

डडी ! आइ एम नाट ए चाइल्ड एनीमोर कंटी आहत स्वर में बोली ।

सुनकर श्रीमतीजी उठीं। कटी के पास आकर ज़ोर से बोलीं -

बता! कहाँ गई थी कल! किसके यहाँ रही? कौन है वह बदमाश? सच बता वर्ना तेरी जान ले लूँगी।

'टाट गाउट ममी

ममी ने एक थप्पड़ लगाया और कटी गिर पड़ी। दूसरे ही क्षण वह उठी और ममी के सामने आकर खड़ी हो गई। दूसरे गाल की ओर इशारा करते हुए बोली—

"यू कैन स्लैप मी अगेन इफ इट सर्प्राइज युअर ब्रूटलिटी।

उसकी ममी को क्रोध आ गया। उसने कटी को पीटना शुरू कर दिया। तब मि. सक्सेना ने बेटी को छुड़वाया। श्रीमतीजी को कहा 'बस! बहुत मार लिया इसे। फिर कटी का हाथ पकड़कर सोफे पर बैठा लिया। कटी मुखर नहीं रही थी। आँखें पथरा सी गई थीं। वह उसकी पहली पिटाई थी। माँ का क्रुद्ध रूप या विद्रूप आज ही देखने को मिला था। मि. सक्सेना ने उसके कंधे पर हाथ रक्खा और श्रीमतीजी को कमरे से जाने का इशारा किया। श्रीमतीजी कटी की ओर आँखें तरेर चली गई।

हाँ तो कटी? डैडी ने पूछा

और कटी ने बताना शुरू किया। सब बता चुकी तो डैडी की ओर उसने देखा। उनकी आँखों में आतंक भरा था। उनका एक हाथ काँप रहा था।

भीतर से कुछ हिल गया था। एक विश्वास था जो अब नहीं रहा। आँखें अब तक बंद थीं। अब नहीं। शायद विश्वास आँखें बंद रखकर किया जाता है और अविश्वास आँखें खोलकर।

कटी! ऐसा करने की तुम्हें क्या सूझी?"

पता नहीं डैडी

'तुमने ये बातें जानीं कब!

'बताओ कटी

ममी क कमरे से आवाजें आती रहती हैं। आप बाहर रहते हैं तब 'मि सक्सेना सकते म आ गये। पत्नी की चरित्रहीनता का ऐसा प्रमाण! उन्हें अफसोस होने लगा कि पत्नी से समझौता क्या कर लिया। कब सब समाप्त कर देना चाहिये था। पर कटी का सवाल तब भी था और आज भी है। व कटी का सिर अपने कंधे पर रख कर धीरे धीरे सहलाने लगे। कटी सुबकने लगी। उसके डैडी की आँखें भी नम हो आई।

हैवट आई बीन आफुल डैडी कटी न सुबकते हुए कहा।

यैस कटी ? किन्तु कुसूर तुम्हारा नही है डार्लिंग ?"

कटी न पूछा नहा कि कसूर किसका है। उसका सुबकना कम होकर बंद हो गया। वह बाथ रूम म जाकर मुँह धो आई। इतने डैडी भी तब तक सहज हो चुके थे। व वहीं बैठे थे। कटी पास जाकर बैठ गई। फिर उसने डैडी की ओर देखे बिना ही कहा—

'थैक्यू डैडी! फार युअर अडरस्टैंडिंग।'

दैट्स ओके कटी' कहकर मि सक्सेना उठे। उन्होंने एक लेडी डाक्टर को फोन करके तुरन्त आने को कहा। रिसीवर रखकर आये तो कहा 'टुगी ऑन द सेफ साइड कटी! वस मुझे विश्वास है कि मि सत्येन्द्र वैसा जघन्य काम नही कर सकते।"

कटी शांत बैठी रही। उसे दुख था तो यही कि सच्चाई जानकर डैडी को आघात लगेगा। सत्येन्द्र ने रेप की बात सुनकर 'नहीं कहाँ कहा था ? पर उसने हाँ भी शायद ही की हो। कटी विचार म पड़ गई। तभी लेडी डॉक्टर आ गई। देखकर मिसेज सक्सेना भी वहाँ आ पहुँची। मि सक्सेना ने कटी की ओर इशारा करते हुए कहा—

"'एक्जामिन हर डॉक्टर! शी मेज गी हैज बीन रेप्ड।' यह सुनकर मिसेज सक्सेना ने माथा पीट लिया। वह धम्म से एक खाली कुर्सी पर गिर पड़ी। लेडी डाक्टर और कटी भीतर के कमरे म चली गई। उन्होंने दरवाजा भीतर से बंद कर लिया। दंपति, बाहर

के कमरे में बैठे रहे। एक प्रतीक्षा उन्हें थी। उत्सुकता और शायद घबराहट भी। तभी दरवाजा खुला और लेडी डाक्टर बाहर आई। उनके चेहरे पर मुस्कुराहट थी। मि सक्सेना को एक तसल्ली सी हुई।

"शी ईज हैड हर फर्स्ट मैंसस। ऐंड नो क्वेश्चन आफ रेप व्हाट सो एवर।" लेडी डाक्टर ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

लेडी डाक्टर ने यह भी कहा कि इस बारे में बेटी को कुछ बता दिया जाय तो अच्छा है। इस पर मि सक्सेना ने उनसे अनुरोध किया कि यह काम वो ही करें। यह सुनकर लेडी डाक्टर बेटी को पुनः भीतर के कमरे में ले गई और आधा घंटे तक बेटी को समझाती रहीं। वह बाहर आई तो मि सक्सेना ने उन्हें शुक्रिया कहकर विदा किया। फिर बेटी से कहा—

यू आर नॉट स्केयर्ड ?

'नो डैडी ? डाक्टर मेड एवरीथिंग क्लियर टू मी। इट इज नथिंग। एवरी वन हैपन्स व्हेन टेवनपिंग एज ए वूमैन।' जरा रुक कर, "सही ?" बेटी ने पुनः आश्वस्त होने के लिए पूछा।

डाक्टर ने ठीक कहा है ?

शाम को मि सक्सेना दफ्तर से लौटते हुए थे। उन्हें कलकत्ता भेजा जा रहा था। हैड आफिस में जनरल मैनेजर बनाकर। पांच हजार मासिक पर। बंगला कार सुविधा में। मिसेज सक्सेना और बेटी खुश ही हुए थे। बंबई में रहते हुए उन्हें कुछ विरसता आ गई थी। जलवायु बदलेगा। रहन सहन भी। कलकत्ता और बंबई में बहुत बड़ा सांस्कृतिक अन्तर आ जाएगा।

कलकत्ता जाने के उत्साह में बेटी अपने हॉबी का यह अभ्यास भूल ही गई कि वह एपरोड्राम बंद थी और मि सक्सेना से सामान बाँधना

कर आई थी। उसके डैडी ने इतना ही कहा अच्छा किया कटी ?'
पर जब कटी ने बताया कि स्टेशन पर उसे बिदा करने कोई नहीं आया था तो उन्हें आश्चर्य हुआ। वे कटी से सुन चुके थे कि मिसेज सत्येन्द्र और उनकी लडकी उस दिन घर आ गई थी। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि दम्पति में झगडा हुआ है। कटी शायद कारण रही हो। मिसेज सत्येन्द्र की गलत फहमी के लिये कमरे में काफी प्रमाण रहे होंगे। मि सक्सेना ने मन ही मन एक निर्णय किया। मिसेज सत्येंद्र से मिलने का और गलत फहमी दूर करने का।

उन्होंने कटी से सत्येंद्र की कोठी का पता और टेलिफोन नंबर मालूम किया। किन्तु वहां पहुंचने तो कोठी बंद मिली। आस पास पूछ ताछ करने पर और फिर टेलिफोन डाइरेक्टरी से उनके आफिस का पता लगा। आफिस यह नहीं बता सका कि मिसेज सत्येंद्र कोठी के अलावा और कहाँ हो सकती हैं। मि सक्सेना असफल होकर लौटे। कटी समझ गई।

कटी को अहसास रहा कि कटी बहुत दूर जा रही है। उदास तो वह तुरत ही हो गई थी। कलकत्ता प्रस्थान के दिन तो वह कटी के गले लगकर फूट पडी। कटी भी रोने लगी। ट्रेन की खिडकी में वह कटी का हिलता हुआ रूमाल देखती रही और फिर ।

मि. सक्सेना का हेड आफिस चौरंगी पर था। एक नये स्काई स्क्रेपर (Sky scraper) में। २४ वीं मंजिल पर आफिस था और २५ वीं मंजिल का पूरा फ्लैट रेजिडेंस। सारा परिवार खुश था। वातावरण था ही ऐसा। २५ वीं मंजिल से सारा कलकत्ता दिखाई देता था। सामने मीलों तक फैला मैदान। विक्टोरिया मेमोरियल। बिड़ला प्लैनेटोरियम। गन र मन्दर। दाहिनी तरफ कुछ दूरी पर राइटर्स बिल्डिंग। रिजर्व बैंक और मकनाथ हाउस। और ठीक नीचे चौरंगी। दृष्टि की व्यस्तता। आधी रात तक कार बस ट्राम और ट्राम की कतारें।

पहला सप्ताह तो घूमने में ही बीत गया। कालीजी का मन्दिर। बेलूर मठ। जू। बाटनिकल गार्डन्स और म्यूजियम तो पास ही था। वहां दो तीन बार जाना पड़ा। कितने तो हाल और कितने कमरे? सब ठसाठस भरे। लाखों बरस पुराने पेड़ का तना। एक दिन नेशनल लाइब्रेरी देखने में लगा। लाखों किताबें। बहुत व्यवस्थित। बहुत इन्वाईटिंग (Inviting)। जी तो चाहा कि तुरन्त बैठ जाय पढ़ने को। एक के बाद एक सब कुछ पढ डाले और फिर कमर पर दोनों हाथ रखकर कहे क्या? अब बोलो।

मि. सक्सेना ने उसे बंगला स्कूल में भर्ती कराना चाहा। पर वहां प्रारम्भ में ही बात बिगड़ गई। हैडमिस्ट्रेस ने जी का इंटरव्यू लिया था—

तुम्हें संगीत आता है?

नहीं

नृत्य में क्या क्या सीखा है?

'कुछ नहीं

चित्रकला में रुचि है?

नहीं

तो तुम्हें क्या आता है? हैडमिस्ट्रेस ने सर्वथा असन्तुष्ट होते हुए पूछा।

कटी उसके साथ तैरती किन्तु ान चक्कर म ही थक जाती। उस तरा का अभ्यास नही था। पर कुछ ही दिना म वह श्रोतिमा स प्रतिद्वन्द्विता करने लगी।

क्रिस्टी टबल टनिस अच्छा खलती थी। श्रब तक ता वह स्कूल की चम्पियन खिलाडी थी। पर कटी के आने म उसका चपियनशिप खतर म पड गई। बम्बई म कटी के स्कूल म टबिल-टनिस का स्तर बहुत ऊचा था और कटी को वहा अच्छी प्रशिक्षा मिली थी। अब क्रिस्टी और कटी की एकल प्रतियोगिता होन लगी। दोनो का खल समान स्तर का था। मित्रता हो जान पर दाना डबल्स खलन लगा। इस जोटी के श्रागे अपने स्कूल की तो बात ही क्या दूसर स्कूला की लडकिया भी नही टिक पाती थी। तीन साल की अवधि म दोनो न कितने ही टाइटिल जीत और कितनी ही ट्राफिया। मडला की तो गिनती ही नही थी।

कटी अपनी सहेलिया का कई बार घर ला चुकी थी। वह क्रिस्टी के यहा खुद भी गई थी। क्रिस्टी के पिता मि सिंपसन रेलवे विभाग म इजिनीयर थे। अच्छा वेतन था। शायद और भी आय होती थी। घर म ऊँचा रहन-सहन था। अच्छा वातावरण था। क्रिस्टी के दो भाई-बहिन बडे और दो छोटे थे। भरा भरा सा परिवार था। कटी के यहा का सा खालीपन क्रिस्टी के यहा नहीं था।

श्रोतिमा के घर जाने की भी कटी को उत्सुकता थी पर श्रोतिमा ने उसे आमन्त्रित ही नहा किया। अवसर आन पर भी वह टाल जाती थी। वह सल्किया म रहती थी। हवडा के पार। सदा बस से आती। कई बार कटी ने अपनी कार म पहुँचाने का आफर भी किया पर वह नही मानी। वह कटी को अपना घर दिखान से कतरा रही थी। शायद कटी उसका घर देख भी नही पाती पर एक दिन कटी सल्किया के बस स्टड के पास कार रोककर खडी हा गई और फिर श्रोतिमा को उस अपने घर ले जाना पडा।

घर एक सकडी सी गली मे था। गली काफा गदी थी और घर

था जोला गीला। उसमें भी केवल एक कमरा था ओनिमा के परिवार के पास। रसोई के लिए एक किनारे जरा सी जगह थी। परिवार में दस सदस्य थे। माता पिता बुआ और उनका लड़का पांच बहनें और एक भाई। सबसे छोटा। कमरे में कैसे समाते होंगे। कटी समझ नहीं सकी। घर में सामान सीमित था और आर्थिक विपन्नता का आतंक भी। ओनिमा ने कटी का परिचय सबको दिया। कोई प्रसन्न हुआ सा नहीं लगा। एक कप चाय कटी को मिली जो उसने किसी तरह पी डाली। चाहा ना था कि फेंक दे पर ओनिमा बुरा मान जाती।

कटी वहां से लौटी तो फिर कभी उधर जाने का नाम नहीं लिया। ओनिमा ने कभी आग्रह किया भी नहीं। ओनिमा तो उसके यहां आना भी नहीं चाहती थी पर कटी उसे पकड़ लाती। धीरे-धीरे ओनिमा की हीनभावना दबती गई और वह निस्संकोच कटी के घर आने लगी। कटी क्रिस्टी और ओनिमा का गुट स्कूल में मशहूर था। मुँह पर उन्हें त्रिवेणी कहा जाता और पीठ पीछे त्रिशूल। तीनों को ये दोनों नाम ज्ञात थे। वे हँसती रहती थीं इन नामों पर।

स्कूल में कटी का दूसरा वर्ष था। राज्य-स्तरीय खेल-कूद में त्रिशूल को अभूतपूर्व सफलतायें मिली थीं। ओनिमा ने तैराकी में कटी और क्रिस्टी ने टेबल-टेनिस में एकल व युगल खिताब जीते थे। अब इनका चयन अखिल भारतीय खेलों के लिए हो चुका था। विभिन्न खेलों के लिए राज्य से २५ लड़के-लड़कियों का दल दिल्ली के लिए रवाना हुआ। लड़कियों का नेतृत्व उस हैडमिस्ट्रेस को सौंपा गया था जिससे कटी की झड़प हुई थी। दोनों ने एक दूसरे को घूरकर देखा था। बात इससे आगे नहीं बढ़ी। पर कटी ने अनुभव किया कि उसे चौकस रहना होगा।

दल दिल्ली स्टेशन पर पहुँचा तो वहाँ प्लेटफार्म पर लड़के-लड़कियों की भीड़ नजर आई। विभिन्न राज्यों से हजारों छात्र छात्रायें खेल-कूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने आये थे। आतिथ्य-कर्ता छात्र और छात्राओं

थ। सख्या भी वहाँ कम नहीं थी। भारत का कनोंग वहाँ मूत था। चारो तरफ उत्साह। सामान अनगत बात। लापरवाही स फका सामान। दूर स निमक्त बुला। टी टी और टी सी भी कनखिया से काम चला रहे थ। आमकाय और सावधानियाँ। कहीं कुछ गडबड न हो जाये। फिर सम्हालना कठिन हो जायगा।

दलो के ठहरने की व्यवस्था नेशनल स्टेडियम के पास की गई थी। तम्बुओ मे। चारो तरफ कनातो का घेरा था। सुरक्षा के लिये उचित पुलिस व्यवस्था भी की गई थी। किन्तु कुछ दूरी पर। अकारण उलझन की उन्हे सख्त मनाही थी।

दोपहर के बाद तीन बजे खेलो का उद्घाटन समारोह था। एक केंद्रीय मत्री न आकर उद्घाटन किया और खेल शुरू हो गये। त्रिशूल को उस दिन खेलना नही था। अत देखता भर रहा। अपने स्कूल की छात्राओ का प्रोत्साहन भी देती रही। चारो ओर 'हरि अप कम अप' सीटियो और तालियो की गडगडाहट छाई थी। मन और देह की तनो का तनाव वहाँ रह नही गया था। खेलो की सबसे बडी उपयोगिता क्या होगी ?

सध्या के समय ग्रप्स बने। घूमने के लिये। त्रिशूल का गुट कनाट प्लेस के लिये रवाना हुआ। वोल्गा रेस्टोरेन्ट के पास पहुच तो कटी की नजर मिसज सत्येन्द्र पर पडी। वनिता साथ थी। कटी न आगे बढकर नमस्ते किया। मिसज सत्येन्द्र पहचान नही सकी। वनिता ने बताया।

आ कटी ! मिसेज सत्येन्द्र का चेहरा रूक्ष हो आया।

कानपुर टीम से आई हूँ। खेलो म भाग लेने। टेबिल टेनिस म राज्य को रिप्रेजेंट कर रही हू। कटी उत्साह म बोली।

अच्छा ! मिसज सत्येन्द्र सडक की ओर देखने लगी। मानो टक्सी या स्कूटर की प्रतीक्षा म हो।

'हाँ ! याद आया। डैडी न उस दिन आपका एड्रेस मालूम करने की बडी कोशिश की थी। पर...   सारी ! मि सत्येन्द्र के

आफिस से भी पता नहीं लग सका।"

'किसलिये ? मिसेज सत्येन्द्र की आवाज में उत्सुकता उभरी।

'यह सब यहां नहीं बता पाऊंगी' कटी ने चारों ओर के भीड भरे वातावरण को देखते हुए कहा। वह सोच रही थी कि मिसेज सत्येन्द्र घर बुलाकर पूछेंगी।

'क्या यहां बताने में क्या हर्ज है ? मिसेज सत्येन्द्र ने कटुता व्यक्त करते हुए पूछा।

कटी को यह स्वर अच्छा नहीं लगा। वह चाहती थी कि गलत फहमी दूर हो जाये। पर यहां तो समय ही नहीं मिल रहा था। फिर प्रयत्न ही क्या किये जायें ?

'फिर कभी बताऊँगी। मेरे साथ की लडकियां बहुत दूर चली गई है। यह कह कर कटी चल दी। उसने यह नहीं देखा कि मिसेज सत्येन्द्र ने उसे रोकने को हाथ से इशारा किया था।

कटी दौडती सी अपने ग्रुप में जा मिली। क्रिस्टी ने उसे पूछा 'किससे बातें हो रही थीं'। 'बम्बई की एक परिचिता से' उसने संक्षिप्त उत्तर दिया और फिर रिवोली में चल रहे इंग्लिश पिक्चर के बारे में बात करने लगी।

दूसरे दिन ग्रिगून को अभूतपूर्व सफलता मिली। आतिमा ने बैक स्ट्रोक तैराकी में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था। कटी ने टेबल-टेनिस के एकल में महाराष्ट्र की स्कूल चैम्पियन मिस पालकीवाला को हराकर खिताब जीत लिया और फिर क्रिस्टी के साथ मिलकर डबल्स में भी विजय प्राप्त की। क्रिस्टी के बैक हैंड स्ट्रोक्स बहुत सशक्त थे और कटी डीप डिफेंस में अग्रिम थी। तेज हर्षध्वनि के बीच कटी और क्रिस्टी ने एक दूसरे को चूम लिया था। आतिमा ने दोनों को बाहुओं से घेर लिया।

शाम के पांच बजे कटी तटू में पहुँची तो मिसेज सत्येन्द्र बैठी मिलीं। वनिया साथ थी। कटी ने नमस्ते की।

'मेरे यहां चलना है कटी ! घण्टे दो घण्टे के लिए। खाना वहीं

खा लेना। तुम्हारी आवाज से अनुमान लगा ली है।" मिसेज सत्येन्द्र बोली। उनके स्वर से स्पष्ट था कि इस स्थिति तक आने का निर्णय लेने में उन्हें काफी कष्ट हुआ होगा।

आइ वुड बी डिलाइटेड कटी बोली। बिना प्रसन्नता के।

तीनों बाहर आकर टैक्सी में बैठे। गोल्फ लिंक में बनिया के नानाजी की कोठी थी। काफी बड़ी। ड्राइंग रूम में बनिया के नानाजी और नानीजी से भेंट हुई। कटी ने दोनों को नमस्ते की। वे दोनों उठकर भीतर गये तो मिसेज सत्येन्द्र ने बनिया को भी जाने का संकेत किया। मिसेज सत्येन्द्र ने प्रारम्भ करने से पूर्व ३-४ मिनट सोचने में लगाये।

कटी! तुम एक अच्छी लड़की हो इसका मुझे विश्वास है। तुमसे मैं अप्रसन्न भी नहीं हूँ। किन्तु बम्बई में घर पर कुछ ऐसा पाया कि मैं सन्तुलन खो बैठी। वर्ना जो आज कर रही हूँ वह उस दिन भी कर सकती थी। मैं जानती हूँ कि तुम उस समय भी मेरी सहायता ही करती। पर भावावेश में कुछ भी नहीं कर सकी और सत्येन्द्र भी कुछ कठोर हो गये। अब सोचती हूँ कि उनकी कठोरता वाजिब थी। मैंने उन्हें कुछ भी कहने का अवसर नहीं दिया और फिर वे चुप्पी लगा गये। उस चुप्पी को न तो मैं तोड़ सकती थी और न तोड़ना चाहा ही। अब तक उसी क्रोध में जलती रही हूँ।

कल तुमने एक संकेत दिया। उससे शायद वह पर्दा उठ जाये। पर यह तभी सम्भव है जब तुम सहायता करो।

कटी! मैं तुम्हारी माँ के बराबर हूँ। बनिया में और तुममें कोई अन्तर न मानते हुए तुमसे पूछ रही हूँ। बताओ—

क्या? चुप क्यों हो? सच बताओ। उस दिन क्या कुछ हुआ था?

'क्या बताऊँ? कुछ भी तो नहीं हुआ था।

मुझे बहकाओ मत बटी ?' मिसेज सत्येन्द्र के स्वर में आवेग उभर रहा था।

'आपको बहकाने से मुझे क्या मिलेगा ?' बटी ने उद्विग्न हुए बिना कहा।

'तो तुम नहीं बताओगी ?' एक चैलेंज सा दिया मिसेज सत्येन्द्र ने।

'यही समझ लीजिये। यदि आपको विश्वास न हो।'

मिसेज सत्येन्द्र ने बटी को घूरकर देखा। बटी निश्चल बैठी रही। उसके मन में खुश्की हो रही थी। वह फ्रिज की ओर देखने लगी। चाहा कि उठकर फ्रिज में से ठंडा पानी लेकर ही पी ले। फिर भद्रता आड़े आ गई। वह सामने पड़ी एक पत्रिका उठाकर पढ़ने लगी।

'कुछ पीओगी ? ठंडा या गरम ?' मिसेज सत्येन्द्र को आतिथ्य का खयाल आया।

एक ग्लास जल चाहिये। आप इजाजत दें तो फ्रिज में से लूँ।' कहते कहते बटी उठी और फ्रिज से एक बोतल से पानी लेकर पीने लगी।

'कुछ और चाहो तो ले लो। फ्रिज में सब कुछ है। मिसेज सत्येन्द्र उदार सी हो उठी। फिर एक जगह डिनर लेने चलेंगे यदि तुम्हें एतराज न हो। एक प्रस्ताव सा किया उन्होंने।

कहाँ चलना है ? बटी ने पूछा

पास ही। एम्बैसडर होटल में। मिसेज सत्येन्द्र को आशा थी कि बटी प्रभावित होगी।

ठीक है। बनिया शायद नहीं चल रही है। बटी के स्वर में प्रश्नात्मकता नहीं थी।

नहीं ! वह नहीं चलेगा। उसकी तबीयत ठीक नहीं है।'

बटी को यह बहाना सा लगा। पर उसने कुछ नहीं कहा। वह

पत्रिका पढती रही। मिसेज सत्येन्द्र कपडे बदलने भीतर गई तो उसने शीघ्रता में एक जाइट पोत लिया। उसने इतना सा कहा कि वह डिनर लेने एम्बेसेडर होटल जा रहा है। फोन करके वह फिर से इलस्ट्रेटेड वीकली पढने लगी। मिसेज सत्येन्द्र ने आकर उसे चलने को कहा। बाहर टैक्सी जल्दी ही मिल गई।

होटल की रिसेप्सनिस्ट से मिसेज सत्येन्द्र ने एक दो सेकिंड बातें कीं। उस समय कटी दूर खडी रही। फिर मिसेज सत्येन्द्र उसे लेकर तीसरी मंजिल पर पहुँची। दरवाजे पर लगी घंटी दबाई और पाँच सात सेकिंड में दरवाजा खुला। खोलने वाले थे एक खद्दरधारी नेता थे या व्यापारी कटी तय नहीं कर पाई।

तीनों भीतर प्रविष्ट हुए। बडा सा कमरा। पूर्णत सज्जित। बहुत ही भव्य। रेडियोग्राम फ्रिज क्यूरियो पेंटिंग्स भी। प्राय न्यून। सारा माहौल उत्तेजक और सम्मोहक। कटी देखती रही और समझती रही। खद्दरधारी और मिसेज सत्येन्द्र भीतर के कमरे में बात कर रहे थे। धीमे स्वर में। कटी को लगा किसी बात को लेकर बहस सी हो रही थी। फिर जैसे समझौता हो गया और मिसेज सत्येन्द्र बाहर आ गई। कटी के पास आकर बोली—

डिनर यहीं मंगवा लें ? या फिर हाल में चलें।'

यहीं मंगवा लीजिये कटी ने एतराज नहीं किया। वह स्वयं को प्रशांत रखने में सफल रही।

बैरे ने आकर एक बडी टेबिल पर खाना लगा दिया। और बाहर प्रतीक्षा में खडा हो गया। दोनों खाना खाने लगीं। कटी ने नहीं पूछा कि खद्दरधारी साथ क्यों नहीं दे रहे। वह आवश्यकतानुसार अपनी प्लेट पर कुछ डालती रही और खाती रही।

मि गमगाम बहुत भर आत्मा है। मित्रा का तो बहुत हा

ख्याल रखते हैं"—श्रीमती सत्येन्द्र ने एक नया पृष्ठ शुरु किया।

कौन मि रामदास !" कटी ने एक निवाला सा उगला।

अभी अभी तो मिली हो उनसे। फिर भी पूछती हो। कई बार ता हद कर देती हो तुम।'

अच्छा ? तो हम मि रामदास के अतिथि हैं आज !'

केन्द्रीय प्रशासन म इनका बहुत प्रभाव। चाहो तो तुम्हें विदेश भिजवा सकते है। किसी भी विश्वविद्यालय म। मिसज सत्येन्द्र एक टुकड़ा फेंक रही थी बिना यह सोचे कि कटी भूखी है या नहीं।

"हावर्ड म मेरी सीट रिज़व हो चुकी है। फाल म वहां पहुँचना है मुझे। कटी ने टुकडे की ओर नजर ही नहीं डाली।

हावर्ड मे और तुम ! क्या तुम्हारी इतनी औकात है ?'

औकात की छोडिये। आप क्या चाहती है ? यहाँ मुझे जिस प्रयोजन स लाई ह उस कहिये।' कटी ने पूछा।

'तुम समझदार हा कटी ! इनसे तुम और भी बड़े लाभ उठा सकती हो।'

बदले म करना क्या होगा मुझे !'

इन्हे थोडा प्रसन्न करना होगा। ये बहुत अकेलापन अनुभव कर रहे हैं।"

मिसज सत्येन्द्र ? मुझे न तो गाना आता है, न नाचना। फिर कसे प्रसन्न करूँ इन्हे ?

जरा समझ स काम ला। तुम उनके पास जाओ। वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहें हैं।

तो आप बनिया को क्यो नहीं लाइ साथ म। वह भी ता इनका अकेलापन दूर कर सकती थी। पर वह ता आपकी बटी ठहरी। इससे आप ऐसा काम क्या लने लगी ? घर पर तो

आप कह रही थी कि आप मुझे रानी समझती हैं। फिर वनिया और मुझम यह अन्तर क्या। बोनिय मम्मीजी ! कटी कठोर हो उठी।

मिसेज सत्येन्द्र उत्तर नहा दे सकी। कुछ देर सोचती रही। निणय तक पहुंचने पहुचने उन्हे कई मिनट लग गय। इसको महज बनाने के लिये उन्होंने बेटर को बुलाया। वह टेबल साफ करके चला गया।

'वनिया की तबीयत ठीक नही थी आज। इसीलिय तुम्हे लाना पडा। मि रामदास का आग्रह था। आज वे बहुत ही अकेलापन अनुभव कर रहे थे। मिसज सत्येन्द्र की बात म सचाई की बू थी। वनिया ठीक होती तो तुम्हे लाने की आवश्यकता ही नही थी।

क्या वनिया यहा आती रही है ? कटी न सीधा प्रहार किया।

'हा ! मिसज सत्येन्द्र ने कडुवा घूट सा निगला।

आप बहका रही है मुझे। कोई मा अपनी बेटी से कटी वाक्य पूरा नही कर सकी। एक क्षण के बाद पुन बोली यदि आप इसका विश्वास दिला सकें तो शायद मैं।

मिसज सत्येन्द्र को आवेश आ गया। वह उठी और भीतर जाकर मि रामदास से धीरे धीरे बात करने लगी। पाँच मिनट बाद वह लौटी। एक लिफाफा उसके हाथ म था। लिफाफा टेबिल पर रखकर बोली— खुद देख लो। विश्वास हो जायगा।

कटी न लिफाफा खोला। उसमे कुछ फोटो रखे थे। कटी एक एक करके देखने लगी। सबम वनिया थी। निवसन। मि रामदास के साथ। एक नजर डालकर फोटो लिफाफे म रख दिये और फिर लिफाफे पर अगुली से दस्तक देने लगी। वह सोच रही थी माँ की ममता के बारे म। कहीं पढा था 'क्वचिदपि कुमाता न भवति'। पर मिसज सत्येन्द्र ? उसे माता कहा जाय या कुमाता ! वनिया का कसूर न

हो यह बात नहीं। हर चित्र में वह खाई खोई सी लगती है मन की प्रसन्नता वहां कहीं नहीं ! तो उसने हां क्यों भर ली ! ऐसी भी क्या विवशता थी ! लगता है उसमें मनोबल का अभाव है।

'क्या निर्णय किया कटी !' मिसेज सत्येन्द्र ने उकताकर पूछा। आशा उसमें अब भी लिपटी थी।

निर्णय !' कटी चौंकी। 'मि रामदास को बुलाइये।'

मिसेज सत्येन्द्र निश्चिन्त हो उठी। आंखों में प्रफुल्लता भी भर आई। वह भीतर के कमरे की ओर चली गई। भीतर दोनों में एक नई बहस सुनाई दे रही थी। उड़ती उड़ती कुछ सत्याय कटी तक पहुँच रही थी। वह उद्विग्न हुए बिना लिफाफे से खेलती रही। फिर कुछ सोचकर एक चित्र उसमें से निकाला और कुर्ते की जेब में डाल लिया।

भीतर से आवाजें धीमी होती गई। और फिर बन्द। शायद कोई निर्णय हो गया था। दोनों बाहर आये। मिसेज सत्येन्द्र अधिक प्रसन्न लग रही थी। शायद आशा से भी अधिक हाथ मारा था। कटी ने एक नजर डाली। दोनों पर। दोनों ही कुलिसन कीड़ से लगे। वह मि रामदास को सबोधित करके बोली—

'मुझे कप भिजवाने की व्यवस्था कर दीजिये मि रामदास !''

'क्या ?'

मैं जाना चाहती हूँ। अभी। तुरन्त। डिनर के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

मि रामदास अचकचा उठे। फिर मिसेज सत्येन्द्र की ओर मुड़े।

'यह क्या बन्यत्र है मिसेज सत्येन्द्र ! इतना पाकर भी मुझसे घतना ? मैं यह पसन्द नहीं करता। और तुम यह जानती हो। इसका परिणाम सोच लो। मि रामदास रुष्ट प्रतीत हो रहे थे।

कैसे मिल सकेगा ? वनिया भी कैसे मिल पाता ? वनिया भी क्या मुंह दिखा पायेगी ?

क्या साहस ? फिर करना है ।

सत्येन्द्र ने नम्बर बता दिया । उसने निर्णय कर लिया था । उसे सब कुछ फेस (Face) करना होगा । वह कायर नहीं होना चाहता । बाद में जो कुछ करना है करेगा ।

टैक्सी रुकी तो वह उतरा । हैंड बैग लेकर कोठी में घुसा और घंटी बजाई । उसके फादर इन ला ने दरवाजा खोला । वे सहमे हुए थे । शायद पुलिस का आना हो । फिर सत्येन्द्र को देखा तो सकपका गये । एक नया भय आँखों में तैर गया ।

तुम कब आये सत्येन्द्र ?' प्रश्न में दम नहीं था ।

अभी । पालम से सीधा आ रहा हूँ । और अखबार में सब पढ़ लिया है । सत्येन्द्र के स्वर में खिन्नता स्पष्ट थी । वह भीतर आ गया था और धम्म से सोफे पर बैठ गया था । थोड़ी देर में नानी के साथ वनिया भीतर में आई । सहमी हुई । आँखें धरती पर थीं । एक खाली कुर्सी पर बैठ गई । कोई औपचारिकता नहीं दिखाई उसने । न प्रणाम किया न ही नमस्ते । वातावरण में एक तनाव था जो व्याख्याओं से दूर हो सकता था । इसीलिये किसी ने प्रयत्न भी नहीं किया । सबका मौन इस तनाव को बढ़ाये जा रहा था । पर मौन शीघ्र नहीं टूट पाया ।

दस पन्द्रह मिनट बाद वनिया की सिसकियां उभर उठीं । सबकी निगाहें उधर गईं । किसी ने उसे उस दिलासा नहीं दी । वह रोती रही । किसी ने उसे चुप नहीं कराया । उसने किया है तो भुगते । सब यही सोच रहे थे । और अब किया भी क्या जा सकता है ? कृत अब अकृत नहीं हो सकता ।

वनिया के नाना नानी भी संतप्त थे । वे जानते थे कि वनिया को चुप कराया जाना चाहिये । वर्ना रो रोकर मर जायेगी । पर सत्येंद्र की

उपस्थिति उन्हें निषेध कर रही थी। वनिया को रोने देना या चुप करना सत्येन्द्र का काम था। वे क्या बीच मे पड़े? और सत्येन्द्र! वह दोना हथलियो पर मुँह टिकाये बैठा था। मानो सोच रहा हो। शायद समाधान ढूँढ रहा हो। पर वास्तुत वह कुछ नही कर रहा था। उसकी विचारणा शक्ति सर्वथा निष्क्रिय हो गई थी।

वनिया अब रो नही रही थी। सिसकियाँ भी सुनाई नही पड रही थी। थोडी देर बाद वह उठी। बाथ रूम म जाकर मुह धोकर लौटी। सबका ध्यान उसकी गतिविधि पर था। वह सधे कदमो से सत्येन्द्र के सामने खडी हो गई। निश्चय उसके चहरे पर झलक रहा था। वाणी म एक दृढता थी—

'मैंने अपराध किया है डैडी! और मैं दण्ड के लिए तैयार हूँ। कठोर दड भी स्वीकार करूँगी।"

"दड तो तुम्हे मिल ही चुका है वनिया। और भी मिलेगा। इससे अब बचाव नही है। दड तुम्हे सभी देंगे। मैं भी दूँगा। पर तुम्हारी माँ ने जो दड तुम्हे दिया है उसकी तुलना नही है। मैं या सारा समाज इससे बडा दंड नही दे सकता। कोई भी माँ अपनी बेटी को इससे बडा दड नहीं दे सकती। तुम इस दड के लिए अभिशप्त थी और तुम्हे यह दड मिल गया है। अब इसे सहन करने को तुम बाध्य हो। सहना तुम्हें है। मृत्युपर्यन्त। खुशी से सहो चाहे बिना खुशी के। कोई भी इस सहन में भागीदार नही हो सकता। मैं भी नहीं।

और हाँ! मैं तुम्हे अपना और मैं स्वतंत्र कर रहा हूँ। तुम चाहे जहाँ रहो। चाहे जस रहो। अब तुम्हारे लिए मेरा अस्तित्व होकर भी नही है। तुम्हारी मदर के लिए भी नही। तुम दोनो एक दूसरे से बधी हो। दोनो एक दूसरे के साथ रह सकती है। न चाहे तो नही भी। पर मुझे अब तुम दोनो से कुछ लेना देना नही है मैं जा रहा हूँ। मुझसे सपर्क स्थापित करना व्यर्थ होगा। मैं देखकर भी नही पहचानूँगा।

तुम दोषी न भी नहीं माना है। पानी मत ला उसने कहा।
हाँ ! तुम्हारे प्रति कोई घृणा नहीं है। तुम्हारी भावना का सम्मान करते जा रहा हूँ। पर तुम्हें नहीं। तुम्हारी मदद का भी नहीं। वह तो सवाल ही भी नहीं।   और हाँ ?   अपना मन का कह देना। पिछले आठ समय में। वह वस्तुता ही उस दृष्टि पर रही है। उस दिन के सारे तथ्य सही होकर भी सुखद नहीं थे। एक गलत फहमी थी। परिस्थितियों के वशिभूत के कारण। आज आया था स्पष्टीकरण के द्वारा के न। पर अब वह कुछ नहीं।   अच्छा।

सत्येन्द्र का मन गुस्से से भर उठा पर बिना पानी पिये वह उठ गया। बनिता उसे जाते देखती रही। उसके नाना-नानी भी। किसी ने उसे रोका नहीं। यह रूपता भी नहीं।

सत्येन्द्र ने बाहर आकर सोचा 'कहाँ जाय?' इस दिल्ली शहर में उसका कोई परिचित नहीं। कोई मित्र नहीं। होटल में टिक सकता है। पर किस प्रयोजन से? उसका यहाँ करना ही क्या था जो यहाँ ठहरे। तभी उसे पुलिस स्टेशन का खयाल आया। दिल्ली छोड़ने से पहले पुलिस कप्तान से मिलना उचित लगा। आवश्यक भी।

पुलिस-स्टेशन पर उसने एस पी से भेंट की। एस पी को इस आगन्तुक के आगमन की आशा ही नहीं थी। इस पहलू पर उसने शायद सोचा ही नहीं था। उसने शिष्टता से पूछा—

यस मि सत्येन्द्र? आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ?

मुझे तथ्यों की जानकारी चाहिये। अखबार पढ़ चुका हूँ पर उनमें अतिरंजना लगी। मुझे तथ्य चाहिये। कोरे तथ्य। और बेटी का पता भी चाहिये यदि दे सकें तो।'

एस पी सज्जन व्यक्ति था। उसने सत्येन्द्र को वास्तविक स्थिति की पूरी जानकारी दी। बेटी का पता भी। साथ ही संकेत भी दिया कि ऊपर से दबाव पड़ रहा है। शायद मामला रफा दफा हो जाये। मि रामदास की जमानत आज हो जायेगी। मिसेज सत्येन्द्र के लिए कोई प्रयत्न करे तो उनकी भी जमानत हो सकती है।

एस पी के इस सकेत को सत्येन्द्र ने पाकर भी माना नही पाया। वह एस पी को धन्यवाद देकर बाहर निकला और टैक्सी म बैठकर एयर लाइन के दफ्तर की ओर चल पडा। उस कलकत्ता के लिए सीट मिल गई और वह एक घंटे के बाद हवाई जहाज म था।

जहाज दमदम हवाई अड्डे पर उतरा। उस समय भयकर वारिश हो रही थी। भीगते भीगते उसने टैक्सी पकडी और ग्रैंड होटल पहुँचा। एक डबल बैड रूम खाली था जो उसने ले लिया। कटी का घर वहा से पास था।

सत्येन्द्र दूसरे दिन टैक्सी लेकर कटी के रेजिडेंस की ओर चल पडा। टैक्सी रुकी तो उसे एक नई बात सूझी। वह टैक्सी से उतरा। ड्राइवर को उसने जान का कह दिया और स्वय प्रतीक्षा करने लगा। स्कूल जाने के समय म कुछ देरी थी। अत वह फुटपाथ पर खडा हो गया। सामने ही एक टैक्सी आकर रुकी थी। उसमे से एक जोडा उतरा। देहाती स लगे। पर वस्त्र नये थे। शायद थोडे ही दिनो पहले विवाह हुआ हो। पर एक बात विचित्र लगी। युवती के पैरो में चप्पलें नही थी। टैक्सी से नगे पाँव उतरने वाला जोडा उसने पहली बार देखा था। वह विस्मय में पड गया। जो व्यक्ति टैक्सी के पैसे व्यय कर सकता है वह पत्नी को नगे पैर कैसे चला सकता है। आजकल तो डेढ दो रुपय में भी स्लिपस आ जाते हैं और नगे पाँव चलने से तो स्लिपस ही अच्छे। सत्येन्द्र की समझ मे कुछ नही आया। फिर सोचा कि ट्रेन मे या किसी मदिर जाने पर उसकी चप्पलें किसी ने चुरा ली हो और विवश होकर टैक्सी मे यहाँ तक आना पडा हो किन्तु यहाँ उतरने म तुक क्या ? आसपास चप्पलो की कोई दूकान नजर नही आती।

अपनी तसल्ली के लिए उसने चारो ओर फिर स देखना शुरू किया। चप्पलो की कोई भी दूकान वहाँ नही थी। बचारी को परे

"ओ पटी। आइ एम सो सारी। आइ कुडंट रेकग्नाइज यू दो आइ ट्राइड वेरी मच। कब आये?' कहते कहते कटी का उत्साह वहां अटक गया। उस दिल्ली की घटना तुरन्त स्मरण हो आई थी।

कल दिल्ली पहुँचा था। घर पहुचने स पहले अखबार पढ लिया था। खैर! छोडो इसे। शाम को ग्रंड होटल म आना। रूम नं॰ १३। थर्ड फ्लोर। कहते हुए सत्येन्द्र कार स बाहर आ गया।

ओके" कटी ने गाडी स्टार्ट कर दी।

कटी स्कूल पहुँची तो ओतिमा गेट पर खडी मिली। उसने पूछा कौन था वह?' वह कार के पास से निकली थी पर कटी ने उसे नही देखा था। कटी चौंक सी गई। कोई था' कहकर उसने ओतिमा को बहलाना चाहा। पर वह सीधे छोडने वाली नहीं थी। उसने क्रिस्टी को आवाज देकर बुलाया और कहने लगी—

अरे कुछ पता भी है? टीनेज रोमास शुरू हो गया है।'

किसका रोमास किससे? क्रिस्टी इस आकस्मिक अभिव्यक्ति को सम्हाल नहीं पाई।

'तुम भी बडी वो हो' करुण की मुद्रा म ओतिमा बोली, ध्यान नहीं रही हो इस कटी का। बचारी बडी भोली है। कभी तो कोई इसे एम्बेसडर म ले जाता है। कभी ग्रंड होटल म।

पागल तो नहीं हो गई हो तुम? कटी यो ही परेशान है और तुम्हें मजाक सूझा है। क्रिस्टी न उसे लताड दिया।

न मैं पागल हूँ और न ही मुझे मजाक सूझा है। कटी को पूछ लो न

क्या कटी? यह क्या चक्कर है!' क्रिस्टी के प्रश्न म असामान्य जिज्ञासा नहीं थी।

कुछ नहीं क्रिस्टी। एक परिचित था मिस्टर सत्येन्द्र

को ट्रबड ! मिस सत्येन्द्र ! तुम्हें पटी के बारे में बता चुकी हूँ । चलो क्लास में चलें । पीरीयड बजने वाला है ।" कटी ने कहा । उसके स्वर में थोड़ी घबराहट सी भर आई ।

'आ पटी ! ' तीना एक साथ बोली । फिर चुप हो गई । श्रोतिमा की परिहास मुद्रा विलीन हो गई । उसने सामने देखा, और सामने आ रही हैड मिस्ट्रेस की तरफ देखने लगी । हैड मिस्ट्रेस ने त्रिशूल को देखा तो उसकी भौंहें तन गई । वह खड़ी होकर तीनों की ओर आखें तरेरने लगी । तीनों अभिभूत हुए बिना क्लास में चली गई ।

'इसका वश चले तो तीनों को कच्चा चबा जाय' श्रोतिमा बोली । तभी टीचर आ गई और बातें बंद करनी पड़ी । पढ़ने में तीनों का ही ध्यान केन्द्रित नहीं हो पा रहा था । पिछले दिन की तनावपूर्ण स्थिति के बाद आज ही सत्येन्द्र से भेंट ? कटी की भावनाओं को क्रिस्टी और श्रोतिमा शेयर (Share) करना चाहती थी पर कटी चुप थी । तीना ने कटी को और नहीं कुरेदा । चार बजे छुट्टी हुई तो तीनों कार में आ बैठी । कटी उन्हें प्रायः घर पहुँचा देती थी । आज भी उसने कार का रुख सब्जियों की ओर किया तो श्रोतिमा बोली—

'कटी ! मैंने अभी ग्रैंड होटल भीतर से नहीं देखा । दिखा दो न आज" ।

हाँ कटी मैं भी देखना चाहूँगी ।' क्रिस्टी ने भी दाँव कसा ।

फिर कभी सही । आज नहीं । ही वुड मीट भी अगेन कटी के स्वर में दृढ़ता थी । अकेले जा सकने की सामर्थ्य भी प्रदर्शित हो रही थी ।

वह तो ठीक है कटी ! किंतु स्वतः बड़े होटल में अकेले जाना ठीक नहीं । विशेषतः परसों की घटना के दर्शन हुए । श्रोतिमा ने समझदार बनने का प्रयत्न किया ।

इसकी चिंता छोड़ो । आई नो हाउ टु हैंडिल द सिच्युएशन

कटी के यह कहने के बाद बहस की गुंजाइश ही नहीं रही। कटी दोनों को घर पर ड्राप करने के बाद चौरंगी पर पहुँची तो शाम हो चुकी थी। कलकत्ता इस समय पूर्ण यौवन पर था। कार और टैक्सियाँ बेतहाशा दौड़ रही थीं। फुटपाथ भरे थे और तेज नीली ट्यूब लाइट के प्रकाश में क्रीम पाउडर और रूज का प्रभाव सब तरफ बिखर रहा था। होटलों के बाहर संतरी अधिक मुस्तैद होकर खड़े थे। लाल वर्दी ब्रास प्लेट पर होटल का नाम सलाम और फिर अटेंशन की मुद्रा। भीतर की भव्यता का एक बाह्य संकेत। एक प्रतिमेत्थम्।

कटी ग्रैंड होटल के सामने कार खड़ी करके उतरी। संतरी कुछ चौंका। पास आने पर कटी को हलका सा सलाम किया। रोके या न रोके, कुछ त नहीं कर पाया। तब तक कटी भीतर जा चुकी थी। रिसेप्सनिस्ट को फ्लोर तथा रूम नंबर बताया।

उसने फोन उठाकर कहा—

मि सत्येंद्र ? ए गर्ल वांटस टू सी यू

उधर का जवाब सुनकर रिसेप्सनिस्ट ने कटी को लिफ्ट की ओर जाने का इशारा किया। कटी की उम्र का अनुमान लगाते हुए उसने संतरी को बुलाकर डाँटा— इतनी छोटी सी लड़की को क्या आने दिया ?

साब ! वह कार में बैठकर आई है। कार सामने खड़ी है। बड़ी कार है साब ! इम्पाला कार। मैंने रोका नहीं इसीलिये। संतरी ने कहा।

'इम्पाला" रिसेप्सनिस्ट की मुद्रा बदल गई थी। ठीक है संतरी ! तुम जाओ। ध्यान से काम किया करो।

संतरी बाहर आकर खड़ा हो गया था। कहती है ध्यान से काम किया करो। और ! ध्यान से काम नहीं करूँ तो एक मिनट में छुट्टी करवा दे। और खुद ? पहले तो खाली बिगड़ रही थी और फिर

इस्पाला का नाम सुनकर मिट्टी पिट्टी गुम हो गई। साली डर गई। कही नौकरी से हाथ धोना पड जाये ! डर से कापती हुई रिसेप्सनिस्ट के बारे म सोचकर सतरी मुस्कराने लगा—साली हैं खूबसूरत। पर इस छोकरी के सामने पानी भरे। बड घर की दीखती है पर धधा किय बिना नही मानती। साली सब एक सी हैं म ग्र बड।

कटी न दरवाजे पर नाक (Knock) किया तो सत्यद्र न कहा ग्रा जाग्रो। दरवाजा खुला था। वह भीतर प्रविष्ट हुई। कमरा बडा था। भव्य ग्रौर सज्जित।

एम्बसेडर होटल इसके सामने कुछ नही। जसा सुना था, बिलकुल वसा। तभी ता नाम है इस होटल का। बबई का ताज ग्रौर दिल्ली का ग्रशोका ही टक्कर ल सकत है इससे।

सत्येद्र एक ईजी चेयर पर बठा था। लेटन की मुद्रा म। उसन कटी को पास के सोफे पर बैठने को कहा। कटी बठ गई। वह कमरे की भव्यता म उलझी थी। शायद सत्यद्र से कुछ मिनट के लिये बचना चाहती थी। सत्यद्र उसकी मुद्रा को टकटकी लगाकर देख रहा था ग्रौर कटी को इसका ग्रहसास था।

"कटी ! तुम मुझसे प्रतिशोध लेना चाहती थी ?'

'प्रतिशोध किस बात का सत्येद्र ? मुझे तुमसे कोई शिकायत नही।'

ग्रौर कौन सी बात ? उस दिन की ही तो। भूल गइ क्या वह रेप ?

डोट बी सिली। इट वाज सिम्ली नानसस। एन इमेजिनेशन म्रा ली। द नक्स्ट डे ग्राइ वाज डिस इल्यूजन्ड। पर इससे मुझे ग्रफसास ही हुग्रा। तुम्हे शाताक्रुज पर ग्रकेले देखकर मैं समझ गई थी कि घर पर क्या नाटक हुग्रा होगा। पर समय नही था कहने सुनन को। बस इतना समझती हूँ कि जाते समय तुम्हारा मन भारी हो उठा था। शायद मरे लिये भी। सत्यद्र ! यू विहेन्ड

लाइक ए रियल जंटिलमन डट टे । तुम जान नहीं सकागे कितना आदर है मेरे मन म तुम्हारे लिए। मरी सपूर्ण कृतज्ञता तुम्हे समर्पित है सत्येन्द्र ? कटी भावार्द्र हो उठी कहते कहते।

दम्स आके कटी ! डाट मशन इट। पर यह तो बताओ मनीषा के सार प्रतिशोध लेने की तुम्हे क्या सूझी । और वनिया स ही तुम्हे क्या शत्रुता थी ! जिज्ञासा न प्रश्न का बाना पहन लिया ।

सत्यन्द्र ? तुम्हे कैसे समझाऊँ ? मुझे उन दोनो स कोई द्वेष नही था। मुझे कोई प्रतिशोध नहीं लेना था। मैं गारफ लिक जाना ही नहीं चाहती थी। पहल दिन बनार प्लेस म मनीषा की बेरुखी दखकर पुन सम्पर्क की सभी इच्छाए मर गइ । वह तो दूसरे दिन स्वय आ गई थी और मैं कप म कोई नाटक खड़ा करने को तयार नहीं थी। अत साथ जाना पडा। घर पर भी मनीषा सहज नहीं हो पाई । वह आक्रमणात्मक खेल ही खेलती रही। कभी फुसलाहट के माध्यम स । कभी चुनौतियां क माध्यम से। और फिर होटल म डिनर की बात से तो उसने स्वय को एक्सपोज (Expose) ही कर दिया। मुझे डिफस करनी ही पडी।

और वनिया के चित्र ? उनके बारे म पुलिस को क्या बताया ?

सत्येन्द्र ? मेरी स्थिति का अनुमान करो। मि रामदास के विरुद्ध सशक्त प्रमाण दिये बिना मेरे कथन का विश्वास ही कौन करता ? और मैंने इस स्थिति स बचने के लिये पर्याप्त चेतावनी दे दी थी। पर्याप्त समय भी। दोनो न मुझे जाने दिया होता तो इसकी नौबत ही नहीं आती । पर व कायर हतप्रभ हो गये थे। करणीय अकरणीय का उन्हे ध्यान ही नहीं रहा और फिर पानी सिर पर से गुजर गया था । और हाँ ! यदि मैंने पूर्वत व्यवस्था न की होती तो बोलो सत्येन्द्र ?

कटी अचानक सिसक उठी। उस पर सत्येन्द्र ने अपनी आँखो पर हाथ रख लिया। वह उस सभावना का दखना नहीं चाहता था। दो क्षण की ही थी वह दुर्बलता। फिर वह कटी के पास जा बठा और

कटी का सिर अपने कंधे पर रखकर सहलाने लगा। कटी की सुबकियाँ रुदन में परिवर्तित हो गई। मकरन्द की नस नस आँसुओं में भीगती रहीं और उसका मन उद्वेलित हो उठा। उसे गहरा क्रोध आ रहा था। पता नहीं किस पर। शायद समाज पर। इसकी व्यवस्था पर। या फिर नारी के प्रति नर के दृष्टिकोण पर। उसका क्रोध कटी के रुदन में तादात्म्य स्थापित कर रहा था और फिर शान्त हो गया था। कटी की सुबकियाँ समाप्त हो गई थी। वह बाथ रूम में जाकर मुँह भी धो आई थी। पर अश्रु प्रवाह का कुछ प्रभाव अभी शेष था। वाणी अवरुद्ध सी थी। सत्येन्द्र ने बैरे को बुलाकर कोका-कोला की दो बोतलें मंगवाई। पीना शुरु करने से पहले कटी ने मुस्कुराने का प्रयत्न करते हुए पूछा—

'इसमें स्लीपिंग पिल नहीं डालोगे क्या ?'

"नहीं ! मैं नहीं चाहता कि प्रात उठते ही रेपिस्ट (Rapist) कहलाऊँ"

'तुम रेप तो कर ही नहीं सकते'

'डाट की हू म्योर कटी ?' सत्येन्द्र के ओठों पर शरारत भरा स्मित था। 'खैर ? छोड़ो इसे। क्या तुम मेरी प्रतीक्षा करती रही हो ?

हाँ ! और चाहो तो प्रमाण दे सकती हूँ

'प्रमाण तो तर्क के लिए सहारा देते हैं। विश्वास के लिए नहीं। मुझे विश्वास है। पर तुम्हें थोड़ी प्रतीक्षा और करनी होगी"

कर लूँगी। पर क्या ?"

'मैं गोल्फ लिंक से सबंध तोड़ आया हूँ। व्यक्तिगत रूप से। कानूनी तौर पर ऐसा करने में कुछ समय लगेगा। शायद दो साल। रुक सकोगी तब तक

सकूँगी। उम्र भर यदि आवश्यक हो तो।"

सत्येन्द्र ने कटी के ओष्ठ का हलका सा चुम्बन लेते हुए कहा कि इस बात का वास्तान माने। कटी ने विवश करने स्वीकृति दे दी। कुछ

क्षणों के मौन के बाद सत्येन्द्र ने कहा—

'अगले वर्ष कहाँ पढ़ोगी ?'

'हावर्ड में सीट रिज़र्व करा रखी है । पर सोचती हूँ, बी ए के बाद जाऊँ ।"

'तुमने ठीक सोचा है । वहाँ अंडर ग्रेजुएट क्लास काफी कठिन है । बी ए करके ही जाना । तब तक स्थिति भी स्पष्ट हो जायेगी ।'

सत्येन्द्र का इंगित पत्नी को तलाक देने के बारे में था ।

'ठीक है । यही तो कहा । डैडी को मनाना होगा ।'

'और तुम्हारी ममी ?'

'उनमें और मनीषा में थोड़ा ही फर्क है । पर उनका विरोध चलेगा नहीं यह सोचकर अधिक विरोध करेंगी भी नहीं ।'

फर्स्ट इयर में क्या क्या विषय रहेंगे इसकी चर्चा होने पर कटी ने बताया इतिहास, राजनीति और अंग्रेजी साहित्य लेगी । सत्येन्द्र ने इतिहास की जगह संगीत लेने का परामर्श दिया । उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कटी ने इतने वर्ष कलकत्ते में रहकर भी संगीत नहीं सीखा । सुना तो कटी लज्जित हो उठी । उसने तुरत ही वोकल संगीत का निर्णय कर डाला । सत्येन्द्र प्रसन्न था कि कटी ने उसकी एक फरमाइश मान ली । उसे अचानक स्मरण हो आया कि कटी गाती रही है । उस दिन बाथ रूम से गुनगुनाहट जैसा कोई गीत सुना था—

भाई बद्दूर भाई बद्दूर
अब जाना है कितनी दूर
नाज़ुक नाज़ुक मेरी कलाई
मिलने से मजबूर

उसने कटी से इसे सुनना चाहा । उसने मना कर दिया । क्योंकि न तो बाथ टब था । न नहाना । मन स्थिति भी उस दिन जैसी नहीं । हाँ यदि सत्येन्द्र साबुन ढूँढ देने का वचन दे तो शायद । सत्येन्द्र ने कहा— ना बाबा ना । और दोनों खिलखिला उठे थे ।

दोनों जानते थे कि कुछ स्थितियों की तो स्मृति ही ठीक है। आवृत्ति नही।

कटी ने कलाई पर बंधी घडी की ओर देखा। नौ बज रहे थे। उसने सत्येन्द्र से जाने की अनुमति चाही। सत्येन्द्र मना नहीं कर सका। उसने बंबई का अपना नया पता नोट करवाया।

दोनो एक साथ नीचे आये। रिसेप्शनिस्ट ने दोनो को तीखी निगाह से देखा। पर बोली कुछ नही। बाहर संतरी ने लंबा सलाम ठोका। कटी ने दस रुपये का एक नोट उसे बख्शीश मे दिया। संतरी ने फिर एक फर्शी सलाम ठोका।

कटी कार म बैठ गई। सत्येन्द्र ने बाय कहा और कटी हवा में एक हलका सा किस फेंकती हुई चल दी। सत्येन्द्र खडा देखता रहा आँखो से एक रिक्तता अपने भीतर भरता रहा। अचानक उसे अहसास हुआ कि आँखो के होते हुए भी वह अंधा था। उसे अब याद आया कि कटी एक खूबसूरत लडकी है। यौवन की अरुणिमा उसके चेहरे पर आ चुकी थी। एक ऐसी अरुणिमा, जो यौवन की देहरी पर दीपक की लौ सी प्रस्फुटित हो। उसके मानस ने कटी का समग्र सौंदर्य अपने भीतर उडेल लिया था और सत्येन्द्र को पता तक नही चला। इसलिए तो उसने भूलकर भी नहीं कहा कि वह बहुत सुन्दर है। पता नही कटी क्या सोचा रही होगी। पर सदंभ का बोध ही न हो। बोध होता तो उसका दभ भी होता। वह दपमयी तो नही है। वह तो बस सहज है। उस दिन वह ऐबनॉमल लगी थी। शायद थी भी। कम स कम उस दिन तो थी ही। पता नहीं, उसे क्या सूझी? आज पूछा जा सकता था। पर याद ही नही रहा। किंतु पूछने पर शायद ही बता पाती। वसे भी सब बातें व्याख्येय नही होती।

सत्येन्द्र होटल की ओर मुड गया। उसे व्याख्या नही चाहिए थी।

५

बंटी ने सोम भट्टाचार्य को संगीत शिक्षण के लिए ट्यूटर रख लिया था। उसके तीन महीने प्रारंभिक विधि के ज्ञान में ही लग गये। "सा आ आ आ" के अभ्यास में उसने बड़ा धैर्य दिखाया। तानपूरे पर केवल 'सा' का अभ्यास काफी उकताने वाला होता है। किंतु बंटी उकताई नहीं। ट्यूटर को विश्वास हो गया कि उसकी छात्रा संगीत को फैशन के रूप में नहीं ले रही है। बंटी की श्रम निष्ठा देखते हुए विख्यात गायिका हो सकती है यह तथ्य ट्यूटर से छिपा नहीं रहा। वह जानता था कि दो वर्ष में छोटा खयाल और तीन चार वर्ष में बड़ा खयाल गाने लगेगी। पर इसके लिए उसे किसी बड़े उस्ताद के पास जाना होगा। सोम उसे उतना नहीं बना पायेगा। सोम ने अपनी शिष्या को इसका पूर्व संकेत दे भी दिया।

बंटी हाई स्कूल में फर्स्ट डिविजन में पास हो गई थी। कालेज के प्रथम वर्ष में उसने प्रवेश ले लिया था। झिम्मी ने भी। आतिमा नहीं। घर वालों ने असामर्थ्य के कारण मना कर दिया था। बंटी ने उसके घर जाकर प्रस्ताव भी किया था कि वह आतिमा की शिक्षा का संपूर्ण भार स्वयं उठाती रहेगी। पर आतिमा के माता पिता ने सहायता लेने से इन्कार कर दिया। वे चाहते थे कि आतिमा नौकरी करके घर की विपन्नता दूर करने का प्रयास करे। बंटी जानती थी कि उनके घर की स्थिति बहुत खराब है। आतिमा के पिता रिटायर हो चुके थे और वेतन का एक तिहाई पेन्शन के रूप में मिल रहा था। अब तक तो गृहस्थी लड़खड़ाती चल रही थी किंतु अब तो वह लँगड़ा

कर भी नहीं चल सकती थी। श्रोतिमा को नौकरी करना आवश्यक हो गया था। पर नौकरी मिलती कहाँ है? बी ए, एम ए को भी कोई नहीं पूछता। फिर मैट्रिक की तो बात ही क्या?

कटी ने अपने डैडी से कहा कि वे श्रोतिमा को नौकरी दिलाने में सहायता करें। उन्होंने एक जगह फोन करके उसे टाइपिस्ट की नौकरी पक्की करवादी। पर श्रोतिमा को टाइपिंग तो आती ही नहीं थी। उसने टाइपिंग सीखना शुरू किया। सीख चुकी तो पता चला कि वह स्थान तो भर गया। मि सक्सेना ने डलहौजी स्क्वायर में एक जगह फोन करके पूछा तो उत्तर मिला कि कलकत्ता से बाहर एक टाइपिस्ट की जगह रिक्त है। श्रोतिमा बाहर नहीं जा सकती थी। माँ-बाप का निषेध तो था ही, कम वेतन में बाहर जाना व्यावहारिक भी नहीं था। सुनकर मि सक्सेना भुनभुनाये थे— बगस बाट की चूजस।

श्रोतिमा अब स्वयं प्रयास करने लगी थी। उचित भी यह था। दूसरों को कब तक बैसाखियाँ बनाये? किंतु उसे यह भी पता चल गया कि स्वतंत्र प्रयासों के परिणाम भी स्वतंत्र होते हैं। सामान्यतः निष्फलता में ही इनकी परिणति होती है। कहीं कहीं अपमान के कड़ुवे घूँट भी पीने पड़ते हैं। उस अस्थायी नौकरी देने वाले बहुत थे। दो चार घंटों के लिये। अधिक से अधिक रात भर के लिये। श्रोतिमा के भीतर का सत् और सौम्य चुकता जा रहा था। ग्लानि का कालुष्य उसे भर रहा था। और घर-वालों की तानाकशी सुनकर उसका सिर भन्नाने लगता था। वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे?

एक दिन कटी से मिली तो कहा कि उसे नौकरी मिल गई है। ४००) रुपये माहवार वेतन। ओवर-टाइम के पैसे अलग। वह खुश थी। कटी ने पूछना चाहा 'कहाँ है ऑफिस'। किंतु श्रोतिमा ने मौका ही नहीं दिया। प्रसन्नता उसके अंग अंग से फूट रही थी। कटी को लगा-कहीं अभिनय तो नहीं। पर उसने कहा नहीं। वह दूसरे ही क्षण श्रोतिमा की प्रसन्नता में प्रसन्न हो उठी।

कटी और ओतिमा की मुलाकातें कम होती गई। दोनों के कार्य क्षेत्र जो बदल गये थ। कटी को कॉलेज जाना पड़ता था और लौट कर संगीत सीखती। कभी कभी क्रिस्टी आ जाती या वह स्वयं क्रिस्टी के यहाँ चली जाती। एक दो बार वह क्रिस्टी को लेकर सल्विया की ओर गई भी, किंतु ओतिमा नहीं मिली। पता चला कि आफिस से लौटी नहीं है। शायद ओवर टाइम कर रही होगी। कटी आश्वस्त थी। ओतिमा के घर म विपन्नता कम हो रही थी, यह आभास उसे हुआ। अब उसने सल्विया जाना छोड़ दिया। कभी कभी ओतिमा बाजार म दीख जाती। दो चार रस्मिया बातें होती और फिर अपने अपने रास्ते चली जाती।

ओतिमा देखने म ठीक थी। आकर्षक भी। इन दिनों अच्छे वस्त्र और मेक अप म रहती थी। इससे उसके आकर्षण म वृद्धि हुई थी। चाल म एक विशिष्टता आ गई थी। सच ही इससे गरिमा का आभास होता था। वह संपूर्ण अर्थों मे आधुनिका थी।

कटी जान गई कि ओतिमा केरीअर गर्ल (Career Girl) की जिन्दगी से तुष्ट है। उसे स्वर्णिम भविष्य की भी आशा थी। वह सीढ़ी दर सीढ़ी ऊपर उठने का उपक्रम कर रही थी। कटी का विश्वास था कि वह किसी दिन टाप पर पहुँच जायेगी। सच ही ओतिमा की तरफ से वह निश्चित हो गई।

अब उस समय भी नहीं था कि अन्य किसी ओर वह ध्यान दे। उसे यूथ कांग्रेस की ओर से आयोजित सांस्कृतिक समारोह म प्रतियोगिता के लिए चुना गया था और वह पूर्ण मनोयोग से संगीत साधना म जुटी थी। इन दिनों वह उस्ताद असीमखाँ के पास २-३ घंटे जाकर संगीत की बारीकियाँ सीखती थी। व ग्वालियर घराने क थे और बडे ख्याल के ममज्ञ थे। मियाँ की टोडी पर तो उनका गजब का अधिकार था। वे अपने शिष्यों को गला साधने के लिए बहुत परिश्रम करवाते थे। कटी स वे प्रसन्न थे क्योंकि कटी बिना कहे रियाज किया करती थी। कभी सुर गलत होता तो उस्तादजी तुरत उसे सुधरवा

दते। उन्हें विश्वास हो गया था की कि २ ३ वर्ष मे अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन मे गा सकेगी। पर यह दूर की बात थी।

अभी तो कटी के सामने थी छात्र छात्राओ की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता। इसका आयोजन उसी के कॉलेज मे होना था। अपने कॉलेज का प्रतिनिधित्व कटी करने वाली थी। दूसरे कॉलेज से जिन प्रतियोगियों की विशेष चर्चा थी उनमे रेखा और विकास का नाम प्रमुख था। दोनो अलग अलग कॉलेजो मे आने वाले थे। गत वर्ष इन दोनो का ही मुकाबला हुआ था और रेखा जीत गई थी। कटी उस समय प्रतियोगिता मे नही थी।

विकास को गत वर्ष की पराजय स्मरण थी। बहुत चाहे न अनुभव हुई हो, किंतु पराजय तो थी ही। उस दिन कॉलेज कपाऊंड मे प्रविष्ट होते ही प्रकाश मिला तो कहने लगा—

तैयारी कर रहे हो न ! कही इस वर्ष भी रेखा बाजी न मार जाये। और सुना है कोई कटी वटी भी इस बार भाग ले रही है। मुकाबला तगडा है। और ब्यायज को तो तुम्हारा ही आसरा है कही सबकी नाक न कटवा देना।"

विकास इस अप्रत्याशित उत्तरदायित्व को ग्रहण करने मे कतरा रहा था। उसने कहा भी कि और बहुत से लडके हैं जो प्रतियोगिता मे भाग लेंगे। फिर उसी पर सारा बोझा क्या ! किंतु वह जानता था कि प्रतियोगी लडको मे अधिकांश कच्चे होते हैं और गाना व रोना सबको आता है यह मानकर प्रतियोगिता मे नाम लिखा देते हैं। शास्त्रीय आधार तो उनके पास होता नहीं। विकास उनसे पृथक् था। उसने सुन सुनाकर कुछ सीखा था। अधिक रियाज नही कर पाता था। सारा समय रियाज को दिया भी नही जा सकता। आखिर अध्ययन के लिए भी तो कुछ समय चाहिए। वह अध्ययन पूरा कर लेने के बाद संगीत की ओर झुकना चाहता था। संगीत के संबंध मे वह सपने अवश्य देखता है। पता नही पूरे होंगे या नही। अभी तो रेखा सामने है और कोई कटी वटी भी है। भय उसे रेखा से नहीं

था। उसे वह जान चुका था कि वष भर म अधिक उन्नति नहा की होगी। पर कोई नई लडकी के बारे म क्या कहे ? यह कटी भी पता नहा क्या गाना है वसा गानी है।

उसन चाहा कि कुछ दिना के लिए पन्नाइ वन्ाई छोडकर रियाज के लिए जाय। प उसम भी एक बडी बधा थी। होस्टल की हुडदग म घबरा कर उसने एक मकान किराय पर ल रक्खा था। मकान मालिक एक मारवाडी सठ था। सठ क लिए सगीत भस के आगे बीन बजाना था। या विकास न रेंकते हुए उह सुना है। कइ बार धोया धोया लाव परेस दिया भात जी जैसा गीत गाते या रेंकते सुना है। भात (चावल) स भरे थाल को दखकर उनके स्वर मुखरित हो जाते होगे, विकास का यह अनुमान था। उसने कई बार टेबिल पर ताल दकर सगीत करने का प्रयत्न भी किया, किंतु तब तक उनके स्वर भात क वजन से टूट जाते और ताल बेताल हो जाती। विकास ने एक दा बार सेठजी का बहलाना भी चाहा कि वे गाते खूब है। वे हो ही करने लग थ। मन मे बहुत प्रसन्न। माना सगीत ही उनका सवस्व हो। पर जब कभी विकास तानपूरा लकर बठता कि उधर से सुनाई पडता—

इसे तो सारे दिन यही पी पी अच्छी लगती है। क्या नहीं पढन लिखन म इतना समय लगाता'

वसे इस रियाज को सुनने वाला एक प्राणी था। जरूर वह थी सठ की लडकी विमला। अवस्था यौवन के दरवाजे पर ठक ठक करती। गाढी चाय सा रग। मेहदी की क्यारी सा कटाव। पढी लिखी साधारण। रियाज के समय वह कमरे के आग से कई बार गुजर जाती। अदर कभी न आती। खडी जरूर रह जाती। सगीत की जानकारी नही थी पर पसद जरूर करती थी। यह मात्र रुचि थी या युवावस्था की उन्माद कहा नही जा सकता। किंतु इस परिवार से इतनी आशा भी बहुत है।

विमला से छोटी ३ लडकियां और थी। २ २ वष के अंतर पर।

कमला, लक्ष्मी और सरस्वती। सबसे छोटा था एक भाई। मोहन ६ ७ वर्ष का था। अभी स्कूल नहीं जाता था। सरस्वती और मोहन कभी कभी विकास के कमरे में चले आते। उसकी बड़ी पुस्तकें देखकर उनकी आँखें विस्मय से विस्फारित हो जातीं। कुछ कहना चाहते तो एक दूसरे से कोहनी मारते। वे गाना सुनना चाहते। नागिन का सा। सुनते तो ठुमके लगते। कभी हारमोनियम बजाने का कहते और फिर उस पर इधर उधर फिसलती हुई विकास की अंगुलियों की ओर परस्पर इशारा करते। शायद सीखने की अभिलाषा थी किंतु पिता का भय भी। तभी विमला द्वार पर आकर डाँटती— 'चलो माताजी बुला रही हैं। इन्हें व्यर्थ ही तंग कर रहे हो' आदि। वे चले जाते और छोड़ जाते एक अनुनय सा। फिर आने का अनुनय।

उसे स्वयं भी यह अच्छा लगता था क्योंकि इससे उसे अपना छोटा भाई अविनाश याद आ जाता था। वह मोहन की सी उम्र का था। स्वभाव से चंचल। स्कूल जाने लग गया था। आज ही घर से पत्र आया था। पिताजी ने लिखा था—

"क्या ? इस वर्ष बी ए कर लो। अच्छे डिवीजन में। चाहो तो आगे पढ़ सकते हो वर्ना आइ ए एस में बैठना। या तुम्हारी माताजी चाहती हैं कि तुम्हारी शादी हो जाय तो उन्हें सहारा मिले। तुम स्वयं समझदार हो अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। पढ़ना जरूर, ठीक से। तुम्हारी माताजी का आशीर्वाद। अविनाश प्रणाम लिखवा रहा है।"

उनका पत्र प्रायः ऐसा ही होता। वे चाहते थे कि विकास कुछ बने। उनकी स्वयं की जिन्दगी पोस्ट मास्टर तक ही सीमित रही। परिवार में पति पत्नी विकास और अविनाश कुल चार प्राणी थे। अतः गृहस्थी की गाड़ी ठीक से चल रही थी। ४ ५ वर्ष बाद रिटायर होना था। तब तक विकास ठिकाने लग जाएगा यह उन्हें आशा थी। हर महीने ७०) रु० भेज देते। कभी ज्यादा भी। विकास काम चला लेता। फिजूल खर्च था नहीं। एक दो सप्ताह में सिनेमा जरूर देख

गाता स्वर जितना गाया गया। सभी जानते हैं। गलतियाँ भी होती हैं। सबक सीख कुछ सके थे ?

फिर संगीत म उस प्रकार भी मिलती। स्वर और गुरीलापन स्वभाव और प्रभावित हो। पर न हुई भी न था। पुराने लोगों म पक्के संगीत प्रचलन समाप्त था। म किसी गर वा गान न था गाता। सदा भी ध्यान मोहम्मद रफी का नाम्नीर गायक। कुछ और किशोर कुमार का जमाना ही था कभी कभी अच्छा लगता। उस गीत पर पसन्द आता था इतना वह निश्चय नहीं कर पाता था। वस्तुतः पसन्दगी सम्पादन-स्वरूप होती है। जो स्वनि या वस्तु आज पसन्द है यह थोड़ी देर म या कुछ समय बाद नापसन्द हो जाय। सभी वातावरण का और सभी अभिव्यक्ति का असर आ जाता है। संगीत म प्रधानता स्वरों की होती है किन्तु बात भी कोई चीज है। अभ्यस्त सरगम से रियाज हो सकता है गाना गाया जा सकता है। किन्तु भाव-तन्मयता तो बोल से ही आएगी। ठीक स्थान पर ठीक शब्द आना ही चाहिए। गलत शब्द आया कि गाने मस्ती। गले म कुछ फंसा सा जायगा। जितनी बार उस शब्द पर पहुँचेंगे उतनी ही बार अड़चन होगी। गीत का तो बस बंटाधार ही हो जायेगा। इसके विपरीत ठीक जगह पर ठीक शब्द अंगूठी म नगीने सा लगेगा। भाव बढ़ जायगी। गायक के गले म फुरहरी सी होने लगती है और श्रोता के दिमाग म एक सुगन्ध सी व्याप्त हो जाती है। पर इसके लिए चाहिए एक समझ, एक सहज अनुभूति। 'तेरे गोरे गोरे गाल हमको बहुत पसन्द हैं' को पसन्द करने वाले इस सुगन्ध को नहीं पकड़ पाते। ऐसे गीत गायक और श्रोताओं से यह सुगन्ध सदा ही कुचली जाती है मसली जाती है।

विकास संगीत को निकट से छूना चाहता था। संगीत के भीतर की सुवास से स्वयं को अनुप्राणित कर लेना चाहता था। इन दिनों वह पण्डित दीनानाथ से शास्त्रीय सूक्ष्मताओं की जानकारी ले रहा था। वह फीस नहीं दे पाता था, पर पण्डितजी उसे दुत्कारते नहीं

थ। उसकी रुचि को देखकर वे मनोयोग से सिखाते रहते थे। विकास को कहते—

'बेटा ? अभ्यास करते जाओ। अभ्यास समुद्र में गोता लगाने के समान है। जितनी गहरी डुबकी लगाओगे, उतना ही लाभ होगा। मोती गहराई में ही मिलते हैं।"

शिष्य तो पण्डितजी के अनेक थे, किन्तु विकास पर एक प्रकार का ममत्व था। वह औरों की तरह उतावला न था। जब तक पूरी तसल्ली न हो जाती, तब तक सुनाने की न सोचता। और सुनाता तो पण्डितजी प्रमुदित हो उठते। लय, गति व तान में कहीं फर्क नहीं। सम अपनी जगह पर वैसे ही आता जैसे अपने घोंसले पर पक्षी। आलाप लेते समय आरोह अवरोह में कहीं खींचतान नहीं, कोई हड़बड़ी नहीं। सागर की लहरों का सा उठाव गिराव उनमें होता। यह पता नहीं लगता कि कब कौन सी लहर किसमें समाहित हो गई ? आती दिखाई दे जाती नहीं। पारस्परिक मिलन बिन्दु अनदेखे ही रह जाए। लहरों पर सवार होना भी कम बात नहीं। सिद्ध हस्त तो बिना श्रम के तैरता सा चला जाता है, किन्तु नौसिखिया होश खो उठता है और सांस कंठ में आ जाता है। अंग अंग थकावट से चूर चूर हो जाता है।

विकास भी थका हुआ है किन्तु यह प्रारम्भ की बातें हैं। अब वह लहरों का रूप पहचानता है और बहाव की ओर स्वयं को डाल कर निढाल सा हो जाता है। भूले की सी एक मस्ती, एक शोखी। बस हृदय प्रफुल्ल हो उठता है। माथे की बूंदें पोंछने पर एक निखार सा आ जाता है। आंखों में सपने फिर भी तैरते से हैं। गले में भक्ति से आते हैं और अंगों में एक अद्भुत सी शिथिलता छाने लगती है। गुरु और शिष्य देर तक बात नहीं पाते। किन्तु बिना बोले ही एक दूसरे को बहुत कुछ कह देते हैं—

'वाह बेटे ? वाह कमाल कर दिया तुमने

'सब आपका अनुग्रह है, गुरुदेव ?'

पर एग प्रागर कम पा है। विराग प्रतिनिधि जा रहा पाता। एग एक सहाह निकल जाता है। विराजमानी म जाए भी क्या? पत्नियों को उस पर रुप या ममता थी। इस पर कैसे भूलता? मट्ठा पाण्या कि मीनी हुई पति को उसी कि प्रकार घर छोड़ पर प्रागमन की धमकार म गर भी ला कर।

गठवा म घर म धेरण की रहनाग्यों कई दार बन उठी है। गभी कमरा की त्रहर या गभी कपड़ा को फाड़ीदाग दरवाजा की निशानी प्रागं। गभा गभी दिन का टमप रे और जमीन मागमात गर पर उठा म। गिरना के बार म गभी विग्दकोप। गाना गिनहा ला मीना कुमारी न कौन सा फिल्म म कितना रुपया लिया पद्मिनी और वैजयन्ती माला म कौन बड़ी नृत्यांगना है? गितारा देवी ने कितना युवता को निराश्रवर रग लिया? मना की बात चली नहीं कि हरोर और रवड म दनादन स्थापित करने जा। और कई हनीफ न भावनपुर म किय गिरान तोड़ा नहा था। उसम तुड़वाया गया था। मोया पाकिस्तानी खिलाड़ियों म उतनी क्षमता है नहीं जितना कि बताई जाती है। रही भारतीयों की बात। मर? अपन अपायग और रफरी हैं ही शिरफिर। बाहरा खिलाड़ी ग्राउट भी हो जाय पर उनकी अंगुली नहीं उठेगी। और अपना खिलाड़ी अनिश्चित स्थिति म हुआ नहीं कि अंगुली फलाव से ऊपर। रैफरी का भी यही हाल है। हमार खिलाड़ी मध्यरेखा (Centre Line) स एग कदम आग गड़े हुए नहा कि आफ साइड कहे जायगे और बाहरी खिलाड़ी चाहे हमारे गोल कीपर स गप शप लगात रहें। यह है निष्पक्षता।

बातचीत का रुख राजनीति की भार मुडने लगता है—'गांधीजी न साफ कह दिया था कि अब कांग्रेस को तोड़ देना चाहिये। व यदि जीवित रहते तो तुड़वाकर रहत या इस सामाजिक संस्था बनवा डालत। अरे पटेल साहब की बात छोड़ो। लोह पुरुष था वह। उसीका साहस था कि ६८० रियासतों को मिनटों म समाप्त कर दिया अमुक राजा को फांसी की धमकी दे डाली थी। बचारा

घबरा गया और तुरत हस्ताक्षर कर दिये । हैदराबाद अकड़ा था। विदेशी सहायता के भरोसे । पर २४ घंटा में ही हेकड़ी भुला दी।

काश्मीर तो समूचा ही चला गया था । पाकिस्तानी फौजें श्रीनगर पर मडरा रही थीं । नेहरूजी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये तो पटेल ने ही बागडोर सम्हाली थी । अपनी फौज तुरत रवाना कर दी थी । दम ? पाकिस्तानी भागते नजर आये । पटेल साहब तो कराची पहुँचकर दम लेते किन्तु नेहरूजी अड़ गये । कहने लगे ऐसा ठीक नहीं । यू एन ओ पर हम विश्वास करना चाहिये । बेचारे पटेल साहब खून का घूंट पीकर रह गये । और इसी का परिणाम है कि आधा काश्मीर पाकिस्तान के अधिकार में है ।

राजनीति के य सब नोट्स आधी रात तक दुहराये जाते और विकास तंग आ जाता । वे बिना चाय पिये जाना न चाहते । पर बेवक्त दूध कहाँ से आता । बेचारा उठता । रेस्टोरेंट थोड़ी ही दूर था । जाता और चाय पिलाता । लौटता तो देर हो जाती । कब पढ़े ? कब रियाज करे ! दो एक उबासियाँ आतीं और सो जाता । प्रात उठता तो निश्चय करता कि इस जीवन में नियमितता लानी है । यों तो वर्ष का प्रारम्भ है किंतु अध्ययन अभी से चालू करना होगा । वर्ना सिर का बोझा जो बढ़ता चला जायेगा । आज मित्र लोग आयेंगे तो कह देगा कि प्रतिदिन ऐसे नहीं चलेगा । हाँ ! रविवार को वे आ सकते हैं । इससे अधिक नहीं ।

उसने पूरा प्रोग्राम बना लिया और उसने समझा कि मीर मार लिया । आधा घंटे तक तो वह उसी कल्पना में रहा कि महीने दो महीने में ही अच्छा खासा अध्ययन कर लेगा और रियाज भी । इस खुशी में उसने चाय बनाई । बहुत स्ट्रांग । और कप हाथ में लेकर चुस्कियाँ भरता रहा । सोचता भी रहा कि वह साधारण छात्रों से अलग है । वह आवारा नहीं है । समय की पाबन्दी जानता है । यहाँ के प्रधान मंत्री जैसे बड़े लोगों को एक मिनट भी इधर उधर जाना सहन नहीं होता । तो वह भी स्ट्रिक्ट रहेगा । यह सोचकर उस

तसल्ली सी हुई। मन में जैसे कुछ उभरने लगा। सीना आधा इंच फूल सा गया। फिर किताबें उठाकर करीने से रक्खीं। बिस्तर को ठीक किया। मेज कुर्सी की धूल झाड़ी। कमरे को साफ किया। फिर नहाकर खाना खाने चल दिया। शाम से प्रोग्राम के मुताबिक काम चालू करेगा।

कॉलेज पहुँचा तो पाया कि लड़कों की टोलियां बनी हुई हैं। बातों में जोश था। वह प्रकाश को ढूँढने लगा। मिलने पर पूछा—बात क्या है? उसने बताया—फीस बढ़ाई जा रही है। प्रिंसिपल ने नोटिस निकाला है इसी को लेकर लड़के चर्चा कर रहे हैं। फीस पहले ही बहुत अधिक है। ऊपर से यह वृद्धि। किसकी जेब से जाएगी यह फीस? निश्चयतः किसी की जेब से। तो ' इस मामले को यूनियन में क्या न उठाया जाय?

यूनियन में?—विकास ने पूछा—उसका तो चुनाव ही नहीं हुआ है।

प्रकाश बोला—'चुनाव तो १५ २० दिनों में हो जायेंगे। शायद उसके बाद भी पन्द्रह बीस दिन निकल जायें। तब तक क्या किया जाय? फीस दिये बिना उपस्थिति नहीं लगेगी। मैं जानता हूँ कि हड़ताल के लिये यह समय उपयुक्त नहीं है। अभी तो कॉलेज खुला है। महीने दो महीने के लिए बन्द भी हो जाये तो कुछ नहीं होगा। परीक्षा के एक महीना पहले हो तो फिर भी कोई बात बनती है। पढ़ाई की हानि के नाम पर राजनैतिक सहानुभूति भी प्राप्त हो सकती है। पर इस समय क्या किया जाये? लगता है फीस देनी पड़ेगी। बाद में यूनियन में मामला उठायेंगे।

विकास को भी यह फीस बुरी लगी थी, पर आन्दोलन या हड़ताल में सम्मिलित होने से कतराता था। वह इस पक्ष में अवश्य था कि यूनियन के माध्यम से इस प्रश्न को उठाया जाय। इसलिये आवश्यक हो गया कि योग्य व्यक्ति ही यूनियन में जायें।

प्रकाश इतनी देर में घूम फिर कर आ गया था। कहने लगा—

देखते हो विकास ? प्रिंसिपल समझता है कि प्रवेश लेना है तो फीस दनी पडेगी। किन्तु हम भी समझ लेंगे। जरा यूनियन के चुनाव हो जान दो। फिर देखना और हा विकास ! मैं इस बार यूनियन प्रेसिडट के पद के लिए खडा हो रहा हूँ। इसी बिन्दु को आधार बनाकर म सिद्ध कर दूँगा कि विवशता क्या होती है। माना कि आज छात्र विवश हे। किन्तु कल को प्रिंसिपल भी विवश हो सकता है।'

प्रकाश उत्तेजित हो रहा था अपन स्वभाव के अनुकूल। उसमे नता होन के सभी गुण विद्यमान थ। एम डी एम का पुत्र होने के कारण अफसराई की बू उसन आ गई थी। वह समझता था कि वह शासन करन क लिए पैदा हुआ है। पिछले वष जब विकास ने कॉलेज म प्रवेश लिया ता क्लास म प्रकाश पर ही नजर पडी थी। टीपटाप में दुरुस्त और चुस्त हर तरह से। ताजा फैशन का बुशशर्ट। क्लास का नेता। पढ़न म तेज नही तो फिसड्डी भी नहीं। प्रकाश ने भी विकास की ओर देखा था—एक नया जीव समझकर। शक्ल सूरत मे वह भांप नही पाया नवागन्तुक कैसा है। खैर। देख लिया जायगा। किन्तु कुछ ही दिनो म वह पहचान गया कि कोई पढ़ाई गीर है। हाजिरी और लेक्चर सुनने मे पक्का ? चलो काम आयेगा। नोटस लेने का सिरदद गया।

दो चार दिना बाद प्रकाश आकर बोला— 'मि विकास ! कल सध्या का ५ बज मेरे यहा तशरीफ लाइये। मेरा जन्म दिन है। सभी साथी आयेग। बोलिय, आ सकेंगे न !' विकास ने हाँ भर दी थी। दूसरे दिन वह ८ नवर के बगले पर पहुँच गया था। प्रकाश के माता पिता मे परिचित हुआ। फिर तो धनाम का पूरा मजमा लग गया। सब मिलाकर ३० छात्र थे। क्लास की लडकिया नहीं आई थी। आशा भी नही थी। प्रकाश स चाय-पानी के बाद गपशप लडने लगी। तभी किसी न कहा—प्रकाश ! गाना सुनाओ' और प्रकाश चौंक पडा। उसन बताया कि उसे गाना नहीं आता। पर :

उसकी कौन सुने ! झख मारके उसे गाना पड़ा जैसा तैसा। फिर तो दूसरों को भी बाध्य किया जाने लगा। गाना तो खैर सभी चाहते थे किन्तु संकोच की बात थी। न जाने दूसरों को कैसा लगे। हर व्यक्ति दूसरे की कमी पकड़ लेता है किन्तु स्वयं की कमी का उसे अनुमान ही नहीं होता। सुर कहाँ बेसुर हो रहा है और ताल कहाँ बेताल हो रहा है यह गायक को पता नहीं चलता और वह गाना चला जाता है श्रोता आँखों ही आँखों में हँसते हैं। दाद देने के बहाने अपनी मुस्कुराहट को व्यक्त करते हैं। कभी कभी गायक समझ जाये तो बंद कर देता है। भाई बताना चाहते हैं— अरे पहचानता है। वह दूसरे की ओर इंगित करता है।

विकास किनारे पर बैठा था। इसलिये देर तक बचा रहा। किन्तु बारी आनी थी और आ गई। उसने भी एक फिल्मी गीत सुना दि । सबको पसन्द आया। अत्यधिक। अब दूसरे गाने की फरमाइश हुई। वह इन्कार कर रहा था और बाकी सब अनुरोध कर रहे थे। तब उसने भी एक तरकीब सोची। एक पक्की चीज शुरु कर दी। हारमोनियम व तबला तो था नहीं। किन्तु टेबल पर ठेका दिया जाने लगा। उसने एक लम्बा आलाप लिया आ आ आ दो बोल कहे और नजर डालके देखा तो भाई लोग पके से नजर आये। उसने तुरंत बंद कर दिया— मैं पहले ही कह रहा था। मुझे गाना नहीं आता। बोर हो गये ना ? सबने कहा 'नहीं नहीं ऐसी बात नहीं। हम जान गये कि तुम एक पक्के गवैये हो। अब तक तो किताबी कीड़ा ही समझ रहे थे ..."।

विकास आदाब बजा लाया। प्रकाश इस प्रदर्शन से खुश था। वह गुदड़ी के लाल को पहचान रहा था। अब तक तो वह किन्हीं अर्थों में विकास को पांडू ही मानता था किन्तु अब वह जान गया कि असली कलाकार है। उसने विकास को कहा कि ऐसी क्लासिकल सुनाये। विकास मना न कर सका। इसी तरह गाने के ६ बज गये थे और वह देर से घर लौटा था।

' तबसे प्रकाश और विकास की मित्रता बढ़ती ही चली गई। दोनों एक दूसरे के यहाँ आते। विकास के प्रति प्रकाश के माता पिता का व्यवहार और भी स्नेहपूर्ण हो गया था। उसे बिना खाये पिये लौटने न देते। प्रकाश से छोटी एक बहन थी। सुमन। मैट्रिक में पढ़ रही थी। कभी कभी वह विकास से सवाल पूछा करती। स्वभाव की मृदु किंतु चंचल। मौका मिलने पर चिकोटी काटे बिना न रहती। विकास उसे मारने को दौड़ता। सारा घर हँस पड़ता। सच ही वह घर का एक अंतरंग सदस्य सा हो गया था।

इन दिनों प्रकाश यूनियन के चुनावों में जान लड़ा रहा था। वह कहता "बिना पब्लिसिटी और व्यक्तिगत संपर्क के चुनाव नहीं जीता जा सकता।" विकास यथासंभव उसकी सहायता कर रहा था। पब्लिसिटी के नये से नये तरीके सोचे गये। पम्फलेट निकाले गये। उन पर लिखा होता 'चुनाव के बाद ?'। दीवारों पर पोस्टर लगाये गये। सिनेमाघरों में स्लाइड्स दिखाई गई 'चुनावों के बाद ?' छोटी मोटी गैदरिंग (Gathering) होती तो प्रकाश लेक्चर झाड़ने लगता।

प्रिंसिपल के कानों तक बात पहुँची तो उसने जयचंद्र भादुड़ी नामक छात्र को उकसाया। वह प्रिंसिपल का पिट्ठू था। उसने भी नामांकन भर दिया। प्रकाश के विरुद्ध। उसका कहना था—"कम्युनिस्टों के बहकावे में मत आओ। ये वायदे नहीं, धोखाधड़ी है। फीस हमारे ही काम आयेगी"।

प्रकाश समझ गया। उसने फिर पम्फलेट निकाले। फिर से पोस्टर चिपकाये। स्लाइड्स फिर दिखाई गई। सबमें एक ही बात थी—"जयचंद को पहचानो। पृथ्वीराज की हार सबकी हार है। सोचो, समझो और करो।'

सुनकर जयचंद खिसियाता। दोनों पक्ष वोटर्स को अधिकाधिक प्रभावित करना चाहते थे। इनके लिए जयचंद था। इसमें कुछ वोट उसके निश्चित हो गये। फिर उसने लोकल और आउट साइडर्स के

नारे लगाये। कुछ और वोट उसकी तरफ हो गये फिर उसने छात्राओं को टटोला। सीधे दाल नहीं गली तो एक दिन रेखा को कहने लगा

'सुनिये? यह प्रकाश तो नाम का ही प्रकाश है। इसके हृदय में अंधेरा और कालुष्य भरा हुआ है। बिलकुल छंटा हुआ है। यदि यह प्रेजिडेन्ट बन गया तो सारे कालेज में अंधेरा मच जायेगा। कोई नौफर इसके साथ है। आप लोगों की जिन्दगी हराम कर देगा। बस माफ कीजिये। इतना ही कहूँगा कि मुझे वोट दीजिये और सुरक्षा पाइये।'

लड़कियों ने सुना, किन्तु उत्तर नहीं दिया। उन्होंने विचार करने का आश्वासन अवश्य दिया। जयचन्द्र समझा उसका तीर निशाने पर बैठा है। उसने निश्चित वोटों में २०० वोट और जोड़ लिये। अब उसकी स्थिति दृढ़ थी। प्रकाश के छक्के छूट जायंगे— यह सोचकर वह मन ही मन प्रसन्न हो उठा।

प्रकाश ने भी सुना। जातीयता, संकीर्णता और गुंडागर्दी। इनसे निपटना आसान नहीं। किंतु वह यों ही हार मानने वाला न था। एक दिन वह कालेज के गेट पर खड़ा हो गया और आने वालों को सुनाने लगा—

'तो आप लोग व्यक्ति को नहीं, जाति को वोट देंगे। आप शहरी हैं अतः शहर को ही वोट देंगे व्यक्ति को नहीं। वोट आपका है। आप उस गुंडे को क्या देंगे? क्या आपको अपनी जान प्यारी नहीं है? क्या आपको अपनी प्रतिष्ठा का खयाल नहीं है? अवश्य है! है अन्याय है। किंतु देखना आपको यह है कि गुंडा कौन है? क्या वह व्यक्ति गुंडा है जो जातीयता की बात नहीं करता! क्या वह व्यक्ति बदमाश है जो इस नगर पर ता नहीं पर प्रिंसिपल के इशारे पर नहीं नाचता। जो छात्राओं को यह कहकर नहीं उकसाता कि कालेज के २२०० छात्र-छात्राओं में केवल एक गरीब है और बाकी सब गुंडे उचक्के हैं। आप जरूर उस गरीब को वोट दीजिये। गुंडे को प्रेजिडेंट न बनाइये। मगर यह न देखिये कि उस गरीब का एक

वाक्य बोलते हुए भी घिग्घी बंध जाती है। आप यह मत सोचिये कि वक्त पडने पर वह शरीफ अपने साथियो को सही माग दिखा सकता है या नही। आप केवल उसकी शराफत पर विश्वास कीजिये। आप यकीन कीजिये उसकी योग्यता पर कि वह दूसरी नई फीस कितनी और कब तक वसूल करवायेगा। आप उसे जरूर वोट दीजिये। आप अपने साथियों को समझाइये कि वोट उस शरीफ को ही दें।
मुझे तो इतना ही कहना है कि आप किसी के बहकावे म न आयें।"

तब तक अच्छी खासी भीड एकत्र हो गई थी। सब पर इस भाषण का अच्छा प्रभाव पडा था। हवा का रुख बदल रहा था। इसी वक्त जयचद आ गया। किसी ने उसे पकडकर बीच म ला खडा किया और बोलने को कहा। वह भीड देखकर सकते म आ गया। पहले तो जुबान ही तालू स चिपक गई। बाद म इतना ही कह सका—'कुनैन शुगर-कोटेड होने पर भी कडवी रहती है। गुडा गुडा ही रहता है। आप गुडे को वोट न दें।" पर बात जमी नहीं। कुनैन कडवी होने पर भी लाभदायक होती है, यह सभी बात जानते थे। सबको पता चल गया कि यह व्यक्ति बोल नही सकता। सभी जानते थे। उसकी शराफत इसी बात स जाहिर हो गई कि वह अपने विरोधी को सरेआम गुडा कह रहा है।

दूसरे दिन वोट पडने थे। जयचद्र और उसके साथी बहुत भाग दौड कर रहे थे। वोटर्स को कार म बठा बैठाकर लाया जा रहा था। शाम को जानदार पार्टी का वायदा भी था। एक बडे रेस्टोरेंट का आर्डर दे दिया गया था। एडवास पेमेंट देकर। खुशामद की जा रही थी। खुशामद की भी खुशामद। मानो जीवन मृत्यु का प्रश्न था। वे लोग ऐडी चोटी का जोर लगा रहे थ।

इसके विपरित प्रकाश और उसके साथी गेट पर खडे थे। वे प्रत्येक वोटर को एक पर्चा दे रहे थे जिस पर प्रकाश का नाम था। वे कह रहे थे—'योग्य व्यक्ति को ही वोट दीजिये। ईमानदार को ही

कुनिये। काम की पार्टी के सालस म मत जाइये। शोषण-वर्ग के हाथ। शोदण का यह पहला कदम है। सोचिय समझिये और दीजिय।"

सुनने वालों ने सुना सोचा और समझा। दोपहर व दो बजे तक वोट पड़ते थे। वाट पड़ने के बाद गणना प्रारंभ हुई। जयचन्द का बक्स खोला गया तो कुल ६७४ वोट थ। जयचंद्र के साथियों का मुह उतर गया। जयचन्द्र चार स त्यिमद दिया। रेस्टोरेंट को दिया गाडर रद्द कर दिया।

प्रकाश का १४०० म ऊपर वोट मिले थ। उसने बाहर आकर सबको धन्यवाद दिया और वायदा किया कि हम वर्ष वह काम करके दिखायगा। फीस म की गई वृद्धि को हटवाने क लिए तो जान लड़ा दगा।

विकास ने उसे गले लगा लिया और साथियो न उस कन्धे पर उठाकर कई देर तक घुमाया। नाम तक शोर नगाड़ा होता रहा। फिर धीरे धीरे बिखरने लग।

दूसरे दिन प्रकाश लडकियों के कमरे के आगे स गुजरा तो रेखा ने चिक हटाकर कहा— सुनिये तो' प्रकाश ठिठका। प्रश्न मुद्रा म। वह बोली— 'हम सबकी ओर स कांग्रेच्युलेशस। प्रकाश बोला एक गुंडे को कांग्रेच्युलेट कर रही हैं आप सब? उधर से उत्तर मिला— आपको गुंडा किसने कहा? हमने? नही तो। अगर अन्य किसी न कहा भी तो हम पर असर नही हुआ। हमार वोट आपको ही मिल हैं। प्रकाश न उन सबको धन्यवाद दत हुए कहा—

मैं जानता था कि आप ऐसे वस बहकावे मे नही आयगी। भविष्य के बारे मे अभी से कुछ नही कह सकता किंतु समय आने पर आपक दिय हुए समर्थन का मूल्य प्रमाणित करके दिखा दूँगा। हाँ? आपस भविष्य म भी सहयोग की आशा रखूँगा।

पाचवा पीरियड चल रहा था। रेखा को घर जाना था, क्योंकि उसकी माताजी ने जरा जल्दी आने को कहा था। कारण का कुछ

श्राभास उसे था। उसने अपनी सहेली मालती को कहा कि वह उसके साथ चले। मालती ने प्रश्न मुद्रा दिखाई तो बोली—"चलो तो सही। सब बता दूँगी।' रास्ते में रेखा ने कहा—'एक साँप इस छछूँदर को पकड़ने आ रहा है। बाद में चाहे न निगलते बने न उगलते।' मालतीजी उलझ गई। रेखा ने स्पष्ट किया कि एक व्यापारी माल खरीदने से पहले माल देखने-परखने आ रहा है और वह माल है रेखा। मालती अब समझी। बधाई दी तो रेखा ने आँखें तरेरी।

मालती ने पूछा— बात क्या है? कोई बूढ़ा है या उजड्ड? फोटो वोटो तो आया होगा।"

रेखा ने सबके लिए नकारात्मक उत्तर दिया और कहा—'आज शाम को ही सब बात हो जायगी। तुम्हें इसीलिये साथ लाई हूँ कि मेरा निर्णय अप्रामाणिक न रहे।"

मालती कुछ क्षण तो चुप रही। फिर बोली—"सच कहो, शादी करने का तेरा विचार तो है न!

रेखा ने कहा— यही तो मुश्किल है। मैं बी ए करने के बाद एम ए करना चाहती हूँ। फिर शादी-वादी की सोचूँगी। किंतु माता पिता तुले बैठे हैं कि बी ए के बाद शादी कर लूँ। फिर यदि मेरे भावी वे अनुमति दें तो एम ए कर सकती हूँ। पर यह हो नहीं सकता। तुमने स्वयं देखा है, वह प्रभा एम ए के लिए तड़पा करती थी। पर शादी के बाद गृहस्थिन होकर रह गई। एक साल के भीतर गोद में बच्ची छी? यह भी कोई बात हुई। शादी करके पत्नी को बच्चे पैदा करने की मशीन बना दिया है। भावना और कल्पना का संसार सर पटककर रह जाता है। कोमल अनुभूतियाँ चपट और पीस के बीच पिस जाती है। तुर्रा यह कि ये सारे कष्ट केवल नारी के लिए हैं। पुरुष तो पल्ला झाड़कर बैठ जाता है। कमाने का एक आइटम पुरुष के जिम्मे और बाकी सारे आइटम झंझट व परेशानियाँ नारी के लिए सुरक्षित! मैं यह नहीं कहती कि स्त्री घर को सम्हाले ही नहीं या माँ बने ही नहीं। पर उसके लिए वह स्वयं को तैयार तो

करे। इसकी योग्यता तो प्राप्त करे। मैं नहीं चाहती कि बेवक्त की शहनाई बजे। घर न बसाना हो तो न बसायें, किंतु बसाना ही हो तो इसकी सही व्यवस्था हो। बेढंगेपन से क्या लाभ? यदि शादी होने ही बच्चा की कामना हो तो क्या न बच्चा वाली विधवा उदाहरण की जाये? यदि शादी का अर्थ यही है कि पति की सेवा की जाय तो यह शौक तो एकाधिक नौकरानियों से भी पूरा हो सकता है।

स्त्री-पुरुष का दर्जा पूरे तौर पर न सही किन्तु किसी रूप में तो समान होना चाहिये। मैं नहीं मानती कि कमाई का पैसा स्त्री के हाथ पर रखने से ही समानता आ जाती है। मैं जानती हूँ कि स्त्री अपनी इच्छा से उसे खर्च नहीं कर सकती। रुपये दो रुपये की तो खैर कोई बात नहीं, किंतु दस बीस की रकम किसी शौक या आवश्यकता पर व्यय की नहीं कि पतिदेव का पारा थर्मामीटर से बाहर आने लगेगा। वस्तुतः पुरुष चाहता है कि उसके द्वारा अर्जित राशि स्त्री के पास सुरक्षित रहे। मानो स्त्री नहीं कोई सेफ डिपाजिट है। मुझे यह स्वीकार नहीं। मैं विवाह तो करूँगी किंतु मशीन या नौकरानी बनने के लिए नहीं। मैं जानती हूँ कि आज का आयोजन सर्वथा असफल होगा। मैं एम ए किए बिना शादी नहीं करूँगी क्योंकि मैं इसके लिए स्वयं को तैयार नहीं पा रही हूँ।

मालती ने सिर हिलाया। वह स्वयं इन बातों के औचित्य पर तो विश्वास करती थी किन्तु इसकी व्यावहारिकता पर उसे सन्देह था। समाज का ढांचा ही ऐसा है कि जरा से झोंके के कारण चरमराने लगता है। जोर का धक्का कोई लगाता नहीं वर्ना टूट ही जाय। सब चाहते हैं कि यह जीर्ण शीर्ण ढांचा टूटे किंतु पहल करने का साहस नहीं जुटा पाते। एक आध ने कुछ साहस किया भी तो अपवाद कहकर भुला दिया जाता है। पर यदि ऐसे अपवादों की आवृत्ति होने लगे तो ये अपवाद नियम बन जाते हैं। सच ही समाज की धारणा और स्मृति दुर्बल होती है।

मालती यही कुछ सोच रही थी कि रेखा का घर आ गया।

मालती ने रेखा के माता पिता को नमस्ते किया। रेखा के पिता लाला मनोहर लाल उसे देखकर चौंके थे। व्यापारी जो ठहरे। वे जानते थे कि ग्राहक के सामने दो चीज रखने से हानि ही होती है। ग्राहक को अच्छे बुरे की पहचान तो नहीं होती पर दोनों चीजों को देखता-परखता तो है ही। और शायद वह उस वस्तु को खरीदे ही नहीं जिसे कि दूकानदार बेचना चाहता है।

लाला मनोहरलाल होल सेल का धंधा करते थे। आमदनी काफी थी। बड़ा लड़का महेश प्रांतीय सेवा में था। छोटा सुरेश मैट्रिक करके व्यापार में पिता का हाथ बँटाता था। दोनों का विवाह हो चुका था। महेश की पत्नी प्रिया एक बैरिस्टर की लड़की थी। एक बच्चा हो चुका था रवि। तीन वर्ष का था। सुरेश के श्वसुर व्यापारी थे। कपड़े के। सुरेश की पत्नी शोभा के अभी बच्चा नहीं हुआ था यद्यपि विवाह हुए ४ ५ वर्ष हो चुके थे। सब चिंतित थे। मानो विवाह की सफलता का मापदण्ड ही सन्तान होना है। रेखा से छोटे दो भाई थे। समर और अमर। आयु १० तथा ५ वर्ष। समर स्कूल जाता था। पाँचवें दर्जे में आ गया था। किंतु आज सबके साथ वह भी घर था। शायद तमाशे के लालच में। और तमाशा तो होने जा ही रहा था।

पाँच बजने को था। माताजी ने आकर रेखा से कहा—चलो कपड़े बदल लो'। रेखा ने अपने वस्त्रों की ओर देखा और कहा कि यही ठीक हैं। किसी को भी अच्छे लग सकते हैं। माताजी ने बहुत कहा किन्तु रेखा ने एक ना सुनी। माताजी भुनभुनाती हुए चली गई। मालती मुस्कुराई। रेखा की पहली जीत पर। रेखा भी कुछ आश्वस्त हुई। किंतु वह जानती थी कि असली मोर्चा तो अभी आगे है।

इतने में अमर आया और कहने लगा— दीदी ? वे कौन आये हैं ? मुझे दुलार रहे थे।" फिर वह बाहर के कमरे की ओर भाग गया। रेखा तैयार हो गई। मानो कमर कसकर। तभी छोटी भाभी

भाई चाय की ट्रे लेकर ड्राइंग रूम में जाने को कहा। रेखा ने पूछा क्या यह काम नौकर नहीं कर सकता ? इस बहाने की मुझे जरूरत नहीं। मैं यों ही चली जाती हूँ।"

और चली भी गई। पीछे से शोभा ने नौकर के हाथ चाय भिजवा दी। मालती ड्राइंग रूम के बाहर बरामदे में खड़ी हो गई। वहाँ से भीतर की वार्ता सुनी जा सकती थी। एक पर्दे को जरा सा खिसकाकर आगंतुक को देखा भी लिया। तीस के आस पास की अवस्था। आकृति व्यापारी की नाम लीलाधर।

बातचात उसी ने शुरू की। पढ़ाई के बारे में पूछा। संगीत और नृत्य आदि के बारे में भी। वे ही परंपरागत प्रश्न। उत्तर भी उसी शैली में। अधिकांशतः रेखा के माता पिता द्वारा। इन औपचारिकताओं से संतुष्ट होकर लीलाधर बोला— हमारे यहाँ पढ़ाई तो चालू नहीं रह पायगी। सुनकर रेखा उठी और चुपचाप भीतर चली गई। लीलाधर ने जाते जाते अपनी स्वीकृति दे दी। रेखा के पिता फूले न समाये। अन्दर आकर सबको कहने लगे— भाई ! कमी किस बात की थी जो हाँ न करता ? शिक्षा रूप और गुण सभी तो हैं बिटिया में। चलो अच्छा हुआ। आगामी ज्येष्ठ तक बिटिया के हाथ पीले कर दूँगा। एक बड़ी चिंता मिट जायेगी।

रेखा सुनती रही। किंतु आखिर में कह ही बैठी— पिताजी ! आपकी चिंता उतनी जल्दी नहीं मिटने की। कम से कम दो गर्मियाँ तक आपको चिंतामग्न रहना ही पड़ेगा। मुझे यह व्यक्ति पसन्द नहीं। शिक्षा या तौर-तरीके कुछ भी तो नहीं उसमें। अभी से कहता है कि हमारे घर में पढ़ाई तो चालू नहीं रह सकती। मानो मैं उनके घर में पहुँच ही गई। मुझे एम० ए० करना है यह तो समझिये।

सुनकर सब सकते में आ गये। समझाने की गुंजाइश ही नहीं रही। अतः लीलाधर को सूचना भेज दी गई कि पढ़ाई वाली बात के कारण रिश्ता नहीं हो सकेगा। किंतु लीलाधर ने अप्रत्याशित उत्तर भिजवाया कि यदि रेखा की पढ़ने की इतनी अधिक रुचि है तो व

शादी के बाद पिता के घर पढ़ सकती है। अब परिस्थिति कठिन हो गई। सभी पशोपेश में पड़ गये। बिना कारण मना करने से यह होती है। आखिर उसकी भी प्रतिष्ठा है। रेखा को कहा गया कि अब वही बताये कि क्या किया जाये। रेखा बोली—"ढोंग की क्या जरूरत है? साफ साफ लिख दीजिये कि लड़की अभी शादी नहीं करना चाहती। दो साल के बाद बात की जायेगी। और आपसे नहीं लिखा जाता तो मैं लिखे देती हूँ।' वस्तुतः उसने लिख भी दिया—

महोदय

आपकी विशालहृदयता के लिये धन्यवाद। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आपने एक लड़की की भावना को समझा और उसे समर्थन दिया। किन्तु जो बात सामने आ गई, आ गई। विवाह के बाद अध्ययन चालू रखना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। आप चाहे एतराज न करें, किन्तु शादी के बाद की परिस्थितियाँ तथा उत्तरदायित्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अतः मैंने निश्चय किया है कि एम. ए. करने के बाद ही इस प्रश्न पर विचार करूंगी। आशा है, आप अन्यथा न लेंगे। आपको पुनः धन्यवाद।

रेखा"

लीलाधर को पत्र मिला तो आँखें फटी रह गई। कोई लड़की भावी पति को पत्र लिख सकती है और वह भी इतना सीधा-सपाट यह उसके विचार-क्षेत्र से बाहर की चीज थी। उसके परिवार के लिए भी यह एक नई बात थी। सबने यही कहा—'चलो अच्छा हुआ। ऐसी तेज तर्रार लड़की इस घर में बहू बनकर नहीं आ सकती।'

किन्तु लीलाधर स्वयं कुछ निश्चित नहीं कर पाया। वह रेखा से भयभीत सा था। साथ ही उसके व्यक्तित्व एवं निर्भीकता से प्रभावित भी। उसने सोचा—ऐसी पत्नी के आ जाने से घर के वातावरण में नई रोशनी का समावेश हो जायेगा। नये तौर-तरीके अपनाये जायेंगे और दकियानूसी समाप्त होगी। वस्तुतः लीलाधर नये जमाने से

प्रभावित होता जा रहा था। यदि इंटर करते ही व्यापार में न लग जाता तो शायद वह स्वयं सुसंस्कृत व्यक्ति कहलाता। पर भाग्य तो व्यापार में भी होती है। लीलाधर सुसंस्कृत व्यक्ति के घर में प्रतिदिन का यह नाटक होता ही है। और मानता कि घर में आधुनिकता चाहिये तो यह काम एक आधुनिक पत्नी कर सकती है। ऐसी पत्नी के साहचर्य में उसकी स्वर्गीय रुचियाँ भी प्राप्त रहेंगी।

लीलाधर ने भावी जीवन के बारे में भी सोचा। विवाह का अर्थ है, बच्चों का आगमन। और बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के बारे में एक शिक्षिता पत्नी ही उपयुक्त प्रयास कर सकती है। बच्चों की माँ यदि अशिक्षिता हो तो बच्चों का मानसिक विकास नहीं हो सकता। लीलाधर अपने छोटे भाई बहनों को देखता है तो महसूस करता है कि उन्हें न कपड़ा पहनने का शऊर है और न ही शिष्टाचार का ध्यान। इनकी पढ़ाई लिखाई का उपयुक्त प्रबन्ध है या नहीं इसका ध्यान रखने वाला घर में कोई नहीं। शिक्षिता भाभी की संगत में ये भी सुधर सकते हैं। किंतु प्रश्न यह है कि वह शिक्षिता इस वातावरण में रहना चाहेगी या नहीं। इसके लिये उसे समझाना होगा। जरा प्यार से। समाज सुधार के नाम पर कुछ फुसलाना होगा। जोर जबरदस्ती तो चलेगी नहीं उसके सामने। वाकई है बड़ी तेज। देखो न कितने ठाट से लिख दिया—'आपकी विशालहृदयता के लिये धन्यवाद'।

'किन्तु धन्यवाद तो मुझे भी देना है' लीलाधर ने सोचा। 'क्या उसने मेरी आँख नहीं खोल दी है इस पत्र में? वर्ना अभी तक तो मैं सोच रहा था—शादी होगी। खूबसूरत पत्नी होगी जिसे सारा मुहल्ला आँख फाड़ कर देखेगा। और खूबसूरत पत्नी के बच्चे भी खूबसूरत ही होंगे। और पत्नी ही क्या? क्या मैं बदसूरत हूँ?'

लीलाधर ने शीशे में मुँह देखा। काफी ठीक जचा। जचना भी था क्योंकि ऐसा कोई शीशा बना ही नहीं जिसमें बदसूरत को भी अपना चेहरा बदसूरत दिखे। लीलाधर बदसूरत न था। पर सौन्दर्य कहाँ कहाँ? वह स्वयं इस तथ्य से अपरिचित नहीं था। पर उसने

स्वयं को तसल्ली दी—औरतें सदा ही मर्द से अधिक खूबसूरत होती है। हो भी क्यों नहीं ! घर से बाहर तो निकलेंगी नहीं। घूमना भी हो तो शाम को, जबकि सूरज छिप जाता है। धूप छोड़, प्रकाश की किरणें ही चेहरे पर नहीं पड़ सकती। फिर चेहरा काला पड़ेगा ही कैसे ?

लीलाधर को एक ही बात समझ में नहीं आई कि सौन्दर्य और कालेपन का सीधा विरोध नहीं होता। उसे पता नहीं था कि काला चेहरा भी सुन्दर हो सकता है। वस्तुतः सौंदर्य का अंगों से संबंध नहीं आत्मा से है। अंग सौष्ठव से तो सौंदर्य अनुभूति में तीव्रता आ सकती है। वैसे भी सौन्दर्य के बारे में व्यक्ति, समाज या देश की भिन्न भिन्न धारणा होती है। काल भेद से भी इसमें अंतर आ जाता है। कहीं आंखों का काला रंग सौंदर्य का प्रतीक होता है और नीला या भूरा रंग। किसी जगह तीखी नाक सुन्दर मानी जायगी तो कहीं पर चपटी। होठों के पतले या मोटे होने का भी यही मामला है।

खैर ! सौन्दर्य की चाहे जो परिभाषा हो। लीलाधर ने रेखा को सुन्दरी मान लिया था। शिक्षित और गुणवती भी थी। उसने दो मास बाद की बात मान ली और उत्तर भेज दिया।

रेखा फिर उलझन में पड़ गई। कैसा व्यक्ति है यह ! बिलकुल पीछे ही पड़ गया। समझाने पर भी नहीं समझता। खैर, बात दो मास के लिये टल ही चुकी है। बाद में देखा जायगा। उसने मालती से बात की तो लगा कि मालती के विचार उससे भिन्न हैं। उसने रेखा को कहा तो मालती बोली—

'नारी स्वभावतः दुर्बल है। प्रकृति ने उसे कोमलता दी है श्रमोपयोगी कठोरता नहीं। इसके विपरीत पुरुष सबल है मन व शरीर से। दुर्बल सदा सबल का आश्रय ढूंढ़ता है। विवाह के पीछे भी यही सिद्धांत काम करता है। यौन सिद्धान्त सब जगह एक सा है। इस दृष्टि से सभी प्राणी समान हैं। मानव, पशु व पक्षी आदि सब एक जैसे हैं। वनस्पति में इसी भी सिद्धान्त का प्रतिफलन स्पष्ट है।

प्रकृति का साहचर्य जब तक विप्रकृति से नहीं होगा, तब तक वांछित विकास नहीं हो पायेगा। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है, अत साहचय का होना अपरिहार्य है। प्रश्न महानता या लघुता का नहीं, बल्कि पारस्परिक आवश्यकता का है। आवश्यकता भी सामयिक। भूमि को समय पर वर्षा चाहिये। मेघ बनने के लिये समय पर उष्णता चाहिये। पुरुष के लिए नारी और नारी के लिए पुरुष उसी ही एक अपरिहार्य आवश्यकता है। मिथुन होने की भावना प्राकृतिक व अनन्त है और भावना की परिणति उत्पत्ति में होती है। इससे भयभीत होना अवांछनीय है।

'शादी करना एक सामाजिकता है किन्तु इसके मूल में वही नैसर्गिक भावना एवं आवश्यकता है। इसमें न पुरुष कुछ खो पाता है और न ही नारी। साहचर्य दोनों के अभावों की पूर्ति करता है। इस सनातन नियम का रूप आज की सभ्यता ने विद्रूप कर डाला है। स्त्री पुरुष से भयभीत है तो पुरुष स्त्री से। इसका कारण है— अधिकारों की माँग। कठिनाई अधिकारों की नहीं माँग की है।

'क्या कोई चीज माँगने से ही मिलती है? और क्या माँगने से मिल ही जाती है? न माँगने से क्या नहीं मिलती? पुरुष सर्वस्व देता है क्योंकि नारी भी निज सर्वस्व का समर्पण करती। यह आदान प्रदान है। इसके बीच में माँग कैसी? माँग तो वैषम्य को दूर करके भी माँगें समाप्त होना सभव नहीं। माँग करना ही पुरुषत्व एवं नारीत्व का अपमान है। नारी शादी करना चाहती है और उत्तरदायित्व से डरती भी है। दोनों साथ साथ नहीं चल सकते। शादी की है तो बच्चे होंगे ही बच्चों के होने से शारीरिक सौंदर्य ढल जायगा नारी यही सोचती हैं। पर शारीरिक सौन्दर्य कोई अक्षुण्ण वस्तु नहीं है कि बच्चों के न होने से स्थायी रहे। अवस्था ढलने पर उसे भी ढलना होगा। बिना किसी उपयोग के। बिना उपयुक्त हुए। फिर क्या न बच्चों के कारण ही ढले? यदि सौंदर्य (शारीरिक, न कि आत्मिक) ढलेगा तो स्नेह उसकी क्षतिपूर्ति करेगा। यदि नारी में स्नेह जाग्रत नहीं हुआ तो कुछ भी जाग्रत नहीं हुआ।

'विवाह के साथ झंझट व परेशानियां आती हैं तो आयें। इससे यह भी तो लाभ है कि उन्हें बँटाने वाला भी कोई होगा। यह नहीं माना जा सकता कि केवल पति पत्नी होंगे तो चिंता व परेशानी होगी ही नहीं। ये तो होनी ही। बच्चा न होने से भी होगी। किंतु वे ही बच्चे बड़े होकर माता पिता की चिंताओं को बँटाते भी हैं।

तो फिर शादी में पहले ही बच्चों की चिंता क्या? चिंता तो यह होनी चाहिए कि बच्चे होंगे भी या नहीं। विवाह से और बच्चों के होने से व्यक्तिगत स्वतंत्रता में जरूर बाधा पड़ती है। पर यह बाधा पत्नी और पति दोनों के लिए होगी, एक के लिए नहीं। वैसे भी निर्बाध स्वतंत्रता तो एक प्रकार की उच्छृंखलता ही होती है। इसका समर्थन कोई नहीं करेगा। वस्तुतः उच्छृंखल स्वतंत्रता एक भ्रम है जिसकी नाव नहीं होती। पक्षी चाहे आकाश में कितनी ही लंबी चौड़ी उड़ान भरे चाहे कितने ही पंख फड़फड़ाये। है वह अधर में ही। उसके नीचे ठोस जमीन का आधार नहीं। उसे थककर घोंसले पर जाना ही होगा। वर्ना गिर जायेगा। नष्ट हो जायेगा। जितना जल्दी आयेगा उतनी ही शक्ति सुरक्षित रहेगी। ताकि फिर उड़ सके।

'नारी व पुरुष दोनों ही स्वतंत्र रहना चाहते हैं उच्छृंखल जीवन बिताने के लिए। किन्तु रह नहीं पाते। देर अबेर समझ आता है कि कहीं कुछ रिक्त रह गया जो कभी भर नहीं पायेगा। समय पीछे थोड़े ही मुड़ा करता है? उनके अनुभव से कोई लाभ उठाना हो यह बात भी नहीं। यह दुनिया भी एक ही पागल है। वह किसी की सुनी सुनाई क्या माने? वह स्वयं देखना व जानना चाहता है। यह जिज्ञासा आदिम है।

रमा सुनती रही। उसे आश्चर्य हो रहा था कि मालती ने इस प्रश्न पर इतना गहन विचार कर रखा है और संपूर्ण को पचा भी रखा है। रमा इसे इतनी गंभीरता से नहीं लेना चाहती थी। वह तो खीलाघर से मुक्ति चाहती थी।

वह बोली—'फिर तुम 'गादी कर क्या नहीं लेती हो ?'

सिद्धातवग नही परिस्थितिवग ही शादी नहा कर रही हूँ। ठीक सा व्यक्ति मिला तो कर लूँगी।' मालती ने सीधा सा समाधान कर दिया।

इस पर रेखा न परिहास करत हुए लीलाधर का नाम सुझाया तो मालती न भी मजाक म कह दिया— बुरा क्या है? बात आई गई हो गइ। नही। रखा ने अपना परिचिता के द्वारा लीलाधर के कानो म बात पहुँचाइ– अरे! क्या रखा रखा चिल्ला रह हो? उससे भी अधिक सुदर व गुणी बहुत लडकिया इस दुनिया म हैं। एक तो वह लाला निवदयाल की लडकी मालती हो रही। बी ए में है। रेखा से किसी भी रूप म कम नहीं।

लीलाधर न कई बार सुना तो उत्सुकता जागी। मालती को दया और बात त हो गई। मालती समझ गई कि यह सब रेखा के सचालन स हुआ है। किन्तु अपने कहे से कम मुड? उस सिद्धात का सत्यता प्रमाणित करनी ही होगी। बस गादी परीक्षा क बाद थी अत अभी स चिंतित होन की आवश्यकता नहीं थी।

रेखा मिली तो उसन मालती का बधाई दी। उसकी आँखो स हँसी फूट रही थी। गायद कहती हो— मेरा ठुकराया भी तो अपनाया। धत्। मालती बोली— मैं भी देखूँगी पछी कितनी उडान भरता है? कहीं ऐसा न हो कि घोसला ही न मिल और मिले भी तो खाली।

रखा न चुनौती स्वीकार करली। दोनो म स्पर्धा सी हो चली किंतु बाह्य व्यवहार म कोई फर्क नहीं आया। इधर प्रतियोगिता का समय निकट आ गया था अत उसन तयारी शुरू कर दी। मन म वह खिल गा गया।

सगीत म मुख्यत दो लडके और दो लडकियो क मध्य प्रतियोगिता होनी थी। अन्य प्रतियोगी तो बस नाम क थ। मुख्य प्रतियोगी थे— इन्दुकुमार और विक्रम तथा रेखा व बन्नी।

उस दिन कॉलेज हाल ठसाठस भरा था । यद्यपि कॉलेज के सभी विद्यार्थी वहाँ उपस्थित थे । तथापि तैयारियाँ पूरी होने पर घोषणा की गई कि प्रतियोगिता गाम्भीर्य से सम्पन्न होनी चाहिए, किसी भी प्रकार का शोर होना उचित नहीं है । आरम्भ में कुछ देर किसी किसी की आवाज आई किन्तु समय के अन्तराल में चुप हो गये ।

प्रारम्भिक प्रतियोगियों के बीच इन्दुकुमार मंच पर आये । उसने मल्हार गाना शुरू किया । पूरे पन्द्रह मिनट तक वह गाता रहा बिना किसी गलती के । उसने अच्छे ढंग से लिया था और समाप्ति भी ढंग से कर दी । शास्त्रीय दृष्टि से उसमें कहीं खामी नहीं थी । किन्तु श्रोताओं की वह प्रशंसा उसे नहीं मिल पाई जो मुग्ध करने से ही प्राप्त हुआ करती है । वस्तुतः उसके गाने में वह माधुर्य नहीं आ पाया था जिससे श्रोता रस सिक्त हो जायें ।

रेखा मंच पर आई तो हॉल में तालियाँ गड़गड़ा उठीं । गत वर्ष की विजेता का यह स्वागत था । उसने तानपूरा सम्हाला और सुर मिलाए । वन्दिश थी रागेश्री की । गला सधा हुआ और मधुर था । श्रम समा बँध गया । आलाप लिया तो आरोह के साथ श्रोताओं का दिल उठता और अवरोह के साथ गिर जाता । सभी उपस्थित लोग मानो विमुग्ध होकर हिलते-डुलते रह गए थे । गायन समाप्ति की दिशा में बढ़ा ही था कि रेखा की दृष्टि लीलाधर पर पड़ी और उच्च सप्तक के धैवत पर सुर बेसुरा हो गया । रेखा क्षोभ से भर उठी और गीत वहीं समाप्त कर दिया । बात बनते बनते बिगड़ गई । श्रोता वास्तविकता नहीं जान पाये । अतः प्रशंसा-सूचक तालियाँ भी नहीं बजा सके । उन्हें रेखा के प्रति सहानुभूति अवश्य थी ।

अब बारी थी विराग की । उसने चारों ओर निगाह डाली । खिन्नता सर्वत्र छाई थी । उसे भी अफसोस था—रेखा के लिए । अचानक क्या हो गया उसे, वह भी समझ नहीं पाया था । सोच रहा था कि बाद में पूछेगा । अभी तो खुद का ख्याल रखना है । वह जानता था—उसके बाद बस एक लड़की ही और आयेगी । पता नहीं

की दृष्टि से पचास प्रतिशत सफलता तो उसे गायन से पूर्व ही मिल गई थी। अवशिष्ट पचास प्रतिशत के लिए उसे प्रयास करना था। अपनी ओर से पूरा प्रयास। आत्मीयता समर्पित करने वाला वो निराश कैसे कर सकती ?

उसने तानपूरा सम्हाला तो लाल मस्तानर वठ गये। वटी न सधे हाथों से तार झनझनाया तो श्रोताओं के हृदय स्पर्श से दोलित हो उठे। वे वटी के वय के अनुरूप हो। कोई राग सुनने की अपेक्षा रखते थे। वटी ने इस अपेक्षा को पहचाना और विहाग के स्वर उठाये। तभी तालियां बज उठी। अध्यक्ष न उन्हे शान्त रहने को कहा—बीच में तालियाँ बजाने से गायन में बाधा पहुचती है। किन्तु कटी को इससे परेशानी नहीं हुई थी। वह तो मानो इसके लिए पूर्णत प्रस्तुत थी। उसने तबलची की ओर इशारा किया और तबले पर धीरे धीरे ठेका लगने लगा।

कटी के बोल थे— मोहे भूल गये सावरिया"।

इसमे विरहिणी मीरा का विरह मूर्त होने लगा। वेदना साकार हो उठी। कटी स्वय भाव-तन्मयता के कारण विरहिणी बन गयी। वह भूल गई—कि यह घर का रियाज नहीं, कालेज—हॉल है। पर वह कुछ नही देख पाई। उसने आँख मूँद रखी थी। श्रोताओं के सांस ऊपर के ऊपर और नीचे के नीचे थे। वातावरण में बरसात की सी आर्द्रता छा गई। सबकी आखें नम हो आई। 'भूल गये' की फिसलन पर लोगो का मन फिसला जा रहा था।

वस्तुत कटी पूरा अभ्यास करके आई थी। कहीं कोई हिचक नहीं थी। सगत की विशेष अपेक्षा नहीं थी। माधुर्य के साथ गत्यात्मकता पर्याप्त मात्रा म थी। अनावश्यक त्वरा वहा नही थी। वह सहज रूप से गीत की समाप्ति तक पहुँच गई थी और लोगो को पता तक नहीं चला था। एक बार तो कटी सकपका गई, किंतु इतने ही में ऐसी तालियां बजीं, ऐसी बजी कि कटी के चरणों में बेड़ियाँ बन गई। पाँच कदम पर उसकी सीट थी, किन्तु उसे मानो मीलो चलना पड़ा था।

ईर्ष्या सुलग रही थी। वह कह तो नहीं सकी, पर उसका चेहरा उतर गया था। विकास ने उसकी ओर देखा तो पूछा—"क्या? प्रसन्नता नहीं हुई?"

विमला बोली—'प्रसन्नता तो हुई ही है पर दो व्यक्तियों को एक समान घोषित करने वाली बात नहीं समझ पाई। दो व्यक्ति कभी समान नहीं हो सकते। या तो तुम्हें प्रथम रखते या फिर उसे। पर यह तो बताओ—क्या वह वस्तुतः अच्छा गाती है?

विकास ने उसकी भावना को समझते हुए कहा— विमला! तुम वहां होती तो बिना पूछे जान जाती कि उसमें गायन की नैसर्गिक प्रतिभा है। वह जैसे संगीत को एक समर्पण है। उसके प्रथम रखने में किसी को संदेह नहीं था। मुझे भी नहीं। हां! मुझे उसके साथ कैसे रखा गया, यह मैं नहीं कह सकता। लोगों को शायद मेरा गायन पसंद आ गया। कहीं जितना ही।'

देखने में कैसी है? मंद्र स्वर में विमला ने पूछा।

बहुत सुन्दर। मैंने इतनी सुन्दर लड़की कभी नहीं देखी। लोग तो साक्षात् मीरां को उस सजीव प्रतिमा को देखकर ही मुग्ध हो गये थे। संगीत का नैपुण्य तो लोगों को बाद में मालूम हुआ।

तभी तो विमला ने एक विशिष्ट भंगिमा अपनाते हुए कहा।

"नहीं विमला! तुम नहीं समझोगी। व्यक्तित्व एवं कला-नैपुण्य का वह सामंजस्य सहज था। उससे प्रभावित होना एक बाध्यता है। तुम देखती तो ईर्ष्या नहीं कर पाती।

विकास ने गलत कहा था। कहीं को देखे बिना ही विमला ईर्ष्या में जल उठी थी। उसकी आशाओं पर हाइड्रोजन बम गिर विस्फोट हो चुका था। मन बुझ गया था यह सब सुनकर। उस कला में परिचय नहीं और व्यक्तित्व की चर्चा करना ही व्यर्थ है। विमला जैसी लड़कियाँ इस महानगर में दहाई सैकड़ों में नहीं लाखों की संख्या में मिल जायेंगी। उसे तो अब एक ही आशा थी। एक ही पहलू शेष था।

'उसके पिताजी क्या करते हैं? मेरा मतलब है—वह रहती कहाँ है?' विमला ने जिस ढंग से पूछा विकास को वह पसंद नहीं आया। वह विमला को दुखी नहीं करना चाहता था? फिर क्या वह अपना गोद छोड़ कर पूछ रही थी? इस मोड़ पर पहुँचकर वह पसन्द नहीं हो सकती।

विकास ने एक बार तो सोचा कि कलकत्ते के किसी गली कूचे का नाम ले दे। शायद विमला का मन तुष्ट हो जाय। पर कल को वास्तविकता मालूम हो गई तो? वह झूठ नहीं बोल सका। उसने रूबी के रेजिडेंस का पता बता दिया।

सुनकर विमला स्तब्ध रह गई थी। अब कोई तिनका भी नहीं बचा था कि सहारा बन जाता। उस भवितव्यता का अनुमान हो आया। अपने परिश्रम की व्यर्थता स्पष्ट हो उठी। बिना कुछ कहे जाने लगी तो विकास बोला—विमला। परेशान मत होओ। जिस मंजिल पर वह रहती है मैं उससे १८ मंजिल नीचे हूँ। पुरुषार्थ पर भी समझो। इसलिए दो और दो चार का गणित मत करो।

विमला ने स्वीकार किया कि यह बात तो है। रूबी के पास कमी किस बात की है कि वह इस विपन्न से विकास को लिपट दे। वह व्यर्थ ही ईर्ष्या में जली जा रही थी। विकास ने बात बनाने को कहा—तुम्हारे लिए एक कप चाय बना लाता हूँ। सबको बता भी दूँ कि तुम पसन्द रहे।

विमला के माता पिता ने सुना तो विशेष प्रसन्नता प्रकट नहीं की। खाने-पीने में फर्क आना उनके लिए महत्वपूर्ण नहीं था। यदि धार्मिक [illegible] होती तो कोई बात थी। उनके स्वयं पढ़ाई में नुकसान ही बताया। यह सुनकर विमला खुश हो गई। उसके माँ-बाप कुछ नहीं समझते। आज के युग में पैसा ही सब कुछ बना है। उच्च मध्यम समाज में रूप व शिक्षा का अपना महत्व है। इनकी भी अपनी प्रतिष्ठा है। पर माता पिता को कौन समझाये और मनाये?

विमला खिन्न मन से चाय बनाकर विकास के कमरे में ले आई।

उसे वहाँ ठहरने की इच्छा नहीं हो सकी। उन्हीं कदमों से लौटी तो उसकी माँ ने नजर डाली। लड़की उदास लगी। जरूर कोई बात है। विकास के फस्ट-क्लास आने से ऐसा हुआ है उसने यही समझा। लड़की सयानी हो गई है। इसके हाथ पीले कर देने चाहिए। पर कैसे? अच्छा लड़का मिलता कहाँ है?

तभी उसका ध्यान विकास की ओर गया। ट्यूब लाइट के नीचे अंधेरा। उसने स्वीकार किया कि वह बेवकूफ है। सेठानी जी को खाने पीने से कुछ फुरसत मिली तो सेठजी से पूछने लगी—

"यह विकास कैसा लगता है'

'क्या? लड़का तो भला है। आज यह कैसे पूछ रही हो?' सेठानी ने कहा।

सेठानीजी ने उत्तर दिया 'बात तो मेरे दिमाग में कई दिनों से घूम रही थी पर तै न कर पाई थी। विमला के लिए सोचा है कभी?'

सेठजी अचकचाए। वे इसके लिए तैयार न थे। उन्होंने विमला को अभी बच्ची समझ रखा था यद्यपि वह १५ साल पूरे कर रही थी। एक बात और थी जिससे कि विकास को ओर उन्होंने इस दृष्टि से नहीं देखा था। वह यह कि विकास न स्वयं व्यापारी था न उसके घर वाले। केवल पढ़ाई से क्या होता है! वे पुराने ढर्रे के व्यक्ति थे। उसी तरह सोचते। आखिर में कहा 'वैसे तो लड़का देखने में बोलने चालने में अच्छा खासा है। पर इसके घर की हालत मामूली है। मैं तो किसी लखपति लड़के की तलाश में था।

'जी हाँ। क्या लखपति गलियों में घूमते हैं जो मिल जायेंगे। बड़े घरों की बातें। इतना किसका पता लगा होता? क्या और लड़कियाँ नहीं हैं। सेठानी बोली।

'यह तो ठीक है कि इस तरह का सौदा महँगा नहीं पड़ता। पर क्या वह मान जाएगा!'

'मानने न मानने की तो तब मालूम हो जब तुम्हें मंजूर हो। जिस गाँव जाना हो रास्ता उसी का पूछा जाता है।"

"अच्छी बात है। तुम बात करके देखो।" सेठजी ने कहा।

"वाह ? क्या कहने हैं। जसे जाके पूछा और उसने हाँ करली। आजकल की बात बिल्कुल नही जानते। जब तक लडका व लडकी एक दूसरे को पहिचान नही जाते, तब तक वे हाँ वाँ नही करते। समझे ? विमला वैसे समझदार है। उस जरा इजाजत देनी होगी। उधर जाने आने की। तभी कुछ बात बनेगी किन्तु डर भी लगता है। लडकी सयानी है और जमाना बुरा।' सठानी ने शका की।

बात तो ठीक है पर ओखली म सिर देना तो मूसलो स क्या डरना ? लोग तो यो भी बाते बनायगे। सठजी ने आश्वासन सा दिया।

दूसरे दिन सुबह सेठानी जी न विकास के कमरे की ओर झाँका। वह सफाई सी कर रहा था। वह बोली अरे बेटा ? यह सफाई वफाई तुम मर्दों के बश का रोग नही। विमला। अरी विमला। यहाँ आना तो। देख, जरा विकास भैया के कमरे को झाड दिया कर। क्या मेरे कहे बिना तुम्हें नही सूझेगा। यह कोई पराया थोडे ही है कि इससे सकोच करो।'

विमला और विकास सकपकाए। आज हवा का रुख किस ओर है यह वे तै नही कर पा रहे थे। इतने मे विकास ने कहा, नही माताजी ? यह काम ही कितना है ! मैं तो हफ्ते दो हफ्ते म जरा किताबो पर की धूल झाड लेता हूँ। आप कष्ट न करे।

अरे ! इसम कष्ट की क्या बात है ? विमला करती ही क्या है। दिन भर यो ही तो बैठी रहती है। यदि दो मिनट इधर लगा दिए तो क्या उसके हाथ घिस जायेंगे ! विमला ? खडी खडी देखती क्या है ?' सेठानी ने मन म कुढ़ते हुए कहा। उसने सोचा कैसी बेव कूफ लडकी है ! कुछ समझती ही नही।

विमला झाडू लाई और सफाई की। माँ के निर्देशन म कुछ चीजें जो बिखरी थी करीने से रखदी। कमरे का रूप बदल गया था। विकास शर्मिन्दा हो रहा था, किन्तु कम रोके वह कैसे ? उसने धन्य

वाद देन का उपक्रम किया तो सेठानी बोली, अरे ! तुम तो पगले हो। क्या अपनों को भी धन्यवाद दिया जाता है ! और देख विमला ? तुम खुद या कमला आदि म से कोई रोजाना यहाँ सफाई कर दिया करना समझी ना ?"

जी हाँ ?" विमला ने धीरे स उत्तर दिया। मन म वह प्रसन्न थी। बहुत प्रसन्न।

दूसरे दिन से विमला रोज सुबह आती। कभी कभी छोटी बहनो म स भी कोई साथ आ जाती किंतु विमला उन्हे डाट देती, "नही किताबें फाड डालेगी। चल एक तरफ हट।" वह अब इस काम मे अपना एकाधिकार समझती थी। बीच की दस्तदाजी उस अच्छी नहीं लगती थी। कभी कभी हिन्दी की कोई पुस्तक देखने लग जाती तो विकास कहता 'ले जाओ। पढ़कर लौटा देना। विमला किताब लौटाती तो विकास पूछ लेता— क्या कमी लगी ?' 'अच्छी' वह कहती। उसे कुछ पूछना होता तो पूछ भी लेती। थोडे ही दिन में विकास की हिन्दी की सभी पुस्तकें उसने पढ डाली। विकास को पता चला तो लाइब्रेरी से पुस्तकें लाकर देने लगा। उपन्यास, कहानी संग्रह व आत्मकथायें। विमला का मानसिक विकास स्पष्टत दिखाई दे रहा था। उसके माता पिता यह जानकर प्रसन्न थे कि विकास उनकी पुत्री का बहुत ख्याल रखता है।

६

मि सक्सेना ने पार्टी देने का निश्चत किया था। बेटी की सफलता के उपलक्ष्य में। सच ही वे प्रसन्न हुए थे। मिसेज सक्सेना ने भी बेटी को दुलराना चाहा था पर वह 'थक्यू ममी' कहकर उठ गई थी। ड्राइंग रूम में एक अखबारों को उसने तरतीबवार जमा दिया। उन सबमें बेटी का फोटो छपा था। परिवार के बारे में भी कुछ हलका सा संकेत था। उसके गायन की तो बहुत ही प्रशंसा की गई थी। विकास की तुलना में कुछ अधिक ही।

मिसेज सक्सेना कह रही थी—'तूने मेरे बारे में कुछ भी नहीं कहा। यदि मेरे अभिनय-कौशल के बारे में बता देती तो वे मेरा भी फोटो छापते। मेरी भी प्रशंसा करते। पर तुझे अपनी मम्मी की याद क्या आने लगी? सफलता के नशे में तुझे यह सब करने का ध्यान ही कहाँ रहा होगा?

बेटी ने उत्तर नहीं दिया। 'सारी' अवश्य कहा, जो मिसेज सक्सेना के गले नीचे उतरा ही नहीं। वह कुढ़कर अपने कमरे में चली गई। बेटी वहीं ड्राइंग रूम में अकेली बैठी रही। एक शो पीस की तरह। फिर पत्र लिखने बैठी—

डियर सत्येन्द्र

यह मेरा पहला पत्र है। लिखा था भी। यह भी इसलिए कि तुम्हें कुछ सूचना देनी थी। तुमने कहा था—संगीत सीखूँ। तो सीखना शुरू कर दिया है। मानना तो बहुत है और सागर बहुत ही कम है। जो कुछ सीखा है उसका कुछ श्रेय सत्संग अग्नि

से मिलेगा।

उपलब्धि बडी नही थी। पर थी अवश्य। बडी उपलब्धि की दिशा में एक पडाव। खुश होना चाहती हूँ। पर भय लगता है कि खुशी मुझे अपने पडाव पर ही न रोक ले।

तुम भी खुश मत होना। मेरी तरह प्रतीक्षा कर लेना। एक बड़ी उपलब्धि के लिए। एक बडी खुशी के लिए। करोगे ना?

तुम्हारी जो है,
कटी"

पत्र के साथ अखबार की एक कटिंग नत्थी की और लिफाफे में बंद करके लेटर-बॉक्स मे डलवा दिया। फिर उसने गेस्ट्स की लिस्ट उठाई और नाम पढने लगी। तभी उसे विकास का ध्यान हो आया। उसने विकास को कभी आने को कहा था। तो आज ही क्या नहीं इन्वाइट कर आऊँ?

उसने नीचे आफिस मे जाकर डैडी से पूछा। उन्होंने स्वीकृति दे दी। तब उसे खयाल आया कि वह विकास का घर तो जानती ही नही। वह पूछना ही भूल गई थी। उसने स्वय बताया भी नही। तो अब क्या हो?

कटी ने विकास के कॉलिज में फोन करके उससे बात करवाने को कहा। उत्तर मिला—कल की सफलता के उपलक्ष्य म कालेज की छुट्टी है। कटी को बडी झुझलाहट हुई। उसने सारे अखबार उठाकर पन्ने धुम दिये। एक अखबार मे लिखा था— बडा बाजार कलाकार स्ट्रीट, बिल्डिंग का कोई कमरा "

कटी ने कार निकाली और बडा बाजार की ओर चल दी। कलाकार स्ट्रीट की गलियो मे उस बिल्डिंग को ढूँढना बहुत कठिन सिद्ध हुआ। डेढ घटे की मेहनत बेकार गई थी। चक्कर लगाते लगाते थक भी गई थी। प्यास इतनी थी कि सामने लगे नल से ओक लगा कर पानी पीने लगी। उसकी स्कर्ट इस प्रक्रिया म भीग गई। तब तक चारो ओर एक छोटी सी भीड तमाशा देखने एकत्र हो गई थी। उस

गली में इतनी गाड़ी पहली बार आई थी और उसमें बठने वाली एक भागुनिका को बम्बे पर पानी पीते भी पहली बार देखा था।

'आप किन दूँढ़ रही हैं ?' पूछा वाली विमला थी, जो घर के भीतर से अभी अभी निकलकर आई थी।

मैं विकास को। बिल्डिंग में रहते हैं घसारर स्ट्रीट'। रोते रोते को हो आई कटी।

विमला चौंक गई। कटी को पहचानने में भूल नहीं थी। चीखना से बोली— यहाँ इस नाम की कोई बिल्डिंग नहीं है यह कहते कहते वह हाँफ सी उठी। चारों ओर खनकीयों में देखा कि उसकी चोरी पकड़ तो नहीं ली गई।

मोहन पास खड़ा था। यह बोला— दीदी ? अपने यहाँ भी तो विकास भया रहते हैं ना। उन्हीं को तो वह पूरी बात नहीं कह पाया। विमला ने आँखें तरेरकर उसे चुप कर दिया था।

कटी समझ गई। उसने मोहन को सम्बोधित करते हुए कहा—

भया ! जाओ विकास को बुला लाओ। मैं उन्हीं को ढूँढ़ रही हूँ।

मोहन अपनी बड़ी बहिन की ओर देखता हुआ घर के भीतर भाग गया। लौटा तो विकास साथ था। उसने भीड़ देखी और विमला का रुख भी। एक दो ढीठ लड़के तो कार के भीतर बठे हुए भी दीखे। वह क्षणभर के लिए ठिठका। करणीय उसे नहीं सूझा तो कटी के पास जा पहुँचा—

'कैसे आना हुआ कटी ? और ये कपड़े कैसे भीग गये ?

या ही। बम्बे पर पानी पिया था। बड़ी प्यास लगी थी। किसी तरह कटी ने उत्तर दिया। चाहती थी रो पड़े। पर अपने ऊपर जब्त किया किसी तरह।

'भीतर चलो न। वहाँ ठंडा पानी कोका वाला या चाय ले लेना।' विकास के प्रस्ताव में अधिक उत्साह नहीं था।

किंतु कटी उसके साथ चलने को तयार हो गई। अब विकास के

सामने विकल्प नहीं रह गया था। आगे आगे विकास। पीछे कटी।' उसके बाद पैर घसीटती सी विमला। विमला स्वयं को एक्सपोज होते देखकर कट गई थी। किंतु बोलने का अवसर नहीं था। विकास और कटी कमरे में जा बैठे तो वह दरवाजे पर ठिठक गई। विकास ने उसे भीतर बुला लिया।

कमरे में कुर्सी एक थी। उस पर कटी बैठ गई। विकास ने चारपाई पर विमला को बैठने को कहा और खुद टेबल का सहारा लेकर बैठ गया। कटी कमरे का निरीक्षण कर रही थी। उसे ज्योतिमा के कमरे का स्मरण हो आया। उसकी तुलना में यह कमरा फिर भी ठीक था। कम से कम अकेले व्यक्ति के लिए।

उसने विकास से पूछा—" विल्डिंग का नाम कोई नहीं डेढ़ घंटे से ढूँढ रही थी।"

विकास सकपकाया। फिर बोला—"यह नाम आपको किसने बताया?'

'अखबार में छपा था। यह देखो।" कटी ने कटिंग दिखाई।

किसी ने यों ही छाप दिया। मैंने तो ऐसी कोई विल्डिंग विल्डिंग का नाम नहीं लिया था।"

कटी को लगा—विकास सच नहीं कह पा रहा है उसने रिपोर्टर को रोब के लिए यह नाम दिया होगा। वर्ना कलाकार स्ट्रीट भी क्यों बताता! फिर भी उसने विकास की बात नहीं काटी।

'आज शाम को मेरे यहाँ पार्टी है। डैडी ने आपको लाने के लिए मुझे भेजा है। कटी ने औपचारिक होते हुए कहा।

पार्टी में? विकास सकपकाया। 'ना बाबा ना। मैं पार्टी वार्टी में नहीं जाता। कभी नहीं गया। एक्सक्यूज मी प्लीज।

'नहीं। आपको चलना होगा। यह मेरा अनुरोध है।

विकास को हाँ करनी पड़ी। उसने कहा वह समय पर पहुँच जायगा। कटी ने पुनः वायदा करवाया और कहा—'आप नहीं आये तो मुझे यहाँ आना होगा। लेने के लिए। और विकास निरुत्तर हो

बया था।

तब विकास की प्रतिष्ठा का ध्यान आया। उसने विमला को कहा—"चाय बना लाओ।" वह तमक्कर उठी और भीतर जाकर एक ही मिनट मे लौट आई—"दूध नहीं है।"

कटी उठ गई। बोली—'चाय वाय रहने दो। फिर कभी आकर पी लूँगी। अब तो घर जाना गई हूँ। ~ हाँ ? शाम को ५ बजे आना है। याद रखियेगा ५ बजे।"

जिस उत्साह से आई थी, उतना उत्साह लौटते म नहीं बचा था। भीतर कही पर कुछ ठेस लगी थी। हलकी सी। पर ठेस तो लगी ही थी। घर पहुँचकर वह सोफे पर गिर पड़ी थी। बहुत देर तक या ही पडी रही। वह सोच रही थी—उसे नहीं जाना था वहा। विकास झूठ बोला था—बिल्डिंग के बारे मे। विमला झूठ बोली थी विकास के बारे मे और दूध के बारे म। और वह भागती हुई गई थी वहाँ। कोई पूछे—क्यो गई थी कटी ? तो क्या उत्तर है उसके पास ?

कटी निरुत्तर थी। वह बाथ रूम म जाकर शावर के नीचे खडी हो गई। उसने आँखें बंद कर ली। पानी ऊपर गिरता रहा। नीचे की ओर बहता रहा। और उसका तनाव धीरे धीरे पिघलता गया।

वह बाथ रूम से बाहर आई तो सहज हो चुकी थी। कपडे बदलकर छत पर पहुँची। वहाँ उसके डैडी और ममी पार्टी की तैयारी म लगे थे। वह भी हाथ बँटाने लगी। पार्टी का टाइम हो जाने पर वे तीनो मेहमानो को रिसीव करने के लिए फ्रंट के बरामदे म खडे हो गये। हाउडु'और थैंक्यू आदि का शोर शुरु हो गया और आधा घंटे तक चलता रहा।

विकास अभी नही आया था। मि सक्सेना को इसका अहसास था। वे बार बार कटी की ओर निगाह डालते और उसे उदास होते देखकर मुह फेर लेते। वह समझ नही पाये—एक सामान्य से युवक के लिए वह क्यों परेशान है। वे जानते थे यह युवक मर्येश का स्थानापन्न नही हो सकता।

"डैडी ! मैं नीचे जा रही हूँ' कटी उकताकर बोली । शायद नीचे जाकर एकांत में रोना चाहती थी ।

"हाँ । जाओ । नीचे देखलो । शायद विकास को ऊपर का मार्ग नहीं मिल पाया ।"

सत्य ही विकास नीचे खड़ा मिला । लिफ्ट के सामने । शायद तै नहीं कर पाया था कि ऊपर जाये या न जाय । उसने बड़े बड़े लोगों को ऊपर जाते देख लिया था । बड़ी बड़ी कारों में आने वाले । कीमती सूट बूट में और तौर तरीका में बिलकुल टिपटाप । वह इन लोगों के मध्य खड़ा होने से घबरा रहा था । घर लौटने में कटी की निराशा का ख्याल था । दो में से एक स्थिति का चयन उसे करना था और क्षुब्ध फिर भी होना था ।

कटी ने उसे उबार लिया । अब उसे स्वयं चयन करने की बाध्यता नहीं थी । कटी ने ही बुलाया था । कटी ही तै करेगी । अब उसमें मनोबल आ गया था । वह कटी के बोलने की प्रतीक्षा करने लगा ।

मि विकास ! ऊपर चलिये । यहाँ क्या खड़े हैं । पार्टी शुरू होने वाली है । मैं तो निराश हो चली थी कि आप नहीं आयेंगे । कटी ने दुःख सा प्रगट किया ।

विकास बोला नहीं । बस कटी के साथ हो लिया । ऊपर पहुँचे तो पाया कि कटी की प्रतीक्षा हो रही थी । मि सक्सेना ने विकास से हाथ मिलाया और कटी के साथ साथ विकास का भी परिचय मेहमानों को देने लगे । मेहमानों ने विकास के प्रति पूरी भद्रता दिखाई, किंतु कटी के साथ ही वे निकटता-प्राप्ति की कोशिश में लगे थे । विकास ने बहुत चाहा कि इस अंतर की ओर ध्यान न दे । पर वह सफल नहीं हो सका । उसके चेहरे पर मुर्दनी सी छाने लगी । वह मेहमानों के बीच स्वयं को अलग इकाई बनाए रहा । अरब देशों से घिरे इजराइल की तरह । मि सक्सेना बीच बीच में वह जाते—सन्देश या राजभोग आदि लेने के लिये । विकास उनका मन रखने के लिए एक आध पीस उठा लेता । कटी

ने बहुत चाहा कि उधर आये, पर मेहमान उसे चारों ओर से घेरे थे। वह बार बार विकास से नजर से नजर मिलाने का प्रयत्न कर रही थी, किंतु विकास आत्म केन्द्रित सा एक ओर खडा था। अकस्मात् उसका ध्यान कटी की ओर गया। दोनों की दृष्टि मिली। विकास ने उसकी विवशता पहचानी। किन्तु इससे कटी और स्वयं के मध्य की दूरियाँ बढी ही। घटी नहीं।

पार्टी समाप्त हुई तो मेहमानों का प्रस्थान शुरू हुआ। मि और मिसेज सक्सेना तथा कटी को पुन द्वार पर खडे होकर विदा करना पडा। 'थक्यू' और 'माइ प्लेयर' की झडी लग गई। सब कुछ औपचारिक। सब कुछ निरर्थक। विकास खडा रहा। जैसे उसे जाना ही न हो।

आखिरी मेहमान के जाने पर कटी और मि सक्सेना उसके पास आये। मि सक्सेना ने दो चार औपचारिक वाक्य कहे और फिर कटी को वहाँ छोडकर भीतर चले गये। मिसेज सक्सेना ने विकास को लिफ्ट नहीं दिया।

कटी ने क्षमा याचना करते हुए कहा— यू वेयर बोर्ड मि विकास ? आय एम सारी फार स्टेइंग अवे। माइ पार्ज टेरिब्ली एन्सर्किल्ड।

'मैंने देखा था मिस कटी ? आपका कोई कुसूर नहीं। कुसूर मेरा था कि मैं उस वृत्त में खडा नहीं हो सका। काम्प्लेक्स ही मानता हूँ अपना। विकास के कथन में सत्य का पर्याप्त अंश था। किन्तु इसके पीछे कटु अनुभूति छिपी थी। काम्प्लेक्स के बीजाणुओं की व्याख्या भी वहाँ उपस्थित थी।

आपको उधर आना चाहिये था। कई बार आपको जिक्र भी आया पर आप एक ओर ही खडे रहे। कटी ने शिकायत की।

'यही तय था। इसीलिए उधर न आ सका। विकास ने पहले वाला कारण दुहरा दिया।

'चलिये कुछ देर ऊपर छत पर टहलें,' कटी ने प्रस्ताव किया।

विकास घर लौटना चाहता था, किंतु कटी का दिल दुखाने की इच्छा न हुई। वह कटी के साथ छत पर चला आया। ठंडी ठंडी हवा और चारों ओर फैला महानगर। विकास ने पहले कभी इतनी ऊंचाई से कलकत्ता नहीं देखा था। अंधेरा तब तक छा गया था और रात्रि नगर ने आँखें खोल ली थीं। बल्ब, ट्यूब लाइट, सर्चलाइट और हैडलाइट की आँखें। अंधेरे में सब कुछ देखने की अभ्यस्त आँखें। अपनी और पराई आँखें। और आँखों के देखने के लिए क्या कुछ नहीं था वहां पर? बड़े बड़े होटल। रेस्तोरां। न्यू मार्केट। सजी हुई दुकानें। सजे हुए फुटपाथ। और फुटपाथ से गुजरती सजावटें। प्रसाधनों का उत्ताप। आकर्षण के प्रयास। स्मगलिंग का माल। ब्लैक की कमाई। नो नंबर का पैसा।

रात्रि नगर के अस्तित्व की सुरक्षा के लिए यह सब कुछ आवश्यक था। अपरिहार्य रूप से आवश्यक। जनता इसमें सहयोग दे रही थी और सरकार आंख खाने दल रही है। देखकर भी अनदेखा कर रही है। देखने की उसे अभिलाषा नहीं। सड़कों पर चलती कारें, बसें और मानव इस ऊंचाई से कितने छोटे नीव रहे हैं। बिल्कुल लिलिपुटियंस की तरह। थोड़ी देर में वह भी इनमें शामिल हो जायगा। पर यह छत यहां रहेगी। कटी, उसके डैडी और मम्मी यहीं खड़े होकर लघु मानव को देखते रहेंगे।

काफी देर पास खड़े रहकर भी दोनों चुप रहे थे। बातचीत के लिए जैसे कोई आधार ही नहीं था। शिष्टता के निर्वाह का विचार भी इस मौन को तोड़ नहीं सका।

विकास ने अचानक जाने की अनुमति मांगी और कटी उसे रुकने को नहीं कह सकी। वह विकास को नीचे तक पहुंचाने आई। उसने विकास से पूछा— जायेंगे कैसे?" विकास ने चलता उत्तर दे दिया था— चला जाऊंगा किसी तरह। बस, ट्राम या रिक्शे से। आप चिंता न करें।

किंतु कटी ने चिंता की थी। वह जानती थी, इस समय सवारी

का मिलना कठिन है। देर जो हो गई थी। उसने कार निकाली और विकास को उसमें बैठना पड़ा। उसके सारे कथन, सारे विरोध विफल रहे। वह जानता था—ये सब कथन और विरोध मात्र औपचारिकता के लिये हैं। वर्ना तो उसे पैदल ही जाना पड़ता। टैक्सी का पैसा खर्च करने की उसकी सामर्थ्य थी नहीं।

कार में वह सिकुड़ा सा बैठा था। चौरंगी पर चलते हुए उसे इसीलिए लगा कि वह भी कुछ हस्ती रखता है। छोटा कार का पैदल चलने वाला पर उसे हिकारत अनुभव हो रही थी और मार्ग को रुद्ध करने वाले ठेला, ट्रकों और रिक्शाओं पर उसे गुस्सा आ रहा था।

कटी स्पीड से कार चला रही थी। किंतु हाथ सधे थे। विकास संचालन के इस कौशल को देख रहा था। एक आध बार किसी व्यक्ति को कार के आगे आते देखकर वह सहम सा गया था। कहीं कुचल न गया हो। फिर तो बड़ी आफत हो जायेगी। कलकत्ता की पब्लिक इस मामले में बड़ी बेरहम है। वे छोटा बड़ा या स्त्री पुरुष कुछ नहीं देखते। कार-वालों से तो उन्हें असीम घृणा होती है।

पर ऐसी नौबत नहीं आई। कटी धैर्य और कौशल से कार चलाती रही। बड़ा बाजार शुरू हो गया और फिर कलाकार स्ट्रीट आ गई। विकास ने यहीं उतर जाने की इच्छा व्यक्त की। वह सारे मोहल्ले में नक्कू नहीं बनना चाहता था। विमला का भी ध्यान था। दोपहर को कितना परेशान हो गई थी।

कटी ने कार रोक दी। विकास ने उतरकर कटी को धन्यवाद दिया और कटी ने अपने फर्ज की बात कही पुनः दर्शन देने लेने की औपचारिकता भी निभाई गई और फिर कटी ने कार स्टार्ट कर दी। कार चल पड़ी किंतु विकास खड़ा रहा। कटी मोड़ आने तक मिरर में देखती रही। विकास अब भी लैंप के नीचे खड़ा था बेचारा?

भाग्यलेख का कोई क्या करे! कटी उसे दयनीय तो मानती थी किन्तु दोषी भी। व्यक्ति यदि प्रयत्न कर तो हीनभावना से मुक्त हो ही सकता है। प्रयत्न ही नहीं करेगा तो इस हीनभावना और हीनग्रंथि

से मुक्त कैसे हो पायगा। उसने तो आज विकास को पूर्ण अवसर दिया था। ऊँची सोसायटी में ले गई थी। बड़े बड़े लोगों से मुलाकात भी करवाई। इसके बाद तो विकास का ही फर्ज था कि वह उनसे मेल बढ़ाए। सब न सही, किन्तु कुछ लोगों से तो वह बातचीत कर ही सकता था। बस प्रारम्भ करने की जरूरत है। और प्रारंभ भी क्या! यों ही मौसम के बारे में कुछ कहा नहीं कि कला, सभ्यता, ज्ञान, राजनीति, व्यापार, सिनेमा और गेसप आदि तक पहुँचते देर नहीं लगती। बस समय कट जाता है। लोग समझते हैं—उनका व्यापक अध्ययन है। इसके लिए अध्ययन विशेष नहीं सामान्य ज्ञान की दो चार बातें चाहिये। सफल होना है तो इतना कुछ तो करना ही चाहिये। वर्ना बने रहो अन्तर्मुखी और भुगतते रहो कूप मण्डूक की कुण्ठायें।

रानी को बड़ी निराशा हुई थी। वह नहीं समझती थी, विकास इतना अन्तर्मुखी और हीनभावना से ग्रस्त होगा। उसने तो प्रयास ही नहीं किया। मेहमानों की छोड़ो वह तो घर पर उनमें भी नहीं बोल पाया था। कुछ नहीं तो संगीत की ही चर्चा करता। कॉलेज के बारे में ही कुछ कहता। और कुछ नहीं तो   ।

यहाँ आकर रुक गई। उसे आश्चर्य हुआ कि वह विकास से यह अपेक्षा भी रखती थी। साथ ही एक विचार विद्युत रेखा की तरह मस्तिष्क को चीर गया—वह स्वयं विकास से बात क्या नहीं कर पाई! और मेहमानों से तो वह घण्टों बात करती रही। किन्तु विकास के पास तक नहीं फटकी। क्या सच ही वह उस वृत्त को नहीं तोड़ सकती थी? क्या चाहने पर भी नहीं?

उसे अपना अपराध समझ में आ गया। तो उसने विकास की हीनभावना को प्रबलता दी थी, न कि मिटाने में सहायता। उसने स्वीकार किया कि वह विकास के साथ अन्याय कर रही थी। एक क्षण पहले उसने विकास का नाम स्ट्राइक आफ (Strike off) करने की सोची थी। पर अब! नहीं।

७

सत्येन्द्र का टेलिग्राम आया था। कटी के नाम—

"कांग्रेच्यूलशस वेटिंग एवर

सत्येन्द्र"

कटी मुदित हो उठी थी। कोई उसकी प्रतीक्षा कर रहा है उसकी उन्नति की। उत्तर की उसने डैडी को बताया कि सत्येन्द्र का तार आया है। बधाई का। सुनकर उसकी ममी के कान खड़े हुए थे। 'यह सत्येन्द्र कौन है!' उसने कटी से जानना चाहा। उसे सत्येन्द्र के बारे में न मि. सक्सेना ने बताया था न ही कटी ने।

अब भी कटी चुप रही थी। मि. सक्सेना ने भी इतना ही कहा—बम्बई का एक परिचित है। पर वे पत्नी की जिज्ञासा को शान्त नहीं कर सके। मिसेज सक्सेना ने कटी से कहा—'ला, टेलिग्राम देखूं। एक बार तो कटी ने सोचा कि न दे। फिर माँ का मूड कहीं बिगड़ न जाय यह सोचकर तार सौंप दिया।

फिर तो हंगामा मचा दिया मिसेज सक्सेना ने। यह वेटिंग एवर का क्या चक्कर है उसने जानना चाहा था। पति या पुत्री से उत्तर न मिलने पर तो वह और भी बिगड़ी—

बाप बेटी मिलकर खुराफात करते रहते हैं। पकड़े जाने पर बेनाम होकर चुप्पी धारण कर लेते हैं। मैं पूछती हूं अपनी बेटी के भविष्य के बारे में जानने का मुझे कोई अधिकार है या नहीं? क्या बाप बेटी मिलकर अकेले ही सब निर्णय कर लेंगे? मुझसे कोई पूछेगा तक नहीं। मुझे यह तक नहीं बतायेंगे कि किससे और कहाँ

पर कोई चक्कर चल रहा है । मैं इसकी माँ थोडे ही हूँ कोई बैरन हूँ । यह छोकरी भी मुझे चराने चली है । मैं इसकी रग रग से वाकिफ हूँ । नौ महीने पेट मे रखा । इत्ती सी थी, तब से पाला । बडा किया । और यह भी अब मुझे घिस्सा देने चली है । अब मैं भी देख लूँगी । बहुत दिन चुप रही । अब नही रहूँगी ।"

और वे रोने लगी थी । फिर कपडे फाडने शुरू कर दिये और अपने बाल भी नोचने लगी । नौकरो के कान खडे हो गये थे । और मि सक्सेना तथा करी चुप थे ।

आखिर मि सक्सेना ने पूछा—"आज यह नाटक क्यो कर रही हो ? मैंने तो वक्त मे तुम्हे मुक्त कर दिया था । पर तुम अब तक चिपटी हो । और तुम्हे कई बार समझा भी चुका हूँ । जो चीज तुम्हारे लायक की न हो, उसमे हस्तक्षेप न किया करो । मुझे बताओ क्या है इस तार मे ? करी ने कोई पत्र डाला होगा और उसने बधाई भेज दी । रही बात वेटिंग एवर की । तो इस बारे मे मुझे तो कुछ पता है नहीं और न मैं बेटी से पूछने को तैयार हूँ । इसकी भी तो कोई प्राइवेसी हो सकती है । उसमे झाँकना माँ-बाप को शोभा देता है क्या ? मान लो यह सत्येन्द्र से लव करती है और वह इसकी चिर प्रतीक्षा करने को तैयार है । तो इसमे क्या बुराई है ? क्या कोई युवा लडकी किसी को लव नही कर सकती ? क्या तुमने कभी लव नही किया ? विवाह से पूर्व या बाद ।"

आखिरी वाक्य सुनकर उनकी पत्नी स्तब्ध रह गई । उनका रोना धोना बद हो गया । उसने पति की ओर घायल सिंहनी की तरह देखा और फिर हिकारत के स्वर मे कहने लगी—

'तो अब तुम मुझे जलील करोगे ? और वह भी जवान बेटी के सामने । तुम्हे शर्म नही आई ऐसी कहते हुए ? तो तुम्हारी निगाह मे मेरी यह इज्जत है । हूँ ... शादी से पहले और शादी के बाद । गोया मैं इज्जतदार स्त्री नही कोई वेश्या हूँ ... पहले पूर्व । बेटी के सामने मुझे नगा कर दिया और सोचते हो कि

इससे तुम मुक्त नहीं हुए हो""   "यह तुम्हारा भ्रम है । मैं तुम्हें दिखा दूँगी कि स्वाभिमानी स्त्री क्या कर सकती है"—— —

और उसने साड़ी उतार कर फेंक दी । पेटीकोट उतार कर भी तो फेंकी । फाड़ कर मारे दूसरे कमरे में चली गई । वहाँ से उसने डाइंग रूम का दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुनी और फिर ""...? सटाक । धीमे   सिसकने   जैसी   आवाज़

"...फिर भी छोड़ोगे ...?" ... ।   और फिर धीरे धीरे आवाज़ें कम होती गई थीं   ।

बन्नी औंधे मुँह पलंग पर पड़ी रही । यह सिलसिला कब से चल रहा था उसे पता नहीं था—जैसा कभी कभी पढ़ेगी । यह भी अकारण । वह माँ को जानती है । ... । ... भी " । उसे आश्चर्य हो रहा था—डैडी की ममी के प्रति कोई माँ इतनी सहानुभूतिपूर्ण कैसे हो सकती है । उसने तो कभी माँ के प्रति अभद्रता नहीं दिखाई । कभी किसी किसी तरह परेशान नहीं किया । फिर भी माँ प्रसन्न नहीं होती । कभी प्रसन्न होते देखा नहीं । उसने विरोध करती है । क्रोध करती है । समझती तो है ही नहीं । समझाने पर भी नहीं । डैडी भी न समझें तो न जाने क्या हालत होती !

डैडी की आवाज़ सुनी तो बन्नी उठ बैठी । उन्होंने बताया—"पास वाले थाने के सुपरिंटेंडेंट को फोन किया है । कोई आता ही होगा । वहाँ भेजे बिना काम नहीं चलेगा ।'

बन्नी सन्न रह गई थी—पर डैडी । ममी पागल थोड़े ही हैं । उन्हें तो गुस्सा आ जाता है और फिर रोने लगती हैं । तो डैडी ? नो

अधिक गुस्सा और असीम बकवास भी पागलपन का ही एक रूप है । इसकी चिकित्सा करवानी पड़ेगी ।' उन्होंने सहसा गंभीर होकर कहा । उनके स्वरों की निर्णयात्मकता भी बन्नी से छिपी न रही ।

थोड़ी देर में दरवाज़े की घंटी बजी थी और मि. सक्सेना ने उनसे अकेले में बातचीत की थी । उनसे यह भी कहा कि ५-७ आदमियों के

बिना पागल को कट्रोल करना मुश्किल है। इस पर दो तीन सहायक और बुला लिये गये।

डाइंग रूम खोला तो पाया कि मिसेज सक्सेना बेहोश पड़ी थीं।

मि सक्सेना ने बताया— पागलपन के दौरे की थकावट में ये बेहोश हो जाया करती है। आज का दौरा तो बहुत ही भयंकर था। इसीलिए तीन घंटे से बेहोश पड़ी है।' मि सक्सेना ने उन पर एक बेडशीट डाल रखी थी।सुपरिंटेंडेंट बेहोश पड़ी मिसेज सक्सेना को देख रहा था। उसके आगे भ कभी कभी फुरहरी सी उठती थी, मानों दौरे का प्रभाव अभी नि शेष नहीं हुआ था। उन्होंने अपने आदमियों को मिसेज सक्सेना के चारों ओर खड़ा कर दिया। सावधान की मुद्रा में। फिर मि सक्सेना से कहा कि पानी के छींटे देकर श्रीमतीजी को होश में लायें।

थोड़ी ही देर में उन्हें होश आ गया। धीरेधीरे आँखें खोलीं और स्थिति को समझने की कोशिश की। फिर एक झटके से खड़ी हो गई। उसके वस्त्र फटे हुए थे। ब्लाउज पेटीकोट भी। मि सक्सेना के अलावा सबने मुँह फेर लिया।

मिसेज सक्सेना चिल्लाईं— यह सब क्या है? मि सक्सेना ने कहा— ये तुम्हें ले जाने आये हैं? क्या? मैंने क्या किया है? पर यह कहते कहते उनकी नजर अपने ऊपर गई तो झट से बेडशीट उठा कर लपेट ली। चारों ओर देखकर।

मि घोष! अब आप इन्हें ले जा सकते हैं मि सक्सेना ने शांति से कहा तो वे पुन मिसेज सक्सेना की ओर मुखातिब हो गये। उनके सहयोगी भी।

'चलिये मिसेज सक्सेना? मि घोष बोले।

'कहाँ चलना है? मिसेज सक्सेना भयभीत सी थीं।

आप बीमार हैं ना? अस्पताल चलना है।

'बीमार! बीमार कौन है? मुझे कोई बीमारी नहीं है। फिर वह पति की ओर मुड़ी। क्या! मुझे कहाँ भेज रहे हो! मुझे क्या

बीमारी है !

'अस्पताल जाने पर ही डायग्नोसिस हो पाएगा। और मि [illegible] ही बता सकेंगे कि क्या बीमारी है। मैं क्या कह सकता हूँ।'

[illegible]

मैं बीमार नहीं हूँ। मुझे [illegible] नहीं जाऊँगी। [illegible] रहूँगी। वे चिल्ला [illegible] थी।

मि सक्सेना ने इशारा किया तो मि घोष [illegible]। उन्होंने मिसेज सक्सेना के कंधे पर हाथ रखा तो वह उन पर झपट पड़ी थी। नर्स [illegible] ने डाला उन्हें। किन्तु तब तक मि घोष के सहायक ने मिसेज सक्सेना को इंजेक्शन दे दिया था। वे [illegible] चिल्लाती जा रही थी। रो भी रही थी पर स्वर [illegible] दूसरे [illegible] सकती थी। उन्हें सारा और से [illegible] किया गया था। एक साड़ी और ब्लाउज [illegible] पहना भी दिया गया था।

जब उन्हें ड्राइंग रूम से बाहर लाया गया तो जम उनकी आँख खुल गई। वे स्थिति की गंभीरता को समझीं तो बोलीं—

मि घोष ! आप पागलखाने तो नहीं ले जा रहे हैं मुझे !'

उसे हम अस्पताल कहते हैं मिसेज सक्सेना !

वह तो मैं समझ गई। आपसे एक बात कहना चाहती हूँ। मैं पागल नहीं हूँ। मिस्टर सक्सेना और [illegible] मिलकर मुझे यहाँ से रफा-दफा करना चाहते हैं। आप शायद इनके षड्यंत्र को समझ नहीं पा रहे हैं। मिसेज सक्सेना नम्र हो उठी थी।

नहीं मिसेज सक्सेना ? मैं खूब समझता हूँ। आपने जिस दयालुता से मुझे नोचा है वह भी समझता हूँ। अब आपसे प्रार्थना है कि आप शान्ति से हमारे साथ चलिए। ताकि हमें बल प्रयोग न

करना पड़े।'

मिसेज सक्सेना निरुपाय खड़ी रहीं। वह जान गई कि अब तक या अनुरोध व्यर्थ है। उसने पहले तो पति की ओर देखा। फिर बेटी की ओर। फिर बेटी को कहने लगी—

बेटी? तुम मुझे पागल समझती हो?"

नहीं मम्मी!'

तो फिर यह क्या हो रहा है? तुम विरोध क्यों नहीं करती हो? बोलो। मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए बेटी? मुझे वहाँ जाने से रोको। वहाँ पहुँच गई तो अवश्य पागल हो जाऊँगी। न भी हुई तो मेरे लिए तुम्हारी का कोई अर्थ नहीं रह जायगा। बेटी? मुझे छुड़ाओ।। तुम्हारा अहसान मानूँगी बेटी? मैं यहाँ से चली जाऊँगी। दूर मेरा के लिए। आप बेटी को परेशान करने कभी नहीं आऊँगी।' वे हाथ जोड़ने लगी थीं।

म्मी सोच रहा सकी—क्या करे? उसे माँ की स्थिति अत्यंत करुण लगी तो मि सक्सेना के पास गई और उनकी आस्तीन में चिपटकर कहने लगी—

डैडी! तुम इतने निष्ठुर। लेट हर गो [illegible] अपने पास अब [illegible] " मिस्टर सक्सेना अपनी बेटी के अनुरोध पर दयार्द्र न उठे थे। सुपरिंटेंडेंट से कष्ट के लिए क्षमा प्रार्थना की थी और वे अपने ड्राइवर के साथ चले गए थे।

मि सक्सेना ने पत्नी से कागजात पर हस्ताक्षर करवा लिये और फिर उनका दरभंगा (उनकी बिहार) भेज दिया। वहाँ उनकी समुचित व्यवस्था भी करा दी। जाते जाते मिसेज सक्सेना रो पड़ी थीं, [illegible]।

उन्हें गाड़ी पर बैठाया गया था। मि सक्सेना उन्हें उधार नहीं हो पाये। वे कमरे में भीतर से दरवाजा बंद करके बैठ गये थे और पत्नी की सिसकियाँ और क्षमा प्रार्थना सुनकर भी बाहर नहीं आये थे। निरुपाय मिसेज सक्सेना चली गई थीं।

बीमारी है।"

'अस्पताल जाने पर ही डायग्नोसिस हो पायेगा। और मि घोष ही बता सकेंगे कि क्या बीमारी है। मैं क्या कह सकता हूँ!'

पर मुझे तो कोई शिकायत नही है। फिर डायग्नोसिस किसी चीज का होगा' उनके स्वरों म आवेग आने लगा था।

श ो त ी भी शि यत न ी भी होती। पर घ वालो को हानि ह। इसलिए तुम्हे अस्पताल भेज रहे हैं।

'मैं बीमार नही हू। मुझे कोई शिकायत नही है। कहीं नहा जाऊँगी। य ी रहूँगी तुम्हार सीने पर मूंग दलती रहूँगी। वे चिल्ला रही थी।

मि सक्सेना ने इशारा किया तो मि घोष आगे बढ़े। उन्होंने मिसेज सक्सेना के कंधे पर हाथ रक्खा तो वह उन पर झपट पड़ी थी। कई जगह नोच भी डाला उन्हे। किंतु तब तक मि घोष के सहायकों ने मिसेज सक्सेना को मजबूती से पकड़ लिया था। वे जोर जोर से चिल्लाती जा रही थी। रो भी रही थी पर स्वय का या किसी दूसरे का नही पहचान सकती थी। उन्हे चारों ओर से जकड़ लिया गया था। एक साड़ी और ब्लाउज लाकर पहना भी दिया गया था।

जब उन्हे ड्राइंग रूम से बाहर लाया गया तो जैसे उनकी आंख खुल गई। उन्होंने स्थिति की गंभीरता को समझी तो बोली—

मि घोष! आप पागलखाने ले जा रहे हैं मुझे!

उसे हम अस्पताल कहते हैं मिसेज सक्सेना!

वह मैं समझ गई। आपको एक बात कहना चाहती हूँ। मैं पागल नहीं हूँ। मिस्टर सक्सेना और उनकी मिस्ट्रेस मुझे यहाँ से हटा देना चाहते हैं। आप शायद इनके षड्यंत्र को समझ नही पा रहे हैं। मिसेज सक्सेना नम्र हो उठी थीं।

नहीं मिसेज सक्सेना ? मैं खूब समझता हूँ। आपने जिस दयालुता से मुझे नोचा है वह भी समझता हूँ। अब आपसे प्रार्थना है कि आप शांति से हमारे साथ चलिये। ताकि हम बल प्रयोग न

करना पड़ा।"

मिसज सक्सेना निरुपाय खड़ी रहीं। वह जान गई कि अब तक या अनुरोध व्यर्थ है। उसने पहले तो पति की ओर देखा। फिर बेटी की ओर। फिर बेटी का रोने लगी—

"क्यों ? तुम मुझे पागल समझती हो ?"

'नहीं ममी!

तो फिर यह क्या हो रहा है ? तुम विरोध क्यों नहीं करतीं हो ? बोलो। मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए बेटी ? मुझे यहाँ जाने से रोको। वहाँ पहुँच गई तो अवश्य पागल हो जाऊँगी। तब भी तुम्हें तो मेरे लिए वापसी का कोई अर्थ नहीं रह जायगा। क्यों ? मुझे छुड़वा लो। तुम्हारा अहसान मानूँगी बेटी ? मैं यहाँ से चली जाऊँगी। दूर सबसे के लिए। आप यहाँ का एहसान करने कभी नहीं आऊँगी।' वे हाथ जोड़ने लगी थीं।

बेटी मान नहीं सकी—क्या करे ? उसे माँ की स्थिति अत्यन्त करुण लगी तो मिसेज सक्सेना के पास गई और उनको आस्तीन से लिपटकर कहने लगी—

'डैडी! डॉन्ट बी सो हार्ट! लेट हर गो ... अब फार अब ...' मिस्टर सक्सेना अपनी बेटी के अनुरोध पर ध्यान दे रहे थे। सुपरिन्टेंडेंट से कष्ट के लिए क्षमा याचना की थी और वे अपने बच्चे के साथ चल गए थे।

मि. सक्सेना ने पत्नी से कागजात पर हस्ताक्षर करा लिए और फिर उनको दरभंगा (उत्तरी बिहार) भेज दिया। वहाँ उनकी समुचित व्यवस्था भी करा दी। जाते जाते मिसेज सक्सेना रो रही थीं, बेटी को गले लगा कर।

बेटी उन्हें गाड़ी पर बैठाने गई थी। मि. सक्सेना इतने उदार नहीं हो पाए। वे कमरे में भीतर से दरवाजा बन्द करके पड़े रहे और पत्नी की सिसकियाँ और क्षमा याचना सुनकर भी बाहर नहीं आये थे। निरुपाय मिसेज सक्सेना चली गई थीं।

कनी लौटी तो पिता के कमरे म नही गई। अपने कमरे म जाकर पड गई। चौबीस घटे यो ही बीत गये थे बिना कुछ खाये पिये। माना घर म कोइ दुघटना हो गइ हो। और दुघटना तो हुई ही थी। अधिक भयकर घटना।

दूसरे दिन सध्या को मिस्टर सक्सना कनी के कमरे म गये थे। बड़ी देर पलग की पाटी पर उठ रह बेटी के कधे पर हाथ रखे। कनी धीमे धीमे सुबकती रही थी। फिर उठकर बाथ रूम मे मुँह हाथ धो आई और अपने पिता के पास आकर बठ गई।

बाहर घूम आये डडी !

हाँ ? चलो

दोनो कार म घूमने निकले। सवथा निरुद्देश्य। ड्राइवर ने पूछा नही क्योकि वह स्थिति से परिचित था। चौरगी से अपर चितपुर

सियालदा की बी रोड डनलप ब्रिज रेलवे ब्रिज

सलिकया हावडा ब्रिज ।

ड्राइवर ने शहर के बाहर की ओर रुख किया। हुगली के किनारे किनारे। फिर अलीपुर की ओर कार मोड दी थी। काली मन्दिर के पास कार रोककर पूछा था—

मया के दशन कर लीजिये साहब ?"

पिता पुत्री कार स उतर कर मदिर म जा पहुचे थे। अच्छी खासी भीड थी वहाँ। सबको दशन की उतावली। पिता पुत्री को जल्दी नही थी। धीरे धीरे खिसकते रहे और काली मैया के सामने आ खड हुए। माँ जगदीश्वरी ! भक्तो की रक्षिका। शत्रुओ की भक्षिका। दया और भय का अद्भुत सम्मिश्रण ! हृदय की सपूण व्यथा माँ को समर्पित कर दो बच्चा ! दया की प्राथना करो पुत्र ? और माँग लो जो चाहे माँग लो। मुक्त हस्त स देती माँ। भौतिक समृद्धि चाहो तो मिलेगी। मानसिक शान्ति चाहो तो वह भी मिलगी। माँ सब कुछ सुनती है। वह करुणामयी है। आओ बेटा ! आओ। अपना दुख दद सुना दो उन्हे और प्रसन्न मन घर जाओ। कोई कष्ट हो ता

फिर आना

'डैडी!   " कटी फुसफुसा रही थी।

'   "

घर चलें डडी ?" कटी का स्वर कुछ ऊँचा हुआ था। मि सक्सेना मानो गहन निद्रा में जागे। वहा से चले तो मन कुछ हलका हो गया था। एक विसजन का हल्कापन।

लौटते म भी पिता-पुत्री मे सवादात्मकता नहीं जागी। ड्राइवर को घर चलन का आदेश देकर व चुप बठे रहे। घर पहुँचकर भी कोई बात नहीं हो पाई। कटी न गुडनाइट करते समय कहा था—

"ए चप्टर इज क्लोज्ड डैडी!"

८

कम्मी थर्ड इयर में आ गई थी। अब तक के मार्क्स को देखते हुए उसे फर्स्ट डिविजन में ही पास करने का विश्वास हो गया था। खेल में भी उसकी रुचि कायम थी। [illegible] और [illegible] वर्ष [illegible] बार इन्टर युनिवर्सिटी टेबिल टेनिस का युगल खिताब जीत लाई था। इस साल भी फाइनल में [illegible] हार गई थी और [illegible] में [illegible] की कमलेश ने कम्मी को पराजित कर दिया था। कम्मी आजकल लगी रहती थी। नोट पर नोट मगानी जा रही थी। पर कमलेश ने [illegible] डिफेन्स का अभ्यास किया। टेबिल से कुछ कदम दूर जा कर वह डिफेन्स खेलना सीख रही थी। दोनों मुग्ध थे दोनों के खेल पर। एक [illegible] का भी पक्का [illegible] कि फाइनल मैच। कम्मी धीरे धीरे [illegible] अनुभव करती जाती थी और डिफेन्स पर आ गई थी। पाँचवाँ फाइनल गेम था। दोनों को एड़ी चोटी का जोर लगाना पड़ रहा था। बराबर बराबर पॉइंट चल रहे थे। १६ १६। सर्विस कमला के पास थी। उसने अचानक कटी के बायें हाथ की ओर टेबिल के किनारे पर सर्विस की तो [illegible] ही रही। वह किनारा छू कर नीचे गिर गई थी। कटी कुछ न कर सकी। २० १६। अब ड्यूस करना जरूरी था। वर्ना सब समाप्त था। कमलेश की सर्विस फिर उसी जगह आई थी। पर आधा इंच का फर्क रह गया। कटी ने [illegible] किया और दोनों धीरे धीरे टेबिल से दूर हटकर खेलने लग गई थी। कमलेश [illegible] लगा रही थी और कम्मी चाप्स। पूरे तीन मिनट तक रिटर्न होते रहे थे। तभी कम्मी का रिटर्न नेट से उलझकर उसी की ओर रह

गया था।

कटी ने कमलेश से हाथ मिलाया और कहा—"वी शैल मीट नेक्स्ट इयर। कमलेश ने स्युअर' कहकर चुनौती स्वीकार करली थी।

क्रिस्टी कटी के पास आकर बोली— सॉरी कटी ? यट यू म्पेड था।"

कटी उसके साथ चल दी थी। हार जीत की चिंता किये बिना। उसने क्रिस्टी को कहा— चलो सालारजग म्यूजियम देख आये'। क्रिस्टी ने थोडी ना नू की तो कटी उसकी ओर देखने लग गई थी। पूछने लगी—

'क्या बात है क्रिस्टी !"

'कुछ नही

'फिर भी

'एक अपायटमट है। वृदावन होटेल मे।"

किसके साथ ?'

कोई है। कलकत्ता से साथ ही आया था। टेन मे।'

तुमने बताया नही किस !'

'तुमने कभी दिलचस्पी ही नही ली मेरे अफेयर्स म। मैंने भी इसलिये कभी तुम्हारे बारे म नही पूछा। स्कोर लेवल्ड।'

अब बताओ। कौन है वह ?

तुम अपने बारे में बताओगी ?'

क्या नहीं ?

फिर क्रिस्टी ने बताया—'रजिब बर म किरानी है। मोहल्ले मे रहता है। बचपन म दिलचस्पी रखना आया है। चच म कभी कभी गुनाता हो जाता है। प्रेजुन्ट है। देखने म बुरा नहीं। हर हफ्ते म सिनेमा दिखा देता है। एक बार तो ग्रैंड होटल म भी ले गया था। गजब था उस दिन।

क्रिस्टी उत्साह मे बोले जा रही थी। उसने यह नहीं देखा कि कटी को इसमे इंटेरेस्ट नही आ रहा था। वह सुने जा रही थी

के बारे म नहीं पूछा। कभी नहीं पूछा। बेचारी को फुसत ही नहीं मिली, अपने 'अफेयर' के बारे म सुनाने से। कटी को अफसोस नहीं था।

क्रिस्टी ने दूसरे दिन सिनमा जाने का प्रोग्राम बना रखा था। मोनिंग शो क लिए। इग्लिश फिल्म थी। बन हूर। कितने ही अवाड स की विश्व प्रसिद्ध फिल्म। कटी देखना चाहती थी पर क्रिस्टी और समुग्रल के साथ नहीं। उनके नैकिंग और हगिंग म बाधा नहा डालना चाहती थी। उसने यह भी किया। उस यह जानकर विस्मय नहीं हुआ कि व इस निणय से प्रसन्न ही हुये।

कटी अलग जा बैठी थी। लबी फिल्म को देखने की मन स्थिति बनाकर। थोडे काजू ले लिये थे। कुतरते रहने को। दोनो तरफ महिलायें आ बठी थी। इसलिए परशान किय जान की सभावना नहा रही थी।

फिल्म शुरु हो गया था। प्राचीन सटिग। मालिको और गुलामो का युग। उत्पीडन और अत्याचार के दृश्य। सब जगह बल प्रदशन। एक ओर भव्यता। दूसरी ओर सब कुछ अभव्य। कठोर श्रम और भूख फिर भी। पहाड घाटियाँ और गुफाओ का अधकार। रथो की भयानक रेस। कधो पर क्रास उठाये प्रभु। रक्तधारा तूफान जलप्रवाह।

फिल्म समाप्त हो गया था और कटी वतमान मे लौट आई थी। वह बाहर निकलकर प्रतीक्षा करने लगी। क्रिस्टी और समुएल सबके बाद बाहर निकले। भीड मे कोई क्रिस्टी से छेडखानी न करने, समवत इस विचार से। उन्हे कटी के बारे म चिंता नहीं थी। वे सोचते होंगे कटी को इसकी जरुरत है।

दोनो ने पूछा था— फिल्म कैसी लगी ?' कटी ने 'मावलस कहकर बात समाप्त कर दी थी। वह प्राप्त किय आनद को बहस के द्वारा कम करने के मूड मे नहीं थी। क्रिस्टी और सैमुएल को बहस की फुसत थी भी नहीं।

उन्होंने एक रेस्टारट मे कोल्ड ड्रिंक लिया था। और सैमुएल ने

पेमट करने मे काफी गिवेलरी दिखाई थी। बिल बडा नहीं था।

फिर क्रिस्टी के साथ कटी चली आई थी। आज शाम मैंस फाइनल था। दोना दखना चाहती थी। पर ऐन वक्त पर सैमुएल आ गया और दोनों को उसके साथ जाना पडा। शायद क्रिस्टी पहले ही उमम त कर चुकी थी। पर उसने यह बात मानी नही। कटी ने अधिक जोर भी नहीं डाला।

कहा चलना है ?" क्रिस्टी पूछ रही थी।

'गोलकुंडा !

'यह यहा कहा है ?'

कुछ मील पर ही हैं' आश्वस्त किया सैमुएल ने। वे टक्सी करके चले थे और थोडे ही समय म मुख्य द्वार पर पहुँच गये थे। टैक्सी स उतकर तीनो भीतर चले तो एक गाइड साथ हो लिया। 'इतिहास वैभव युद्ध घेरा बदी जय पराजय।" वह बोलता गया था।' ये देखिये पाइप सिस्टम ऊपर महल तक पानी चढाया जाता था यह मुख्य महल अब तो इतना ही कुछ बचा है पहले वह शाम थी वह यहा से ताली बजायें ता मुख्य द्वार पर सुनाई देती है वनानिक पर्धति और भारत "

किले मे देखने को अधिक न था। महल के दो तीन कमरा के अलावा कुछ भी शेष नही था। कमरे भी साधारण चूने-पत्थर से बने। कही कोई संगमरमर नही कोई शीशा नही। तीनो ने माना कि इसकी एतिहासिकता ही महत्वपूर्ण है। मुगलो का सा वभव और लालकिले की सी स्थापत्य-कला यहाँ खोजनी ही नहीं चाहिए।

वहाँ से चल तो मुख्य द्वार पर ताली की आवाज सुनाई गई। इतनी दूर से आवाज का आना विस्मयोत्पादक तो है ही।

टक्सी मे बैठते बैठते गाइड का इनाम दिया था और वह सलाम करके चला गया था।

"शाम तो पन्द्रा था—अजन्ता एलोरा चलते" सैमुएल के स्वर मे निराशा झलक उठी।

वह कितनी दूर है ? उसकी तो बहुत ख्याति है।" क्रिस्टी कह रही थी।

'सौ मील से अधिक ही है। लौटने म बहुत देर हो जाती। और तुम्हारी ट चाज पता नही क्या क्या सोचती ?

वह तो अब भी सोच रही होगी। बहुत कुछ। कटी बोली थी। ट्रिप म शायद पहली बार।

'हाँ ! वो तो है ही। सैमुएल हिसाब लगा रहा था कि अजता एलोरा न जाने से कितने पसे बचा लिये।

दूसरे दिन वे हैदराबाद से रवाना हो गये थे। सैमुएल भी। रास्ते में वह दोनो को ए टरटेन करता रहा था। खरदा जक्शन पर आने में उसे कुछ देर हो गई थी और क्रिस्टी ने मुँह फुला लिया था। सैमुएल को बहुत मनुहार करनी पड गई थी। तब जाकर क्रिस्टी ने एक केला खाना मजूर किया था। क्रिस्टी ने केला भी स्वय छाटा था—सबसे बड़ा साइज का। कटी मुस्कुराई थी। सैमुएल भी। और क्रिस्टी ने आधा खाया केला फेंक दिया था।

बस ! इतना ही खा पाई।" सैमुएल दुष्टता से मुस्कुराया था।

डाट भी मिली सैमुएल ! क्रिस्टी शर्मा गई थी। इन्चार्ज ने डाट लगाई थी। प्लेट फार्म पर रोमास की बेहूदगी पर छोटा सा लक्चर भी पिला दिया था। क्रिस्टी ने सारी पीन किया था—औपचारिक सा ही। यो वह खुश थी। कटी के सामने वह सुपीरियरिटी अनुभव कर रही थी। हूँह ! कटी को कौन पूछता है ? वृन्दावन होटल गोलकुण्डा सिनेमा । मेरे पीछे ही तो सब कुछ देख आई वह सोचती रही थी।

कटी से उसकी मुद्रा छिपी नहीं थी। उसकी हीनभावना पकड पाना कठिन नहीं था। पर उसने प्रतिवाद करना उचित न ही समझा।

हवड़ा पर इम्पाला आ गई थी। कटी ने दोनों को उनके घर तक

लिपट दी थी। दोनो इस कार से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। यों क्रिस्टी पहले भी इसमें बैठी थी, पर समुएल के साहचर्य मे पहला अवसर था। मन एक नया प्रभाव भी पडा। सुपीरियरिटी काम्प्लेक्स में कुछ कमी आ गई थी।

वाव-वाव' कहकर क ी चल पडी। डैडी घर पर ही थे। लगा—ड्रिंक की मात्रा बढ रही है। पीने की अवधि भी।

आइ वाज वेटिंग नोनली डिअर !" डैडी लडखडाते से बोले थे।

यस डैडी !'

कटी अपने कमरे में चली गई थी। बारा वाथ लच। और फिर लेट गई थी। सोचने लगी थी—एक सहनी और गई। फिर उस प्रोतिमा की याद हो आइ थी। पता नहीं, क्या कर रही है? कितना अर्सा हो गया उससे मिले। नालायक कभी फोन तक नहीं करती। शायद शादी वादी ?

कटी ने शाम को गाडी ली और सलिया की ओर चल पडी। गली म गाडी खडी करते ही किसी ने बताया— वे सब यहा नहीं रहते। कही चले गये हैं। पता नही कहाँ ?"

कटी खिन्न होकर लौट आई। वह समझ नही सकी—प्रतिमा उससे क्या कट गई है? उसने तो कभी दूरियाँ रक्खी नही। फिर वही क्यो दूर चली गई है? घर बदलकर भी सूचना नही देती। अच्छी बात है।

अभी उसकी इच्छा घर लौटने की नही थी। सोचा—विकास का ही पता कर लिया जाय। बी ए करने के बाद क्या कर रहा है—जिज्ञासा सी हुई। फिर तो उसने गाडी का रुख बडा बाजार की ओर कर दिया था। पर बीच मे ट्रैफिक जाम था। ट्राम के पीछे ट्राम बसो के पीछे बसें टले रिक्शे।

रायटर्स बिल्डिंग की ओर एक जुलूस जा रहा था। मार्क्सवादियों का जुलूस। काफी लबा। दो मील स कम तो क्या होगा? बड़े-बड़े पोस्टर्स। नारे। शोरगुल।

कटी को पता चला कि ट्रैफिक घंटा तक नहीं खुलेगा। उसने गाडी बैक करने की सोची। पर ऐसा कि उसकी गुंजाइश नहीं रह गई है। साइड में मोडने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। फिर क्या करे ? गाडी वहीं छोडकर पैदल जा सकती थी। पर इतनी दूर पैदल ? ना बाबा ना । और गाडी छोड जाय तो उसमें बचेगा ही क्या ? शायद कुछ न ही उडे। शायद कोई आग ही लगा दे।

कटी परेशान होने लगी। स्वयं पर क्रोध हो आया—वह विकास की ओर जा ही क्या रही थी ? उस विकास से लेना ही क्या है ? क्या वह उस चाहती है ? नो ! दटस आउट आफ क्वेश्चन। तो ।

ट्रैफिक और जाम हो गया था। रात के नौ बज रहे थे। गाडी बन्द करके फुटपाथ पर आ गई। गाडी की चिंता कहां तक करे ? डैडी जो परेशान हो रहे होंगे।

उसने पास की एक दुकान से फोन किया। डैडी को स्थिति समझाई और ड्राइवर को भेजने के लिए कहा। तब तक वह प्रतीक्षा करेगी।

फोन बन्द करने पर उसे ध्यान आया कि वह घर जायेगी कैसे ? उसने दूसरी कार तो मंगाई ही नहीं। पर मंगाती भी तो कहां ? इस जाम हुए ट्रैफिक में वह भी फंस जाती। तोबा !

उनका ड्राइवर समझदार निकला। कलकत्ता के ट्रैफिक में उसका काफी वास्ता जो पडता था। वह छोटी कार लेकर आया था और एक खुली सडक के किनारे उसे खडी कर आया था। करीब दो तीन फर्लांग की दूरी पर।

कटी ने उससे चाबी ले ली और उधर चल पडी। जहां कार खडी थी उससे कुछ ही दूर पर थोडी खुली जगह थी। अंधेरा भी था। कटी कार में बैठने लगी तो एक आकृति चीखती चिल्लाती उसकी तरफ भागती हुई आई। नारी स्वर। युवती की आकृति। निर्वसन सी । आकृति कार के पास आ पहुंची थी बचाओ बचाओ वह चिल्ला रही थी। फिर कटी को देखा तो ठिठक गई

थी। दो गुडे जैसे व्यक्ति तब तक पास आ गये थे और उसे घसीटते ले गय थ। उसी अधेरे की ओर, जहाँ से वह भागी थी।

कटी स्तब्ध रह गई थी। उसन कलकत्ता के बारे म काफी सुन रखा था। पर देखा नही था। रात के दस साढे दस बजे होगे। दूँ कि सवथा बद भी नही हुआ था। तब भी यह अधेरा। कोई पुलिस वाला आस-पास नजर नही आता।

कटी कुछ देर खडी रही। अनिणय की स्थिति मे। चीजें बद हो गई थी। शायद बद कर दी गई थी।

कटी कार म बैठ गई। वहा तक प्रतीक्षा करे ? और किसकी ?

और अभी कोई उसे ? उसन डरकर गाडी स्टाट कर दी और बिना कुछ और सोचे वहा से चल पडी।

डैडी न उसके विवेक की प्रशसा की थी—'यह कलकत्ता है डियर ! यहा कासिंयेंस (Conscience) की आवाज सुनना बेवकूफी है। जो सुनता है मारा जाता है। और मरन वाले की कोई सुनाई नही। हो भी तो व्यथ। और फिर सुनाई भी किस किस की ? साठ लाख की आबादी और सीमित सी पुलिस। पुलिस और पब्लिक मे सहयोग नही। पुलिस कुछ कर तो हल्ला-गुल्ला और जुलूस पर जुलूस। न करे तो हल्ला गुल्ला और जुलूस पर जुलूस। फिर कोई परेशान हो तो क्यो हो ? असेंबली या पालियामट मे कुछ प्रश्नोत्तर हो जायेंगे और बात समाप्त हो जायगी।

वह तो ठीक है डडी ! पर यह धांधली ! सडक के किनारे ! शहर की नाक के नीचे ? हाउ शेमफुल डडी।

'नहीं डियर ! कौन कह सकता है सच क्या है ? यह लडकी वहाँ कर क्या रही थी ? इसकी गति विधि के बारे मे तुम क्या जानती हो ? यही न कि स्कूल मे तुम्हारे साथ पढती थी। पर इसके बाद ! क्या करती रही है वह ? तुम कुछ नही जानती। पता नहीं यह उनके साथ कुछ कर ! तुम परेशान न होओ। कलकत्ता मे इन बातो मे कोई परेशान नहीं होता।'

दिन का यह सप्राण महानगर ! और रात का सर्वथा निष्प्राण यह महानगर ! सत्य वह अथवा यह ?

मि सक्सेना का ध्यान उस मोहल्ले की ओर चला गया जहाँ स ज्योतिमा के माता पिता को लाये थे। वह इन फुटपाथो स भी गया बीता था। यहाँ सड़कें साफ है। फुटपाथ भी प्रतिदिन साफ किय जात है जब यहाँ लटे हुए प्राणी दिन म भीख मागन या उसस भी बदतर कुछ करने के लिय फुटपाथ खाली कर जात हैं। पर वह मोहल्ला ! वहा शायद बरसो म भी सफाई नही होती। घरो क बाहर खुले गटर और उनसे उठती सडाघ— असह्य बदबू। लाग कहत है—वे वहाँ रहते हैं। यदि इसे रहना कहा जाय तो फिर सडना किस कहेंगे ?

चौरगी पर होटलो म कुछ गतिविधि थी। शायद क्बर चल रहे हा। या फिर कोई नाटक क्लब का नया अध्याय प्रारम्भ किया गया होगा। कटी का ध्यान भी पाप म्यूजिक के कोलाहल की ओर गया था। पर वह चुप रही।

घर के आगे कार रकी और सब बाहर आ गय। कार गरज म रख देने के बाद सब ऊपर गय। ज्योतिमा सो रही थी। डॉक्टर न ट्रक्विलाइजर द रखा था। ज्योतिमा की मा फिर सुबकने लगी तो उसके पति न आख तररी और वे समझ गइ। ज्योतिमा के बड क दोना ओर आराम कुर्सियो पर दोना बठ गय और थाडी ही दर म उबासी लन लग। डाक्टर सुबह आन की कहकर चली गइ थी। कटी और उसके डडी भी अपने अपन कमरो म चले गये थे। उन्होने ज्योतिमा के माता पिता के आराम की सब व्यवस्था पहल ही कर दी थी और एक बूढे नौकर का कमरे के बाहर रहन को कह दिया था।

ज्योतिमा सबस पहले जागी। उसकी आखें ठीक स खुली तो माँ बाप को आराम करते पाया। मानो घर उन्ही का हो। यहा चिन्ता नहा कोई खटक नही। जस इस प्रकार की स्थिति का पूर्वाभास —ह

रहा हो और स्वयं को जैसे इस स्थिति के लिए पूर्वत तैयार कर रखा हो। उसे क्रोध हो आया। क्या अधिकार है इनको— इस तरह जीने का ? कब तक ये परजीवी दूसरा का खून चूसते रहेंगे ? अपने पैरों पर क्या नहीं खड़े होते ? यही तो होगा न कि कुछ दिन पैर लड़खड़ायेंगे। पर बाद में अभ्यास तो हो जायगा।

उसने टेबिल से कागज-कलम लेकर लिखा—

कटी,

इन्पाला को टक्सी का पीछा नहीं करना चाहिए। मुरावला जो नहीं है। तुम्हें चाहिए कि पास से निकल जाओ। चाहो तो एक नजर हिकारत की भी डाल सकती हो। पर खड़ी होकर घूरो मत। पीछे पीछे तो चलो ही मत।

अब इन परजीवियों से भी दूर जा रही हूँ। ये चाहें तो अपने पैरों पर खड़े हों, चाहें मुझसे छोटा पर अपनी निगाह डालें।

जो तुम्हारी नहीं,

ओतिमा

नींद खुलने पर ओतिमा के मां-बाप ने बड़ की ओर देखा तो खाली मिला। सोचा—बाथरूम गई होगी। कुछ विलम्ब होते देखा तो नौकर को जगाया। वह आंख मलता रहा और सोचता रहा। मि सक्सेना को जगाकर कहा तो वे जल्दी से गाउन लपेटकर बाहर निकले। ओतिमा का पत्र कटी के नाम था। पर उन्होंने पढ़ लिया। ओतिमा के मां-बाप रोते भींकते वहां से निकले। एक दूसरे पर आरोप लगाते हुए। वे नहीं जान पाये कि प्रश्न सोने या जागने का नहीं था। जानते होते तो 'वहां' न सोते।

ड्राइवर कार में उन्हें घर पहुंचा आया था। लौटकर उसने बताया कि घर में कोहराम मचा था। मि सक्सेना ने सुन लिया। वे जानते थे—कुछ दिनों में सब शान्त हो जायेगा। सब अभ्यस्त हो जायेंगे—ओतिमा की अनुपस्थिति के प्रति।

कटी को पत्र पढ़कर दुःख हुआ था। और एक नया अहसास भी।

यह किसी के प्रति सहानुभूति नहीं दिखायेगी। किसी की अनुभूति को बँटायेगी ही नहीं। अमीर और गरीब के मध्य का अन्तराल न आर्थिक सहायता से भरता है न सहानुभूति के टोकरों से। यह तो स्थितियों का वैपरीत्य है। इसमें हर पक्ष दूसरे पक्ष पर सन्देह करता है। यहाँ सामान्य बात का भी असामान्य उद्देश्य ढूँढ लिया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति पत्थर बन जाता है। चाहे इस ओर। चाहे उस ओर। एक प्रतिबद्धता आ जाती है। स्व के समर्थन की। अपर के विरोध की।

कटी को ग्लानि हुई थी कि उसे अमीरी के साथ प्रतिबद्ध माना गया। उसने कभी अमीर और गरीब में मूलतः अन्तर नहीं माना। यह अवश्य है कि उसका जन्म ही खाते पीते परिवार में हुआ और आज भी वह सम्पन्न ही कहलाती है। पर इसमें उसका दोष क्या है?

वह जानती थी—दोष गरीबों का भी नहीं है। वे तो बस एक दुर्भाग्य लेकर पैदा होते हैं। गरीब घर में पैदा हुए और गरीबी में ही मर गये। कुछ अपनी बेवकूफी से भी गरीब हो जाते हैं और फिर उनकी सन्तान भी वही दुर्भाग्य लेकर पैदा होती रहती है। यह एक अबाध परम्परा का रूप धारण कर लेती है।

इस परम्परा को तोड़ें कैसे?—कटी ने सोचा। कई-कई विचारकों और समाजवादियों ने इस प्रश्न को उभारा तो अवश्य है पर समाधान कोई नहीं दे पाया। कुछ ने धनिक वर्ग के विरुद्ध जिहाद बोलने को कहा है। ऐसा धनिक वर्ग की सम्पत्ति का भाग नष्ट कर दो तो निर्धनों की निर्धनता समाप्त हो जायेगी। कुछ कहते हैं—धनिकों की सम्पत्ति निर्धनों में बाँट दो। मानो इससे सब सम्पन्न हो जायेंगे। तो यह संघर्ष का सिद्धान्त सही होते हुए भी कच्चा लगता है।

कटी को यह महसूस हुआ कि कठिनाई कहीं और है। कहीं कोई चोर ही है। कौन सा है वह कमी? क्या मनुष्य परिश्रम नहीं करता? नहीं करता तो है। दिन भर मजदूरी करता है। खाना खाता है। टाँग पसारता है। फिर भी। बनता भी। सो फिर!

लगता है—परिश्रम पूरा नहीं हो रहा है। समस्या सब भाग सम

नहीं कर रहे हैं। शायद मजदूर के घर में केवल एक श्रम करता होगा और बाकी सब खाने होंगे। शायद खानेवाले होंगे भी ज्यादा। बहुत ज्यादा। शायद उन्हें धरती पर लाने में पहले खिलाने का सोचा ही न होगा।

बच्चों की लाइन जन-संख्या के साथ निर्धनता की समस्या सीधे जुड़ी है। क्या कारण है कि सम्पन्न परिवारों में सदस्य-संख्या सीमित होती है, जबकि निर्धन परिवारों की संख्या बढ़ते जाने की चिंता नहीं। नोकटी ने माना कि परिवार नियोजन के बारे में निर्धन वर्ग को प्रशिक्षित करना अधिक आवश्यक है। सरकार इस ओर बहुत सजग हुई है। बहुत कुछ कर भी रही है। किन्तु यहाँ भी कुछ बाधायें हैं। कोई अन्धविश्वास से ग्रस्त है, कोई हीनभावना से। कुछ इस प्रश्न के साथ साम्प्रदायिकता भी जोड़ देते हैं—अजी! अमुक सम्प्रदाय तो परिवार नियोजन नहीं, परिवार-संयोजन कर रहा है। यह तो हमीं बेवकूफ हैं कि नियोजन को अपनाते जा रहे हैं।"

अब कौन समझाये इन धर्मान्धों को? ये नहीं जानते कि परिवार नियोजन सबके लिये उपादेय है। कम से कम तब तक जब तक कि निर्धनता का प्रश्न हल नहीं हो जाता। और बहुत आसानी से यह हल होने का नहीं। इस उपादेय को भी जो अनुपादेय मानते हैं उनकी बुद्धि पर तरस आना चाहिये। संख्या वृद्धि के समर्थकों को यदि हो तो विचार करना होगा। वे पारिवारिक सम्पन्नता की दौड़ में पिछड़ जायेंगे। उन्हें विपन्नता मिटानी है तो नियोजन को अपनाना ही होगा। वर्ना ।

बच्चा कॉलेज जा रही थी, तभी डैडी की टेबिल पर उसे इन्विटेशन कार्ड पड़ा दीखा। एक सांस्कृतिक समारोह था। उसी संध्या को रवीन्द्र सरोवर पर। कुछ बड़े फिल्मी सितारे आने वाले थे। स्थानीय कलाकारों का भी प्रोग्राम रक्खा गया था।

बच्ची ने डैडी से जाकर पूछा तो बोले—'एक हजार रुपये देने पड़े। बहुत इन्सिस्ट कर रहे थे। पर मुझे जाने की फुर्सत ही

नहीं है।   हाँ ! तुम जाना चाहो तो जाना।"

कटी जाने के लिए तैयार हो गई। शाम को वह कॉलेज से जल्दी ही लौट आई। इस उत्सव के दो टिकट उसने लिए थे पर किसे किसको साथ ले जाय ? तभी विकास का ध्यान आया। पिछली शाम तो जा ही नहीं सकी। तो आज कोशिश करने में क्या हानि है ?

कटी ने मना नहीं किया। और वह चार बजे विकास के यहाँ जा पहुँची। वह घर पर था। उस समारोह में चलने की बात कही तो ना नू करने लगा। वह जानता था—सेठजी फिर नाराज हो जायेंगे। इस बार भी कमरा खाली कराने लगे थे। और बड़ी कठिनाई से माने थे। विमला भी बहुत दिनों तक मुँह फुलाये रही थी। यह नहीं कि इन सबकी अप्रसन्नता को वह बहुत महत्व देता हो। पर अपनी सुविधा असुविधा का तो उसे ध्यान रखना ही था। इस वर्ष एम० ए० फाइनल करना है। शायद फर्स्ट डिविजन मिल जाय। शायद लेक्चररशिप भी।

कटी ने जोर देकर कहा तो वह भीतर से कमजोर हो उठा। उसे पता था—ऐसे समारोह सदा नहीं होते। और उन्हें देख पाने का अवसर भी सदा नहीं मिलता। उसने भीतर से विमला को बुलाकर कहा—वह रवीन्द्र-सरोवर जा रहा है। रात को देर से लौटेगा।

सेठजी घर पर नहीं थे। वर्ना शायद नाटक खड़ा हो जाता। सेठानी चुप रही। और विमला ? वह तो विरोध करना जानती ही नहीं थी।

कटी और विकास वहाँ से चले तो ६ बज रहे थे। उन्हें जल्दी करनी थी। पर कलकत्ते का ट्रैफिक ! तौबा ! उन्हें दो घंटे लगे। रवीन्द्र सरोवर पहुँचने में। किन्तु देर नहीं हुई थी। फिल्मी सितारे अभी आये नहीं थे।

सरोवर पर बड़ी भीड़ थी। कटी ने सोचा— ये सब भीतर कैसे बैठ पायेंगे ? क्या भीतर इतनी जगह होगी ! विकास और वह स्वयं बड़ी कठिनाई से भीतर पहुँच पाये। उनका कार्ड अति

विशिष्ट होते हुए भी।

उनकी सीट काफी आगे थी। तीसरी पंक्ति में पहली दो सीटें। कटी और विराम बैठकर प्रतीक्षा करने लगे। समारोह शुरू होने में पता नहीं और कितना समय लगेगा? वे परस्पर पूछ रहे थे।

बाहर शोरगुल बढ़ता ही जा रहा था। शायद कार्ड ज्यादा बँट गये। शायद टिकटें अधिक बेच दीं। बाहर की अव्यवस्था और धक्का-मुक्की का अनुमान भीतर बैठे लोगों को हो रहा था। भीतर सीटें कभी की भर चुकी थीं और गेट के पास एक छोटी सी भीड़ अंदर सीट तलाश कर रही थी। कोई सीट खाली नहीं थी।

हाल के भीतर प्रायः सम्पन्न लोग ही बैठे थे क्योंकि टिकटें बहुत ऊँची रक्खी गई थीं। पचास रुपये से कम तो कोई सीट थी ही नहीं। आने वाले काफी सजधज कर आये थे। चारों तरफ सूट-बूट से सजे लोग और साड़ियों में कुर्ते सलवार या स्कर्ट में लिपटा सौन्दर्य। कुछ घूँघट निकाले सेठानियाँ भी थीं डेढ़ डेढ़ हजार की साड़ियाँ और मुँह पर घूँघट से झाँकती भाग्य एक आध। तमाशा देखने आई थीं और खुद तमाशा बनी थीं। वहाँ उन्हें अन्य महिलाओं की बेपर्दगी पर आश्चर्य हो रहा था। शायद घृणा भी। सोचती होंगी शर्म लिहाज तो रह ही नहीं गया।

एक दो छोटे फिल्म स्टार मंच पर आ गये थे। उनकी सजावट देखते बनती थी। बड़े सितारों के आने से पहले रौब जमाने का मौका मिल गया तो इसका लाभ क्यों न उठायें? लोगों की अंगुलियाँ उठ रही थीं। अरे! अमुक अभिनेता है। अमुक अमुक फिल्मों में काम किया है। उस फिल्म में तो इसका काम वण्डरफुल था। हीरो खिसियाकर रह गया था, इसकी एक्टिंग के सामने। सुना है, आज से इसका अपनी फिल्मों में लगा ही नहीं। अरे उस एक्ट्रेस को जानते हो? पहले हिरोइन बनती थी। पर आज की चुलबुली एक्ट्रेसों के आ जाने पर इसका बाजार ठण्डा पड़ गया। सपोर्टर रोल करती है अब। अमुक फिल्म में स्मगलर का रोल किया

बढ़िया किया था ? याद है न।   अरे ! आ गये, आ गये ! दादा भाई आ गये। अरे साथ में कौन-कौन हैं   वह देखो प्रमुख फिल्म का हीरो। उसकी हिरोइन।   इस ड्रेस से तो नया फैशन चल पड़ेगा।   जूड़ा देखा ? देखो   देखो देखो !

कटी की चारों तरफ से आवाजें सुनाई पड़ रही थीं   देखो। दिवाकर भी सुन रहा था। दोनों देख भी रहे थे। कुछ को पहचानते थे। बाकी के बारे में सारा हाल पहचानता था। वे कम न पहचानते ? भयंकर मेकअप में होते हुए भी भूलते नहीं थे जिन्हें अनेक बार फिल्मों में देखते रहते थे।

समारोह के संयोजक माइक पर आ गये थे। उन्होंने भीतर के जन समूह पर दृष्टि डाली तो लगा कि बहुत संतुष्ट थे। स्वयं को समारोह का हीरो मानने लगे हों तो आश्चर्य नहीं किंतु बाहर के बढ़ते जा रहे शोर गुल से हंगामे की आशंका उनके चेहरे पर घर किये थी। वे कह रहे थे— हर आने वाले को भीतर बैठना संभव नहीं है। बिना टिकट तो सारा कलकत्ता आ जायेगा

द्वार के निकट से कई आवाजें आईं— मोशाय ! ये टिकिट रहे। बैठने को जगह दीजिये   '

संयोजक कट गये   कहीं भूल हो गई होगी। दस पांच टिकिट अधिक कट गये होंगे   ।'

'दस पांच नहीं। बाहर चलकर देखिये। लोगों के हाथों में दो सौ दो सौ के टिकिट हैं। पर भीतर नहीं आ पा रहे हैं। चलिये हमारे साथ चलिये   "

संयोजक बाहर जाने के मूड में नहीं था। कलकत्ता की पब्लिक को अच्छी तरह जानता था। बाहर चला गया तो भीतर नहीं आ पायेगा। उसने कहना शुरू किया—

मैं क्षमा चाहता हूँ कि कुछ लोगों को बैठने की सुविधा नहीं दे पा रहा हूं। तह दिल से क्षमा मांगता हूं। अब वे कृपया प्रोग्राम शुरू होने दें। बड़े-बड़े स्टार यहां आये हैं। उनका स्वागत करें लिहाज भी।

सब कुछ शोभन होना चाहिए। यह सास्कृतिक समारोह है। इसके अनुरूप धैर्य और शाति की आपसे अपेक्षा है। मेरा व्यक्तिगत अनुरोध है कि कोई गडबडी ।" तभी बिजली चली गई और हाल घुप्प अधकार म डूब गया। सयोजक माइक पर कह रह थे "सब लोग अपनी अपनी सीट पर बैठे रहें। बिजली अभी आ जायगी "

पर लोगो को अधकार में भी लगा कि मच पर वठे अतिथि पीछे के दरवाजे से खिसके जा रहे है। थोडी ही देर मे हॉल की कुर्सिया से धडधड उठने की आवाजें आने लगी। तभी कोई चिल्लाई–'उइ माँ।" दूसरी तरफ से आवाज आई— अरे मेरा नेक्लेस"। फिर किसी ओर तरफ म—"मर निगोडे"।

अब आवाजें बढती जा रही थी। बाहर का दरवाजा खुल गया था। पर भीतर से बाहर की बजाय, बाहर से भीतर की ओर भीड आ रही थी। पुरुषो और महिलाओ की चीख सब तरफ से उठ रही थी। 'हाय मार डाला अरे कोई बचाओ अरे मेरा ब्लाउज फाड डाला अरे मेरी साडी। हाय राम ! हाय अल्ला क्राइस्ट ! बचाओ बचाओ उई हाय ! अरे क्या कर रह हो ? डडी मम्मी माँ पिताजी ! अकलजी। मर गई तबाह हो गई बचाओ हैल्प मी हैल्प है अरे बिजली को क्या हो गया ? अर ! दरवाजा किधर है खिडकियाँ पीछे की ओर "

चारो तरफ हुडदग मचा था। कुर्सिया तोडी जा रही थी और फेंकी जा रही थी। घू से और मुक्के भी चल रह थे। कभी कभी किसी क्रन्दन स लगता था मानो चाकू भोंक दिया गया हो।

कुछ आकृतियाँ बाहर भागती दीखी थी और कई हाथो म गिरफ्त भी। कुछ हाल म चीख रही थी चिल्ला रही थी, रो रही थी। किसी को पता नही— कौन कहाँ हैं ? क्या कर रहा है ? कौन लूट रहा है ? कौन लुट रहा है।

पर सूट गई रह थे। लुट गई रही थीं। गुले ग्राम सबका की उस स्थिति म। भावें गुम थी। मान नहीं। मान न होते तो अच्छा था। इन चीखा और क्र न्दा के बाद भी य मान विच्छिन्न नहीं टूट। अब होंगे भी नहीं। और हो भी तो व्यर्थ।

कटी विकास के बाहुओं म बीच घिरी थी। कभी दोना नीचे बठ जाते। कटी की उफ सुनकर विकास किसी को धक्का देकर कहता— 'और किसी का ढूढला। नो इज माइन। कटी का इन शब्दों के अर्थ पर ध्यान देने की फुर्सत नहीं थी।

व दोनो धीरे धीरे दरवाजे की ओर बढ रहे थे। अनुमान से। हडबडी का अवसर नहीं था। धय और विवेक की आवश्यकता थी। कटी आतंकित थी पर विकास के सीने से चिपटे हुए कुछ सुरक्षा अनुभव कर रही थी। अच्छा किया इसे साथ ले आई। वर्ना ' वह अधिक सोच नहीं पा रही थी। उसे अपनी सपूर्ण सत्ता किसी तरह बाहर निकलने के लिए सुरक्षित रखनी थी।

न जाने कितनो ने उसे चिकोटी काटी। बुरी तरह। न जाने कितनो ने उसे चूम लिया। बुरी तरह। उसका स्कर्ट कई जगह से फट चुका था। 'हाय से अधिक बोल नहीं पा रही थी। विकास के कधो पर उसका भार बढता जा रहा था।

विकास ! मुझे कधो पर उठा लो। वह विकास के कान म फुस फुसाई मैं निवसन हो जाती हू। शायद इसी म बचाव हो जाये। वैसे भी निवसन ही हूँ।

विकास ने निवसना को कधो पर उठा लिया। अब उसे मार्ग आसानी से मिल रहा था। द्वार निकट आ गया था और कटी के शरीर पर इधर उधर से गिद्ध झपट्टा मार रहे थे। वह छोड दो मुझे छोड दो' कहती जा रही रही थी और विकास की पीठ पर झूठ घूसे लगाती जा रही थी।

कुछ हसी सुनाई पडी थी। पर विकास द्वार के बाहर निकल आया

था। बाहर और भी भयंकर हंगामा था। भीतर से अधिक। भीतर सैकड़ा लोग थे। बाहर हजारों। भीतर चीख थी। बाहर चीत्कार के विस्फोट पर विस्फोट हो रहे थे। दूर दूर तक। झील के आस पास के मैदानों पर भाग-दौड़। 'हाय हाय। मार डाला बचाओ उइइइई ऊऊऊ।'

आस पास भागती नग्न आकृतियाँ। पीछे दौड़ते भेड़िये नग भेड़िये तीक्ष्ण दांतों से काटते हुए। काट खाने को दौड़ते हुए। एक एक आकृति के पीछे बीस-पच्चीस भेड़िये गिद्ध कौवे गीदड़।

विकास के साथ साथ भी दस बीस भेड़िये हो लिये थे। वह कह रहा था— भीतर जाओ। बहुत माल है। करोड़पतियों की बहुयें बेटियाँ। नेकलेस हार हीरे पन्ने।"

सुनकर कुछ भेड़िये चल गये थे। पांच सात अब भी चिपटे थे। उन्हें भाड़ी पर लगे दो की अपेक्षा हाथ का एक ही प्रियतर था। कटी की आकृति उन्हें लुभावनी लग रही थी।

विकास थक गया था। कटी त्राण में कह रही थी— सरोवर की ओर पानी की ओर चलो चलो। विकास अब दौड़ने लगा था। कई आकृतियों से टकरा भी रहा था। आस पास भेड़ियों ने भेड़ों को दबोच रखा था। समूह में घेरकर। कोई काट रहा था। कोई नोच रहा था कोई। और भेड़ें चुप हो गई थीं।

झील आ गई थी। विकास ने और भेड़ियों से बयू लगाने को कहा। वे बयू लगाने को तैयार नहीं थे। बहस करने लगे थे। विकास मौका तलाश कर रहा था। कटी भी क्षणांश चाह रही थी। 'अरे! पुलिस आ रही है' विकास ने कहा था और भेड़ियों का ध्यान क्षणांश के लिए दूसरी ओर विकेंद्रित हो गया था। कटी तब तक पानी में छलांग मार गई थी। विकास भी पीछे पीछे कूद गया था।

अरे वो गई वो गई साला बन्माश धोखेबाज' कुछ भेड़िये चिल्लाये थे। एक तो पानी में कूद भी गया था। पीछा

तरन को। ग्रौर भेडिय दूसरी तरफ निकल गय। भेटा की राइ कभी थोडे ही थी। जितना चाहो जिरह करलो। खुली छूट है। रात भर की वादशाहत है। ग्राज धमराज प्रिवेयरेन्री टु न्वियरमट लीव पर रवाना हो गय हैं। चलान की उनकी गद्दी मिली है। उन्होंने ग्रत्याचार उत्पीडन ग्रौर बलात्कार की गन्धायें गिनकर पुरस्कार दने की घोषणा कर दी है। ग्रब जितने पुरस्कार लने हो बटोर लो। जीवन म फिर ऐसे ग्रवसर नही ग्रायेंगे। सोच लो। कल को धर्मराज को रिएम्प्लोय मट मिल सकता है। वे फिर मौका नही देंगे।

कटी ग्रौर विकास को पता लग गया था— एक मगरमच्छ पीछा कर रहा है। उससे पीछा छुडाना जरूरी था। वर्ना तो ग्रागे कोई योजना बनाना ही व्यथ था।

दोनो ने कुछ सोचा। कुछ निश्चय किया। योजना निश्चित की ग्रौर फिर दोनो ग्रलग ग्रलग हो गय।

कटी ने डुबकी लगाई ग्रौर जसे खडी रह गई। मगरमच्छ पास ग्रा रहा था। कटी ने पानी के ऊपर सिर निकाला। मगरमच्छ ने भी। सालो! ' मुह से पानी फेंकते हुए कह रहा था वह। कटी ने सुना भी। वह पानी पर निढाल होकर लेट गई। मानो मृत हो।

मगरमच्छ ने उसे बगल म ले लिया। कटी हिली तक नही। पर वह धीरे धीरे उसकी पीठ पर ग्रा गई। मानो मगरमच्छ ने ही उसे पीठ पर डाल लिया हो। मगरमच्छ को पता ही नही चला। ग्रच्छा तैराक होने के बावजूद।

वह किनारे की ग्रोर बढने लगा। तभी विकास वहाँ ग्रा लगा। उसने उचककर मगरमच्छ का गला दबोच लिया ऊपर की ग्रोर से। ग्रौर कटी भी सक्रिय हो उठी। उसने मगरमच्छ का सिर पानी म डुबो दिया। मगरमच्छ इसके लिये तयार नही था। उसन सोचा भी नही था कि ऐसा कुछ हो सकता है।

पर वह तैराक था। सोचा डुबकी लगान से काम चल जायगा।

पर उसे पता नहीं था कि उसका वास्ता भी तैराकों से पड़ा है। तैराक भी मामूली नहीं।

कटी के दांत मगरमच्छ के गले पर गड़े थे और भीतर गड़ते जा रहे थे। मगरमच्छ पानी के नीचे ठहर नहीं सका था। पर ऊपर आने से भी उसका सिर पानी के ऊपर नहीं आ पाया। कटी के दोनों हाथ उसके सिर को पानी के भीतर दबाये थे। विकास के शिकंजे में उसका गला फंसा था।

वह बड़े घूंट पानी फेंफड़ों में उतार चुका था। और उसका संघर्ष धीरे धीरे कम होता जा रहा था। गड़प और पानी फेंफड़ों के भीतर जा पहुंचा था और शरीर शिथिल होकर पानी की तलहटी की ओर खिसकने लगा था।

विकास और कटी ने मगरमच्छ को छोड़ दिया था और बराबर बराबर तैरने लगे थे। किनारे से विपरीत दिशा में। किये हुए संघर्ष का प्रभाव अंग प्रत्यंग को शिथिल किये जा रहा था और किनारा मानो पास आने से इंकार कर रहा था। यह तो दृढ़ मन शक्ति ही थी, जिसके कारण वे दोनों किनारे तक पहुंच पाये थे।

दोनों जमीन पर चित्त लेट गये थे। आंखें बन्द करके और शरीर को ढीला छोड़कर। कटी को निवसन होने का ध्यान नहीं था, किन्तु पानी में देर तक रहने और रात की ठंडक से उसका शरीर जड़ होता जा रहा था। विकास के कपड़े गीले थे और खुले आकाश के नीचे और गीले हो रहे थे। उसे भी ठंड लग रही थी।

उसने गीले कपड़े उतार फेंके। एक अण्डर वियर के अतिरिक्त। कटी आँखें बन्द किये पड़ी थी पर उसके शरीर में कम्पन परिलक्षित हो रहा था। विकास चाह रहा था कि उसे कुछ ओढ़ा दे। किन्तु चारों ओर दृष्टि डालकर वह निश्चेष्ट हो गया था।

आधा-पौन घंटे बाद विकास उठा। पूरा मनोबल लगाकर। वह महसूस कर रहा था कि उसका जोड़ जोड़ थक चुका है और सत्य

जड भी। पर कुछ करना अनिवार्य था। कहा : "मैं……जाऊँ।

क्टी।'

हूँ।' बिना आँखें खोले क्टी ने कहा था।

तुम अनुमति दो तो मैं वस्त्रादि ले आऊं। तुम्हें ठंड लग रही है। कहीं निमोनिया न हो जाय।

जाओ। जल्दी आना एक अनुरोध। विकास ने अपनी कमीज क्टी के पास सुला दी। पर वह जानता था—इस सूखने में घंटा लगेंगे। फिर भी कोई कपड़ा पास में रहना ठीक है— उसने सोचा।

वह थके कदमों से चला। पर चलना कठिन लग रहा था। किसी तरह सड़क तक पहुँचा और सवारी की प्रतीक्षा करने लगा। पर ऐसे वक्त सवारी का मिलना असम्भव सा था। पन्द्रह मिनट बीते आधा घंटा फिर एक घण्टा। वह निराश हो चला। उधर क्टी का न जाने क्या हाल होगा?

तभी एक रेहड़ी आती दीखी। उसमें एक गधा जुड़ा था। वह खड़ा होकर उसे रुकने का इशारा करने लगा। रेहड़ी वाला रुका तो सही। पर बोला— दूध लेकर जा रहा हूँ। भार पहले ही बहुत है। उसने चलने की तैयारी की तो विकास ने अपनी रिस्ट वाच उतार कर उसकी ओर बढ़ाई और कहा— 'किसी की जिन्दगी और मौत का सवाल है। ना मत करो। तुम्हारे दूध और रेहड़ी की कीमत का दस गुना मूल्य दे दूंगा। तुम मुझे ले चलो बस। देर मत करो। चाहो तो दूध के कनस्तर यहां उतार दो। तुम्हें घाटा नहीं होने दूंगा। तुम जो चाहोगे तुम्हें दूंगा। और तुम्हें लालच नहीं दे रहा हूँ। समझो कि भीख मांग रहा हूँ।"

रेहड़ी वाले ने उस नग्न प्राय व्यक्ति को देखा। रिस्टवाच भी देखी। सोचा—कहीं गप्प लगा रहा होगा। फिर उसने सुरक्षा की दृष्टि से घड़ी अपनी कलाई पर बाँधी और कहा— चलो बाबू! दूध के कनस्तर उतारे देता हूँ यहीं। वापस मिलेंगे या नहीं कह नहीं सकता।

तुम्हें इनकी कीमत से ज्यादा देना पडेगा। बोलो, मजूर !"

विकास न मजूर र र लिया था और पाच मिनट मे रहडी चल पडी थी। गधा अपनी मस्त चाल मे चल रहा था। विकास के चाहन पर भी उसकी चाल म कोई फर्क नही आया। विकास विवश होकर पड रहा।

कटी के रेजिडेंस के आगे रेहडी रुकी तो रेहडी वाला चकित हो गया था। इतनी बडी जगह रहने वाला व्यक्ति। अब उसे विकास के कथन पर विश्वास आया और साथ ही क्षति पूर्ति के बारे मे योजना बनाने लगा।

कटी के पिता जाग रहे थे। पुत्री की प्रतीक्षा म। उन्हें कुछ पता नही था कि रवीन्द्र सरोवर पर क्या कुछ घट चुका है। वे तो विलम्ब होते देखकर चिन्तित हो रहे थे।

विकास और रेहडी वाला साथ साथ ऊपर गये थे। रेहडी वाला चकमा खाने को तैयार नही था। इसीलिए उसने विकास को अकेले ऊपर नही जाने दिया। फिर उसे कहा ढूढता फिरे ?

घटी बजी तो नौकर न दरवाजा खोला। नग्न स विकास को देख कर चौंका। दरवाजा बन्द करन लगा तो विकास ने कहा— 'जाओ सक्सेना साहेब को कहो— विकास आया है।'

मि सक्सेना भागते हुए आय। नौकर से विकास की हालत सुन कर उन्ह कोई भयकर आशका अनुभव हुई थी। और कटी तो अभी लौटी भी नही थी। वह ता विकास क साथ जान वाली थी न।

विकास न उन्ह शीघ्र ही तैयार होन को कहा। खुद सक्सना साहब के कपडे पहने और फिर डाक्टर को घर पर बुलान और हाजिर रहन का टेलीफोन करवा दिया। रेहडी वान को ०००) रु० दिलाय और साथ चलने के लिय भी राजी किया। वही बता सकता था कि विकास उसे कहाँ मिला था। विकास को स्वय कुछ पता नही था। कुछ भी याद नही था।

मि सक्सेना बहुत सक्रिय हो उठे। रुपये निकालकर जेब में डाल लिये। नौकर को भी साथ चलने को कहा। बड़ी गाड़ी निकाली और स्टार्ट करते ही स्पीड बढ़ा दी। फुल स्पीड। सत्तर मील। अस्सी मील। नब्बे मील। और सुई १०० मील को स्पर्श कर रही थी। तब दूर से दूध के बाजार दिखाई दिये थे और दूकानदार ने इशारा किया था। स्पीड कम करते वक्त भी पगडंडी में गाड़ी रुकी थी। और फिर सब सीमाओं में सड़क से उतर गये थे। गाड़ीवान की दिशा में उन्हें चलना था। पर किधर और कहाँ ? यह किसी को पता नहीं था। विकास को भी नहीं। टॉर्च की रोशनी में इधर उधर ढलान पर बढ़ रहे थे। सरोवर का रस्ता था पर कहाँ दिखाई नहीं दे रहा था।

विकास और मि सक्सेना किनारे की एक तरफ चले और नौकर तथा ड्राइवर दूसरी तरफ। कार से उतरे हुए उन्हें आधा घंटा हो गया था और अभी कटी का कोई चिह्न नहीं मिला था। वे तत्परता से इधर उधर ताकते हुए आगे बढ़ रहे थे। तभी उन्हें नौकर की आवाज सुनाई दी।

वे दोनों उधर भागे। नौकर चिल्ला रहा था। ड्राइवरवाला भी। मि सक्सेना का खून सूख गया, इन आवाजों से। विकास भी नई आन आशा से ग्रस्त हो उठा।

कटी बेहोश पड़ी थी और दो तीन गीदड़ों ने उसे कई जगह नोच लिया था। गीदड़ शायद अभी आये थे। वर्ना ।

कटी को कम्बल में लपेटकर वे कार की ओर चल पड़े। करीब करीब दौड़ते से। कटी का शरीर बुखार से जला जा रहा था। कुछ प्रलाप का सा भी आभास लगा।

कार भागने लगी थी। जेट की सी स्पीड में। एक एक क्षण इस समय मूल्यवान् जो था। सौभाग्य से लिफ्ट भी काम कर रही थी। वर्ना ऐन वक्त पर इन मशीनों का भरोसा नहीं।

डाक्टर आया बैठा था। बरामदे में। वह समझ नहीं पा रहा था

बीमार कौन है, कहा है ? रात के तीन बज रहे हैं और मरीज ।
मरीज को आते उसने देख लिया था और फिर वह चौंक भी उठा था। तुरत नर्सिंग होम ले चलने का परामर्श दिया। पहले एक इंजेक्शन अवश्य ही लगा दिया। सब लोग उलटे पैर नीचे उतर गये थे और कार फिर से डलहौजी स्क्वायर की ओर दौड़ चली थी।

वक स्ट्रीट में था नर्सिंग होम। डा बैनर्जी का अपना नर्सिंग होम। विशेषत वी आइ पीज के लिये।

कटी का आपरेशन थियेटर में ले जाकर डाक्टर ने दरवाजा बन्द कर लिया था और बाकी सब बाहर प्रतीक्षा करने लगे थे। विकास भी थोड़ी देर में काँपने लगा था। डॉक्टर के एक असिस्टेंट ने उसे सम्हाला। एक बेड पर जाकर लिटाया। इंजेक्शन भी दिया। किन्तु उसकी हालत काबू में नहीं आई। उसने थियेटर रूम में डाक्टर बैनर्जी को फोन किया। वे भागते से आये और विकास को देखा। नब्ज। आँखें। सीना।

फिर चिट पर कुछ लिखा और पाँच मिनट में दुबारा आने का कहकर चले गये। मि सक्सेना देखते ही रह गये थे। वे कटी के बारे में पूछने को आगे बढ़े, किन्तु डाक्टर ने हाथ से मना कर दिया और भीतर जाकर फिर दरवाजा बन्द कर लिया। कटी की हालत बहुत नाजुक होगी— मि सक्सेना ने अनुमान लगाया।

बात सच थी। पूरे तीन दिन होश नहीं आया था उसे। होश आने पर भी कुछ बोल नहीं पा रही थी। डॉक्टर ने मना भी कर दिया था। एक सप्ताह में वह पानी पापा' आदि दो चार शब्द बोलने लगी थी। तब तक मि सक्सेना के प्राण कंठ में आ गये थे। उन्हें कटी और विकास दोनों की ओर दौड़ना पड़ रहा था। वे विकास के घर का पता नहीं जानते थे। अतः किसी को सूचना भी नहीं कर सके थे। इससे उनका दायित्व द्विगुणित हो गया था।

विकास और कटी दोनों ही भयंकर न्यूमोनिया से आक्रान्त थे। कटी को माथा की पीड़ा अलग से थी। उसके बाँयें हाथ और दाहिने

पर की अगुलियाँ काटनी पड गई थी। उनम कुछ बचा ही न था। बची तो वह स्वय थी। मात्र भाग्य से। दस पन्द्रह मिनट की और देर हो जाती तो सब समाप्त था। रात को तुर त डाक्टरी सहायता न मिलती तो भी पूरा खतरा था।

खतरा अब भी टला नही था। विकास का न्यूमोनिया रिलेप्स हो गया था और कटी के घावो म सेप्टिक। डाक्टर बैनर्जी परेशान था। उसके नर्सिंग होम मे यह स्थिति असामान्य थी। उसने नर्सों को बदल दिया। सहायक डाक्टर बदल दिये। स्वय अधिक राऊड लगाने लगा। ट्रीटमट मे कोई कसर नही रहनी चाहिये— उसका यही सिद्धा त था। और उसका बिल !

मि सक्सेना ने बिल की चिंता नही होने दी थी। दोना मरीजो की चिकित्सा के लिए उसने डाक्टर बैनर्जी को पूरी छूट दे रखी थी। और डाक्टर ने छूट लेने म फिर कसर भी नही रखी। बडे से बडे वी आइ पी के लिए भी वह इसस ज्यादा जान नही लडा सकता था।

पूरे ढाई महीने तक दोनो मरीज नर्सिंग होम मे रहे थे। तब तक दोनो का हुलिया बदल गया था। हड्डिया निकल आई थी दोनो की। आखें गडढ म बठ गई थी। गाल चिपक गये थे और चमडी काली सी पड गई थी।

मि सक्सेना दोनो को देखते तो रोना आता था। दोना के बच जाने की आशा से कुछ धैय धारण किये थे। वर्ना कभी । दुघ टना के पहले ही सप्ताह मे उन्होने कई पत्रकारा से सपक करके रवीन्द्र सरोवर काण्ड के बार म कुछ सकेत दिये थे जो बहुत लाभप्रद थे। पत्रकारा की उत्सुकता जगी थी। वे अस्पताल म कटी और विकास की हालत देख गय थे। फोटो भी ले गय थ। शेष अपनी उवर कल्पना शक्ति से जोड लिया।

अगले दिन अखबार म सुरसुरी छूट गई थी और फिर दूसरे दिन छोटे बडे सभी अखबारो न इस घटना को उछालना शुरु कर दिया था। एक सप्ताह के भीतर भारत वष के सब अखबारा म उसकी चर्चा थी।

असेम्बली में सवाल उठे थे। पार्लियामेंट मे ध्यानाकर्षण नोटिस देकर बहस की गई थी।

सब जगह एक ही चर्चा थी— ऐसी घटना सैकडो वर्षों म नहीं हुई। सभवत इतिहास मे इसकी मिसाल नही मिलेगी। इतने बलात्कार। इतना अत्याचार। इतनी यातनायें।

अखबार वाले चिल्ला रहे थे— 'भारत क सबसे बडे महानगर मे पुलिस की अक्षम्य निष्क्रियता। मिनिस्टरा की छत्रछाया मे रक्षित गुण्डा का भयकर आतक। बहू-बेटिया का सतीत्व अस्तित्व खतरे म। रवीन्द्र सरोवर पर सैकडो युवतिया के साथ अत्याचार बलात्कार। सतीत्व रक्षा के लिये सरोवर मे छलागे तरती लाशें आस पास क मकानो के दरवाजे बन्द रहे पुलिस के डर मे गुण्डो के डर स अपनी कायरता कायराना हरकता के सामने कायराना रुख। सरोवर काण्ड के अभियुक्त अब भी सडको पर खुले घूम रहे हैं। मूछो पर ताव दते। सास्कृतिक समारोह के आयोजक अब भी स्वतन्त्र हैं। उन्हे पकडने की कोई कोशिश नही हो रही। उनके कथनानुसार तो सरोवर पर कुछ हुआ ही नहीं।'

केन्द्र की ओर से राज्य सरकार को लताड पडी? और फिर महीनो बाद जाँच का आदेश दिया गया। ऐसी जाँच का कोई परिणाम न कभी निकला है न निकलेगा। कहा गया— कोई गवाही देने वाला ही नही। पर कहने वाले जानते हैं और सुनने वाले जानते है— गवाही देने पर सबूत माँगे जायेंगे। लुटी हुई अस्मत का फिर मखौल उड़ाया जायेगा और फिर निर्णय वही होगा— जो सरकार दिलवायेगी। अर्थात् रवीन्द्र सरोवर पर कोई दुर्घटना नही हुई। अत्याचार और बलात्कार का तो प्रश्न ही नही उठता।

यदि असत्य को बार बार दुहराया जाय तो वह सत्य बनने लगता है। राज्य सरकार ने लगातार ऐसे बयान प्रकाशित करवाये कि पब्लिक को चुप हो जाना पडा। दबी जबान स सब कहते रहे—इतना बड़ा झूठ। इतना बडा असत्य! हाय कलियुग।

९

कंटी और विकास घर आ गये थे। एक साथ। विकास न घर का पता दे दिया था और उसके माँ बाप भागते आये थे। वे विकास को अपने साथ ले जाना चाहते थे। पर मि सक्सना नही माने। उन्होने साफ साफ कह दिया— यह मेरे बेटे के समान है। जब तक यह बिल कुल स्वस्थ नही हो जायेगा इस घर से नही जाने दूगा। वसे भी इसे कई दिन मेडिकल अटेंडस की जरूरत है। गाँव म इसकी व्यवस्था कसे होगी ?"

विकास के माँ बाप मान गये थे। यह भी जान गये थे कि इतना व्यय करना उनके वश की बात नही थी। उन्होने जिद नही की। जाते समय फिर आने को अवश्य कह गय। मि सक्सना न उन्ह इसके लिए आमन्त्रित भी किया।

और तभी सत्यद्र का तार आया—

सस्पेंस ओवर रीचिंग मडे सेम होटेल

सत्यद्र

पढकर कटी मुसुराई थी। पता नही अब तक कितने सस्पेंस उसे झकझोर गय थे। सस्पेंस का तो अथ ही उसे चुका हुआ लगा। वहाँ रह गया है अनिश्चय उसके जीवन म ? उसन तो निश्चय कभी कर लिया। अब उसे कौन सा निश्चय करना शेष रह गया है ?

आज शुक्रवार है। सोमवार म अभी तीन दिन पड़े हैं। तब तक शायद स्वास्थ्य और सुधर जाये— कटी न सोचा। वह होटल तो नही

जा सकेगी, यह निश्चय था। तो क्या उसे घर बुलाया जाये? घर आकर भी क्या करेगा वह? व्यर्थ ही दुखी होगा।

तो क्या न उसे तार दे दिया जाय? यही ठीक होगा कटी ने सोचा। उसने ऐसा किया भी। डैडी से तार लिखवाकर भेज दिया—

इंडिस्पोज्ड कांट मीट प्रेजेन्टली वेट नेक्स्ट कम्युनिकेशन

कटी

तार मिलेगा तो निराशा जरूर होगी—कटी ने सोचा था। पर इसके अतिरिक्त वह कुछ कर भी नही सकती थी। पर वह यदि बीमारी की सूचना पाकर यहा आ गया तो। तब तो स्थिति कुछ जटिल हो सकती है और इर्ष्या के लिए कारण भी। प्रमाण भी। कुछ भी तो नही छिपा पायगी वह। ठीक है सत्येद्र समझदार है। उससे नासमझी की आशा नही किन्तु मानव स्वभाव का क्या विश्वास?

'क्या सोच रही हो कटी?'

कुछ नही डैडी?'

जरूर सत्येद्र के बारे मे सोचती होगी। किन्तु परेशान होना अनुचित है।

सुनेगा तो वह समझ जायेगा। उसके प्रौढत्व के प्रति अविश्वास न करो। डैडी की बात मे सत्यांश है—कटी ने माना। पर न्याय अन्याय भी तो देखना होगा। जो व्यक्ति वर्षों स प्रतीक्षा कर रहा है, उसे मात्र परिस्थितियो की विवशता से कैसे दुत्कार दे? उसने कभी मांगा नही, बस डिजव करता है। विकास भी मांगता नही। न ही अधिकार जताता है। किन्तु डिजर्व अवश्य करता है। एक के साथ न्याय का अर्थ होगा—दूसरे के प्रति अन्याय। और इसके वपरीत्य से भी वही तथ्य स्फुट होगा।

नैतिक दायित्व की इस छीना झपटी म कटी उलझी रही। समाधान दिखाई नहीं दे रहा था। पर सामाधान शायद है ही नहीं—कटी ठिठकी। तो क्यो वह असभव के पीछे दौड़ लगा रही है?

उसने एक निश्चय पर पहुँचने का निश्चय किया। पद्धति भी सोच डाली। दो में से एक का चयन करना ही तो बात है। ऐसा करने में वह स्वतन्त्र थी। बाध्य भी। अस्तित्ववाद की भाषा में अभिशप्त भी क्या कि उसे किसी भी एक का चयन न करने से वेदना की अनुभूति अवश्य होगी। शायद जीवन-पर्यन्त।

कटी ने वेदना को झेलना रहा थी। चयन करना ही है। उसने किसी अन्य का परामर्श लेना भी उचित नहीं समझा। इससे चयन में प्रतिबद्धता की आशंका थी। वह प्रतिबद्ध नहीं होना चाहती। वह स्वतन्त्र रहना चाहती है। अपने चयन के द्वारा उस स्वतन्त्रता सिद्ध करती है।

उसने दस पैसे का एक सिक्का मंगवाया और हैड टेल के द्वारा चयन करने की सोची। हैड सत्येन्द्र के लिए। टेल विकास के लिए। फिर कागज की दो पुर्जियाँ बनाईं। एक जैसी। एक आकार की। उनमें से एक पर लिखा सत्येन्द्र। दूसरी पर विकास।

किन्तु अब एक नई समस्या पैदा हो गई। सिक्के से सत्येन्द्र जीता था किन्तु पुर्जी से विकास। उसने इस सम्भावना पर विचार नहीं किया था। किन्तु सम्भावना तो अत्यन्त स्वाभाविक थी।

कटी को अनुभव हुआ— वह स्वयं को प्रवंचित करना चाहती है। धोखा देकर दायित्व के निर्वाह से बचना चाहती है। उसने मन ही मन स्वीकार किया कि वह शायद चयन करने के लिए तैयार ही नहीं है। तो फिर!

उसने निर्णय किया कि उपयुक्त समय की प्रतीक्षा की जाये। तब शायद चयन अपने आप हो जाये। इससे वह चयन जनित वेदना से मुक्त भी रह सकेगी।

दूसरे दिन मि० सक्सेना कुछ परेशान दीखे। कटी ने पूछा तो टाल गये। आग्रह करने पर बताया— "कर्मचारी हड़ताल करने की धमकी दे रहे हैं। दस-सूत्री माँगें मनवाने के लिए। माँगें ऐसी हैं कि पूरी

करना असभव सा है। इसमे तो कम्पनी दीवालिया हो जायगी। यूनियन के नेताओ से बात करके देख लिया। वे समझौते के लिए तैयार नही हैं। मार्क्सवादी बडे नेताओ ने उन्हे उकसाया है। शायद समथन देने को भी कहा हो।

कटी ने पूछा— 'तो आपने क्या करने की सोची है ?"

'सोचना क्या है ? मैंने माँगें नामजूर कर दी हैं। नताओ को कह दिया है कि हडताल करेंगे तो तालाबन्दी कर दी जायगी।"

सरकार का इस हडताल क प्रति क्या रुख रहेगा ?'

'सरकार मौन रहती दीखती है। सच कहा जाये तो सरकार ने इन यूनियनो को गो अहेड' का सा सिग्नल दे रखा है। और परिणाम यह हुआ है कि आज पश्चिमी बगाल मे मजदूरो का दिमाग चन्द्रलोक पर चढ गया है। यहाँ की ६० प्रतिशत फक्टरियाँ और कारखाने ठप्प से हो गय हैं। मालिको और अफसरो का घिराव भी किया जाने लगा है, जिसम मार पीट की तो बात ही क्या, हत्यायें भी कर दी जाती हैं।"

'और सरकार इस पर कुछ नही कर रही ? कटी ने आशकित होते हुए पूछा।

सरकार देख रही है। चुपचाप नही। मन्त्रियो मे से कुछ मार्क्स वादी पार्टी के हैं। वे खुले तौर पर मजदूरो का समथन कर रहे हैं। वे पूजीवादियो के विरुद्ध उन्हें भडका भी रह हैं कि शोषण के विरुद्ध लडने को सगठित हो जाओ। उनके कथन का सीधा अथ यही निकलता है कि हडतालो से काम ठप्प कर दो और घिराव के माध्यम से माँगें मनवाने के लिए बाध्य कर दो। मजदूर कर भी यही रह हैं। अपने यहाँ के मजदूर उन्हीं से प्रेरणा पाकर हडताल करने वाले हैं। वर्ना सारा कलकत्ता जानता है— इनको औरो की अपेक्षा अच्छा वेतन और ओवरटाइम दिया जाता है। अन्य सुविधायें भी अनेक हैं।'

'तो फिर ये क्या चाहते हैं ?

नही। किन्तु जनतन्त्रीय प्रणाली म हडताल करवाने है कम्युनिस्ट ही। इसका सीधा सा ग्रथ हुग्रा कि कम्युनिस्ट हडताल के सिद्धान्त को स्वीकृति देते है। पर वे ग्रपन यहाँ ग्रर्थात् कम्युनिस्ट देशा म हडताल की ग्रनुमति नही दते। न तो विकास के प्रारम्भिक वर्षो म ग्रौर न विकास के बाद। हडताल के ग्रौचित्य के कारण जनतन्त्रीय देशा म भी होते है ग्रौर साम्यवादी देशा म भी।

प्रश्न रह जाता है, ग्रनुमति देने या न देने का। माना कि हडताल करने के लिए कभी कभी उचित कारण होते है। पर य कारण सदा उचित ही हो यह ग्रावश्यक नही। पूरा वतन दे दो तो काम के घटे कम करवान की माग होगी। काम क घटे कम कर दो तो स्वामित्व की माँग होगी। ग्रौर स्वामित्व इन माँगो का ग्रन्त नही। स्काइ इज दी द लिमिट।

हडताल के बारे मे एक पत्रिका म प्रोफेसर शक्ति मगलम् के ये विचार छप थ ग्रौर मि सक्सेना इनसे सहमत थे। वे जितना काम उतना दाम के सिद्धान्त मे विश्वास करते थे। शारीरिक श्रम एव मानसिक श्रम मे भी वे मूलभूत ग्रन्तर मानते थे। शारीरिक श्रम की तुलना मे तो मशीनें ग्रधिक सक्षम सिद्ध हुई है ग्रौर कम्प्यूटस के ग्रवेषण से मानसिक श्रम भी काफी मात्रा मे बचाया जा सकता है। पर य मशीनें ग्रौर कम्प्यूटस बनाय किसने ? इनका ग्रन्वेषण किसने किया ? शारीरिक श्रम न या मानसिक श्रम न ?

उत्तर स्पष्ट है। शरीर ग्रौर मस्तिष्क की तुलना नही हो सकती। सभव है दोना के सघष मे दोनो नष्ट हो जाय। पर नियत्रण होगा तो मस्तिष्क का ही। शरीर केवल ग्रादेश मानेगा। चाहे यह ग्रादेश जनतन्त्रीय विधि से हो चाह साम्यवादी विधि से। विधि म ग्रन्तर हो सकता है ग्रादेश म नही।

फिर य विधियाँ भी मूलत कहा भिन्न हैं ? सभी जगह तो मिलें होती हैं। फक्टरियाँ ग्रौर इडस्ट्रीज होती हैं। क्या जनतन्त्र ग्रौर क्या

साम्यवाद ? सभी जगह ता श्रमिक होगे । सभी जगह मैनेजर होंगे । बडे बॉस होगे । वेतन और पारिश्रमिक मे भी अन्तर होगा ही । चाहे अन्तर का प्रतिशत कम हो या अधिक । अतर सब जगह है ।

निलम्बन और बर्खास्तगी सब दशा म होनी है । साम्यवादी देशा मे भी । पर वहा यूनियन हडताल नही करती । चू भी नही करती । वहाँ बड से बडे जनरल मनेजर का डिस्मिसल मौन होकर स्वीकार किया जाता है । वर्ना और कई ।

फिर जनतन्त्र मे ये हडतालें क्या ? साम्यवादियों को यहा हडताल करवान का कौन सा नैतिक बल प्राप्त है ? वे शायद कहेगे—साम्यवाद स्थापित करवाने मे यह भी एक साधन है उपाय है ।

तो हडताल के वास्तविक कारण श्रमिका के घरा म नही नेताओ के मानस मे होते हैं । उनम भी एकमत्य नही । कोइ मार्क्स की दुहाई देगा । कोई लेनिन की । माओ— समर्थक भी मिल ही जायेंगे । जब मानस के स्तर पर इतना अन्तर है जब मार्क्स जैसे विचारक को भी दूसरा पक्ष अमान्य घोषित कर देता है तो फिर इन स्थानीय स्तर के नेताओ के मानस का तो कहना ही क्या ? क्या तो इनका चिन्तन होगा क्या फिर होगा विवेक ?

वास्तविकता तो मि सक्सेना को यह लगी कि य सपूरण मानसिकतायें कहीं भी मौलिक नहीं है । प्रतिबद्ध हैं ये । साम्यवाद से या किसी और वाद स । ये कवल अनुसरण हैं । और भाले है व श्रमिक जो अनुसरणकर्ताओ का अनुसरण करत हैं । अनुसरणकर्ता स्वय को नेता कहते है और मानते हैं— यह एक विरोधाभास है । आश्चर्य है कि श्रमिक इन्हे पहचानते नही । इनके नेतृत्व स स्वय को भटकाते नही ।

मि सक्सेना न जितना सोचा उतना ही हडताल का अनौचित्य महसूस हुआ । वे देख रहे थे— बडी छोटी सभी इडस्ट्रियो मे व कल कारखानो म हडताल होने या काम ठप्प होने

बाधा पहुँच रही है। प्रतिदिन लक्षाधिक श्रम— घंटे व्यथ जा रहे हैं। फिर कैसे तो यह देश प्रगति करेगा? कैसे यहाँ के लोग समृद्ध होंगे।

सरकार भी पता नहीं इन हड़तालों पर अंकुश क्यों नहीं लगाती? क्या नहीं साम्यवादी देशों की तरह यहाँ भी हड़तालियों से सख्ती से पेश आती? क्या सरकार को पता नहीं कि इन हड़तालों से देश की प्रगति का माग अवरुद्ध हो रहा है?

मि सक्सेना सोचते सोचते थक गये। वे अब और नहीं सोचना चाहते थे। उनके सोचने से प्रयोजन भी सिद्ध नहीं होता था। वे जानते थे— हड़ताल अभी चलेगी। हड़तालियों के घरों में जब लगातार दो तीन वक्त चूल्हे नहीं जलेंगे और जब नेताओं के पास नारों के अतिरिक्त देने को कुछ नहीं होगा तब उन्हें समझ आयेगी। व्यक्ति टूटेगा। हड़ताल टूटेगी। नेता चिल्लायेंगे— इस टूटन से शोषक वर्ग के विरुद्ध आवाज और बुलन्द होगी। उनसे कोई पूछे— फिर क्या होगा?' वे बतायेंगे— साम्यवाद के आने में शीघ्रता होगी। और साम्यवाद आ गया तो शायद टूटन नहीं होगी?

कितना भ्रामक है यह विचार? कितना भ्रामक है यह सब प्रचार? मानो एक व्यवस्था या विधि का विरोध ही समस्या का समाधान है। उन्हें पता नहीं— व्यवस्था के बदलते ही नई व्यवस्था के विरोध की स्थितियाँ बनने लगती हैं। फिर कब तक ये परिवतन होते रहेंगे? क्या व्यवस्थाओं की चर्खियों पर घूमते ही रहोगे?

मि सक्सेना ने अपना बड़ा रुख दिखाने के लिए एक नोटिस दफ्तर के बाहर लगवाया। उनमें उन्होंने लिखा था—

'आप लोगों की हड़ताल गलत है क्योंकि हड़ताल सदा गलत होती है। साम्यवादी देशों में हड़ताल की छोड बोलने की भी अनुमति नहीं है। फिर यहाँ हड़ताल क्यों? अपने नेताओं से पूछो। साम्यवादी देशों में ८ १० घंटों में कम काम कोई श्रमिक नहीं करता। फिर यहाँ काम के घंटे घटाने की माँग क्यों? अपने नेताओं से पूछो।

तुम्हें और पैसा चाहिये ? तो अधिक काम करो ओवर टाइम और मिलेगा। हड़ताल कोई काम नहीं है। इसमें तुम्हारी या तुम्हारे परिवार की परेशानियां नहीं मिटेंगी। परेशानियां मिटेंगी अधिक कमाने से। हड़ताल इसमें सहायक नहीं होगी। हड़ताल छोड़ दो।

हड़ताल बन्द नहीं होगी तो दफ्तर बन्द हो जायेंगे। फैक्टरी बन्द हो जायेगी। फिर तो वह भी नहीं कमा पाओगे जो कमा रहे हो। घर वालों को वह भी नहीं खिला पाओगे, जो खिला रहे हो। अपने दायित्व को सोचो। तुम्हें स्वयं जीवित रहना है और परिवार को जीवित रखना है तो हड़ताल बन्द कर दो।

वर्ना कल से तालाबन्दी की घोषणा की जाती है।

जेनरल मनेजर

हड़तालियों ने नोटिस पढ़ा। बड़ा शोर मचा। नेता चिल्लाये— यह सब बकवास है। हड़ताल हमारा अधिकार है। हम व्यवस्था बदलनी है। शोषक वर्ग को मिटाना है। नई व्यवस्था में सबके लिए रोटी सबके लिए वस्त्र दवा मकान होंगे।

मि सक्सेना ने दूसरा नोटिस लगवाया—'इसके बदले में केवल तुम्हारी जुबान काट ली जायगी। तुम कह नहीं सकोगे अपने मन की बात। कभी ऊपर वालों का विरोध नहीं कर सकोगे। हड़ताल का तो नाम ही नहीं लोगे। कुछ अधिक भौतिक सुविधाओं के लिए अपनी स्वतन्त्रता बेच दोगे। अपनी इकाई को भीड़ में खो जाने दोगे। मानव के स्थान पर यान्त्रिक व्यवस्था के एक पुर्जे बन जाओगे।

हड़तालियों में इस नोटिस से फिर खलबली मची थी। फिर बहस हुई थी। शोषक वर्ग को फिर गालियां दी गई थीं। और दूसरे दिन तालाबन्दी हो गई। कुछ हड़ताली वारी वारी से वहां दफ्तर के बाहर बैठने लगे।

एक दिन मि सक्सेना का विरोध भी कर दिया। उन्हें अपने फ्लैट से बाहर नहीं निकलने दिया। किसी को भीतर भी जाने नहीं दिया। टेलीफोन का तार काट डाला। पर मि सक्सेना ने इसका

माग पहले ही निकाल रखा था। उन्होंने थाने वकील को यह रखा था— यदि प्रात दस से पाँच के बीच घटे घटे भर से पान न मिले तो हैबियस कापस दायर कर दें। हाईकोट को इस पर कार्यवाही तुरन्त करनी पड़ेगी।

वकील ने यही किया था और पुलिस का एक दल उन्हें घरट म बाहर ले आया था। हडताली चले गये थे। दूसरे दिन फिर इसकी आवर्तिया का अर्थ ही नहीं रह गया था। एक स्टीन बन गया था। और धीरे धीरे हडतालियों को घेराव म विश्वास नहीं रह गया था।

हडतालियों का उत्साह बनाये रखने के लिए नेताओं ने एक और योजना बनाई। कुछ को यह पसन्द आई। कुछ ने विरोध किया। किन्तु विरोध करने वाला को पूँजीपतियो का पिठ्ठू और 'कायर' कहा गया तो वे चुप हो गये थे।

मि सक्सेना को यह विश्वास नहीं था कि हडताली लोग कोई घटिया हरकत भी कर सकते हैं। पर एक दिन विश्वास करना पड़ा। यह बहुत महगा भी था।

सध्या के धुधलके में वे घूमकर लौट रहे थे। कार म। सामने एक ठेला आ गया तो उन्हें कार रोकनी पडी। तभी उन पर लोहे की छड़ो से हमला कर दिया गया। उन्हें घसीटकर बाहर लाने का भी प्रयत्न किया गया किन्तु तब तक उन्होंने गाडी का एक्सेलेटर दबा दिया था और गाडी तजगति से चल पडी थी। छडो के कई प्रहार उन्ह फिर भी सहने पड गये थे।

वे सीधे नर्सिंग होम पहुचे थे। वही से पुलिस को टेलिफोन भी किया। पुलिस आई थी। एस पी साथ था। उन्होंने रिपोट दज करली कि सिर हाथ और सीने पर भयकर चोटें आई हैं। मि सक्सेना ने एक दो व्यक्तियो के नाम भी बताये। पर सबको व नहीं पहचान सके थे। अंधेरा जो था।

डा बनर्जी ने उनको अलग कक्ष म रखा था। सिर की चोट अधिक खतरनाक थी पर एक्सरे स पता चला कि मस्तिष्क पर आघात नही हुआ था। इसीलिये व इतनी दूर गाडी चला लाये थे।

दूसरे दिन अखबारा मे पूरा विवरण छपा था। मि सक्सेना के फोटो के साथ। पुलिस ने दो व्यक्तिया को गिरफ्तार किया है, यह भी सूचना थी। किन्तु सभी जानते थे— इन गिरफ्तारियो स कुछ नही होगा। मि सक्सेना स गवाह मांगे जायेंगे और वे दे नही पायेंगे। और अपराधी छूट जायेंगे। चोट जो लगी, उन्ह मि सक्सना सहलाते रहे। चाहें तो मालिको के सामन कहकर क्षतिपूर्ति मांगें। चाहें तो लोगा के सामने अपन साहस का वीरोचित वर्णन करते फिरें।

मि सक्सना को २५ दिन बाद नर्सिग होम स छुट्टी मिली। तब उन्होने बहो को तार दिया—

डिस्चार्ज्ड टुडे फ्राम नर्सिग होम रीचिंग फ्राइडे
डैडी

१०

सत्येन्द्र एयरोड्रोम पर आ गया था, पर मि सक्सेना को पहचानता नही था। किन्तु जिस ढग से वह अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहा था उससे मि सक्सेना उसे पहचान गये। उन्होने आगे बढकर कहा—'मि सत्येन्द्र ?'

येस प्लीज ! मैं आपको पहचानने का प्रयत्न कर रहा था।' सत्येन्द्र ने क्षमा याचना के स्वर म कहा बाहर गाडी तयार है। चलिये।"

दोनो घर आये तो कटी और विकास को बराम्दे मे बैठे पाया। व बहुत उत्सुक थे। किन्ही अर्थों म चिन्तित भी। उनके आते ही कटी उठी और अपने डडी से चिपट गई। मि सक्सेना ने उसके माथ को चूमा और पीठ पर हाथ फेरा।

बठने पर मि सक्सेना ने सक्षेप म सारी घटना बताई। छुडो के उल्लेख से कटी काँप उठी। फिर स्थिर हुई कि यह सब तो अतीत की बातें हैं। उसके प्रिय डडी सवथा सुरक्षित हैं और उसस बातें कर रहे हैं— इस तथ्य से वह पुन आश्वस्त हो गई।

पकड गये अपराधियो का क्या होगा ? सत्येन्द्र ने पूछा। मानो फाँसी पर लटकाये जान म अधिक देर तो नहीं है ?

'होगा क्या ? छूट जायगे। भारतीय पुलिस विशेषत आज के पश्चिमी बगाल की पुलिस स और आशा ही क्या की जाय ?

अकर्मण्यता का ऐसा उदाहरण और कहीं नहीं मिलेगा।" मि सक्सेना कहते-कहते कटुता से भर उठे।

कटी को बड़ा क्षोभ हुआ। वह कहने लगी— इसका अर्थ हुआ यहां किसी का जीवन सुरक्षित नहीं है? पुलिस किसी को सुरक्षा प्रदान नहीं करेगी?'

अभी तो यही स्थिति है। पुलिस को जानबूझकर अकर्मण्य बनाया जा रहा है। ऊपर के आदेशों के द्वारा। और सुरक्षा तो अब व्यक्ति को स्वयं करनी होगी। किसी अन्य के भरोसे बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। तुमने भी स्वयं यदि "मि सक्सेना बात पूरी नहीं कर पाये।

वे भूल गये कि सत्येन्द्र को रवीन्द्र-सरोवर के सम्बन्ध में कुछ भी न बताने का निर्णय किया गया था। कटी और विकास ने हां भरी थी कि वे इस बारे में मौन रहेंगे। पर आज आवेश में मि सक्सेना कुछ संकेत कर बैठे कि कटी के साथ कहीं कुछ अप्रिय होने की स्थिति बन गई थी। मि सक्सेना ने चाय मंगाने की बात कहकर विषय बदलने का प्रयत्न किया, किन्तु बात बन न सकी। पर कोई कुछ बोला नहीं।

एकान्त में सत्येन्द्र ने कटी को पूछा था और वह छिपा नहीं सकी थी। उसने बहुत संक्षेप में सुनाया क्योंकि उस कटुता की स्मृति से भी वह घोर पीड़ा का अनुभव करने लगी थी। मानसिक कष्ट के साथ-साथ शारीरिक यातना भी उसने कम नहीं भोगी थी। तीन महीने बीत जाने पर भी पूर्णतः स्वास्थ्य लाभ नहीं कर पाई थी।

भोगा तो विकास ने भी उतना ही था पर वह पुरुष था। नैसर्गिक ऊर्जा और शक्ति उसमें अधिक थी। इसीलिए वह कटी की अपेक्षा अधिक स्वस्थ होता जा रहा था।

सत्येन्द्र ने दोनों की ओर देखा था। दोनों किन किन नारकीय यंत्रणाओं के मध्य से नहीं गुजरे होंगे यह अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहा था। दोनों के शरीर ने असाध्य सहनशक्ति प्रदर्शित की होगी, इसका उसे विश्वास था। अस्वस्थता के दिनों की आत्मिक वेदना का ता

कहना ही क्या ? सब कुछ असह्य रहा होगा। वह भी महीनों तक। आज भी उसकी छाया इन दोनों की आकृति पर मडरा उठती है। अब तक वह इस छाया को पहचान नहीं पाया था। अहसास उसे अवश्य होता था।

सत्येंद्र की स्थिति अब विचित्र थी। कटी और विकास एक दूसरे के बहुत निकट आ गये हाेंगे, यह अनुमान लगाना कठिन नहीं था। अब इन दोनों के मध्य सत्यन्द्र कहाँ खड़ा हो सकता था ? आयु की दृष्टि से भी दोनों की जोड़ी उपयुक्त थी। सत्येंद्र तो कटी से करीब दुगुनी उम्र का था।

अब वह क्या करे ? एक ही छत के नीचे वह और विकास ! चाह उसके मन में ईर्ष्या या प्रतिद्वंद्विता न हो पर इसकी स्थिति तो वहाँ प्रस्तुत थी ही। उसे कटी के मन का पता नहीं था किन्तु परिस्थितियों की जटिलता एवं तज्जन्य विवशता तो पहचानी जा सकती है। कटी में भावुकता भले ही न हो पर कृतज्ञता तो होगी ही। सत्येंद्र के प्रति भी वह कितने वर्षों में कृतज्ञता ही तो व्यक्त करती आई है। फिर विकास के प्रति वह कृतघ्न क्या नहीं होगी ?

पर अब सत्येंद्र करे तो क्या करे ? उसने कटी की वर्षों प्रतीक्षा की थी। अब प्रतीक्षा की घड़ियाँ समाप्त हुई तो उस प्रतीक्षा की व्यथता सामने आ खड़ी हुई है। वह कटी से कुछ पूछ भी तो नहीं सकता। कटी स्वयं बोल नहीं पायगी। सत्येन्द्र को आभास हो गया कि कटी एक बड़े ऊहापोह से गुजरी है और गुजर रही है। सभवतः वह निर्णय भी नहीं कर पा रही है। तभी तो उसकी दृष्टि अभी स्निग्ध है। सत्येन्द्र के प्रति भी और विकास के प्रति भी।

और विकास ! वह गम्भीर है। कुछ व्यक्त नहीं करता। शायद अपनी स्थिति का अनावश्यक अहसास है। हीन भावना की समाप्ति से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। इस स्थिति में उसका मौन समझ में आता है।

तो तीनों ही मौन है। और शायद कुछ दिन रहेंगे भी। अनिर्णय की यह स्थिति अभी तीनो को ग्रस्त रक्खेगी। तीनो एक साथ और एक जैसी तीव्रता से वेदना का अनुभव करते रहेंगे। कैसी विचित्र स्थिति है? एक नये प्रकार का त्रिकोण! कटी किसी भी एक कोण की उपमा नही करना चाहती। दानो पर खिंची समान रेखाओं से वह जुडी है। कोई गालक किसी एक रेखा को काटता हुआ चला जाये तो शायद झुकाव म परिवतन आये।

सत्येन्द्र का लगा कि निर्णय होने मे देर है। आकाश अभी सभवत निरभ्र नही होगा। आशा निराशा के वल्ब अभी जलते बुझते रहगे। बाहर के दरवाजे पर घटी बजा करगी और द्वार खोलने पर कोई नही दिखेगा। पर दरवाजा खोलने को वह बाध्य होगा। बल्ब के जलने पर बन्द आँखें भी खोलनी पड जायेंगी। चाहे दूसरे ही क्षण उन्हे बन्द क्यो न करना पडे। दरवाजे की तरह।

विकास अतद्वन्द्व से मुक्त नही था। कटी और स्वय के मध्य का अन्तराल उसी दिन ज्ञात हो गया था जब कटी ने उसे अपने घर का पता बताया था। फिर कटी के यहा पार्टी अटेंड करते समय वह अन्त राल और विस्तृत हो गया था। माना किनारे से कटा कोई ग्लेशियर दूर खिसकता जा रहा हो और किनारे पर कूद जाने की अभिलाषा ही न रह गई हो।

विकास ने चाहा था— कटी उसके साथ पुन सपर्क ही स्थापित न करे। किन्तु वह अवश रहा था। कटी उसे पकड ले गई थी। रवीन्द्र सरोवर। बस अच्छा ही किया उसने। अनजाने ही एक सहायक साथ ले गई थी। सहायक तो औरो के साथ भी गये थे ।

वह वास्तविक अर्थों मे कुछ सहायता कर सका, इसका अहसास उसे था। प्रसन्नता भी। और कोई होता तो गर्व भी अनुभव करता। विकास गर्व नहीं कर सका था। किन्तु ग्लेशियर पुन किनारे की ओर आ रहा था। किनारा इतना निकट था कि जब चाहे उछलकर किनारे

पर छलांग लगा सकता था। पर वह किनारे को देख भर रहा था। और ग्लेशियर अकिंचित् दूरी पर स्थिर हो गया था। कुछ हिमपात हो तो शायद किनारे और ग्लेशियर का अन्तराल भर जाये। फिर छलांग लगाने की नौबत ही न आये। पता नहीं— कब हिमपात होगा ? कब जुड़ाव होगा ? शायद एक लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़े। बहुत लम्बी संभवतः निरर्थक और व्यर्थ भी।

पम्मी आई थी। कटी का फोन पाकर। आते ही कटी से चिपट गई थी। फिर उसे देखते रह गई थी— 'सिम्पली ब्यूटिफुल !' उसने कटी को कह भी दिया— तुम बहुत ही सुन्दर हो कटी ! शायद तुम्हें पता न हो। किसी हिरोइन की तरह। मानो नसीम ही हो। फिल्म वालों को मालूम होते ही भागते आयेंगे मैं ही डायरेक्टर पंकज को फोन करूंगी। तुम कहो तो अभी। पर उदास सी लगती हो। कहीं बीमार तो नहीं हो ? डाक्टर निवालकर को फोन कर दूं ? अभी आ जायेंगे। मेरे निजी डाक्टर हैं वे पम्मी बोलती चली गई थी।

कटी चुप रही। वह देख रही थी— पम्मी वाचाल हो गई है। सदा ऐसी थी। बदलेगी नहीं। शायद फिल्म विल्म में काम कर रही है। तभी इतना चहक रही है। कटी ने स्वयं की विचारधारा पर अंकुश लगाया। कहीं वह पम्मी से ईर्ष्या तो नहीं कर रही ? पर ईर्ष्या किस बात की ? पम्मी कोई अद्वितीय सुन्दरी नहीं। खूबसूरत तो नहीं, पर अधिक कटाव भी कहीं नहीं ? मेक अप गजब का है। तभी तो एक अनचाहा सा आकर्षण ओढ़े हुए है। नये से नये फैशन के वस्त्र। वस्त्रों से झांकते उभार ! आज की एक्ट्रेसों की वास्तविक प्रतिनिधि सी।

किस फिल्म में काम कर रही हो पम्मी !' उसने उत्साह सा दिखाते हुए पूछा।

अरे ! फिल्म विल्म को छोड़ो। फिर बता दूंगी। तुम तो अपनी बताओ। ७ ८ वर्ष बाद मिली हो। इस बीच क्या क्या करती रही हो ?

मेरा मतलब है—स्टग्नीज के अतिरिक्त। एनी एडवेंचर? एनी रोमांस?"

कटी को हंसी आ गई। युवक-युवतियों के लिए बातचीत का एक मात्र रुचि—वशिष्ट्य जानकर। मानो रोमांस नहीं किया तो कुछ नहीं किया। शायद युवावस्था की सहज परिणति यही है। वह बोली—'फनी तू बहुत होशियार हो गई है। वस्तुत बंबई इन बातों में कल कत्ता से आधी शताब्दी आगे है। इसीलिए इतनी प्रगल्भ दीखती है। मैं तो कलकत्ता में रही, जहां अभी चौड़ी लाल किनार की साड़िया चलती हैं। फॉक और स्लैक्स पर संदेह भरी दृष्टि डाली जाती है। और तू ठहरी ठेठ बंबई की। फिल्मों की नगरी बंबई। भारत का हालीवुड! बता री! कितने प्रेमी किये? कितनों की हाय हत्या ले चुकी है?'

कटी की परिहास—मुद्रा फनी को पसंद आई। स्कूल के दिनों की सहजता दोनों के बीच आ बैठी। दो तीन घंटे तक दोनों कान से कान जोड़े बात करती रहीं। कटी मुख्यत श्रोता रही और फनी को इसका आभास तक नहीं हो पाया। उसने कॉलेज में दो वर्ष पढ़ने के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। फादर के परिचित एक कमरामैन की सहायता से एक्स्ट्रा में आ गई थी। अब तो वह तीन चार फिल्मों में साइड हिरो इन भी बन गई थी। किसी के नाम से। उसने कटी को शूटिंग दिखलाने का प्रोमिज भी किया। कटी ने हां भर ली—बिना किसी उत्सुकता के।

कटी को प्रसन्नता थी कि फनी ने अपना मार्ग चुन लिया था। सफलता असफलता की कोई बात नहीं। फिल्मों में प्रवेश करने वाले सभी तो सफल नहीं होते। यह तो मात्र चांस की बात है। कहीं कोई फिल्म बाक्स हिट हुई नहीं कि लोगों का ध्यान तुरंत जायेगा। फिर कांट्रेक्टस की आपा धापी होने लगेगी। कम से कम कुछ बरस तक जब तक कि उसकी फिल्में धड़ाधड़ पिटती ही न चली जायें।

मि सक्सेना का घरलू सामान कलकत्ता से आ गया तो उन्होंने एक बंगलो ले लिया। फाउंटेन के पास। जहांगीर आर्ट गैलरी के

पिछवाड़े । छोटे बड़े पांच कमरे थे । निस्तब्धता ने निगल रखी था ।

कम्मी और विकास अब पूर्णतः स्वस्थ हो चुके थे । रक्ताभ चेहरा भी गोरा और स्फुट हो गया था । लम्बे बाँह दरिया की ओर पश्चिम घूमकर आते तो पत्नी की छोटी भाभी के उसके चेहरे पर हाथी । सत्येन्द्र भी यहां भी हो आते थे । वह स्वयं भी उधर आ जाता था । पर जब निराव आरम्भ हो गया था । दूरी ता रह ना तो स्पष्ट ही था । और सत्येन्द्र ने उसका नाम उठाना शुरू कर दिया था । कम्मी और विकास को परिवर्तन भीगने लगा था पर कोई भी कुछ कहने की स्थिति में न था । सबको लगता था—यही उचित है । पर मानने को कोई तैयार नहीं था ।

एक दिन प्रातः विक्टोरिया (टमटम) में दो प्राणी उतरे और बंगले के भीतर चले आये । नौकर को कहा—'जाओ मि० सक्सेना को कहो लाला रामदास आये हैं । अपनी लड़की के साथ ।

मि० सक्सेना ने सुना तो आश्चर्य से भर उठे । वे इस नाम से परिचित नहीं थे । उन्होंने कम्मी को बुलाकर पूछा । वह भी लाला जी के नाम से परिचित नहीं थी । तब विकास ने बताया—उसके मकान मालिक हैं और लड़की का नाम विमला है किन्तु उन दोनों के आगमन का कारण उसे भी समझ में नहीं आया ।

तीनों बाहर आये । बरामदे में लाला जी और उनकी लड़की ने नमस्ते की । ये तीनों भी बैठ गये । चाय मंगवाई और पी । तब तक मौन सब को घेरे रहा ।

लाला जी ने खखारा किया तो सबका ध्यान उधर ही केंद्रित हो गया । वस्तुतः उन्होंने बोलने का उपक्रम किया था—

हमें आना पड़ा क्योंकि प्रतीक्षा करते करते तीन चार महीने बीत गये । विकास का सामान अभी वहीं पड़ा है । मुझे चिंता हो गई । आखिर विकास गया कहां ? इसी तो हमारी चिंता क्या होने लगी ? एक पोस्टकार्ड तक नहीं डाला इसने अब तक ।

विकास ने बीच मे ही बात काट दी—'लाला जी मैं जल्दी ही किराया चुका दूंगा। सारा किराया ।'

लाला जी बीच म ही बात उठे—"हा हाँ! किराया चुका दोगे। बडा आया किराया चुका देने वाला। पिछले बारह महीने मे किसी ने किराया मागा भी तुमसे? अरे! घर का आदमी समझते थे या किरायेदार? यदि किरायदार ही मानते तो एक महीने बाद ही बोरिया बिस्तर बाहर फिकवा देता। पर हमने तो सदा अपना आदमी समझा। इसी लिए विमला को कह रखा था कि तेरे कमरे की सफाई कर दिया कर। चाय पिला दिया करे। बता, तुझे कभी कोई कष्ट होने दिया? क्या जरूरत होने पर तेरी फीस नही चुकाई? अब क्या क्या गिनायें? तेरे लिए इतना तो मा बाप ने भी नही किया होगा।"

विकास स्तब्ध हो गया था। इस पूर्वपीठिका को वह समझ नही पा रहा था। आत्मीयता के आवरण म कौन सा आक्रमण छिपा है इसे जानने का प्रयास करने म लगा रहा। किन्तु असफलता ही हाथ लगी।

बोलता क्यो नही विकास? क्या हमने तेरे लिए यह सब नही किया? लाला जी कुछ आक्रामक हो उठे।

मैं इन्कार कब करता हूँ लाला जी!' दवे स्वर मे विकास बोला।

तो हाँ क्यो नही करता? छिपकर यहा आ बैठा और सूचना तक नही भेजी। पर यो मैं छोड़ने का नही। सात समदर पार भी आ पकडता। पता है दो टिकटो का कितना पैसा लगा है? पूरे डेढ सौ रुपये खर्च हो गये हैं।

वे थर्ड क्लास का किराया बता रहे थे। उन्हे पता नही था—विकास एयर इंडिया स आया था। विकास ने बताना उचित नही समझा। पूछने लगा—आपने इतना खर्चा क्या किया? एक पत्र ही डाल देते। उत्तर अवश्य देता।'

सेठ जी नाक भौं सिकोड़ते हुए बोले—हाँ हाँ! क्या नही? पत्र

का उत्तर वक्त पे देगा। समझ गये न ?"

विराग बोला— वाह अब मुझे भी चाहते हैं। आखिर क्यों ? बरसों में अब उनका संतोष भी हुआ। कहा यही कि सक्सेना क्या सोचेंगे। आखिर उन यहाँ रहने का क्या अधिकार है ? इतना दिया न यहाँ रहा हूँ। अब तो स्वागत भी हो गया है। फिर क्यों डरता है ? किस बात में ?

अरे ! तुम तो समझा नहीं पर हम तो है। दूसरों को खराब पर मजबूर नहीं करना चाहिए। इतना ठहर गया यही बहुत है। अब यहाँ भी शादी करो। तुम्हारे माता पिता भी बरसों बरसों तक बाट देखा करेंगे या नहीं ? ...... हाँ ! मुझे पता है। तुम्हारा पता उन्होंने मालूम किया था और उन्होंने बेटा न लेने आया है। शाह जी क्या मालूम न समझा तुम लोग।

विराग इस जाल में फँस चुका था। समझ भी रहा था पर जान और बूझ रहा था। उसके पास चारा नहीं था कि जाल काट सकता। यह तो बस बनावट महसूस कर रहा था। मि सक्सेना और बेटी को उसकी आड़ में यह बनावट साफ दिखाई दे रही थी।

मि सक्सेना को उसका बचाव करना आवश्यक हो गया। वे बोले— 'लाला जी ! विराग यहाँ पराया नहीं है। कोई मेहमान नहीं है। जब तक चाहे रह सकता है। यहाँ इसे कोई तकलीफ नहीं होगी। इसे पूछ लीजिए।

लालाजी ने इस मध्यस्थता को अनुचित माना। वे मि सक्सेना से अप्रसन्न पूर्वत थे। अब तो उद्विग्न हो आया —'सक्सेना साहब ! विराग यहाँ मेहमान नहीं तो क्या है ? बताइए आपका इससे कोई रिश्ता है क्या ? और मुझे पहले तो आप इसे जानते तक न होंगे। किसी गाने वाले के चक्कर में आपकी छोकरी से इसका परिचय हो गया तो बस इसे अपना बना बैठे। मगर जनाब ! पूरे छः साल से मेरे यहाँ रहता आया है। बिलकुल घर के सदस्य की तरह। किराया तो

नाम का लेता हूँ जिससे कि मोहल्ले वाले कुछ बोल न सकें। और वह भी चाय पानी के नाम पर ब्याज सहित लौटा देता हूँ। दस रुपये महीने की बिसात ही क्या? इतने मे कोई आकर इसकी किताबों पर की गर्द भी न झाड़। आपको पता है—यह विमला इसका कितना ध्यान रखती है? कभी सफाई। कभी चाय। कभी पानी। बिना पैसे की दासी के समान ६ बरस से उसकी सेवा करती आ रही है। समझे आप!"

मि सक्सेना समझ गये। कटी समझ गई। किन्तु विकास समझ कर भी समझने से इन्कार सा कर रहा था। वह विकट स्थिति मे फंसा था और रक्षा का उपाय नही दीख रहा था।

मि सक्सेना अधिक कहने मे असमर्थ थे। वे चाहते थे— कटी स्वय कुछ कहे। कुछ कमिट् करे। किन्तु कटी उस तरह कैसे निलज्ज बन जाय? वह देख रही थी— विकास के गले मे फदा कस रहा है और उसका दम घुटा जा रहा है। उसने इस आकस्मिक स्थिति की आशा नही की थी। अब यदि कमिट् करती भी है तो उपहासास्पद लगेगी। यह लाला सुनकर चुपचाप चला नही जायेगा। वह अभी नाटक खड़ा कर देगा और चुपचाप बैठी विमला उस नाटक मे चटखीले रग भरने लग जायेगी।

एक कठिनाई उसके सामने और थी। अभी विकास के मनोभावो का पता नही चला था। उसने प्रणय-सूचक शब्द भी मुह से नही निकाला था। कहीं ऐसा तो नहीं है कि विमला के प्रति उसके हृदय मे कोई आकर्षण हो और इसे कह नही पा रहा हो। यह सच है कि यहा उसे घर की तरह रक्खा गया है और इसी लिहाज मे वह कुछ कह नही पा रहा है।

शका निवारण की दृष्टि से उसे पूछना पड़ा— विकास! निर्णय तुम्हें करना है। तुम चाहो तो यहाँ जीवन-पर्यन्त ठहर सकते हो। तुम्हें कोई न कहेगा कि तुम यहाँ मे जाओ। निर्णय तुम्हारे हाथ मे है।

कटी कह तो गई पर लज्जा से उसका चेहरा रक्ताभ हो उठा।

वह इससे अधिक संकेत नहीं दे सकती थी।

विकास संकेत—ग्रहण कर भी नहीं पाया था कि लालाजी चिंघाड उठे थे—"सुनो इस छोकरी की बात— निर्णय तुम्हारे हाथ में है।" भला निर्णय इसके हाथ में कैसे है? क्या इसके माँ-बाप नहीं है? निर्णय तो वे करेंगे। उन्होंने पाला पोसा पढ़ाया लिखाया और प्रतीक्षा कर रहे हैं कि बुढ़ापे का सहारा बनेगा। और तू कह रही है—निर्णय इसके हाथ में है। अरी! शर्म कर। बता तेरा क्या लगता है यह? कुछ दिनों की पहचान ही तो है। बोलती क्यों नहीं?

कटी का तो मरण सा हो गया। मि सक्सेना को बहुत बुरा लग रहा था—एक अपरिचित व्यक्ति उन्हीं के घर में ऊटपटांग बक रहा है। उन्हें लाला की उम्र का लिहाज हो आया वर्ना वे धक्के मारकर घर से निकलवा देते।

विकास को यह स्थिति नितांत लज्जास्पद लगी। वह सोच रहा था—मि सक्सेना और कटी उसके परिचितों का यह घटिया स्तर देख कर उसके बारे में क्या धारणा बना रहे होंगे। वह भूल गया कि कटी ने उसे कोई इंगित किया था। अब तो वह उस कुत्सित स्थिति से दूर भाग जाना चाहता था। तुरंत।

लालाजी! कब चलना है यहां से? वह अपनी वाणी पर विश्वास नहीं कर पाया। उसने एक वाक्य में सारे निर्णय घोषित कर दिये थे। कटी से सारे रिश्ते तोड डाले थे। आत्मा की हत्या कर दी थी और स्वयं पर कोई विश्वास नहीं रहने दिया था।

"कब कब चलना है? अभी चलना है। इसीलिये तो सामान स्टेशन पर ही छोड आया था—क्लोक रूम में।' लाला प्रत्युत्पन्नमति थे। इसीलिए इतना सफेद झूठ बोल गये। न तो वे जानते थे कि मामला इतना आसानी से सुलझ जायगा। न ही तुरंत उन्हें लौट सकने की आशा थी। और सामान! उन्होंने कोई सामान क्लोक रूम में नहीं रक्खा था। सामान था ही नहीं उनके पास।

निणय सुनकर कटी स्तब्ध रह गई थी। विकास ने उसका प्रणय प्रस्ताव ठुकरा दिया था। स्वय तो कभी किया ही नहीं। लगता है, विमला से कहीं सपृक्त है। इसीलिये तुरत चलने को तैयार हो गया। एक-दो दिन भी ठहरने की नहीं सोची। अच्छी बात है।

मि सक्सेना न विकास को रोका नहीं था।। वे उसे स्टेशन तक पहुँचा आये थे। कटी साथ गई थी। डडी को इशारा किया था कि फस्ट का टिकिट ला दें किन्तु मि सक्सेना न मानो इशारा देखा ही नहीं। और लालाजी तीन टिकिट थड क्लास के ले आये थे। रिजर्वेशन न तो मिलता, न वे करवाते। पहले ही बहुत खचा कर चुके थे।

प्लेटफाम पर गाडी लगी तो थड क्लास म लोग पहले ही भरे हुए थे। पर घरने की जगह नहीं थी। पर लालाजी हिम्मत हारने वाले नहीं थे। उन्होन विमला को खिडकी की राह भीतर धकेल दिया। माना कोइ सामान हो। विकास को सहारा दना पडा था। और फिर लालाजी को भी उसी तरह भीतर पहुँचाया। लालाजी न उस भीतर आ जान को तीन चार बार कहा— अरे! जल्दी कर। फिर जगह नहीं रहेगी। मानो अभी तो बहुत जगह था वहा।

वह प्लेटफाम पर खडा रहा था। मि सक्सना और कटी गाडी रवाना होन की प्रतीक्षा म थे। एक आवश्यक औपचारिकता। भद्रता का कष्टप्रद प्रदशन। कम स कम विकास की दृष्टि से। कहाँ एयर इडिया से की गई वह यात्रा और कहाँ यह ट्रिप्रा। कलकत्ता तक खडे खडे यात्रा। व्हाट ए फाल?— विकास सोच रहा था।

कटी चुपके स बोली थी— डडी! एक सीट फस्ट मे खाली हो तो पता लगाइये। इतना लम्बा सफर और डिब्बे की यह हालत! डैडी प्लीज!

मि सक्सेना चले गय थ और लौटकर आये तो रिजर्वेशन स्लिप उनके हाथ म थी। उन्होंने विकास को बताया— पास वाली बोगी म ही जगह मिल गई है। इसम इन्हें सम्हालत भी रहोग।

लालाजी को यह घुसर-पुसर अच्छी नही लगी थी। पर विकास से मालूम हुआ तो चैन की सास ली। अच्छा हुआ— दूसरे डिब्बे म बठ रहा है। यहाँ जगह ही नही थी। और फिर जवान लडकी का साथ। विवाह से पूव कुछ दूर रखना ही ठीक।

उन्होंने विकास को प्रसन्नता से अनुमति दे दी— ठीक तो है। यहाँ कष्ट ही पाता। वहाँ पूरी सीट होगी साने बैठने को। पर बीच बीच मे सम्हालते रहना।'

विकास इस घटियापन को पचा नही पाया था। वह घृणा से मुह विचका कर फस्ट क्लास के डिब्ब की ओर बढ गया था। मि सक्सेना और कटी साथ थे।

एजिन ने व्हिसल दी तो कटी ने विकास की ओर हाथ बढाया था। हाथ म एक छोटा सा पस था और वाणी म उसे स्वीकार करने का आग्रह— रास्ते म जररत पडेगी। कलकत्ता मे भी।

विकास जड हो चुका था। तन से और मन स। मान अपमान से अतीत सा। उसने पस ले लिया था और गाडी चल पडी थी। उसकी आख डबडबा आई थी और कटी ने देख लिया था।

कुछ देर तक कटी रूमाल हिलाती रही थी और फिर मि सक्सेना न उसे चलने को कहा था। वह मुडकर चल पडी थी।

एक और चैप्टर समाप्त हो गया था।

११

पिंकी एक दिन भागती सी आई। बैठने से पहले ही कहने लगी—"चल कटी! तैयार हो जा। अभी चलना है।'

'पर कहाँ ?" कटी ने जानना चाहा।

'अरे लोकेशन शूटिंग है। लोनावला के पास। पार्टी जाने को तैयार है। मैंने सोचा— तुझे शूटिंग दिखा लाऊं। बस! चल। खड़ी हो।" वह बहुत हड़बड़ी करने लगी। शायद लेट हो जाने का डर हो।

उसने कटी को कपड़े भी नहीं बदलने दिये। दोनो टैक्सी मे बैठी और शूटिंग ग्रुप से जा मिली। डाइरेक्टर ने पिंकी की ओर जिस दृष्टि से देखा वह बहुत अधिक प्रशंसा सूचक नहीं था। सच ही वे उसके कारण पन्द्रह मिनट लेट हो गए थे। और वह भी एक एक्स्ट्रा-नुमा सह नायिका के कारण।

ग्रुप रवाना होकर लोनावला पहुँचा। वहाँ कुछ ही दूरी पर खड्ड थे जहाँ शूटिंग होनी थी। हीरो और विलेन की घूसेबाजी का दृश्य था। हीरोइन और सह-नायिका की भी उपस्थिति उसमे अपेक्षित होनी थी।

शूटिंग की तयारी मे काफी विलम्ब हो गया। हीरो हीरोइन की ड्रेसिंग और मेक अप तो जैसे पूरा होने में ही नहीं आ रहा था। डाइरेक्टर चिल्ला रहा था। कमरामैन कैमरा फिट किए माथे पर हाथ धरे खड़ा था। वह दूर से उठते बादलो की ओर आशंका से देखता जा रहा था।

आखिर सब तैयार हो गए। डाइरेक्टर ने अपनी जगह सम्हाली। क्लैप के साथ हीरो और विलेन कमरे के सामने आये। दोनो एक दूसरे

की ओर तेजी से बढ़े। विलेन ने एक घूँसा हीरो की ठुड्डी पर लगाया और हीरो दूर जा गिरा।

'कट' डायरेक्टर की आवाज थी।

सब हीरो के खड़े होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पर वह उठ ही नहीं पा रहा था। एक वास्तविक नाक आउट प्रतीत हो रहा था। डाइरेक्टर परेशान सा हीरो के पास पहुंचा— भइ, उठो ना ?

हीरो कराह उठा— 'ओह !

क्या हुआ ? चिंतित लगा डाइरेक्टर।

पाजी ने दांत तोड डाले हीरो की वेदना एक एक शब्द में घुली थी।

अरे ! तब तो जान आ जाएगी तुम्हारी एक्टिंग में डाइरेक्टर उत्साह से बोला। शायद वह हीरो को उत्साहित करना चाहता था।

जान ! वह तो निकल ही गई। अब कहां से आयगी ? जरा डाक्टर को कहो कि आकर देख। कहीं सारी बत्तीसी न चढानी पड जाये। और हां। बीमा कम्पनी को फोन करो। कल ही मैंने दांतों का बीमा कराया है। पचास हजार की पालिसी है। कोई तमाशा नहीं। हीरो शान बघारने लगा था।

डाइरेक्टर ने डाक्टर को सकेत किया। उसने हीरो की ठुड्डी देखी। दांत देखा। हीरो कराहा। पर डाक्टर को कोई गडबड नजर नहीं आई। उसने विलेन की ओर देखा। पर वह हिरोइन से गप्प लडा रहा था। फिल्म का दृश्य होता तो हीरोइन उसके सामीप्य मात्र से काँप जाती। वार्तालाप की तो गुंजाइश ही कहां ?

मुझे तो कोई गडबड दिखाई नहीं देती डाक्टर डरते डरते बोला। वह हीरो का निजी डॉक्टर था। उसे हीरो की बात काटने का हक नहीं था। पर हो सकता है— कोई भीतर चोट लगी हो। एक्सरे कराना होगा।'

हां यही तो बात है। एक्सरे से ही पता चल सकता है। हीरो

बहुत उत्साह से बोला— "शूटिंग आफ टु डे।'

डाइरेक्टर भन्ना उठा। शूटिंग आफ करने का अर्थ था—दो हजार रुपया का स्वाहा। हीरो से अनुनय करने लगा— जनाब ! कोई खास चोट तो लगा नही है। शाम को नर्सिंग होम मे चैकिंग करवा लेंगे। अभी तो जरा दो चार शॉट्स दे दो। प्लीज !"

हीरो ने कुछ देर नखरे किये। फिर दो शाटस देने की हां भरी। डाइरेक्टर ने विलेन को डॉटते हुए कहा— 'अजी ! प्राण बनने की कोशिश मत करो। हम सब जान गये कि आप अच्छे वाक्सर हैं। पर यह तो फिल्म है। आपको बाक्सिंग का शौक यहा पूरा नही करना है। समझे ?

विलेन समझ गया कि उसे हीरो से पिटना है। दो चार झूठे हाथ चलाने हैं पर आवाज बाहर से आयगी और उसी की रिकार्डिंग होगी।

कटी यह सब नाटक देखती रही। तीन घंटे हो गये थे और अभी एक ही शाट हुआ था। हीरोइन और सहनायिका अब तक सात बार मेक अप ठीक कर चुकी थी। और डाइरेक्टर दोनो की ओर यो देख रहा था— मानो बन्दरियां हो।

फिर कुछ शॉटस हुए थे। उनमे विलेन की पिटाई वास्तविक थी, जबकि हीरो की कृत्रिम। अब हीरो भूल गया था कि उसने दो तीन शॉट्स की ही हां भरी थी। वह मूड मे आ गया था और डाइरेक्टर ने उसका लाभ उठाने मे भूल नही की।

आकाश मे बादल छा जाने से शूटिंग बन्द कर देनी पडी। पर काम की दृष्टि से डाइरेक्टर संतुष्ट था। पिंकी ने उसके साथ कटी की मुलाकात करवाई। हीरो और हीरोइन की भी। पहले तो उन्होंने कटी को एक फन ही समझा और इसी दृष्टि से हां हूं करते रहे।

पर धीरे धीरे वे सब कटी के सौंदर्य की अवहेलना नही कर सके। उसके व्यवहार का वैशिष्टय भी उन्हें प्रभावित कर रहा था। डाइरेक्टर बात करते करते कही खो सा गया था। संभवत कटी को कही

जाना चाहती थी। कहीं या फँसी-ऐसा भाव उसकी भ्रूकुटि और गति से व्यक्त हो रहा था।

बाहर आने पर गिरी ने डाँटा—"बनी बेवकूफ है क्या! इतना बड़ा डाइरेक्टर तुझे पहली भेंट में ही हीरोइन बना रहा है और तू मना कर रही है। चेहरा ऐसा बना रही है मानो तुझे फाँसी पर चढ़ाया जा रहा हो। बात क्या है? बोल ना!'

कटी ने उसे चुप रहने को कहा था। वह विचार करने की मनःस्थिति में नहीं थी। घर पहुँचने तक वह मौन ही रही। गिरी दूसरे दिन आने को कहकर चली गई।

मि सत्येन्द्र ने देखा कि कटी अवसन्न सी गुमसुम सी है। उन्हें सन्देह हुआ—कहीं बीमार तो नहीं हो गई। पास आकर पूछा— क्या बात है डियर? तबीयत तो ठीक है?

ठीक हूँ डडी! आप चिंता न करें। कटी ने कहा तो सही पर उसका मद और घुटा सा स्वर सुनकर मि सक्सेना आश्वस्त नहीं हो सके। उन्हे लगा कि वह बातचीत के मूड में नहीं है। शायद एकान्त चाहती है।

फिर वे और कुछ पूछे बिना अपने कमरे में चले गये। कटी अकेली बैठी रही। अविचारणा की स्थिति में। अविचल। डिनर के लिए नौकर कहने आया तो उठी। डिनर टेबिल पर चुपचाप कुछ खाती रही। मि सक्सेना ने उससे कुछ भी पूछताछ नहीं की।

कटी प्रात उठी तो कुछ सयत अनुभव किया। बीते हुए कल को एक दुःस्वप्न की तरह माना क्योंकि उसका यत्किचित् प्रभाव अभी शेष था। फिर भी वह अब इतना डिप्रेस्ड अनुभव नहीं कर रही थी। ब्रेकफास्ट के समय कहने लगी—

आइ एम सारी डडी! बट आइ वाज डिस्टर्ब्ड येस्टरडे। इट रिमाइंडेड मी आफ दैट घस्टली नाइट।

मि सक्सेना समझ गये। उन्होंने—"मुझे भी यही आशंका हुई

थी। पर कटी ! कल हुआ क्या था जो उस रात की याद हो आई ?"

कटी ने बताया। यह भी कह दिया— 'डाइरेक्टर को मना तो कर चुकी हूँ पर वह अभी माना नहीं है। स्टूडियो मे शूटिंग देखने को और बुलाया है। वह पिकी भी पीछे पड़ी है। ये समझते क्या नहीं ? मुझे फिल्म मे काम करने की कोई अभिलाषा नहीं है। परसों शूटिंग देखी थी। बहुत बुरा हुई।"

मि सक्सेना ने सुना तो विस्मित हुए। वे जानते थे— आज हर युवक युवती फिल्मो के पीछे दीवाना है। हीरो हीरोइन के चान्स की तो बात ही क्या ? एक्स्ट्रा बनने के लिए भी बेताब रहते हैं। और इसके सर्वथा विपरीत है कटी। इसे हिरोइन का चान्स मिल रहा है। और यह इसे ठुकरा रही है। कहना चाहिए ठुकरा चुकी है। और दुखी अलग से है कि इसे चान्स आफर किया गया है।

कटी के निर्णय से वे प्रसन्न भी हुए। उन्हें फिल्म जगत् के सम्बन्ध में कुछ जानकारी थी क्योंकि वर्षों बम्बई में रह चुके थे। चारित्र्य एवं नैतिकता तो जैसे वहाँ है ही नहीं। कटी उस दलदल मे रहेगी तो दो चार छींटे उस पर भी पड़ेंगे ही।

पर उनको एक चिंता हो गई। कटी की बात से यह आभास हो रहा था कि रवीन्द्र सरोवर का नाम लेते ही वह उद्विग्न हो गई थी। उसने और कुछ तो मानो सुना ही नहीं। तो क्या वह इस नाम के प्रति आन्सेस्ड है ? यदि नहीं तो अप्सेट क्या होती है ?

उन्होंने धीमे स्वर में कहना शुरू किया— कटी ! मैं स्वयं नहीं चाहता कि तुम फिल्मो मे काम करो। फिल्म जगत् बहुत कुख्यात है। इसकी सपूर्ण चकाचौंध के बावजूद। तुम कभी इधर जाना ही मत। तुम्हे जरूरत ही क्या है ?

पर एक बात की ओर तुम्हारा ध्यान दिलाना चाहता हूँ। तुम समझदार हो। इसलिये कह रहा हूँ।

'रवीन्द्र सरोवर की तुम्हारी अनुभूति बहुत कटु रही है यह मुझे ज्ञात है। पर इसका नाम सुनते ही तुम उद्विग्न हो उठती हो। इससे स्पष्ट है कि तुम्हारा मस्तिष्क अभी आक्रांत है जब कि यहाँ रहते हुए तुम्हें कोई खतरा नही है। अत मेरा खयाल है कि किसी मन चिकित्सक से परामर्श लिया जाये। अभी इस भावना को हटाया जा सकता है। बाद मे यही यह विचार जड पकड गया तो बडी कठिनाई होगी।

कटी चौंकी थी। पर उसे अहसास भी हुआ कि वह आब्सेस्ड है। अत उसने मन चिकित्सक के पास चलने मे आपत्ति नही की।

डा नारायणन् जर्मनी जाकर मन चिकित्सा मे विशेषज्ञ होकर लौटे थे। बम्बई और इससे बाहर उनकी बडी ख्याति थी। उन्होंने मि सक्सेना और कटी से प्रारम्भिक बातें की तो वे जान गये कि निस्सीम विभीषिका ही आब्सेशन का कारण है।

उन्होंने मि सक्सेना को कुछ देर बाहर बैठने को कहा। फिर अकेले मे कटी से कहा—'तुम रवीन्द्र-सरोवर का नाम लेने और सुनने से डरती हो। पर डर कर कब तक काम चला पाओगी? डर की चिकित्सा तो उसका सामना करने से ही हो सकती है। यह मत भूलो कि तुम रवीन्द्र सरोवर से एक हजार मील से भी दूर बठी हो। यहाँ तुम सवथा सुरक्षित हो। अत भय छोडो और सुरक्षित अनुभव करो।

'यह तो मैं भी जानती हू कि यहा डर का कोई कारण नही है। फिर भी ' कटी वाक्य पूरा नही कर पाई।

फिर भी क्या कटी? बोलो। डाक्टर ने उत्साहित सा किया।

'मैं बता नही सकती डाक्टर। कारण नही है। फिर भी जैसे हैं।

'ऐसा है कटी! यह भय का कारण नही भय का अनुभव है। तुम भय न होते हुए भी भय को उपस्थित कर देती हो। यह तुम्हारे मन की उपज है। अत तुम्हें चाहिये कि इस अनुमान से स्वय की रक्षा

करो।'

वह कैसे करे ?' कटी ने आशंका व्यक्त की। असमर्थता भी। डाक्टर ने उसे बताया कि भय के विषय से भागना नहीं चाहिये। उसके तो सम्मुख खड़े होने से ही काम चलता है। डाक्टर ने उससे यह भी जान लिया कि वह अभी यौन अनुभव से शून्य है।

जो प्रायोगिक उपचार उसने बताया, उसे स्वीकृति देने से पूर्व कटी समय चाहती थी। उसने कहा— ऐसी फिल्म में काम करने के लिए उसे मनोबल की अंतिम बूंद तक की आवश्यकता पड़ सकती है। अतः वह इस विषय में समुचित विचार करके ही कोई निर्णय करना चाहेगी।

डाक्टर ने निषेध नहीं किया। कटी को जाते जाते यह अवश्य कहा— जितना विलम्ब करोगी चिकित्सा उतनी ही कठिन होगी।"

कटी और उसके पिता घर लौट आये थे। कटी ने मार्ग में पिता को डाक्टर के सम्पूर्ण विश्लेषण और उपचार विधि के बारे में बता दिया। अंत में उन्होंने कटी को डाक्टर का परामर्श मानने की बात कही। कटी ने उन्हें भी विचार करने का आश्वासन दिया।

बेड पर लेटे लेटे उसने स्थिति को विधिवत् अध्ययन करना चाहा। डाक्टर ने उसके व्यवहार को कुछ असामान्य घोषित किया था। कारण बताते हुए डाक्टर एक क्षण को ठिठका था। फिर कहा था— यौन अनुभूति की असफल कामना से व्यक्ति का व्यवहार सामान्य नहीं रह पाता। शायद तुम भी कभी असफल रही हो। और जिससे भयभीत होकर तुम भागी हो वही शायद तुम्हारा अभिप्रेत रहा हो। पर इस तथ्य का तुम्हें ज्ञान नहीं था। अब इस पर सोचना।

कटी ने अंतिम बार स्वयं से पूछा—वह स्वकीय व्यवहार को सामान्य बनाना चाहती है या नहीं? यदि हाँ तो क्या वह डाक्टर का परामर्श पूरी तरह मानने के लिए तैयार है या नहीं? क्या वह रवीन्द्र

सरोवर पर बनने वाली फिल्म में काम कर पायेगी ? क्या उस जगह जा सकेगी ?

ऐसे और प्रश्न उसके सामने उठे। वह इन सबका एक साथ समाधान नहीं कर सकती थी। सर्वप्रथम तो उसने व्यवहार की सामान्यता पर विचार किया। उसने एक कागज पर लिखा

समाधान	सहमत/असहमत
(क) व्यवहार की सामान्यता के लिए प्रयत्न	सहमत

फिर उसने रवीन्द्र-सरोवर पर बनने वाली फिल्म में काम करने या न करने पर गौर किया। दो दिनों से लगातार इसकी चर्चा होते रहने के कारण अब यह काम इतना भयानक नहीं रह गया था। कनी को थोड़े से साहस की आवश्यकता थी। और उसने लिखा—

(ख) फिल्म में काम करना	सहमत

अब एक ही मुख्य बाधा उसके सामने रह गई थी—रवीन्द्र सरोवर पर शूटिंग आदि के लिए जाने का भय। वह डाइरेक्टर को कहेगी—किसी और सरोवर पर भी तो शूटिंग हो सकती है। स्टूडियो में नकली रवीन्द्र सरोवर बनाकर भी काम चल सकता है। किंतु डाइरेक्टर न माना तो ? तब वह जाने से नहीं हिचकिचायगी ?   उसने जोर से कहा—नहीं !

और कागज पर रवीन्द्र सरोवर जाने की सहमति अंकित हो गई। अब वह निश्चित थी। उसने कागज सम्हालकर ड्राअर में रखा। फादर से कहा—वह डाक्टर के परामर्श का अनुसरण करेगी। सुनकर मि सक्सेना ने ब्रेवो ! कहा और डाक्टर को फोन पर कहा— कटी हैज एग्रीड टु फालो युअर एडवाइस। एण्ड थैंक्स ए लाट।'

सन्ध्या के समय रिकी के साथ डाइरेक्टर आया और कनी से शिकायत करने लगा कि शूटिंग देखने क्यों नहीं आई। मूलतः वह निर्णय सूचित न करने की शिकायत कर रहा था। पर कनी को मुस्कुराते देख वह सब कुछ भूल गया। उसके मन में कोई शिकवा नहीं रहा।

कटी ने कहा— मैं आपकी फिल्म म काम करने को तैयार हूँ। स्क्रिप्ट तैयार करवाइये। और हाँ! हीरो कौन रहेगा? या तो कोई बडा नाम हो वर्ना नया ही लना हो तो मुझसे पूछ लीजियेगा।"

डाइरक्टर चौंका। कास्ट का चयन वह स्वय करता था। विशेषत हीरो हीरोइन। और यह कटी तो हीरो ही अपनी पसद का चाहती है। सुनकर उसे आश्चय हुआ।

'कोइ नाम ध्यान मे है तो बताइये वह पूछ रहा था।

'यहाँ नहीं है। कलकत्ता म है। नाम है विकास।' कटी को नाम बताने मे कुछ समय लगा था। उसके फादर ने इस देरी को पहचानने म भूल नही थी। पर वे चुप बैठे रहे।

डाइरेक्टर ने विकास के बारे म और जानकारी मागी तो कटी ने कहा— आप जब उसे लने का त करें तो कह दीजियेगा। कलकत्ता जाकर ले आऊँगी।'

अच्छी बात है। हाँ! एक बात और! आपका कोई फिल्मी नाम रक्खें अथवा यही। कटी से कोई कुछ का कुछ समझेगा।" डाइरेक्टर की आशका निमू ल न थी।

यही नाम रहने दें। कलकत्ता के लिए यह नाम अपरिचित नहीं है। कटी का आत्मविश्वास जाग्रत हो रहा था।

डाइरेक्टर समझा नहीं। मि सक्सेना ने उन्हे बताया कि कटी को कलकत्ता की जनता गायिका के रूप मे अच्छी तरह जानती है। टेबिल टनिस की खिलाडिन के रूप म भी।

सुना तो डाइरेक्टर की आँखें खिल गइ। गायिका हीरोइन आज मिलती ही कहाँ हैं? सुरैया के बाद कोई आई ही नहीं। जस अकाल पड गया हो। और आज उसने ऐसी दुलभ गायिका को ढूँढ निकाला है। सच ही फिल्मी दुनिया मे इसका प्रवेश बम विस्फोट से कम न होगा। अब प्ले बक की आधी समस्या तो हल हो गई है। शेष ।

'तुम्हारे वे विकास महाशय सगीत के बारे म ?" बेचारे का

प्रश्न पूरा करते हुए संकोच हो रहा था। शायद भय भी।

'विकास बहुत ही अच्छा गायक है डाइरेक्टर साहब !" कटी के गले में माधुर्य की मात्रा बढ़ गई थी और यह तथ्य किसी से छिपा नहीं रहा।

डाइरेक्टर की प्रसन्नता चन्द्रतल पर पहुंचे अमरीकी चन्द्रयात्रियों की प्रसन्नता से कम न थी। आज पता नहीं किस भाग्यवान का मुंह देखकर निकला था। सब काम आसान होते जा रहे हैं। सिद्ध भी। वह क्यों किसी बड़े हीरो के चक्कर में पड़े ? नये ही अच्छे रहते हैं। एक तो नखरे नहीं करते। दूसरे पैसा अधिक नहीं माँगते। और पैसा है भी कहाँ ? किसी मूंजी को फाँसना पड़ेगा। और उसके लिए ।

'कटी ! कल स्टूडियो आना। कुछ चित्र लेने हैं। प्रोड्यूसर से भेंट भी करानी है। बहुत से काम हैं। कल प्रात ११ बजे कैसा रहेगा ?'

'ठीक है। आ जाऊंगी।" कटी ने बिना उत्सुकता के कह दिया।

डाइरेक्टर चला गया तो पिंकी उसके गले से झूल गई। दो तीन बार तो किस भी कर बैठी। कटी ने उसे बड़ी मुश्किल से सामने बैठाया और उसका यह तुष्ट करने के लिए कहा— पिंकी ! यह सब तेरी कारस्तानी है। वर्ना मैंने तो कभी फिल्म विल्म का सोचा न था।"

पिंकी खुश हो गई। कटी के पैरों के पास गलीचे पर बैठ गई और आत्मीयता से बोली— तू लकी है कटी ! तुझे अच्छी ओपनिंग मिल रही है। बस थोड़ा सा मन लगाकर यह फिल्म कर ले। फिर देखना यहाँ कतार न लग जाय तो। पर बहुत अधिक व्यस्तता भी ठीक नहीं। एक साथ तीन चार फिल्मों से ज्यादा न लेना। और हाँ। एक आध में मेरा भी ध्यान रखना। अपने साथ कोई मेजर रोल या फिर कोई अलग ही फिल्म दिलवा देना। और एक बात याद रखना ये फिल्म वाले सब उस्ताद होते हैं जरा

बचकर रहना   वर्ना कहीं फिल्म ही पूरी न हो पाये   ।

पिंकी ने बीच में विक भी किया । पर कटी को इसकी आवश्यकता न थी । बस वह मुस्कुराती रही । और पिंकी खुशियां भाली म भरकर चली गई ।

कटी ने डैडी स कहकर निजी वकील को बुलवाया । उनस फिल्म के काट्रेक्ट का प्रारुप तैयार रखन को कहा । साथ ही वतमान फिल्मी जीवन क बार मे कुछ महत्त्वपूण सूचनायें एकत्र करने के लिए भी कहा ।

वकील के लिए यह क्षेत्र नया था । पर उसने पूण उत्साह से काम शुरू कर दिया । काटेक्ट का प्रारुप तो उसन दो तीन दिन मे तैयार कर डाला । उसन चुपके स एक प्रसिद्ध वकील से सलाह भी ली किन्तु उसका जिक्र कटी के सामन नहीं किया । इसके बाद उसने फिल्मी हीरो हीरोइन प्रोडयूसर डायरेक्टर फोटाग्राफी व मेकग्रप आदि के बारे मे सूचना एकत्र की और कटी पहली फिल्म में काम करने के लिये तयार हो गई । परामनन्दाता मि सक्सेना थे ।

सत्येन्द्र कई दिना बाद आया था । उस पता ही नही चला कि इस बीच समुद्र का कितना पानी भाप बनकर उड गया था । बठा तो सुनता ही रह गया । उसे भीतर ही भीतर कही कचट हुई कि वह कटी स दूर दूर क्या होता जा रहा है ? अब तो विकास भी चला गया है । उस चाहिए कि कटी के यहां अधिक आय जाये । पर कर क्या ? बिजिनेस को कुछ समय देना ही पडता है । अब अगले महीन उस यूरोप की यात्रा करनी है । चाहता था— कटी साथ घूमने चले । पर यह तो फिल्मो के चक्कर मे पड गई है । अब वह कहे भी क्या ? और अकेले जाने मे तो आनन्द ही क्या आयगा ? वह कटी को कैसे कहे कि उसने यूरोप की टिप उसके साथ जाने के लिए ही बनाई थी ।

वह अनुभव कर रहा था— एक रिक्तता भीतर सिमटती आ रही है । उसने कुछ कल्पनायें की था । पर लगता है, वे साकार नहीं

होगी। बाधायें आती ही जा रही हैं। निर्बाध रूप से। और जब बाधायें थीं ही नहीं । अब उसका क्या सोचना? अतीत लौटकर नहीं आता। और वह भी अतीत से क्यों चिपटे रहना चाहता है? आज की कटी और उस दिन की कटी में उतना ही अंतर है, जितना पूर्णिमा और अष्टमी के चन्द्रमा में। तब कटी नहीं थी। एक मिनी कटी थी। आज कटी है। सब तरह से।

सौन्दर्य जैसे नये नये कोणों से प्रस्फुटित हो रहा है। सहमते कण! कहीं इन्हें लोग कृत्रिम न मान लें? हीरो नें नकली वालों का इतना प्रदर्शन जो करने लग गई हैं। अब कटी को देखेंगी तो जलेंगी। यह चलेगी तो इसकी चाल का अनुकरण करना चाहेंगी। सच कितना ग्रेस है उसकी चाल में इसकी आकृति में। किसको पता था उस दिन की कटी ऐसा अप्रतिम सौन्दर्य बटोर लायेगी?

फिल्मों में तहलका मच जायेगा। जहां जायेगी भीड़ लग जाएगी। चारों तरफ ग्लैमर होगा। प्रसाधन और फैशन होगा। व्यस्तता बढ़ती जायेगी। शायद नखरे भी। और उस समय मैं कहां हूंगा? कहीं नहीं। पीछे पीछे लटकते भले ही जाओ पर अस्तित्व ही जैसे मिट जायेगा। दुनिया एक बार में एक को ही देखती है। और देखने को जब कटी सामने होगी तो और देखने को रह ही क्या जायेगा?

सत्येंद्र भविष्य को स्पष्ट रूप में देख रहा था। वह समान स्तर की भाषा बनाये रखने में स्वयं को असफल अनुभव कर रहा था। और सेकंडरी स्थान की अभीप्सा उसे थी नहीं। फिर क्या करे? बड़ा विचित्र मोड़ आ गया था और वह इसके लिए कतई सन्नद्ध नहीं था।

१२

वटी को सत्यन्द्र के चुपचाप चले जाने का अफसोस हुआ था। पर वह कुछ कर नहीं सकी थी। उसने फिल्म मे काम करने का निर्णय कर लिया था। अब वापिस मुडन का प्रश्न ही न था। उसका अनुमान था कि सत्यन्द्र उसकी स्थिति को समझेगा और सहयोग देगा। पर उसका अनुमान गलत निकला। उसे अफसोस केवल इतना सा था कि सत्यन्द्र न उसके अनुमान को गलत होने दिया। उसने एक दो बार फोन किया तो सत्यन्द्र की आवाज म कुछ ठडापन अनुभव हुआ। उसे यह बात पसन्द नहीं आइ। अब उसके सामने कोई विकल्प नहीं रह गया था। इस स्थिति म परिवर्तन के लिए समय की प्रतीक्षा करना ही शेष रह गया था। और बटी ने प्रतीक्षा करने का फैसला कर डाला।

एक सप्ताह बाद डाइरेक्टर अविनाश स्क्रिप्ट लेकर आये। स्क्रिप्ट लेखक शुक्ला साथ म थे। बटी और उसके डैडी सुनने बठे तो दो घटे लग गय। शुक्लाजी पूरे अभिनय के साथ सुनाते जा रहे थे। वे समझ रहे थे कि उनसे बढ़िया स्क्रिप्ट लिखी नहीं जा सकती। डाइरेक्टर भी सतुष्ट लगे।

स्क्रिप्ट पूरी हो जाने पर लेखक और डाइरेक्टर ने पिता पुत्री की ओर देखा। मि सक्सेना को इस बार म कुछ नहीं कहना था। उनको स्क्रिप्ट म विशेष आपत्ति जनक बात दिखाई भी नहीं दी।

अब बटी की ओर सबकी दृष्टि लगी थी। वह जसे कुछ कहना चाहती थी पर सकोच हो रहा था। कह या ना कहे की सी स्थिति

थी। डैडी भी पता नही क्या कहेंगे ? पर कहना ही चाहिये। इसके बिना फिल्म मे जान नही आ पायेगी। वास्तविकता का भी स्पर्श नही हो सकेगा। किंतु यदि किसी ने पूछ लिया—यह वास्तविकता तो है क्या ? वह शायद उत्तर नही दे पायेगी। पर

शुक्ला जी ! आपकी स्क्रिप्ट बहुत ही अच्छी बन पडी है। इसमे परिवर्तन की गुंजाइश नही है। पर एक दो दृश्य बढाने की सभावना इसमे दिखाई दी है। जहाँ तक रवीन्द्र सरोवर के भीतर और बाहर की स्थितियो का प्रश्न है वे यथावत् रहने दें। नया दृश्य इसके बाद आ सकता है। हीरोइन को झील मे छलाग लगाने दे। हीरो भी ऐसा ही करे। और एक बदमाश या चाहे तो विलेन भी झील मे इनका पीछा करे। तीनो का अच्छा तराक बताया जा सकता है। इस दृश्य मे पानी के भीतर की फोटोग्राफी और बाद मे आपसी सघर्ष का अकन करने के लिए काफी गुजाइश रहेगी। इस सघर्ष मे विलेन का खून हो जाये और पानी रक्ताभ हो उठे। फिर आप चाहे तो हीरो हीरोइन की थकावट और किनारे पर पडे रहना आदि दिखा सकते हैं। वहाँ से नगर को लौटना एक समस्या हो सकती है। निर्वसना सी हीरोइन और असहाय सा हीरो । ऐसा कुछ कर सकें तो शायद दृश्य मे सजीवता आ जायगी।

बोलते समय कटी कही खो सी गई थी। मानो बहुत दूर चली गई हो। आवाज मे गहराई सी थी और शायद कोई स्मृति स्पर्श भी।

डाइरेक्टर और स्क्रिप्ट रायटर स्तब्ध थे। हीरोइन ऐसा कोई सुझाव दे सकती है उन्हे आशा न थी। दोनो को लग रहा था—यह दृश्य तो एक अनिवार्यता है। इसके बिना सपूर्ण स्क्रिप्ट सूना सूना थी। शुक्ला जी आँख बन्द किये दृश्य की परिकल्पना कर रहे थे। अब कितनी ही सभावनायें उनके सामने उभर आई। अनेक उत्कृष्ट सभावनायें। किन्तु कटी ने जो सुझाव दिया है, उससे बढकर नही। यही अच्छा रहेगा। जहाँ कटी ने छोडा है वहाँ से कुछ उठाना होगा।

शाय" कटी कुछ और बोले।

डाइरेक्टर अपनी हीराइन की ओर देख रहा था। मुग्ध भाव से। उसके सामने न केवल सौन्य की प्रतिमा बैठी थी बल्कि अद्भुत प्रतिभा भी। ऐसा सामजस्य मिलना कहाँ है ? और अन्वेषण भी इतना आसान थोड़े ही है। इसका सपूण श्रेय तो उसी को मिलेगा। डाइरेक्टर अवि नाश को।

"कटी जी ! आपने कभी कहानियाँ या स्क्रिप्ट लिखी हैं क्या ?" डाइरेक्टर न उत्सुकता से पूछा।

'नही तो' कटी इस प्रश्न के लिए जमे तैयार ही न थी।

'कभी अभिनय किया है ? स्कूल या कालेज म। मेरा मतलब स्टेज का पूव अनुभव है क्या ?"

नहीं ! अभिनय की मैंने कभी कल्पना ही नही की थी। यह तो आपने हाँ भर डाली। वर्ना मैं तो " कटी ने वाक्य पूरा नही किया।

डाइरेक्टर और शुक्ला जी ने पुन आने को कहा और चलने लगे। तभी डायरेक्टर को कुछ याद सा आया। वे कहने लगे—'कटी जी ! वह हीरो का मामला अभी त नही हो पा रहा है। राजेश खन्ना और जितेन्द्र कहते हैं—हीरोइन नई है तो डबल रेट होगा। हेमा मालिनी राखी या रेखा को ले लीजिये। सिंगल रेट पर चल जायगा। अब आप ही बताइए—यह भी कोई बात हुई। हेमा मालिनी भी तो पहली फिल्म म नई थी। कौन सा हीरो या हीरोइन है जो कभी नया रहा ही न हो। मैंने तो तय कर लिया है—सिंगल रेट पर ही लूगा। कोई हाँ भरे तो ठीक वर्ना ! । हा ! आप किसी के लिए उस दिन कह रही थी। कौन है वह ? उससे बात करके देखिए।'

कंटी ने धीरे से कहा—'पहले आप त कर लीजिये। यदि लेना हो तो बात करू। हीरो नया है, पर अभिनय की क्षमता उसमे है। मेहनत आपको करनी पड सकती है।

डाइरेक्टर ने दो चार क्षण सोचकर पूछा— क्या देना होगा ? आपने कुछ सोचा हो या उसी ने बताया हो तो कहिये।

"अधिक नहीं। जो मुझे वही उसे। कटी को देर नहीं लगी।

'अच्छी बात है। और फिर आपका कांटेक्ट भी आज तै कर डालें। आपका वकील कौन है ?

कटी ने बताया और डाइरेक्टर के कहने पर फोन करके बुला भी लिया। कांट्रेक्ट उसके पास तयार था। पचास हजार रुपये टक्स चुका कर। खर्चा अलग।

डाइरेक्टर ने हस्ताक्षर कर दिये। वह तो एक लाख तक देने को तयार था। सोचा—प्रोडयूसर प्रसन्न हो जायगा। हीरो हीरोइन पर ही एक लाख रुपये बच गये। उसने कटी को कहा— हीरो के नाम के अतिरिक्त कांटेक्ट साइन करके छोड़े जा रहा हूँ। आप साइन करवा कर कापी लौटा दें।

वे दोनों चल गये तो कटी ने कांट्रेक्ट अपने हाथों को देकर कहा— आप जानते हैं—हीरो कौन है ? मुझे कलकत्ता जाना होगा। बिना जाये वह नहीं आयेगा। बड़ा संकोची है। कहना चाहकर भी उस दिन वह नहीं पाया था। और फिर वे लाला जी

मिस सक्सेना ने स्वीकृति दे दी और कटी प्लेन से कलकत्ता के लिए रवाना हो गई। वहाँ पहुँची तो ग्रैंड होटल में ठहरी। घंटे भर में तयार होकर बाहर निकली। टक्सी ली और रुनाराम—स्ट्रीट में ही उतर गई। वहाँ तक पैदल जाना ही उचित लगा क्योंकि उस मोहल्ले में कार और टक्सी को सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है।

लाला जी के घर के आगे सामान्य से कुछ अधिक गतिविधि दिखाई दी। कुछ रौनक सी। एक बच्चे से पूछा तो पता लगा— बिमला की शादी है। किस से ? और विकास बाबू का नाम सुनकर कटी स्तब्ध रह गई। मानता उस की पर इतनी जल्दी नहीं। अब क्या हो ? कैसे उसमें हाँ करवा पायगी ?

उसी बच्चे से पूछा—'विमला यहाँ है क्या ?'

बच्चा उसकी ओर देखने लगा था उसे लगा—पूछने वाली पागल तो नहीं। फिर कहा— बारात लेकर आवेंगे। तीन दिन बाद शादी है। घर गये हैं—एक सप्ताह पहले।"

करी को अपनी सूचना का आभास हुआ और चुप हो गई। सो एक क्षण सोचा तो एक उपाय सूझा। तुरत कलाकार—स्ट्रीट से लौट आई। टैक्सी में बैठकर न्यू मार्केट गई। वहाँ इस समय भीड़ नहीं थी। साड़ियों की बड़ी दूकान से एक बढ़िया साड़ी खरीदी। मैचिंग ब्लाउज पीस और पेटीकोट भी। बिल बना तरह सौ रुपय का।

करी वापस लौटकर सीधे लालाजी के घर पहुँची। लालाजी ने उसे पहचाना तो कुछ सकपकाए। फिर भौंह नचाई और पूछा— कैसे आना हुआ ?' मन से वे उसका स्वागत नहीं कर सके।

'सुना कि विमला की शादी है। यह उपहार देने आ गई।' और करी ने हाँ ना की परवाह किये बिना उपहार का डिब्बा खोलकर सामने रख दिया।

लालाजी से छिपा नहीं रहा कि सैट बहुत कीमती है। उनकी वणिग् वृत्ति जाग्रत हो गई। कहने लगे— 'अरे भई ! इसकी क्या जरूरत थी ? देना ही था तो कोई छोटी मोटी चीज ले आती। इतना खर्चा क्यों किया ? और फिर न्यू मार्केट से लाई हो ना ? अरे ! वहाँ तो चोर बैठे हैं। बिलकुल लूटते हैं। जरूर ज्यादा देकर आई हो। यहाँ कलाकार स्ट्रीट मे कम से कम सौ दो सौ का फर्क पड जाता। अरे कमला ! जरा विमला को बुलाना। देख तो कौन आई है ?"

विमला ने करी को पहचान लिया। और वापिस मुडने को हुई। फिर नमस्ते करके बैठने लगी। उपहार देखा तो और ठिठकी। फिर लालाजी की भेद भरी दृष्टि से कौंध उठी। सैट हाथ म लेकर देखने लगी पर नजर और कहीं थी।

करी स्वाभाविक मुद्रा म पूछने लगी— बारात तो कहाँ

दिराास न बागना रंग न्यि। बिना पने। वह माथा पकड कर गया। फिर बिना सिर उठाय बोला— तीन न्नि बाद मेरी शा्दी टी।"

"मुझे पता है।'

'फिर ?'

' "

'जवाब दो कटी।"

शादी रुक सकती है। यदि चाहो तो। विमला जैसी बहुत मिल गी। यह अवसर फिर नही मिलेगा। तै करके आई हूँ। स ! चाहो तो प्रामिज कर दू। कटी का गला भर आया।

कटी ! मुझे काँटो मे मत घसीटो। मैं पहल ही बहुत कुछ अन्त ओ स गुजर चुका हू। अब पुन मत उभारो। और अब तो और व्यक्ति की भावनाओ स भी जुडाव हो चुका है। उनका भी ख्याल करो।

कटी ने एक क्षण आँखें उठाकर विकास की ओर देखा। ी आकृति स भयकर दैन्य अभि यक्त हो रहा था। आत्म ारा की अन्तिम रेखा जस बरसो पूव ही लुप्त हो गई हो। शायद रही न हो। ऐसे व्यक्ति को वह ऊपर उठाना चाहती आखिर और भी लोग हैं दुनिया म। यह न सही नही नही। अब और के लिए गुजाइश नही रह गई है। द्र। शायद उसक लिए भी नही। अब तो एक के ही है सारे प्रयत्न सम्पूर्ण अस्तित्व।

तो चली जाऊ विकास ! मैं तो तुम्हारे लिए सूरजमुखी के गुच्छ लाकर लाई थी। यदि तुम समझते हो म काँटे हैं—तो तो रहे। कोई बाध्यता नही है। पर एक बात जरूर। जीना एक बात है और ढग स जीना दूसरी बात। तुम ी रहे हो और यह शादी करके भी जी सकाग। पर क्या

यह वस्तुत जीना है ? यह तो एक लकीर पर चलना हुआ । यह लकीर सामान्य या सामान्य से भी निम्नतर लोगो के लिए होती है। शायद बनाई भी ऐसे ही किसी व्यक्ति के द्वारा गई हो। फिर तुम क्यो इस लकीर मे बंधना चाहते हो ? कहो अपनी लकीर स्वयं क्यो नही बनाते ?

विकास ने सिर हिलाया। उसके पास कथन तो था पर उसके पीछे तक शक्ति नहीं थी। कुछ क्षण स्वयं से लडता रहा और बाद मे पराजय स्वीकार कर ली कटी ! तुम एक सामान्य या उससे हीनतर व्यक्ति को इतना ऊपर उठाने को क्या तुली हो ? तुम अपने स्तर के व्यक्ति का चयन आसानी से कर सकती हो। फिर मुझ पर ही इतनी कृपा क्या ? क्या हजार मील से चक्कर एक अकिंचन को इतना महत्त्व दे रही हो ? सच ही मैं इस भार के नीचे दब जाऊँगा। मुझसे इतना भार उठाया नहीं जायगा। शायद मैं रो पड़ू।'

कटी को दया सी हो आई। एक बार तो चाहा कि तुरत चल दे और मुड़कर भी न देखे। पर यह तो आवेश होगा। वह इस स्थिति को मानसिक धरातल पर पहले ही प्रतिबिम्बित कर चुकी थी। उसका निराकरण भी सोच लिया। बोली विकास ! इधर देखो।'

विकास ने डरते डरते उसकी ओर ताका। वह मंद मंद मुस्कुरा रही थी। वह शर्मिन्दा था कि कटी से डर रहा था। यह एक नया सा अनुभव था।

'कहो, क्या कहती हो ?

'यही कहना है कि होजियरी की एक दूकान को आडर दे आई हू। वह प्रतिदिन दो दर्जन नये रुमाल सप्लाई करता रहेगा।'

क्या मतलब ? विकास समझा नही था।

मतलब यही है कि तुम जब तब रो पडोगे तो आँसू पोछने के लिए रुमाल तो चाहियेंगे ही। शायद दो दर्जन रूमाल एक दिन के लिए पर्याप्त रहेंगे। कहते कहते कटी हसने लगी 'विकास ! तुम

बहुत गहरा था। घर्षण भी था। तुम्हारी इन बातों से तुम्हारी गुण की है। घर तो मकान की दरारों पर थामा। नीचे या ऊपर मत देखो। या ता ग्गो तो गो या दूसरा तो। घातें मत दुगना। मन में कम मकान न जो तो।   पौर मकान मन है कि तुम ऊपर नहीं किस्म से लिये थे रहता। गु मकान था निश्चय करने का मसाला मिल रहा है। प्रभिनय ही इस मंच पर घर्षण का सामना करता है। प्रतिक्रिया की ऊँचाई की धार बना बढ़ाता है।   बातों तुम्हारे अंदर घर मत करने की सामर्थ्य है या नहीं?

विराम की तोड़ गाजा लग गया था। यहीं न अब निराश होता हो इस गुण म पाता— न । गब पूछो तो मुझे यह सामर्थ्य बतई नहीं दिखाई दी। पर तुम कह रहे हो तो शायद सामर्थ्य है। पर शायद तुम द्वारा कष्ट नहीं उठाती।

तो इन कागजों पर हस्ताक्षर कर दो। बाकी सामर्थ्य का अंज भार जब तक लगाती रहूँगी। मनी न जिस ध्वनि स यह बात कही उसमें विराम का प्रदमन गुण न भर उठा। भीतर की न जाने कितनी ग्रन्थियाँ टूट गई। नराश्य और अविश्वास के कितने ही अंधेरे विलीन हो गये। एक नया प्रात्म विश्वास उसमें जगा और हाथों म एक नई शक्ति आभासित हुई। उसने कागजों पर हस्ताक्षर कर दिये।

विराम न कागज वापस लौटाते हुए पूछा— अब क्या करना होगा बंटी? यह जो शादी रचाय बैठी है उसका क्या होगा?

'होगा कुछ नहीं। तीन दिनों की मोहलत बहुत बड़ी होती है। और कोई बहाना या प्रायोजन खोज लेंगे। बस शादी हो जायेगी। इसकी या उसकी चिंता करोगे तो अपनी चिंता के लिए समय ही नहीं मिलेगा।

और माता पिता? वे प्राश लगाये बड़े है कि बेटे की शादी होगी। घर में बहू आयेगी और घर उजागर हो जायगा ।

'तुम तो ऐसी बात कर रहे हो मानो मैं तुम्हें गोरखनाथ बनाने

ले जा रही हूँ। अरे ! शादी तो होगी ही। पर आज ही करोगे क्या? बड़ा अधय है तुम्हें !'' और कटी मुस्कुरा दी। विकास लज्जित हो गया।

"आज और अभी मेरे साथ बंबई चलना है। बिलकुल गुप्त रूप से।' वहाँ पहुँचकर पत्र लिख देना कि अभी शादी नहीं हो पायेगी। किन्हीं कारणों से। हाँ ! तुम उचित समझो तो माता पिता को कहकर चल सकते हो। पर कहीं ऐसा न हो कि वे पैरों में बेड़ियाँ बन जायें।

नहीं ! ऐसा नहीं होगा कभी ! वे मेरे सुख से सुखी होंगे। बाधा नहीं बनेंगे। कभी बन भी नहीं। और फिर जब कहूँगा कि कटी मेरी ' इस बार विकास के मुस्कुराने की बारी थी और बदले में कटी के होंठों पर भी स्मित उग आया।

विकास भीतर जाकर लौटा तो माता पिता साथ थे। कटी को उन्होंने एक नई दृष्टि से देखा तो कटी शर्म से फुर गई। उसने दोनों का चरण स्पर्श किया। और आशीर्वाद ऐसा मिला कि उसके कान शर्म से लाल हो उठे।

विकास के पिता बोले— ले तो इसे जा रही हो बेटी ! पर इसे लौटाकर भी तुम्हीं लाना। तुम दोनों की प्रतीक्षा करेंगे। और उन लालाजी की चिन्ता मत करना। उन्होंने तो हमें जबर्दस्ती फाँस लिया। और यह विकास कुछ बोला ही नहीं। वर्ना हम हाँ थोड़े ही भरते। अब भी क्या है? तुम दोनों आज चले जाओ। बम्बई नहीं कहीं-और। दिल्ली या मद्रास। वहाँ से तार भेज देना। बाकी हम सम्हाल लेंगे।

हाँ ! जब फिल्म बन जाय तो दिखाना जरूर। कभी देखी नहीं पर बेटे बेटी की पत्नी फिल्म जरूर देखेंगे।

कटी ने लजाने का अभिनय करते हुए कहा—'आप दोनों को एक महीने के भीतर ही बम्बई बुला लेंगे। वह बम्बई पहुँचते ही बीस हजार रुपये का एडवान्स मिल जायगा। तब ये मनन में फ्लैट ले लेंगे और

आपको बुला लेंगे।

विकास के माता पिता प्रसन्नता से भर उठे। इतनी बड़ी राशि का नाम पहली बार सुन रहे थे। उनका बेटा इस योग्य होगा— यह आशा तो शायद उन्होंने नहीं की थी।

पिता ने पूछ लिया— 'तो बेटी! पूरे पचास हजार रुपया की बात है न? कागजात ठीक तो हैं?"

'आप चिंता न करें पिताजी! यह सब वकील का तैयार किया हुआ है। गवाहों के हस्ताक्षर हैं। इसमें कोई धोखा नहीं हो पायगा।

बेटी ने उन्हें आश्वस्त कर लिया और चलने की तैयारी की। विकास के माता पिता ने भोजन के लिये रोकना चाहा तो बोली— 'आप सब मेरे साथ चलिये। वहां भोजन करेंगे। ग्रैंड होटल में।

नाम सुनकर तीनों चौंके। होटल के बाहर से कई बार गुजरे थे। पर भीतर जाने का साहस नहीं होता था। सुन रखा था कि एक कप चाय के पांच सात रुपये लग जाते हैं। ना बाबा ना! कितना महंगा होटल है? वहां चार आदमियों के भोजन पर तो पता नहीं कितना बिल आये? विकास के पिता ने विषय का कारण स्पष्ट कर दिया।

पर बेटी नहीं मानी। सबको लेकर ग्रैंड होटल गई। वहां का ठाट बाट देखकर वृद्ध दंपति आतंकित से हो गये। उन्हें हॉल में ले जाना उचित नहीं था— अतः रूम-सर्विस का ऑर्डर दे दिया। फिर तो कमरे में ही पसन्द के खाने सब का प्रबन्ध हो गया।

विकास ने माता पिता को टैक्सी में बैठा दिया और फिर वह बेटी के साथ एयर इंडिया के ऑफिस गया। शाम को पांच बजे प्लेन का रिजर्वेशन मिल गया। दिल्ली के लिए।

लौटकर होटल आये। वहीं बेटी ने अपना सामान पैक किया। फिर दोनों दमदम हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गये।

१३

हवाई अड्डे पर उनकी भेंट रेखा से हो गई। वह किसी समाचार-समिति की प्रतिनिधि होकर दिल्ली जा रही थी। उसने विकास और कटी से जानना चाहा कि वे दिल्ली किस प्रयोजन से जा रहे हैं। उन्होंने पहले तो टालना चाहा। फिर संगीत का नाम लिया। किन्तु रेखा का आन्तरिक पत्रकार इन उत्तरों से सन्तुष्ट नहीं हो सका। वह भांप गई कि वास्तविकता कुछ और है जिसे दोनों बताना नहीं चाहते। उसे यह पता नहीं था कि कटी ने कलकत्ता छोड़ दिया था। विकास के साथ उसकी घनिष्ठता का भी पता नहीं था। उसने तो संगीत-प्रतियोगिता के बाद पहली बार कटी को देखा था। कई वर्षों बाद। विकास से भी इन दिनों में उसकी मुलाकात नहीं हुई थी। आवश्यकता भी नहीं पड़ी थी।

रेखा को लगा कि इन दोनों की दिल्ली यात्रा सहज नहीं थी। उसने कुछ रूमानियत का अनुमान लगाया। इससे उसे ईर्ष्या तो नहीं पर जिज्ञासा अवश्य हुई। कटी से पूछने लगी— "इन दिनों क्या कर रही हो?" कटी ने कहा— "कुछ नहीं"। रेखा सन्तुष्ट नहीं हो पाई इस उत्तर से। विकास से तो जान ही चुकी थी कि वह परीक्षा नहीं दे पाया। अब दया या नहीं कहना कठिन था।

हवाई जहाज में वह दोनों के बराबर वाली सीट पर बैठी थी। इससे कटी और विकास को कुछ परेशानी हुई। पर वे कह नहीं पाये। सिमटे सिमटे से बैठे रहे। कभी चोरी छिपे एक दूसरे की

ओर देखते और फिर अखबार की ओर उनकी दृष्टि मुड जाती। इस प्रकार दिल्ली तक की यात्रा में एक प्रकार का तनाव बना रहा, जिससे तीनो प्रभावित थे।

दिल्ली के हवाई अड्डे पर पुन औपचारिक बातें हुई। कहाँ ठहरना है? कितने दिन के लिए? आदि। उत्तर दिये गये पर रेखा सतुष्ट नही हो पाई। और वह मन ही मन भुनभुनाती चली गई।

कमी और विकास को राहत सी मिली। उन्होंने दिल्ली न रुकने का निर्णय कर डाला। यद्यपि रेखा का दिल्ली में होना उनके दिमाग पर बोझ सा बना हुआ था। अत दिल्ली से चल देना ही उचित था। फिर दोनो ने जयपुर उदयपुर होते हुए बम्बई जाने की योजना बनाई। इसके लिए उन्हें कुछ घंटे हवाई अड्डे पर बिताने पडे।

दूसरे दिन जयपुर पहुचे और रामबाग पैलेस में ठहरे। दिन भर गुलाबी नगरी में घूमे। चौडी सीधी सडकें। कई बडे चौराहे या चौपड। आमेर के राजमहल देखे। कितने भव्य—कितने आकर्षक? और कितने सुनसान? शायद रविवार को भीड होती हो। वेधशाला देखकर दोनो को भारत की वैज्ञानिक प्राचीन उपलब्धियों का पता लगा।

नगर में ग्रामीणो की वेशभूषा की ओर भी उनका ध्यान गया। स्त्रियों का पहनावा बडा आकर्षक लगा। रगीन घाघरे और ओढनियाँ। अनेक देहाती स्त्रियाँ घूघट डाले थी। इनके ठीक विपरीत हिप्पी घूम रहे थे। दो संस्कृतियो का इससे बडा तुलनात्मक स्वरूप मिलना कठिन था। एक तो अति संस्कारवाद से चिपटा था और दूसरा पक्ष अति प्रगतिवाद से खिन्न होकर पलायन कर रहा था।

उदयपुर में भी जयपुर की कुछ स्थितियाँ नजर आई। वैसे ही प्राचीन राजमहल। वैसी ही प्राचीनता। वैसी ही वेशभूषा। सक्षेप में सर्वत्र अतीत की झाँकियाँ विद्यमान थी। भिन्नता थी तो झीलो की। सरोवरो की। सहेलियो की बाडी देखकर आधुनिक वातानुकूलन पद्धति का स्मरण हो आया। आवश्यकता आविष्कार की जननी है इस कथन की

सत्यता भी प्रमाणित हो रही थी। नेग पलेस से वे बहुत प्रभावित हुए। वहा सभी आधुनिक सुविधायें उपलब्ध था। चारो ओर जल से घिरा यह होटल अपने आप मे एक नवीनता है और आनंदप्रद भी। देश विदेश के अनेक पर्यटक वहा ठहर थे। कटी और विकास ने कुछ एक से बात चीत भी की। सवथा औपचारिक।

उदयपुर से उन्हे सीधे बम्बई जाना था। उनका अनुमान था कि विमला की अब तक शादी हो चुकी होगी। फिर कोई खतरा नही था। और यदि हो भी तो देखा जायगा। या उम्र भर तो भागना हो नही सकता।

शाताक्रुज पर डाइरेक्टर अविनाश ने दोनो का स्वागत किया। कटी का तार उसे मिल गया था। विकास से हाथ मिलाते समय उसने अनुभव किया कि कटी की सिफारिश गलत नही थी। बिलकुल फोटोजिनिक आकृति थी। और भी कुछ वशिष्ट्य उसमे होगा डाइरेक्टर यह अनुमान कर सकता था। उसने ताज होटल मे विकास के लिए कमरा रिजव करा दिया था और वही पर सध्या को प्रोग्राम निश्चित करने की कहकर स्वय स्टूडियो चला गया था।

कटी विकास को साथ लेकर ताज होटल पहुँची। वहा व्यवस्था के बारे मे निश्चित होकर वह चली गइ। शाम को आने की कहकर। मि सक्सेना घर पर ही थे। उन्होने कटी की आकृति से अनुमान लगा लिया कि वह अपने अभियान मे सफल रही है। फिर भी पूछ लेने मे हानि नही समझी—'कहा ठहराया है विकास को?' कटी ने बिना सामने देखे ताज होटल का नाम लिया था।

'घर ले आती' एक हलकी सी जिज्ञासा।

हवाई अड्डे पर डाइरेक्टर आया था। ताज मे कमरा रिजव कराके। उचित भी यही था। फिल्म मे प्रवेश करते ही स्कडल शुरू न हो जाय इसलिए।'

मि सक्सेना ने कटी के विवेक की मन ही मन प्रशसा की। फिर

एक दो क्षण हिचकिचाकर कहा—

कल सत्येन्द्र आया था।

क्या कह रहे थे ?

कुछ नहीं। बस पूछा—कटी कहाँ है ?

'आपने बता दिया ? एक हल्की सी आशंका।

मिस सक्सेना ने हाँ करते हुए बताया कि सही बात छिपाना ठीक नहीं। आज या कल में उसे मालूम तो होना ही था। तुम्हारा डाइरेक्टर आज कल में पब्लिसिटी शुरू कर ही देगा। शायद मुहूर्त भी जल्दी ही करवाये। इस स्थिति में बात को छिपाना सम्भव नहीं। उचित भी नहीं।

कटी बोली नहीं। वह स्वयं समझ रही थी कि सत्य छिपाये नहीं छिपता। अनुमान तो सत्येन्द्र को हो ही चुका। अब तथ्य की स्वीकृति ही शेष रही थी। पर इस तथ्य को उद्घाटित करना ठीक नहीं था। हीरोइन के विवाह की सम्भावना उसके भावी फिल्मी जीवन को अवरुद्ध कर देती है—यह उसे ज्ञात था। कम से कम यह फिल्म तो पूरी हो जाये। बाद की बाद में देखी जायेगी।

सन्ध्या के समय वह ताज होटल गई और विकास को इस बारे में समझा दिया। उसे यह भी कहा कि स्क्रिप्ट सुनकर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न करे क्योंकि वह उसे अप्रूव कर चुकी थी। उस वक्त स्क्रिप्ट सुनना भर था। सुनकर चौंकना नहीं था। विकास ने ये सब बातें सुनकर एक बार कटी की ओर ताका था। पर उसकी मुद्रा से ऐसा नहीं लगा कि कटी की बातों का बुरा माना हो। मानो वह कटी से निर्देशन लेने का अभ्यास कर रहा था। इतना उसने स्वीकार किया कि पूर्व चेतावनी के कारण वह सजग रहेगा और कटी को निराश नहीं होने देगा।

तब कटी उसे लेकर स्टूडियो में पहुँची। डाइरेक्टर उस समय व्यस्त था। पहले की फिल्म में। आधा घण्टे बाद उसे फुरसत मिली तो

पास आकर क्षमा-याचना करने लगा। विकास के साथ दूसरा की मुलाकात करवाई और फिर कटी और विकास को अपने आफिस मे ले जाकर बठाया। स्क्रिप्ट—लेखक शुक्ला जी का वहीं बुलवा लिया।

विकास न स्क्रिप्ट सुनते समय आश्चय या विस्मय प्रगट नहीं किया। कटी की पूर्व चेतावनी का पूर्ण अभिप्राय जब समझ मे आया तो उसने कटी की ओर कनखियो स देखा था और वह हलके से मुस्कुरा उठी थी। विकास ने सोचा—एक हलकी सी चपत उसके गालो पर लगा दे और कहे—बडी उस्ताद हो।

डाइरक्टर पूछने लगा—'क्या विकास जी ! कैसी लगी स्क्रिप्ट ? तो उसने कह दिया— बहुत अच्छी। वैसे कोई एतराज के लायक बात उसे दिखाई भी नहा दी थी। उस आश्चय तो यह हो रहा था कि कटी न इस स्क्रिप्ट को अप्रूव कर दिया था। उन कटु क्षणो की स्मृति स वह जब तब सिहर उठता था और जानता था कि कटी की मन स्थिति भिन्न नहीं होगी। फिर यह क्या चक्कर है ? कटी ने इस स्क्रिप्ट को स्वीकार कैसे कर लिया ? वह कुछ भी नहीं समझ पाया।

डाइरक्टर सतुष्ट था कि स्क्रिप्ट मे अब कोई कसर नहीं रही। फिर उसने बताया कि तीन दिन बाद एक केंद्रीय मत्री के हाथो फिल्म का मुहूत कर लिया जायगा। फिल्म का नाम होगा—रात एक सरोवर की। सगीत—निर्देशन के लिए बसत विश्वास स अनुरोध कर लिया गया था। य शास्त्रीय एव पाश्चात्य सगीत का समन्वित प्रयोग करने म बहुत ही प्रसिद्ध थे।

चलने स पहले कटी न डाइरक्टर अविनाश को एडवास की बात कही। कॉन्ट्रैक्ट क मुताबिक बीस बीस हजार रुपय हीरो हीरोइन को पहले ही दिये जाने थे। शेष रकम फिल्म पूरी होने पर। डाइरेक्टर ने पहल तो टालना चाहा पर कटी की आवाज का रुख पहचानकर दूसर दिन चैक पहुचाने की हाँ भर ली। विकास विस्मित था—कटी के चातुय स और साथ ही व्यावहारिकता स। वह स्वय यह सब नहीं कर

पाता। नाम म कभी न सोचता कि भी तीर तीर बन जाते हैं थान गैर राम ती गूर तर गी। तता किन दूगे गान पर पैसा मिलना बहुत कठिन था।

दूसरे दिन आ तरह शानदार स्वागत हुआ। कभी ना भी हाल म हुआ किया। कभी सरा ग्नी थ साथ था थी। कि तराना न गाता था ग लिए थ और साथा पर ग तर म तमा करा भाव थ। विराम का तगा फाउन्ट गातरा पन था। परन्तु और पाल-तु पात्र विराग का आरम्भ किन्याम तथा शान तगा और डायरेक्टर स रिहर्सल और शूटिंग क बारे म पूछना भी शुरू कर दिया। सरोवर की लोकेशन शूटिंग के बारे म उस कुछ सन्देह था।

अन्त उसने डाइरेक्टर स पूछा— क्या रवीन्द्र-सरोवर पर शूटिंग करने की अनुमति सरकार स मिल जायगी ?

क्या नहीं ? सरकार के पास स्क्रीनिंग की जाँच रिपोर्ट है और अब वह किसी भी प्रकार की आलोचना का उत्तर देने म समर्थ है। आवश्यकता पड़ी तो केन्द्रीय मंत्री हैं ही। इनसे मुहूर्त करवा ही इसी लिये रहे हैं कि वक्त जरूरत काम आयें। सेंसर से फिल्म को पास कर वाने म भी य सहायता करेंगे। यह कहते हुए डाइरेक्टर मुस्कुरा उठा। इससे वह बताना चाहता था कि इन सब बातों पर उसने विचार कर लिया है। कला वह कोई बेवकूफ नहीं कि बीस बीस हजार क दो चेक यों ही बाँटता फिरे।

कटी ने यह कहकर बात समाप्त कर दी — यह सारी बातें निर्माता और निर्देशक के सोचने की है। अपना काम है अभिनय। बस।

निर्माता की बात आने पर डाइरेक्टर को कुछ याद हो आया। वह बोला—कटी जी ! आपने खूब याद दिलाया। आज का डिनर प्रोड्यूसर क यहाँ है। हम सब वहीं चल रहे हैं। मैं आ जाऊँगा—लेने के लिए। यहीं पर। ठीक !"

मना करने का प्रश्न ही नहीं था। डाइरेक्टर चला गया तो कटी

ने फ्लैट तलाश करने का प्रोग्राम बनाया। यह बडा कठिन काम था। बवई म फ्लट छोड कमरा मिल सकना ही सभव नही होता। फिर भी प्रयत्न करना जरूरी था। होटल म कब तक पडा रह कोई। विकास के माता पिता को भी बुलाना था। व प्रतीक्षा कर रहे हाग।

दिन भर तलाश करने पर भी कमरा नहा मिला। खाना घूम फिर कर थक गये थ। विकास तो कुढ भी रहा था। उसके कथनानुसार कलकत्ता मे हालत इतनी खराब नही थी। शायद!

कटी न उस कहा – एक ही दिन म निराश नही हाना चाहिय। महीन भर म भी मिल जाय ता बहुत।" सुनकर विकास प्रसन्न नही हो पाया था। उसे यह तो अनुमान ही नही था कि फ्लट या कमरे के साथ साथ पगडी का प्रश्न भी जुडा है। कटी भी इसस अपरिचित थी।

किन्तु एक सप्ताह म कुछ दलाल उनके पास आने लगे थे। उन्होंन पगडी के अलावा किराय की बात उठाई थी और सोना सुनकर चौंक उठे थे। दस हजार रुपय पगडी और सात सौ रुपया माहवार किराया। और जगह के नाम पर एक कमरा और एक स्टोर कम किचन। माता पिता को कहाँ रखवे? मेहमान को कहा बठाय? इन प्रश्नो का उत्तर न दलाल के पास था, न स्त्री क पास। दलाल न यह आश्वासन अवश्य दिया कि फ्लैट खाली करते समय पगडी की रकम वापिस मिल सकती है। कुछ कम अधिक।

विकास आश्वस्त नहीं हो सका था। पर एक सप्ताह और बीतने पर आश्वस्त होना पड गया। होटल का बिल करीब डेढ सौ रुपया प्रति दिन था। दो सप्ताह म दो हजार के आस पास खच हो चुके थ। यदि यही रफ्तार रही तो तीन चार महीने स अधिक बम्बई म टिक नहीं पायेगा।

कटी भी चिन्तित थी। बीस हजार की रकम होटल को नही दी जा सकती। पगडी की रकम भी बहुत अधिक थी। विशेषत किराय का

देखते हुए। किन्तु विनय भी नजर नहीं आ रहा था। धीरे धीरे वह ेलाल का प्रस्ताव स्वीकार करने की स्थिति म आती जा रही थी। उसने विकास को एक आध बार हलके स संकेत भी देने शुरू कर दिये।

तभी उसे एक बात सूझी। क्या न सत्येन्द्र के यहाँ एक कमरा ल लिया जाये ? सत्येन्द्र को मनाना जरूर पड़ेगा पर कटी इसके लिए तयार थी। विकास को कुछ संकोच हुआ था, किन्तु कटी के आश्वासन देने पर वह उसके साथ हो लिया।

सत्येन्द्र ने दोनो को आते देखा तो उसे आश्चर्य हुआ। कुठा भी। कही रास्ता तो नही भूल गई कटी ?" उसने पूछा था। और कटी मुस्कुरा उठी थी— तुमने तो उधर आना ही छोड दिया। बस इसी लिये आज चली आई। सोचा— कही नाराज तो नही हो ? और फिर विकास भी आया है। तुम्ह तो पता ही है फिल्म का वही चक्कर है बस '

और सत्येन्द्र कटी का सहज मुस्कुराहट के सामन पिघलन लगा था। दस पद्रह मिनट स अधिक वह कठोर नही रह सका। चाय पानी के बाद उसने कटी की ओर प्रश्न मुद्रा स देखा था और कटी न सपाट बयानी स काम लेते हुए कहा था— विकास को कमरा नही मिल रहा है। कुछ दिन साथ रखना होगा। जब तक वह अपने यहाँ रख सकती थी पर फिल्मवालो का खयाल करना पड़ता है पता नही क्या क्या बातें उडाने लगते हैं।

तो यह बात है— सत्येन्द्र न सोचा। शायद कटी अभी किसी निर्णय पर नही पहुची है। शायद अभी सम्भावना शेष है। उसने विकास का साथ रखने की हाँ भर ली और साथ जाकर होटल स सामान उठा लाया।

एक बडी समस्या हल हो गई थी। अब उन्हें शूटिंग पर जाना था। मुहूर्त हो चुका था और डाइरक्टर अविनाश चाहता था कि फिल्म तीन महीनो म पूरी हो जाय। उसन कटी और विकास स डेटस न ली और

शूटिंग की तैयारियां करने लगा। अभी तो स्टूडियो में शूटिंग होनी थी। एक महीने बाद लोकेशन शूटिंग के लिए कलकत्ता का प्रोग्राम था।

गीतकार रमेन्द्र और संगीत निर्देशक अलग से तैयारियों में लगे थे। गीतों को अंतिम रूप दिया जा रहा था। हीरो हीरोइन को तो बाद में ही रिहर्सल करवानी थी। धुनों का आभास दोनों को स्वतः हो रहा था।

उसी समय प्रोड्यूसर सी पी गायन वहाँ आ गये। उन्हें डाइरेक्टर से कुछ बिन्दुओं पर बात करनी थी। दोनों बात करके बाहर आये तो लगा कि समस्या हल नहीं हुई थी। कटी और विकास कुछ भी अनुमान नहीं लगा पाये क्योंकि फिल्म इंडस्ट्री में सर्वथा नये थे। वे नहीं जानते थे कि प्रोड्यूसर स्टूडियो में क्यों और कब आता है। किन्तु किसी ने उन्हें चुपके से बताया— जरूर कोई पैसे वैसे का चक्कर है। वर्ना प्रोड्यूसर को फिल्म के प्रारम्भिक स्टेज में सिर खपाने की जरूरत नहीं होती।

वे कुछ कर भी नहीं सकते थे। बस देखते रहे— प्रोड्यूसर और डाइरेक्टर डेढ़ घंटे बाद बाहर आये थे। दोनों हीरो हीरोइन के पास आकर बैठ गये और इधर उधर की बात करने लगे। कटी को लगा— वास्तविक बिन्दु पर आने के लिए साहस बटोर रहे हैं। उसने अपनी ओर से उनकी कोई सहायता नहीं की। पर महसूस कर रही थी कि कुछ अजूबा होने वाला है। उसने विकास की ओर कनखियों से देखा। वह माधुरी के सपनों में खोया था मानो किसी भी समस्या से जूझने का काम कटी का ही है।

आखिर डाइरेक्टर बोला— 'कटीजी! आज शाम को आप खाली होंगी क्या?' कटी ने बड़ी बड़ी आँखें उसकी ओर घुमाई और सादगी से पूछा— 'क्या? कोई खास बात है क्या?

हाँ खास बात है। तभी तो आपसे पूछा' उसने इधर उधर देखा स्टूडियो के लोग दूर थे और उनकी बात नहीं सुन सकते थे।

हैं। अकस्मात् कुछ उलट-पुलट हो गया है।   मेरा मतलब है—प्रोडक्शन के लिए किसी फाइनेंसियर की जरूरत आ पड़ी है   ।

तो कहिए मैं क्या कर सकती हूं। बस फिल्म तो अभी शुरू ही नहीं हुई है। आप चाहें तो इसे मुलतवी कर दीजिए   चाहें आइडिया ही ड्रॉप कर दीजिए।" कटी के पास जैसे समाधानों की कमी नहीं थी।

डाइरेक्टर कुछ चौंका। वह इस प्रकार के समाधान के लिए तैयार नहीं था। उसने बात को पुनः सही मार्ग पर लाने के लिए कहा—'आइडिया को मुलतवी या ड्राप करने का वक्त हाथ से निकल गया है। अब तक डेढ़ दो लाख रुपया भी खर्च हो चुका है। इसलिए वह सब तो छोड़ो। प्रश्न है फाइनेंसियर तलाशने का। एक ध्यान में भी है। बिल कुल नया है फील्ड में। पांच चार लाख तक लगाने को तैयार है। इससे तीन चार रीलें तैयार हो जायगी। और फिर तो डिस्ट्रीब्यूटर्स भी पैसा लगा देंगे। सारा झगड़ा तो अभी का है।

यदि फाइनेंसियर तैयार है तो बात कर लीजिये। इसमें सोचना क्या है?" कटी मानो समस्या से असपृक्त थी। नहीं भी थी तो रहना चाहती थी।

प्रोड्यूसर गोयल ने देखा कि डाइरेक्टर भूमिका ही बांधे जा रहा है और मूल कथ्य पर आ नहीं पा रहा है। अतः उसने बातचीत की डोर अपने हाथ में लेते हुए कहा— कटीजी! बात हमने करली है। वह पैसा लगाने को भी तैयार है। पर उसका कहना है कि हीरो हीरोइन नये हैं। यदि कहीं फिल्म फ्लाप हो गई तो उसकी मनी का क्या होगा?

कटी इस प्रश्न से घबराई नहीं। बोली— वो तो है। नये कलाकारों को लेने से यह खतरा तो रहता ही है। पर कम लागत के प्रोडक्शन में ऐसा करना जरूरी भी होता है। अगर यह कारण न होता तो नयों को कभी चान्स ही नहीं मिलता।'

यह एक चोट थी— प्रोड्यूसर पर और डाइरेक्टर पर। दोनों चोट

से तिलमिला गये, पर शीघ्र ही सम्हल गये। प्राडयूसर कहने लगा—
आप सही कहती हैं। पर एम कम लागत के प्रोडक्शन म कलाकारो का सहयोग भी अपेक्षित होता है। यह सहयोग प्राय मिल भी जाता है। आपसे भी आशा है कि सहयोग करेंगी।

आप कैसा सहयोग चाहते हैं? साफ साफ कहिये। रूटी इस वार्ता से उचाट अनुभव करने लगी थी।

'देखिये रूटी जी', प्रोडयूसर ने एक अन्दाज मे 'देखिये' कहा— मानो रूटी और कही कुछ देख रही थी— फिल्म इडस्ट्री म समस्याये आती रहती हैं और समाधान भी निकलते रहते हैं। जरूरत है तो केवल विजडम की। टैक्ट की। हम फाइनेंसियर को ही ले लो। यह नये पुराने की बात कहता है, पर इस नये पुराने म वास्तविक फर्क का नायक ही पता हो। इसने कही से सुन लिया और उगल बैठा। अब इसके दिमाग से यह सनक दूर करनी है। इसे बताना है कि पुराना ने आर्ट का ठेका नही ले रखा है। नया भी अच्छा आर्टिस्ट हो सकता है। अब आपको ही देखिये—अभिनय के साथ साथ सगीत मे भी आपको कमाल हासिल है। पर वह फाइनेंसियर अभी आपके आर्ट से परिचित नही। बस उसे विश्वास दिलाना होगा कि आप बहुत बडी आर्टिस्ट हैं। किसी पुराने आर्टिस्ट से कम नही। हो सकता है— पहली फिल्म ही हिट हो जाय। नायक जुबिली मना जाय। बस अभी उसे मालूम नही है। पर मुझे विश्वास है कि आपका आर्ट देखकर उसकी सभी आशकायें मिट जायेंगी। यही सोच कर हमने उस मुलाकात का टाइम दिया है। आज शाम का ६ बजे। मैं समझता हूँ— आपको इसमे आपत्ति नही होगी।

प्रोडयूसर का कथन लम्बा हो गया था। पर उसे सतोष था कि उसने बात कह दी। अब रूटी पर सब कुछ निर्भर था। कहा वह मना न कर दे— यह आशका उसे थी।

रूटी के सामने स्थिति स्पष्ट थी। प्रोड्यूसर की भाना का निष्कर्ष

निकालना कठिन नहीं था। वह चाहता था—कटी के माध्यम से फाइनेंसियर को फुसलाया जाये। और फाइनेंसियर आसानी से चक्कर में आने वाला नहीं था। अब कटी को निर्णय करना था। बिलकुल मना करने से फिल्म रुक सकती है। या फिर कटी और विकास को तो छोड़ा ही जा सकता है। चालीस हजार रुपय कोई बड़ी रकम नहीं होती। दूसरा विकल्प यह था कि वह प्रस्ताव स्वीकार कर ले और फाइनेंसियर को फुसलाने में मदद करे। इसके लिए टैक्ट की जरूरत है। पर टक्ट यही काम न आया तो ? कटी के सामने प्रश्न चिह्न खड़ा हो गया।

'क्या सोचा आपने ?' गोयल ने पूछा।

मैं सोच रही थी— क्या कला को भी परीक्षा देनी होती है। और देनी ही है तो फिल्म है ही। इससे बड़ी परीक्षा क्या होगी ?"

अजी यह परीक्षा थोड़े ही है। यह तो उस फाइनेंसियर को आश्वस्त करना है कि आप बड़ी आर्टिस्ट हैं।

'यदि वह आश्वस्त न हुआ तो ?" कटी ने आशंका व्यक्त की।

आप भी क्या बात करती हैं ? आपके चलने से वह तो क्या, उसका बाप भी आश्वस्त हो जायेगा। डाइरेक्टर ने कई देर की चुप्पी का बदला सा लेते हुए कहा।

प्रोड्यूसर को बातचीत का यह तरीका पसन्द नहीं आया। उसने डाइरेक्टर अविनाश की ओर आँखें तरेरी। फिर कटी की ओर मुड़कर कहने लगा— ऐसा है कि हम प्रयत्न कर देखते हैं। यदि मान जाता है तो ठीक वर्ना और किसी को देखेंगे।

विकासजी भी साथ चलेंगे न ? नया प्रश्न खड़ा कर दिया कटी ने। सुना तो गोयल और अविनाश महाशय चकराये। उनकी योजना में विकास का कोई रोल नहीं था। पर उन्होंने देखा कि विकास ने कटी का प्रश्न सुना ही नहीं। शायद सुना भी हो तो आमास नहीं होने

दिया। इससे गोयल को एक रास्ता सूझा।

'इनको भी ले चलेंगे। पर एक ही बार मे इतना समय नही मिल पायेगा कि दोनो के आर्ट का प्रदर्शन हो सके। मेरी समझ मे आज तो आप चलिये। कल इन्हे ले जायेंगे। ठीक है न।" गोयल अपनी होशियारी पर मुग्ध हो रहा था।

कटी समझ गई। ये विकास को साथ नही ले जाना चाहते। शायद किसी को नही। तो ठीक है। वह अकेली ही इनसे निपटेगी। उसने गोयल और अविनाश महाशय को "हा" कह दी और फिर बिना कुछ कहे खडी हो गई। इस हलचल से विकास का ध्यान पत्रिका मे हटा और उसने देखा कि सब खडे हो गये हैं। वह कुछ सकपकाया और फिर उन सबके साथ हो लिया।

'तो कटीजी! हम दोनो लेने आ जायेंगे। ठीक?' और कटी की स्वीकृति पाकर गोयल और डाइरेक्टर चले गये। कटी और विकास अकेले रह गये तो विकास ने पूछा— तुम्हे डर तो नही लगेगा वहाँ? कटी ने चौंककर उसकी ओर देखा। वह जान गई कि विकास सब कुछ सुनता रहा है। पत्रिका का तो बहाना ही था।

डर किस बात का?" उसने अनजान बनकर कहा।

"नही मैं तो यो ही पूछ रहा था।' विकास ने बात टाल दी। वह कटी के कार्य-कलाप मे दखल नही देना चाहता था। शायद इसके लिए अपेक्षित साहस भी नही था उसमे। और वह झूठे साहस का प्रदर्शन करना व्यर्थ समझता था। कटी को झूठा विश्वास न तो दिलाना था और न दिला सकता था।

कटी उसे टैक्सी मे बिठाकर स्वयं अपने घर चली आई और डैडी को सक्षेप मे स्थिति स्पष्ट कर दी। मि सक्सेना को क्रोध तो आया पर अपने ऊपर जब्त करते हुए पूछा— 'तो तुमने क्या सोचा है? जाओगी क्या?'

जाना तो होगा ही डैडी! यह फिल्म तो पूरी करनी ही है।

अपना तो खयाल है ही। उधर विकास को भी ध्यान में रखना है। उसे विवाह की वेदी पर से या ही तो नहीं उठा लाई हूं।"

'और वहां कुछ हो गया तो ?'

'कुछ नहीं होगा डैडी! आप चिंता न करें। मैं सब सम्हाल लूंगी। सच पूछो तो भय उनके लिए होता है जो स्वयं कमजोर हों। कमजोर व्यक्ति को तो ऐसी स्थिति का बहाना चाहिए और फिर फिसलते देर नहीं लगती। मैं कमजोर नहीं हूं डैडी!"

मि सक्सेना आश्वस्त हो गये। दोनों डिनर के समय प्रायः मौन रहे। न चाहने पर भी स्थिति की गंभीरता दोनों के मध्य आ बैठी थी और किसी ने भी इसे दूर करने का प्रयास नहीं किया।

वे कॉफी पी रहे थे। तभी गोयल और अविनाश आ गये। उन्होंने कॉफी लेने से इन्कार कर दिया। कंटी कॉफी पीकर तैयार हो गई और फिर तीनों कार में बैठकर चल पड़े।

कार शहर से बाहर उपनगरों में से गुजर रही थी। और उपनगर भी पीछे छूटते गये। अब छोटी बस्तियां शुरू हो गई थीं। बस्ती आती और गुजर जाती। रोशनी कम अंधेरा अधिक। और अब बस्तियां भी जैसे सन्नाटे में खो गईं। तभी कार की स्पीड कम हुई और कच्चे में उतरकर बाईं ओर मुड़ गई। करीब आधा मील चलकर रुकी और सब कार से बाहर आ गये। एक छोटी सी कोठी सामने दिखी। कंटी पूरी तरह सावधान हो गई।

भीतर पहुंचे तो ड्राइंग रूम सुसज्जित पाया। कीमती कालीन बिछा था। बढ़िया सोफा सेट। रंगीन ढंग के पर्दे और नेट में बंधी रोशनी। एक तरफ तख्त बिछा था। गद्दा तकिये और मसनद। एक सेठनुमा व्यक्ति उस पर बैठा था। वह आगन्तुकों के प्रति सम्मान दिखाने के लिए उठा। कंटी से परिचय हुआ तो देखता ही रह गया। बार बार होंठों पर जीभ फिरने लगी। कंटी को कुढ़न हो आई।

'शराब तो चलती है। कंटी पूछती है। सेठ मारवाड़ी बोल रहा

था। मस्त होने पर उसे हिन्दी अच्छी नहीं लगती थी।

सेठ की प्रसन्नता गोयल और अविनाश से छिपी न रही। उन्हें अपनी योजना सफल होती दीख रही थी। तुरत ही सेठ की हां में हां मिलाने लगे। फिल्म के बाक्स हिट् जाने की भविष्यवाणी करते हुए फिल्म की लागत की चर्चा कर बैठे। सेठ को यह शीघ्रता अच्छी नहीं लगी। उसने डाट सा दिया—'अरे गोयलजी! सरु में ही लागत-वागत? आ तो छोडो। काल देखस्या ऐं वाता।"

फिर तो दोनों चुप हो गये। सेठ ने आवाज देकर नौकर को बुलाया और खाने पीने की चीजें लाने को कहा। नौकर दो प्लेटों में नमकीन काजू और भुजिया ले आया। साथ में दो बोतल व्हिस्की भी। गोयल अविनाश की आंखें खुशी से फैल गई। बम्बई में व्हिस्की के दर्शन ही कहां होते हैं? और यहां एक दो पैग नहीं, पूरी दो बोतलें।

नौकर एक बोतल खोलकर चला गया। ग्लास और सोडा पहले से रखे थे। सेठ ने शुरू करने का इशारा किया। अविनाश ने ग्लासों में पैग डाले। पहला सेठ को दिया। फिर गोयल और कटी को। कटी ने मना नहीं किया। पर ग्लास से हलका सा मिस कर रही थी। मानो सूंघ रही हो।

उधर तीनों पूरे पियक्कड़ थे। कुछ ही देर में दूसरी बोतल खुल गई थी और नौकर काजू भुजिया और रख गया था। तीनों की जुबान खुल रही थी। सेठ कुछ अधिक बहक रहा था। शायद आधी से अधिक शराब उसी ने पी थी। हक भी तो था उसे।

अचानक सेठ को मालूम हुआ कि कटी वहां मौजूद है। उसे दो क्षण याद करने में लगे कि वह कौन है और वहां क्यों है। अब तक वह एक सोफे पर शान्ति से बैठी थी और उसका पैग खत्म नहीं हुआ था। शायद आधा भी नहीं। सेठ ने खाली बोतल उसकी ओर सरकाते हुए कहा— अरे! और ले न!' कटी का सिर हिलाना देखा तो आंखें फाड़कर देखने लगा। शायद उसे अब समझ में आया कि वह औरत

है। खूबसूरत भी। कहने लगा—'कुछ सुनाओ ना !" प्रोड्यूसर और डाइरेक्टर को भी अपना फर्ज याद आया— हाँ ! हाँ ! सुनाओ ना !'

नटी उन्हें देखती रही और जवाब नहीं दिया। तीनों ने कुछ देर प्रतीक्षा की। फिर लड़खड़ाते स्वर में कहने लगे—"सुनाओ न !" नटी बोली— साज सामान नहीं है। तबलची भी नहीं। साथ लाये होते तो कुछ सुना देती।

सेठ ने गोयन्क की ओर देखा। फिर अविनाश की ओर। वे दोनों सिर नीचा किये बैठे थे। इसका उन्होंने सोचा ही नहीं था। अब क्या हो? सेठ कहने लगा— अधूरी ही काम करेंगे। अब बोलो— वे करेंगी है?

नटी ने अवसर देखा तो प्रोड्यूसर को कहने लगी— आप काम की बात कीजिये। फिल्म फाइनेंस की। इसमें कितना रुपया चाहिये— मैं सारी रात तो बैठने से रही।

तीनों की आँखें सी खुली। विशेषतः पायल की। उसने कुछ कागज निकाले और लड़खड़ाते स्वर में सेठ को कहने लगा— दो लाख बड़े आर्टिस्टों को दो लाख कच्ची फिल्म का शूटिंग और स्टूडियो के किराये के लिए सात लाख फुटकर पाँच छः लाख कुल बीस लाख की लागत आयेगी।

आमदनी तो बताओ कितनी होगी? सेठ का भीतरी व्यापारी जाग गया था।

सही आमदनी तो फिल्म के बनने पर ही मालूम हो सकती है। फिर भी इण्डिया के चारों जोन से करीब पच्चीस लाख और ओवरसीज अधिकारों के लिए करीब पाँच लाख तो मिल ही जायेंगे। जुबिली हिट होने पर तो कहना ही क्या है?

सेठ कभी कभी सम्भावना से प्रभावित तो हुआ पर व्यापारी था। सब आशंकायें दूर करने में विश्वास रखता था। कहने लगा— इतनी रकम तो ठीक पर गारंटी क्या है?

"गारटी तो हम द रहे हैं न। हम इस घधे म पद्रह बरस मे हैं। जानते हैं—कौनसी फिल्म कितनी चलेगी। इस फिल्म का जुबिली मनान का हम पूरा विश्वास है। गोयल कह ता रहा था पर जानता था कि फिल्म का हिट हाना या फ्लाप हाना किस्मत की बात है। फिर भी सेठ को आश्वस्त करना जरूरी था।

पर सठ आश्वस्त नही हुआ। उसने जबानी गारटी पर भरोसा करने का पाठ नही पढा था। कहने लगा— जबानी गारटी छोडो। लिखित गारटी देग्रो तो सोचो।

गोयल के लिए यह जरा मुश्किल था। वह डाइरेक्टर अविनाश की ओर देखने लगा। उसने भी महसूस किया कि लिखित गारटी देना तो आत्महत्या के समान है। फिर भी कुछ बोलना जरूरी था। अत बोला— गोयल साहब सही फरमा रहे हैं सेठजी! इनकी जबानी गारटी लिखित से भी ज्यादा होती है। आप रकम लगाने स मत हिच किचाइए। मुनाफे का बीस परसेंट आपको मिल जायेगा। और रकम ता आपकी वापिस होगी ही।"

आ तो ठीक बात है। पर गारटी देग्रा तो बात करा।' सेठ चक्मे मे आने वाला नही था।

तब प्रोड्यूसर गायल ने प्रस्ताव रक्खा कि डिस्ट्रिब्यूशन राइट्स का चौथाई उन्हे एडवास दे दिया जायगा। पर सेठ न इतने से सतोष नही किया। वह आधे स कम पर तैयार नही था और साथ ही उसने माग की—' फिल्म अदाएँ छोडनी पडेगी। याने मजूर हो ता बोलो।

गोयल और अविनाश समझ गये कि सेठ एक नबर कादयाँ है। व तो समझ रहे थ कि फिल्म लाइन मे नया है और यो ही फस जायेगा। पर य बातें सुनी तो हथियार डाल बैठे। गोयल न मिन्नत करके भी देख ली किन्तु सेठ टस से मस नही हुआ। तब उसने कटी की ओर देखा—सहायता के लिए। वह हिली नही। जसे उस कुछ लेना-देना नही था। तब गोयल को कहना पडा कटी जी! आप उन्ह

समभाइय ना। आपको साथ लाते समय सोचा था कि आप इन्कार करेंगी। पर आप तो चुप बैठी है। कुछ तो इन्हे समभाइय।"

कटी न सेठ की ओर देखा। वह चोकन्ना था। आसानी स मानने वाला नहीं था। अत वह उठी और कागजात हाथ म लेकर सेठ क सामन खडी हो गई। कहने लगी— सेठ जी जिद्द छोडिय। या तो एडवास की बात कहिय या फिर मोर्गेज की। दोनो साथ नहीं चलेंगे। आपकी शर्तें किसी भी प्राडयूसर को मजूर नहीं होगी। *और फिर आपकी रकम पडी रह जायगी। दो नवर का रुपया घर म* छिपाकर रखना खतरनाक है सेठ जी! अच्छा हो, जल्दी से जल्दी इसे एक नबर म बदल दो। लीजिय यहाँ पर्सेंटेज लिखकर दस्तखत कर दीजिये।'

सेठ चकरा सा गया। वह समझ गया कि हीरोइन तेज है। अब ज्यादा गु जाइश नहीं दिखी तो कागजात हाथ मे लिय और दस्तखत करने लगा। तभी उसे एक बात याद आई 'कटीजो' थारो कैणो तो मानणो पडसी। पण थे भी म्हारो कैणो मानस्यो क नहीं?

कटी ने होठ बिचकाकर जबाब दिया 'क्यो नहीं? आप दस्तखत करके गोयल साहब और अविनाशजी को विदा कीजिय। आप और *हम बाद म बात कर लेंगे।*

सुना तो तीना प्रसन्न हो उठे। सेठ जी ने दस्तखत करके काग जात गोयल को सौंप दिय और कहा पतीस परसेंट लेस्या। डिस्ट्री ब्यूबर न अठै ही ले आया। सारी बाता हो ज्यासी।'

गोयल और अविनाश ने कटी की ओर कृतज्ञता से देखा। दूसरे दिन स्टूडियो मे मिलने को कहा। घर पहुचाने के लिए पूछा तो सेठ जी ने बताया कि उनकी कार म चली जायेगी।

दोनो चले गये तो सेठ ने एक और बोतल मगवाकर पीना शुरू कर दिया। कटी न और पैग लेने से इन्कार कर दिया। वह देख रही थी कि सेठ की पान-क्षमता काफी थी। अभी दो पैग और लेगा—

यह अनुमान उसे हो रहा था। उसने अपने हाथ से पैग भर के सेठ को दिया तो वह ही ही करने लगा। उसने कटी का हाथ पकडने की कोशिश की, पर वह छिटक कर दूर बैठ गई। थोडी देर बाद दूसरा पग देकर सेठ को कहा—

"आपका परिवार यहाँ नही रहता क्या?'

अठै कोनी रैवे।'

तो कहा रहते हैं वे सब?

'वै तो चौपाटी पर रैवे है। प्रतीक बिल्डिग, चौथी मन्जल। देखी है के?" कहते कहते सेठ को घ्यान आया कि उसे घर का पता नही बताना था। पर दूसरे ही क्षण उसने बात को दर गुजर कर दिया। उसे कटी पर विश्वास सा हो आया था। अधिक पीने से किसी एक विचार पर वह टिक भी नही पा रहा था।

कटी कुछ देर और प्रतीक्षा करती रही। एड्रैस उस मिल गया था और वह उसका उपयोग करने जा रही थी। जब उसे विश्वास हो गया कि सेठ को पिछली बात याद नही रही होगी तो बोली— सेठजी! यहाँ क्या घुटे घुटे बैठे हो? चलो कुछ देर बाहर हवा मे घूम।'

सेठ को ऐतराज नही लगा। पर व उठते उठते गिर पडे। गद्दे पर से उन्हे कटी न उठाया और सहारा देकर बाहर ले चली। सेठजी झूम रहे थे। उन्हें पता नही चला कि कटी उन्हें गरेज की ओर ल जा रही थी। सेठजी की जेब से कार की चाबी कटी ने निकाल ली और अगली सीट पर सेठजी को बैठाकर स्टीयरिंग उसने सम्हाल लिया।

सेठजी की आँखें कुछ खुली तो पूछा— कठै चालो हो' कटी ने कहा— घूमने के लिए। कुछ हवा खा आयें। फिर सारी रात तो यहाँ कोठी म बितानी ही है। सुनकर सेठ आश्वस्त हो गये। और सीट पर पीठ के सहारे पसर स गय। कटी न कार बैक करके बाहर निकाली। और नौकर को बुलाकर कहा कि घूमकर लौटेंगे। पर वह इतजार न करे। आन पर जगा लेंगे।

इसके बाद कंटी ने कार स्टार्ट कर दी। पक्की सड़क पर
बाद उसने कार शहर की ओर मोड़ दी। धीरे धीरे वह स्पीड
गई और सब पीछे छूटने लगे। करीब आधा घंटे में वह मरीन
पर आ पहुँची। अब उसे मनीष बिल्डिंग तलाश करनी थी। अत
धीरे ड्राइव करते हुए बिल्डिंग्स के नाम पढ़ने लगी।

समुद्र की ठंडी हवा का झोंका आया तो सेठजी की आँखें
खुली। पूछने लगे— 'के टेम होग्यो ? घूम लिया के ?'

'अभी थोड़ा और घूमना है। मनीष बिल्डिंग का नम्बर क्या
कंटी ने धीरे से कान में पूछा।

'दो सौ सात चौथी मंजल पलैट नम्बर तीन
आधा बठ के करस्या ? कोठी पर ही चालो नी।'

हाँ वहीं चलते हैं। कंटी ने कहा और कार आगे बढ़ा दी
दो सौ सात तो बिड़ला अक्वेरियम के पास होना चाहिए— वह
रही थी। वहाँ पहुँचकर उसने निगाह डाली और मनिष बि
लिखा हुआ देखा। उसने कार वहाँ ले जाकर खड़ी कर दी। और
कई बार वहाँ साइड में पार्क की हुई थी।

कंटी ने सेठजी को कार से उतरने में सहायता की। सेठ का
क्विंटल वजन उसके कंधे पर आ गिरा था। बदबू अलग आ रही
पायरिया की बदबू। तमाखू चबाने की बदबू। बुढ़ियाते शरीर
बदबू। और पता नहीं कौन कौन सी बदबू ? कंटी इनके बारे
अभी सोचना नहीं चाहती थी। उसने लिफ्ट में सेठजी को खड़ा
बटन दबाया था। चौथी मंजिल के लिए।

चौथी मंजिल पर तीन नम्बर के फ्लैट के पास पहुंचते पहुँचते
भार में थक गई थी और भार भी फिसलता चला गया था। फ्लै
आगे पहुँचकर तो वह गिर ही गया। और कंटी ने उसे उठाया न
उसने फ्लैट की घंटी का बटन दबाया और स्वयं लिफ्ट की ओर
दी। लिफ्ट में खड़ी होकर उसने दरवाजा बंद करने से पहले देख लि

कि फ्लैट का दरवाजा खुल गया था और कोई महिला बाहर निकल आई थी। महिला वजन मे कम नहीं थी। सेठ के बराबर ही होगी। वह 'चोखली गा बापू' कहकर चिल्लाने लगी थी और फिर कटी ने फ्लोर का बटन दबा दिया था।

कार नीचे खडी थी। कटी उसम बैठकर फाउटेन की ओर चल पडी। घर पहुची तो रात के दो बजे थे। मि सक्सना बराम्दे म मुडे पर बैठे थे। रम का ग्लास सामने छोटी टेबिल पर रक्खा था। सिगरट के छोटे छोटे स्टम्म का ढर उनके पैरो के पास लग चुका था। निश्चयत वे परशान रहे होग।

कटी को दुख हुआ। कहन लगी— 'डडी! आइ एम सॉरी। पर आपको सो जाना चाहिये था। क्या चिता करते रहे मेरी? ओह डैडी! ' और फिर डैडी के कधे लगकर सुबकने लगी।

मि सक्सना उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे और कहा— 'दटम ओक बेबी! तुम्ह आन मे दर होने देखी तो चिन्ता हो ही गई। अब तुम्ही बताओ क्या करू डियर! उम्र का तकाजा है। नीद आती ही नही। बेटी जवान हो और रात का एक आध पहर ही बाकी रह गया हो उसके लौटने मे तो '

'ना डडी! नो। आपको चिता नही करनी थी। आगे भी नहीं करनी है। मुझे अपना खयाल पूरा रहता है डैडी! और आपका भी। चलिय, अब तो उठिय।

और मि सक्सेना अपने कमरे मे जाकर सो गय थ। कटी को कुछ देर नीद नही आई थी। वह सोच रही थी— यह फिल्मी जिन्दगी भी क्या जिन्दगी है? यहा पैसा ही सब कुछ है। सब पैसे के पीछे भागत हैं। पैसे वाल के तलुव चाटते है। यहाँ पैसा है तो काबिलियत है। बाकी सब व्यय। और पैसेवाले बहुत होशियार होते है। बडे ही धूत। जान भले ही निकल जाये पैसा नही

निकलना चाहिये। उन्हे फिक्र है तो एक कि पैसा बने कैसे। मुनाफा अधिक से अधिक हो। उसमें रू-रियायत नहीं। कोई लिहाज नहीं। कोई भावुकता नहीं। और उन्हें चाहिये वह, जिसके वे हकदार नहीं। खुद कैसे ही बदसूरत हो, चाहे पत्नी कैसी ही बेडौल हो, पर उन्हें चाहिये सुन्दरी जो सुरा का साथ दे सके। एक एक्स्ट्रा मुनाफे के रूप में। चाहे वे एक्स्ट्रा मुनाफा कमाने के काबिल हो या नहीं। पर चाहते जरूर है। हविस लगातार बढती रहती है। और उनकी हविस बढाने वाली भी कोई मिल ही जाती होगी। बहुत सी औरतें ऐसी होगी जो अपने हानि लाभ के लिए पैसे वालो की हविस मिटाने या कहू बढाने आ जाती होगी। कितना ढोग करती होगी वे सब? और कितना सफल अभिनय भी? सच कही? तू वैसा अभिनय नहीं कर सकेगी। रहने दे सब। बस सो जा।

१४

कंटी दूसर दिन स्टूडियो पहुंची तो वहा सेठ को बैठे पाया। वह एक सकिड का ठिठकी। फिर आगे बढकर बोली—'वाह सेठजी! कल तो बहुत चक्कर मे डाल दिया। मुझे तो अपने नैकलेस स हाथ धोना पडा। वह जो सिपाही मिला था न वह सीधे पुलिस स्टेशन ले जाने की धमकी दने लगा। कह रहा था— आपने पी रखी है। अब बालिये क्या करती? आपको तो होश नहीं था। और पुलिस स्टेशन जाने की मुझ ख्वाहिश नहीं थी। किसी तरह नक्लस दकर पिण्ड छुडाया। पूर सात हजार का था। लाइये, निकालिय चैक बुक।'

सेठ इस चक्कर बाजी के लिए तैयार नही था। वह तो शिकायत लकर आया था कि कटी न उसे चकमा दिया सो दिया, ऊपर से सेठानी क सामने फोन भुलवा दी। इसस पहले सठानी को हवा तक नहीं थी कि वे ड्रिक करते हैं। यह सब हुआ— कटी के पीछे। और कटी है कि अपना रोना रो रही है। सात हजार का चक्कर और डाल रही है।

'कंटीजी! आ के अडगो है? कुण हो वो सिपाई? साच्याणी नकलस दे न्यिो के?' सेठ को विश्वास नही हो रहा था कटी पर।

आपको नम्बर बताये देती हू— सेवेन जीरो ऐट फाइव टू। आप पुलिस स्टशन चलकर पूछ लें उस।" कटी ने चैलेज फेंका। वो तो कार का नम्बर नोट कर रहा था। मैंन उसे करने नही दिया।

सेठजी पुलिस स्टेशन जाने को तैयार नही थे। सिपाही की पूछना भे सतर से खाली नही था। कहीं और न देना पड जाय। कार का नम्बर नोट कर लेता तो और भी मुश्किल हो जाती। अब सात हजार तो देने ही पड़ेंगे। बस रोते भींकते चैक-बुक निकाली और सात हजार का चैक काटकर कटी को दिया। देते समय कटी की अगुलियो का स्पर्श सुख प्राप्त किया। तभी उनकी नजर कटी की कटी हुई अगुली पर पडी। पूछने लगे— यह कैसे कट गई ?

कटी ने इधर उधर देखा। पास मे कोई नही था। सेठ की ओर थोड़ा सा झुकी और धीरे धीरे कहने लगी— किसी से कहना मत। एक बीमारी लग गई थी। स्साला बदमाश था एक। बताया नही कि उसे वह बीमारी थी। और फिर मुझे दो हजार रुपये इलाज पर खर्च करने पड गये थे। ऊपर से दो अगुलियाँ भी कटवानी पडी ? पैर की कटी हुई अगुली की ओर इंगित किया।

सेठ घबराकर दूर खिसक गया। सदेह भरी दृष्टि से पूछा— अब तो वा बीमारी कोनी ? एक लम्बी सांस भी भरी कि रात को बचाव हो गया।

कुछ कह नही सकती। डाक्टर कहता है— दुबारा कभी हो सकती है। क्योकि खून मे इसका असर रहता है। पता नहीं— कब पकड जाये ? डाक्टर ने मुझसे कहा था कि मैं लोगो पर रहम करूं। पर लोग मुझे रहम करने ही नही देते। मजबूर कर देते हैं। आप भी मजबूर कर रहे थे। प्राय कर ही चुके थे। वो तो मैंने रहम कर दिया। सोचा— आखिर फिल्म के फाइनेंसियर हैं। कहकर रहस्यपूर्ण हसी हँस पडी।

सेठ भयभीत हो गया था। उसने निश्चय किया कि शाम को हनुमानजी के मन्दिर जाकर ग्यारह रुपया का प्रसाद बाँटेगा। एक निश्चय और भी किया कि कटी की छाया भी अपने ऊपर नहीं पडने देनी है।

कटी अब निश्चिन्त थी। प्रोड्यूसर और डायरेक्टर उससे खुश थे। दोनो को याद नही रहा कि विकास को सेठजी के यहाँ ले जाने की बात थी। कटी या विकास ने याद दिलाई भी नही। ऐसी बातें याद दिलान की होती ही नही।

दो दिन बाद शूटिंग शुरू होनी थी। सब प्रथम कॉलिज का सीन फिल्माया जाना था। हीरा हीरोइन साथ साथ पढते हैं। नजरें चार होती हैं। हीरो पीछा करता है। हीरोइन परेशान है। हीरो गाना गाता है। कॉलिज कपाउड म। और कॉलिज का कोइ भी स्टूडट सुन नही पाता। उनस उमीद भी नही की जाती। कॉलिज से निकलती भीड क कई दृश्य पहले ही ल लिये गये थे और अब स्टूडियो म हीरो हीरोइन पर शाटस लने थे।

कटा कॉलिज स्टूडेंट क उपयुक्त ड्रेस पहनकर आई थी। ड्रेस का डिजाइन फिल्म की ड्रेस डिजाइनर ने तयार किया था। एक नया फशन शुरू होना था इसस। बाडी के सारे कवज इस ड्रेस स उभर आते थे बशर्ते कि बाडी म कव ज हा। और कव ज न हो ता बाडी ही कैसी? कौन देखेगा उस बाडी को? और किसकी निगाह जायगी ड्रेस पर?

कटी की ड्रेस पर निगाहे पड रही थी। बाडी पर भा और कव ज पर भी। हेमा मालिनी और राखी से तुलनायें की जा रही थी। और याद आ रही थी साधना मधुबाला नसीम।

विकास भी देख रहा था अपनी कटी को हीरोइन को अपनी भावी को। लागा की भूखी निगाहा को भी पहचान रहा था। साले सब बदमाश हैं। इनका वश चल तो कटी को खा जाय। जगली भेडिय कही क? उसे गुस्सा इसलिय भी आ रहा था कि लोग उसकी ओर देख ही नही रह थे। मानो वह सट पर मौजूद ही नही था। यह सब कटी का चलाया चक्कर है। बस लाकर फसा लिया। कहे! हीरो बनायगी मुझे। बन गया हीरो।

डाइरेक्टर न 'रडी' कहा तो सट पर से लोग हट गय। सट पर

हीरोइन एक ओर चल रही है और हीरो सीटी बजाता है।

"कट" और कैमरा रुक जाता है।

डाइरेक्टर हीरोइन को मुड़ने का निर्देश देता है। हीरोइन मुड़ती है और हीरो मुँह बिचकाता है।

'कट्'

और डाइरेक्टर नये निर्देश देता है। देता ही जाता है और शाटम ओके करता रहता है। गाने का वक्त आता है तो विकास होंठ हिलाने लगता है क्योंकि गाने की रिकार्डिंग अलग से होती थी। गाना समाप्त होने पर हीरोइन जीभ निकालकर हीरो को चिढ़ाती है और सैट के बाहर चली जाती है।

'कट'

लंच का समय हो गया था और सैट खाली करके आर्टिस्ट और अन्य सब लोग वहाँ से चल दिये थे। कटी और विकास एक दूसरे से पूछ रहे थे - कैसा लगा सब कुछ? दोनों को संतोष था— एक दूसरे के अभिनय से और दोनों प्रसन्न मन हँस रहे थे।

विकास मेक अप साफ करके चला गया था। टक्सी में बैठकर। और कटी भी अपनी कार मे बैठकर रवाना हो गई। उसने विकास के पीछे से जीभ निकाली थी और मानो उसे चिढ़ाया था। वह विकास को नव परिचित हीरो के रूप में जानने पहचानने का प्रयत्न कर रही थी। ए फनी आइडिया— वह सोच रही थी।

एक महीने तक नियमित शूटिंग होती रही थी। हीरो हीरोइन की तरफ से न कभी टालमटाल हुई और न ही विलम्ब। डाइरेक्टर और प्रोड्यूसर दोनों प्रसन्न थे कि शूटिंग शेड्यूल में कोई बाधा नहीं पड़ी। तीन गानों की रिकार्डिंग हो चुकी थी और रेडियो सीलोन और विविध भारती पर उनकी खूब फरमाइश हो रही थी। फिल्म का विज्ञापन विभाग भी जोर शोर से काम कर रहा था। फिल्म फेयर धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि प्रमुख पत्रों में इसके विज्ञापन छप रहे थे

तथा नई हीरोइन और हीरा की सचित्र चर्चा भी छप रही थी। मतलब आशा थी कि फिल्म बाक्स हिट् जायगी।

अब लोकेशन शूटिंग के लिए पार्टी को कलकत्ता जाना था। वहाँ करीब एक महीना लग जाने की आशा थी। अत मि सक्सेना साथ जाने के लिए तयार हो गय। सत्येन्द्र को कहा तो उसने मना कर दिया। वह कभी स्टूडियो भी नहीं गया था। कहता था— फिल्म बन जाने दो। पूरा फिल्म ही देख लूंगा। अब भी उसने वही तर्क दिया और साथ जाने में इन्कार कर दिया। कटी ने दबाव नहीं डाला।

कलकत्ता म पार्टी ग्रड होटल म ठहरी। हीरा और हीरोइन के लिए अलग अलग कमरे थे। बाकी पार्टी के दो दो या तीन तीन के हिसाब से कमरों म ठहरी थी। कुल मिलाकर एक पूरा विंग ही रिजर्व करवा लिया गया था।

रवीन्द्र सरोवर पर शूटिंग की इजाजत मिल गई थी और साथ ही पुलिस का एक दस्ता भी वहां नियुक्त हो गया था जिसमें कि कोई अप्रिय घटना न घट जाय। दो दिन तयारी म निकल गय थे। प्रोड्यूसर डिरेक्टर और फोटोग्राफर सरोवर का चक्कर लगा आये थे। और दूसरे दिन शूटिंग शुरू होनी थी। पर उस दिन आकाश बादलों से भर गया और कुछ देर मे बूंदा बूंदी प्रारम्भ हो गई। यह अच्छा शगुन नहीं माना गया। दूसरे दिन भी बादल छाये रहे और तीसरे दिन भी। अब प्रोड्यूसर चिंतित हो उठा। यदि एक सप्ताह यही स्थिति रही तो बंगाली प्रोडक्शन का भट्ठा बठ जायेगा। प्रतिदिन तीन हजार रुपये खर्च हो रहे थे और परिणाम— शून्य।

पर भाग्य से अगले दिन आकाश साफ हो गया। बादलों का वहाँ नाम भी नहीं था। और पार्टी होटल से चल पड़ी। दो कारें थीं और एक ट्रक। तमाशबीन वहीं से साथ हो लिये। इससे अनुमान हो सकता था कि सरोवर पर क्या हाल होगा।

कटी का दिल धुकधुक कर रहा था। घबराहट के कारण। क्या

वह सरोवर पर पहुचकर स्थिर रह सकेगी ? क्या वहाँ की कटु स्मृतियाँ दिल को कचोट नही डालेंगी ? और विकास को भी सब याद हो आयेगा। क"धा पर लदा एक नगा जिस्म। और जिस्म को नोच डालने को तयार भूखे भेडिये। उनकी जलती आँखें। उनके वढत पजे। हो सकता है उन भेडिया म स कई वहा आज भी मौजूद हा। उनमे मे शायद कोई पहचान ही ले यद्यपि इसकी सम्भावना वहुत कम थी। उस ल्नि के घोर अ धकार म आकृति छोड व्यक्ति ही नही दिखाइ देता था। फिर भी सम्भावना तो है ही। चाह दस लाख म एक सही। जो होना है, हागा। अब पीछे हटने का समय नही रहा। वह अपनी इच्छा से वहा आई थी। फि म की सपूण योजना म यह स्थिति उसी ने डल वाई थी। सवथा साभिप्राय। उसे अपनी कमजोरी पर काबू पाना था। वर्ना वह कमजोरी वह आ सेशन सदा उस पर हावी रहेगाऔर जि"गी नारकीय हो जायेगी। नही वह जायेगी। जरूर जायगी।

कटी को अपने घुटने पर मुक्का मारते देख विकास न कहा था— 'नवस हो क्या ? और कटी दिवा-स्वप्न से जाग उठी थी। धीरे स उत्तर दिया— नही यो ही कुछ स्मरण हो आया था। इसी स जरा ध्यान बँट गया।

पार्टी सरावर पर पहुची तो देखा—सकडा लोग शूटिंग देखने आय थे। पुलिस उह कावू म रखन का प्रयत्न कर रही थी। पर हीरोइन को का देखन के लिए व उमडे आ रह थ। पुलिस कुछ घबरान लग गई था। डीवाइ एस पी न प्रोडयूसर क। आकर कहा— अभी आप लाग गाडी म ही बठे रहिय। भी" अधिक है। वहा कोई गडव" न हो जाय।

प्राडयूसर क पास हो भरन के अलावा चारा नहीं था। व" ल्नि ववाद हो जान की आशका स ग्रस्त था। पर साथ ही प्रस"न भी— ि फिल्म को प"लिसिटी मिल र"ी है। विना पसा की प"लिसिटी, जो बाक्स हिट का सबस ब"ा नुस्खा था।

जनता 'कटो" "कटो" चिल्ला रही थी और पुलिस वाले उन्हें समझाने में लगे थे—'आप लोग व्यवस्था बनाये रखेंगे तो शूटिंग शुरू हो जायेगी और आप हीरोइन को देख सकेंगे। यदि आप शांत न रहे तो पार्टी वापिस जा सकती है। आप लोग सोच लीजिये।'

इस अपील का विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था। जनता पुलिस के काडन को तोड़ना चाहती थी। और पुलिस उसे बनाये रखने का प्रयत्न कर रही थी। तभी घुड़सवारों का एक दस्ता वहां आ पहुँचा। टीवाइ एस पी ने इसके लिए फोन कर दिया था। घुड़सवारों ने आते ही जनता की ओर रुख किया और जनता पीछे सरकने लगी। कई लोगों के पैर घोड़ों के खुरों से चिथ गये और कुछ को चाबुकों की सपासप का जायका भी मिला। अरे मर गया व 'हाय मार डाला' आदि की कई आवाजें उठीं और प्रोत्साहन न मिलने से समाप्त हो गईं। दो तीन मिनट में लोग काडन के पीछे खड़े हो गये थे। सर्वथा व्यवस्थित। विद्रोह की भावना जैसे वहां थी ही नहीं। लगता है, जनता केवल बल प्रयोग की भाषा ही समझती है। विशेषत बंगाल की जनता। चाहे फुटबाल का मैच हो चाहे क्रिकेट का। फिल्म का प्रीमियर हो अथवा कोई सांस्कृतिक आयोजन। सब जगह भीड़ लग जायगी। बिलकुल अव्यवस्थित। गिरहकटों की चांदी हो जायगी और टिकटों के ब्लैक से सैकड़ों लोगों के घर में जश्न हो जायगा। फिर होगी धक्का-पेल। कई रोयेंगे। कई चीखेंगे और सरकार को गालियां देंगे। भीतर के लोगों को परेशान करेंगे और बाहर स्वयं परेशान होंगे। फिर घुड़सवारों का दस्ता आयगा और चार पांच मिनट में व्यवस्था लौट आयगी। सच ही कलकत्ता की जनता घुड़सवारों के रस्ते में प्रेम करती है। उत्कट प्रतीक्षा करती है और आने को बाध्य भी। फिर दर्शन और प्रसाद पाकर धन्य हो उठती है। यहां की जनता का अनुकरण अन्य प्रदेशों में भी हुआ है। पर कलकत्ता की जनता सबको लीड करती है। राजनीति में संस्कृति में साहित्य में और हुड़दंग में!

शूटिंग पार्टी ने व्यवस्था हो जाने पर अन्दर कॉटेज की तैयारी कर

होती। रगमच के भीतर की शूटिंग यहाँ नहीं होती थी। केवल लेक की ओर हीरो हीरोइन के भागने आदि की शूटिंग ही इस समय की जाती थी। सीन था—हाल की सीढ़ियों पर हीरो हीरोइन खड़े हैं। हीरोइन के वस्त्र कई जगह से फट गये हैं। चारों ओर वीभित्स लोग भपटने को तैयार हैं और हीरोइन की बड़ी बड़ी आँखें आतंक से भर आई है। हीरो भी डर गया है और असहाय अनुभव कर रहा है।

जनता स्तब्ध खड़ी देख रही थी। हीरोइन का सौंदर्य उन्हें अभिभूत किये था। दृश्य के अनुसार विवशता और विभीषिका की साकार मूर्ति को देखकर उन्हें करुणा अनुभव हो रही थी। कुछ मनचले दाव उलटे-सीधे रिमार्क भी कस रहे थे। वाइटल स्टैटिस्टिक्स भी दे रहे थे। बिना माँग। और साधिकार।

शॉट्स आफ होते जा रहे थ। आज का अंतिम शॉट हीरो हीरोइन के संवाद पर लिया जाना था। हीरोइन कहती है—'मैं कपड़े उतार देती हूँ। तुम मुझे कंधे पर डाल लेना। इससे शायद लोग धोखा खा जायें—कि तुम मेरे साथ नहीं हो यही कि मुझे भीतर से उठा लाये हो।

लोग इस दृश्य की प्रतीक्षा कर रहे थे। बेताबी से। पुलिस का एक दस्ता आगे खिसक आया था। लाभप्रद स्थिति में होने के लिए। जनता भी कुछ आगे सरक आई थी। सबको उम्मीद थी कि पुनः ऐसा दृश्य जीवन पर्यन्त देखने को नहीं मिलेगा। इस दृश्य को देखना ही मानो जीवन की सार्थकता थी। और जनता दृश्य के प्रत्येक अंश को आँखों में उतार लेना चाहती थी। उनके लिए आकर्षण का चरम बिंदु था—हीरोइन का निर्वसन होना। उस दृश्य के प्रदर्शनीकरण से उनकी सम्पूर्ण सामाजिकता पर कितना बड़ा आघात लगेगा— इसकी न उन्हें चिंता थी। न परवाह। उन्हें पता नहीं था— कि हीरोइन केवल निर्वसन होगी— अश्लील नहीं। इसके विपरीत सम्पूर्ण वस्त्रों में लिपटकर भी वे सब सर्वथा अश्लील होंगे। लगता है मानव मूलतः आदिम का वंशज है

और नग्नता में विश्वास करता है। वस्त्र, वेशभूषा और सम्पूर्ण सामान जिनका तो जैसे आड़े हुई चीजें हैं जिन्हें वह अवसर मिलते ही उतार फेंकने को उतारू हो जाता है। मानो सहज होने के लिए। प्राकृतिक होने के लिए। और उसे ऐसा ही एक अवसर आज मिलने वाला था।

वे निराश तो तब हुए, जब संवाद के शॉट्स लेने ही उस दिन की शूटिंग समाप्त कर दी गई। आगे की शूटिंग दूसरे दिन होनी थी। समय बताया गया— शाम के चार बजे।

दूसरे दिन शाम को जनता आई तो पता लगा कि उस दृश्य की शूटिंग तो प्रातः ही हो गई और फिल्म-पार्टी कभी की लौट गई। जनता वस्तुतः संतप्त थी। और फिल्म वालों को उनसे सहानुभूति नहीं थी। जनता उनसे पूछना चाहती थी— अगर शूटिंग उनके सामने होती तो कौन सा अनर्थ हो जाता? पर पूछे तो किससे? वहां तो पुलिस वाले भी नहीं थे कि उनसे कुछ जानकारी मिल जाती।

आगे की शूटिंग सरोवर के भीतर होनी थी। फिल्म पार्टी ने कुछ नावें किराये पर ली थीं। एक मोटर बोट भी। कैमरा और कैमरामैन उसी पर थे। प्रोड्यूसर और डाइरेक्टर भी उसमें थे। हीरो-हीरोइन पानी में तैर रहे थे। विलेन भी उनके साथ तैर रहा था। आकस्मिक स्थिति का सामना करने के लिए कई तैराक और अन्य उपकरण नावों पर मौजूद थे। जनता तट पर बैठी दूर से देख रही थी। कुछ एक के हाथों में दूरबीन भी थी। जनता इन भाग्यवानों से ईर्ष्या कर रही थी।

हीरोइन ने पानी के भीतर ही अपने कपड़े उतार डाले थे। पर नीचे स्विमिंग सूट पहन रखा था जो पारदर्शी था। शरीर पर इतनी टाइट फिट था कि उसके होने का पता भी नहीं चल सकता था। फोटोग्राफर इस सूट में उभरते वक्षस्थल को और उभारने के लिए तैयार था। ऊपर कटी ने ब्लाउज के कपड़ों का बंडल बनाया और पानी से बाहर हाथ निकाल कर उस बंडल को दूर फेंक दिया। नाव से एक आदमी कूद कर

उस बउल की ओर झपटा और उसे लेकर तुरन्त नाव की ओर चल दिया। उसके साथियों ने उसे नाव पर चढ़ा लिया।

शूटिंग की तैयारी हो चुकी तो डाइरेक्टर अविनाश ने "रेडी" कहा और एक्शन शुरू हो गया। झाक मछली सी तैरती हीरोइन और पीछे पीछे हत्याकार विलेन। हीरो भी एक साइड से दोनों की ओर बढ़ रहा था शाट ले लिया गया। विलन हीरोइन के पास पहुंच गया था और हीरोइन आतंकित हो उठी थी। विलन ने उसे साइड से पकड़ना चाहा था पर वह बेहोशी की मुद्रा में उसकी पीठ पर लद गई थी। शाट ओके हो गया था। हीरो विलेन के पास पानी से निकला था और विलेन के गले पर उसके हाथ कस गये थे। हीरोइन भी बेहोशी छोड़कर सक्रिय हो उठी। उसने अपने दोनों हाथ विलन की बगल में डाल दिये जिससे वह अपने हाथों का प्रयोग न कर सके।

शाट फिर ओके हो गया था। विलेन प्राण रक्षा के लिए संघर्ष कर रहा था। हीरो का शिकंजा और कसता गया था। विलन हाथ छुड़ाने के लिए हीरोइन से कसमसा रहा था और वह अपनी शक्ति के पूर्णाश से विलन के हाथों को पीछे की ओर उठाये थी। किन्तु वह थकती जा रही थी। एक आध मिनट से अधिक रोकने में वह असमर्थ थी। उसके बाजू टूटने की स्थिति की ओर अग्रसर हो चुके थे और विलन अभी संघर्ष रत था। शाट ओके। हीरो ने अपने शरीर की बची खुची शक्ति से शिकंजा और कस डाला। विलेन का संघर्ष कम होना दीखा और वह पानी के भीतर डूबने लगा। हीरो ने उसका सिर पानी में डुबा लिया। शाट ओके। पानी में से एक बुलबुला उठा था फिर दूसरा बुलबुला फिर। शाट ओके हो गया था। हीरो हीरोइन थके से झील के उस पार जाने के लिए तैर रहे थे। बिना बात। बिना एक दूसरे की ओर देखे। बस तैर रहे थे। पास पास। शाट ओके। और शूटिंग समाप्त।

मास्टर वाद तभी से मीरा हीरोइन के पास जा पहुँची थी और शाना

को ऊपर चढ़ा लिया गया था। डेढ़ घंटे की शूटिंग के दौरान पानी में रहने से दोनों थक गये थे। विलेन भी, जो एक नाव में चढ़कर मोटर बोट की ओर आ रहा था। वह जब मोटर-बोट में आया तो हाँफता सा बोला— 'हीरो ने तो मार ही डाला मुझे। वह भूल ही गया—फिल्म बन रही है। खैर! मेरा मौका आने दो। मैं भी भूलना जानता हूँ।' सारी पार्टी सुनकर हँस पड़ी थी।

कटी ने भीगा हुआ सूट बदलकर साड़ी-ब्लाउज पहन लिया था। तौलिये से बाल सुखा रही थी। वैसे बालों के जूड़े पर प्लास्टिक कवर था, पर देर तक पानी में रहने से बालों में नमी पहुँच गई थी। विकास और विलेन नभू ने भी सूखे कपड़े पहन लिये थे। गरम गरम काफी उड़ेल दी गई थी। बिस्किट और सैंडविच भी।

किनारे पर खड़े दर्शक पार्टी के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। हीरोइन की एक झलक पाने के लिए। पानी में भीगे यौवन का दर्शन सुख प्राप्त करने के लिए। सब लोग फिल्म की चर्चा कर रहे थे— ऐसी फिल्म कभी नहीं बनी। कितना वास्तविक? कितना एडवेंचरस्? फुल आफ एक्शन! सच ही रोमांचित हो उठे थे दर्शक।

पर एक दर्शक ऐसा भी था जो रोमांचित नहीं विस्मित हुआ था। उसे आश्चर्य हुआ था— वास्तविकता के वास्तविक रूप का अनुमान करके। वह सोच रहा था— स्क्रिप्ट लेखक ने ऐसी स्क्रिप्ट कैसे लिख डाली? क्या उसने कहीं कुछ देखा था? अनुभव किया था? यदि हाँ तो कहाँ?

एक बार तो उस व्यक्ति ने सोचा— अभी स्क्रिप्ट लेखक से भेंट की जाय। पर बाद में इस विचार को छोड़ दिया। एक दृष्टि में ही वह समझ गया कि सारी पार्टी आराम करने के मूड में है। अब फोन करके होटल में मुलाकात करना उचित रहेगा।

उसने फिल्म पार्टी को रवाना होते देखा तो स्वयं भी जीप में बैठ कर चल दिया। जीप पर बंगाल पुलिस की नाम प्लेट लगी थी। जीप

[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] था।

[illegible] । [illegible] — [illegible] था। [illegible] । [illegible] — [illegible] । [illegible] था। [illegible] । [illegible] है। [illegible] नहीं। [illegible] है।

[illegible] । [illegible] । और [illegible] नहीं होता ? [illegible] । और [illegible] थी। उसके पास कोई [illegible] था— तो पूरी [illegible] था। [illegible] उसके [illegible] हुए [illegible] रहा।

आज फिल्म शूटिंग की अत्यधिक चर्चा थी। पहले दिन की शूटिंग का भी हवाला था। आज वह स्वयं [illegible] सरोवर पर जा पहुंचा था। उसने बहुत धैर्य से काम लिया था और सारी शूटिंग देखी थी। दूरबीन उसके हाथों में थी और वह शूटिंग के सभी दृश्य देख रहा था। फिल्म की कहानी का यह अंश उसे विस्मयोत्पादक लगा था। प्रभावशाली भी। दर्शकों की स्तब्धता से भी यह तथ्य स्पष्ट हो रहा था। सच ही उसे यह दृश्य सशक्त लगा। पर उसकी कल्पना से वह आतंकित भी हो उठा।

अपने दफ्तर मे वह इसी बिन्दु पर विचार कर रहा था। अनुभूति के बिना कल्पना करना कठिन होता है। और कल्पना कर भी ली जाये तो उसमे कोई वास्तविकता या सत्याश का आभास नही होता। पर आज जो शूटिंग देखी उसमे वह आभास हो रहा था। निश्चयत इस कल्पना के पीछे कोई अनुभूति होगी। वना स्क्रिप्ट लेखक कोई जीनियस होगा।

अनिल ने ग्रंड होटल को फोन करके प्रोड्यूसर गोयल से बात की। इधर उधर की बात करने के बाद स्क्रिप्ट-लेखक का नाम पूछा। शुक्ला का नाम सुनकर उनसे दूसरे दिन बात करने का समय ले लिया। प्रात आठ बजे का समय निश्चित हो गया और अनिल ने फोन रख दिया।

दूसरे दिन वह प्रात ग्रंड होटल पहुचा। शुक्ला उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उत्कठा पूवक। सामान्यत स्क्रिप्ट लेखक को कोई प्रोड्यूसर भी याद नही करता। उस प्रोड्यूसर के पास खुद ही चक्कर लगाने पडते है। और पब्लिक को न फुसत होती है न जरूरत। वह स्क्रिप्ट मे ऐब निकाल सकती है। प्रशसा नही कर सकती। पर आज मिस्टर अनिल को स्क्रिप्ट के बारे मे पूछताछ करते देखा तो शुक्ला विभोर हो उठा। चलो कोई प्रशसक तो मिला।

अनिल से उसने तपाक से हाथ मिलाया और सोफे पर बठाकर काफी का आडर देना चाहा। अनिल ने इसके लिए मना कर दिया। वह तो शुक्ला से केवल बात करने आया था। स्क्रिप्ट की प्रशसा करने लगा। उसे स्क्रिप्ट बहुत जानदार लगी थी। वास्तविकता का स्पश तो सवत्र दिखाई देता है— यह कहते हुए अनिल ने अनुभूति और कल्पना के साहचय की ओर इंगित किया था। इस कथन से शुक्ला कुछ उग्र हन लगा था। पर अनिल ने विकल्प के रूप मे जीनियस की चचा कर दी जिससे शुक्ला के होठो पर पुन मुस्कराहट आ गई। उसे पहली बार भान हो रहा था कि वह मामूली लेखक नही है। वह जीनियस है, महान् है। अब वह अपनी रट बना देगा।

अनिल पूछ रहा था— "यह स्क्रिप्ट आपने कब लिखी ?"

शुक्ला बोला— 'फिल्म निर्माण का निश्चय होते ही मैंने स्क्रिप्ट लिखना शुरु कर दिया था। कोई दस-पन्द्रह दिन लगे होंगे।

'इसे सब प्रथम किसके सामने रक्खा आपने ?' एक हलका सा प्रश्न था अनिल का। उत्तर की उत्कंठा का अनुमान उसकी आकृति से स्पष्टत हो रहा था।

शुक्ला को उत्तर देने मे सोचना पड़ा। दस सेंकड के बाद बोला— मेरी समझ मे डाइरेक्टर अविनाशजी के साथ मैं हीरोइन के यहाँ स्क्रिप्ट ले गया था और सब प्रथम वही दोनो को सुनाई थी।"

अनिल को कुछ निराशा हुई। मरे से स्वर म पूछा— उन दोनो ने अप्रूव कर दिया होगा ?

शुक्ला को यह प्रश्न बहुत ही वाहियात लगा। भला एक जीनियस के सामने ऐसा प्रश्न रक्खा जाता है ? अरे उसका लिखा कौन अप्रूव नही करेगा ? प्रत्यक्षत इतना ही कहा— स्क्रिप्ट सुनकर स्तब्ध रह गये थे। डाइरेक्टर को होश आया तो वडरफुल और गजब है" आदि कहने लगा था।

'और हीरोइन क्या बोली ?' अनिल ने एक हलकी सी उत्सुकता प्रगट की।

"अरे वह क्या कहती ? झट से स्वीकृति दे दी। एक आध छोटा मोटा कोई सुझाव दिया था। उसके मुह से अनजाने ही यह बात निकल गई।

क्या था वह सुझाव ?' उत्सुकता की मात्रा अचानक बढ गई। और अनिल सोफे पर आगे की ओर झुक आया।

शुक्ला को स्वय पर खीझ हो आई। क्या उसने यह बात कह डाली— वह समझ नही पाया। झुंझलाकर कहने लगा— 'अरे! कोई खास सुझाव नही था। यही झील के भीतर की शूटिंग के बारे मे ही कुछ कहा था। पर विशेष कुछ नहा।

अनिल न निंदा के से स्वर मे कहा—' आज का सीन तो बडा ही ऊटपटाग लगा। इसमे तो सब कुछ असभव दिखाई देता था। इतने लब चौडे व्यक्ति के हाथ हीरोइन ने पकड लिये और वह छुडा नही पाया। भला यह कभी मुमकिन है ? कौन इस पर विश्वास करेगा ?

शुक्ला मानो मौका ढूढ रहा था— अरे ! क्या करें भई ? हीरोइन ने ही इस दृश्य को रखने का सुझाव दिया था और डाइरेक्टर ने इसे स्वीकार कर लिया। फिर मेरे पास और कोई चारा नही रह गया। स्क्रिप्ट म परिवतन करना पडा।'

अनिल को शुक्ला से और कुछ पूछना शेष नही रहा। दो-चार मिनट इधर उधर की बातें की और फिर डाइरेक्टर से मिलने चला गया। डाइरेक्टर से भी उसने आज के दृश्य की चर्चा करते हुए कह लवा लिया कि इसका सुझाव हीरोइन न ही दिया था। अब उसे हीरोइन से मुलाकात करनी थी। इसके लिए डाइरेक्टरने शाम को सात बजे का समय दिलवा दिया।

दिन मे उसने रवीन्द्र सरोवर काड की फाइल निकाली। कमीशन की रिपोट भी। चार-पाच घटे तक वह दोनो का अध्ययन करता रहा। अखबारो की कटिंग्स तथा विभिन्न गवाहो की शहादत म एक बात उभर रही थी कि महिलाओ के साथ दुव्यवहार हुआ। शायद कुछ लूट खसोट भी। पर किसी महिला ने आकर यह गवाही नही दी कि उसके स्वय के साथ कोई दुव्यवहार हुआ था। अन्य लोगो की साक्षी को कमीशन ने मान्य नही ठहराया। आरोप तो यह भी था कि अनेक महिलाओ की हत्या का गई और अनेक महिलाओ न आत्महत्या कर ली। पर इस आरोप की पुष्टि नही हो पाई। अत कमीशन ने इन आरोपो को अतिरजना पूण घोषित किया था।

अनिल इस फाइल को बद करन ही वाला था कि उसकी दृष्टि एक रिपोट पर पडी। फातिमा ने पुलिस थाने म रिपोट लिखाई थी— उसका खाविद गलीम दो दिन स लापता है। उसने सब जगह पता

लगवा लिया पर कुछ भी मालूम नहीं हो सका। अंत में उसने दुग्त दुआ की थी कि उसकी तलाश करवाई जाये।

रिपोर्ट के साथ एक फोटो लगी थी। फोटो से सलीम बिलकुल गुंडा सा लगता था। लंबी चौड़ी आकृति। तहमत बांधे हुए और एक मैली सी बनियान में। चेहरे पर छोटे छोटे कई घाव। बड़ी बड़ी मूछें। ऐंठी हुई। आंख बाहर निकलती सी। काफी खौफनाक सा चेहरा था। पुलिस ने उसकी गतिविधियों के बारे में रिपोर्ट सलग्न कर रखी थी। हवड़ा जक्शन पर उसका गिरोह था। गिरहकटों का। छोटी बड़ी कई मारपीट भी कर चुका था। एक बार दो महीने की सजा काट चुका था।

फातमा की रिपोर्ट के बाद पुलिस ने जांच की तो सलीम के कई शागिर्दों से यह जानकारी मिली कि सलीम अपने दो शागिर्दों के साथ रवीन्द्र सरोवर का जलसा देखने गया था। शागिर्द तो लौट आये पर सलीम उसके बाद दिखाई नहीं दिया।

अनिल ने सारे कागजात उठाकर आलमारी में रख दिये और ताला लगा दिया। उसने घड़ी की ओर नजर डाली। चार बजे थे। अड्डे होटल जाने में अभी काफी देर थी।

उसने हवड़ा पुलिस स्टेशन को फोन किया और सलीम के उन दोनों शागिर्दों को पकड़कर उसके पास भेजने को कहा। दोनों के नाम थे—अशरफ और गनी।

अनिल फोन रखकर प्रतीक्षा करने लगा। उसे सलीम का गायब होना रहस्यपूर्ण लगा। इतनी लंबी अवधि में उसने घर पर कोई सूचना नहीं दी यह और भी आश्चर्यजनक बात थी। शायद उसके शागिर्द कुछ बता पायें उसने आशा की। पर उसे एक आशंका भी हो रही थी—कहीं वे कुछ न बता पाये तो ?

फोन की घंटी बजी तो उसने फोन उठाया। हवड़ा से पुलिस इन्स्पेक्टर कह रहा था—"गनी मिल गया है। उसे आपके पास भेज रहा

हू। अशर्फ को तलाश किया जा रहा है। मिलते ही भेज दूंगा।"

अनिल उत्सुकता से गनी की प्रतीक्षा करने लगा। जैसे सब कुछ गनी पर ही निर्भर हो। और वह भीतर लाया गया तो अनिल को बड़ी निराशा हुई। वह गनी तो म ६ साल का एक छोकरा ही निकला। जब कि वह सोच रहा था—कोई जवान आदमी होगा। वैसे भी गनी के चहरे से मासूमियत झलक रही थी। इस समय तो वह डर के मारे कांप भी रहा था।

'तेरा क्या नाम है ?" अनिल ने डाटते हुए पूछा।

गनी कहते हैं मुझे हुजूर !' छोकरे ने डरते डरते कहा।

क्या काम करता है ?"

'बोलता क्या नही ?' एक धमकी भरा प्रश्न।

कुछ नहीं करता सरकार ! बस यू ही "

'हु ! कुछ नही करता। जेब काटता है या नहीं ?'

'नही सरकार'

नही ? एक धमकी और।

'हां सरकार"

'सलीम को जानता है ?"

'उनका शागिद हू हुजूर !"

'इन दिनों में उसे देखा है तूने ?"

"नही सरकार !"

तू उसके साथ जलसे के दिन रवीन्द्र सरोवर की ओर गया था या नहीं ? जिस दिन फिल्म स्टार आने वाले थे उसकी याद है तुझे ?'

"हां हुजूर ! अपने उस्ताद के साथ गया था। पर बिजली चले जाने के बाद उस्ताद को नही देखा। बाद म पता नहीं कहां चला गया उस्ताद। आज तक कोई खबर ही नहीं दी।

अनिल न उस छोकरे को चले जाने दिया क्योंकि वह और कुछ

नही बता सका था। पर इतना निश्चित था कि सलीम उस दिन रवी न्द्र सरोवर गया था और वहां से शायद लौटा नही। कम से कम किसी ने उसे लौटते नही देखा। उसने डायरी म यह तथ्य नोट कर लिया।

हवडा से अन्सारफ की कोई इत्तला नही मिली। और ग्रड होटल जाने का समय भी हो गया था। अत वह आफिस स निकला और जीप म बैठकर ग्रड होटल जा पहुचा। कटी ने उसे अपने कमरे म बुला लिया। उस पता नही था कि कोई पुलिस अफसर उससे क्या मिलना चाहता था।

अनिल ने कुर्सी पर बठते हुए कहा— मैं आपसे क्षमा चाहता हू कि आपके आराम म खलल डालने आ गया हू।'

'आप तो यह बताइये कि म आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ?' कटी ने शिष्टता प्रदर्शित की।

अजी सेवा की कोइ बात नही। मैं तो एक प्रशसक की हैसियत स आया था। उस दिन भीड के भीतर विलेन के साथ हीरो तथा आपके सघष का दृश्य बहुत ही वास्तविक था। मैं ही नही सभी दर्शक चकित रहे गये थे। इस दृश्य की कल्पना अत्यत उच्च कोटि की कही जा सकती है। और आपकी एक्टिंग तो बस गजब की थी।'

शुक्रिया' कटी ने बात समाप्त करने की दृष्टि से कहा।

कटी जी' अनिल न उसके टोन की ओर ध्यान न देते हुए अपनी बात कहनी चाही मैंने सुना है इस दृश्य की सपूर्ण कल्पना और सयोजना का सुझाव आपका था।

नही तो कटी ने सजग होते हुए कहा। अब उसे अनिल का आगमन खतरनाक महसूस होने लगा था।

शुक्ला जी तो यही कह रहे थे। वस्तुत आपकी कल्पना सवथा मौलिक थी। अनिल ने प्रशसा के माध्यम से कटी को लपटने का प्रयत्न किया।

कटी को फास जाने का यह प्रयास स्पष्ट दिखाई दे रहा था। वह

समझ गई कि वह शुक्ला से बातें जानकर आया है। अत बिलकुल इन्कार करना ठीक नहीं। अब उसे रक्षात्मक रुख अपनाना आवश्यक हो गया। बोली— हो सकता है, मैंने कोई छोटा मोटा सुझाव दिया हो। पर उसे शुक्लाजी ने ही ढंग से रखा है। अत इस दृश्य का श्रेय आप शुक्लाजी को ही दें तो उचित होगा।'

अनिल ने जहा मन ही मन कटी के कौशल की प्रशसा की वही कटी की इस आत्म स्वीकृति से उसे आगे बढने का मौका मिल गया। अगुली हाथ मे आई है तो कलाई थामना कोई कठिन काम नही। बस थोड से धय की आवश्यकता थी। बोला— कटीजी ! जो श्रेय आपको मिलना चाहिये वह शुक्ला जी को नही मिल सकता। एसे बढ़िया दृश्य की कल्पना उनके वश की नही। उन्होन भला इस स्थिति का अनुभव ही कहा किया होगा '

कटी ने भौह चढाते हुए कहा— अनुभव तो मुझे भी नही रहा। बस अखबारो म इस विषय म कुछ पढा था। उसी आधार पर कोइ सुझाव दिया होगा।"

अजी उन दिनो के अखबार तो मैंने भी पढे हैं, पर ऐसी कल्पना किसी अखबार म नही मिली। सच कटीजी ! आपने स्वय उस दिन जलसा देखा होगा और इसीलिये आपको यह कल्पना सूझी होगी। क्या ठीक है न ?'

कटी ने देखा कि अनिल अपना शिकजा कसता जा रहा है। वह अब भयभीत होती जा रही थी। कोई बचाव नजर नही आ रहा था। अब किसी तरह पिंड छुडाना जरूरी था।

अनिल जी ! इस कल्पना वल्पना को तो गोली मारिये। आप तो यह बताइये कि आज शाम का कही आपका एपाइन्टमेंट तो नही है। यदि नही तो आज हमारे साथ यहीं डिनर लीजियेगा।

अनिल ने देखा कि कटी डर गई है और भाग निकलना चाहती है। अत उसने शिकजा और कसना शुरू कर दिया ताकि शिकार हाथ से

निकल न जाय। यह तो यह समझ ही रहा था कि बन्टी को बहुत कुछ मालूम है और शायद । बन्टी बोला — 'निमन्त्रण के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। पर आज शाम को मुझे शूटिंग पर जाना है। इस... नहीं सकूँगा। हाँ! तो मैं पूछ रहा था— आप शायद इस केस को चकित हो देख रही हैं। और इसीलिए आपका गुस्सा इतना साफ़ हो गया। क्या यह सच नहीं है बन्टीजी!

बन्टी ने सोचा— यह पक्का पुलिस अफसर है। इसका... नहीं मानेगा। इसका तो सामना ही करना होगा। केवल गुर्राहट... विधि से काम नहीं चलता। पर उसने अनिल की आँखों में आँखें मिलाते हुए कहा— "यह सच नहीं है अनिलजी! और मुझे साफ़ साफ़ बता दें— आप इस बात को क्यों पूछ रहे हैं?

अनिल साफ़ देख रहा था कि बिल्ली दीवार से पीठ सटाकर खड़ी हो गई है और गुर्राने लगी है। शायद झपटने की तैयारी भी कर रही है। पर वह दोनों स्थितियों के लिए तैयार था। बोला— बन्टीजी! सच तो यह है कि हम दोनों का समय मूल्यवान है। इसलिए मैं चाहूँगा कि आप मुझसे सहयोग करें। ताकि समय नष्ट न हो।'

'कैसा सहयोग चाहते हैं आप? और किस बारे में?' बन्टी आवेश में आ रही थी आपको मुझ पर किस बात का सन्देह है? और सन्देह है तो साफ़ साफ़ कहिये।

देखिये बन्टीजी! मैंने तो सहयोग मांगा है। कोई आरोप नहीं लगाया। इसलिए उत्तेजित मत होइए। बस मैं चाहता हूँ कि आप कुछ प्रश्नों का उत्तर दें जिससे कि समस्या सुलझ जाय। और हाँ! यदि अभी शूटिंग पर जाना हो तो फिर आ जाऊंगा।

'नहीं! मैं डाइरेक्टर को फोन कर देती हूँ कि आज शूटिंग पर नहीं जा सकूँगी। वस्तुतः इस स्थिति में काम कर ही नहीं सकती। यह कह कर बन्टी ने दो-तीन मिनट फोन करने में लगाये। फिर अनिल की ओर मुड़ी।

'अब बताइए ।

आप उस दिन रवीन्द्र-सरोवर गई थी या नहीं ?"

'किस दिन ?

जिस दिन नए फिल्म-स्टार आने वाले थे और जिसकी चर्चा आप अखबारों में पढ़ चुकी हैं ।

'नहीं' कटी ने साहस के साथ कहा ।

क्या आप वहाँ नहीं थी ?

'नहीं, बिलकुल नहीं । कटी के स्वर में और अधिक दृढ़ता आ गई । अनिल ने उसकी ओर देखा । कटी के स्वर में कोई कम्पन नहीं था पर दृढ़ता आवश्यकता से अधिक ही थी । वह इसका कारण जानना चाहता था । क्या इसके पीछे सत्य का बल है ? अथवा असत्य का भाव रहा ? इसके भीतर झाँकने के लिए उसने एक अन्य पद्धति अपनाई ।

'कटीजी ! आप उस दिन कहाँ थी ? मेरा तात्पर्य है— उस दिन संध्या से लेकर दूसरे दिन प्रातः तक आप क्या करती रही ?'

मैं डायरी नहीं रखती अनिलजी ! और जबानी इतने दिन पहले की दिनचर्या याद नहीं रख सकती ।'

तो आप बताना नहीं चाहती ? मैंने तो आशा की थी कि आप सहयोग करेंगी ।'

'मैंने कहा न कि मैं डायरी नहीं रखती" कटी उसी दृढ़ता से बोल रही थी ।

'कटीजी ! यदि मैं कहूँ कि आप उस दिन रवीन्द्र-सरोवर गई थी तो ?

तो आपको प्रमाणित करना होगा अनिलजी !'

अनिल ने दीवार से टक्कर मारना उचित नहीं समझा । अभी उसके पास कोई प्रमाण नहीं था कि कटी उस दिन कलकत्ता में थी या बम्बई में । रवीन्द्र सरोवर की तो बात ही क्या ?

आप एक बात तो बताइए कटीजी ! आप उस दिन यहाँ कलकत्ता

मे थी या नहीं ?

"मेरे कहने पर आप विश्वास तो करेंगे नहीं । अत मैं आपके किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहती । और मुझे लगता है कि मुझे किसी वकील को बुलाना पडेगा । यह कहकर कटी ने डाइरेक्टर को फोन किया और तुरत कमरे मे आने को कहा । फिर वह अनिल की ओर निरपेक्ष मुद्रा मे देखने लगी । अनिल मन ही मन इस मुद्रा की व्याख्या करने मे लगा था ।

डाइरेक्टर अविनाश कमरे म आया तो अनिल को वहाँ बठे देख चौका । वह समझ रहा था कि अनिल कभी का चला गया होगा । उसने दोनो की ओर बारी बारी से देखा । तनाव की स्थिति स्पष्टत दीख रही थी ।

क्या बात है कटीजी ? कस याद किया ? आपकी तबीयत तो ठीक है ना ?

सब ठीक है अविनाशजी ! आप तुरत किसी अच्छे वकील को बुलवादये । य अनिलजी काफी दर स प्रश्न पर प्रश्न किय जा रहे हैं । इनका उद्देश्य मुझे ज्ञात तो नहीं है पर अनुमान यही है कि मुझे किसी उलझाव म डालना चाहते है । मैंन इन्हे साफ साफ कह दिया है कि अब आप जो कुछ भी पूछना चाह वकील के सामने पूछें ।"

अविनाश न अनिल की ओर मुडकर पूछा— क्या बात है जनाब ? आप करीब एक घट स यहाँ हैं । कोई खास बात है तो कहिय ।

अनिल को डाइरक्टर क स्वर म अवज्ञा की झलक मिली । वह क्षणाश के लिए आवेश म आ गया । पर शीघ्र ही स्वय पर नियत्रण किया और कहने लगा— डाइरक्टर साहब ! हमारा धधा ही ऐसा है कि लोग हम पर शक करत हैं । हमस कोई सहयोग तो करना ही नहीं चाहता । वस्तुत मेरे सामने एक समस्या है जिसका मैं हल तलाश कर रहा हूँ । मुझे अनुमान है कि कटीजी इसमे मेरी सहायता कर सकती हैं । पर इन्होने उलटा रुख अपना लिया है । आप ही इन्हे सम

भाइय न ।"

पहले आप अपनी समस्या बताइये । और बातें बाद मे होगी।" डाइरेक्टर का पारा चढता जा रहा था।

वह तो मैं अभी नही बता सकता।'

'ता जनाब ! आप मेहरबानी करके तशरीफ ले जाइये।" अविनाश को तैश आ गया— 'मैं सब समझ गया। आप लोग वास्तव म लोगा को परेशान करते हैं। विशेषत फिल्म वालों को। इस बहाने आपको उनका सहचाय सुख जो मिल जाता है। अब आप फरमाइय कि वकील को बुलाया जाये या नही ?

अनिल ने पुन अपने पर नियत्रण किया और कहा— अभी तो मैं जा रहा हूँ। पर दुबारा आऊँगा तो आपको वकील की जरूरत पड सकती है।" यह कहकर वह उठा और इधर उधर देखे बिना बाहर चला गया।

कटी डाइरेक्टर पर बरस पडी— 'कहाँ है वह शुक्ला ? बुलाइये उसे। पता नही— क्या क्या बका है उसने। कहता है स्क्रिप्ट लिखने म मैंने उसकी सहायता की है। बुलाइये उसे।

शुक्ला आया ता कटी के चढे हुए तेवर दखे। वह कुछ सकपका गया। अविनाश की ओर देखा तो वहाँ भी मामला टेढा ही नजर आया।

कटी न चाबुक सा लगाते हुए पूछा— "शुक्लाजी ! इस फिल्म का स्क्रिप्ट किसने लिखा है ?'

शुक्ला न भौंह चढाई— 'क्या आपको पता नही क्या ?"

पता था। अब नही है। आपने उस पुलिस अफसर को कहा बताते हैं कि मैंने स्क्रिप्ट लिखने मे आपकी सहायता की थी। बोलिय— यह कैसे कहा आपने ?'

शुक्ला को स्क्रिप्ट का लेखक होने का नाज था। और अभिमान भी। वह इस बात को स्वीकार नही कर सकता था कि अन्य किसी न

स्क्रिप्ट लिखने म उसकी सहायता की थी। और हीरो हीरोइन का तो प्रश्न ही नही उठता कि व स्क्रिप्ट के बार म कोई सहायता कर सकें। शुक्ला को झु झलाहट भी हुई कि एक नई हीरोइन इस टान म बात कर रही है। वह इसे सहन नही कर सका। कहन लगा— कटी जी ! आप तो ऐसे बात कर रही हैं मानो पुलिस अफसर के सामने मैंने कहा हो कि स्क्रिप्ट आपने ही लिखी है और मैंने तो केवल आपकी सहायता की है। वास्तविकता तो यह थी कि वह नेक वाले दृश्य के बारे मे पूछ रहा था और मैंने कह दिया कि इसका सुझाव आपकी ओर से आया था पर लिखा मैंने ही। अब आप बताइये—मैंने क्या गुनाह कर दिया।"

कटी ने उस घूरकर देखा मानो कच्चा चबा जायगी। सच ही उसे शुक्ला पर गुस्सा आ रहा था— आपने नही सोचा—यह पुलिस अफसर है। इसकी पूछताछ को आपने पत्रकारो या सिने प्रशसको की श्रेणी म कसे रखा ? क्या आप नही जानते कि य पुलिस वाल बिना बात बतगड बना डालते हैं ? आपने तो बस कह दिया और वह दो घटे तक मरी खोपडी चाटता रहा। दुबारा भी आ जाये तो आश्चय नही। अब कहिये—मैं उसक प्रश्नो का उत्तर दू या फिल्म म काम करू ? और आप हैं कि बडी मासूमियत से पूछ रहे हैं—मैंने क्या गुनाह कर दिया ?'

'मुझे क्या पता था कि वह कुटिल व्यक्ति है ?' शुक्ला कुछ दब गया था और अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करन लगा था।

अब तो पता लग गया आपको। कहिये—मैं काम कसे कर पाऊँगी ? कटी उसका गला छोडना नही चाहती थी। सच ही उससे अनिल का बदला ल रही थी।

डाइरेक्टर ने पूछा— अब क्या किया जाय कटी जी ! इनफ इज इनफ। अब तो आग की बात कहिये।'

मरी समझ म तो यहीं की शूटिंग बद कीजिये। और यदि

आपको स्वीकार, हो तो दिमाग वाले हृदय को फिल्मा लिया जाये।

सच तो यह है कि दो चार रोज तक काम करने का मेरा मूड ही नहीं। फिर यहाँ बैठे रहने से काम क्या चलेगा? एक बात और! शुक्ला जी से मेरा अनुरोध है कि वे जन संपर्क का काम बंद कर दें। यह मैं इसलिये कह रही हूँ कि कल को आसाम में भी नया बखेड़ा न खड़ा हो जाये। और यदि इन्हें यह बात स्वीकार न हो तो ये अभी बंबई लौट सकते हैं।" कटी कठोर हो उठी थी।

शुक्ला सकपका गया। डाइरेक्टर भी। एक तरह से यह स्क्रिप्ट रायटर का अपमान था। शुक्ला ने इसे अनुभव भी किया। कहने लगा— ठीक है! मैं आज ही बंबई जा रहा हूँ। और हाँ कटी जी! आपको स्मरण रहे कि लेक सीन का सुझाव आपका ही था।' यह कहकर वह कमरे से निकल गया। उसने अपनी समझ में कटी के ममस्थल पर प्रहार किया था। और अनजाने ही उसका निशाना सही बैठा था।

कटी ने अविनाश की ओर देखा—मानो शुक्ला की गुस्ताखी की ओर उसका ध्यान आकर्षित कर रही हो। अविनाश स्वयं इस कटु स्थिति से क्षुब्ध हो उठा था। उसे लग रहा था कि दिन का प्रारंभ ही गलत तरीके से हुआ था। प्रात ही संन्यासी या पुलिस वाले का दर्शन करना वर्जनीय होता है किसी का यह कथन उसे स्मरण हो आया। उसने माना कि सारा झगड़ा अनिल का खड़ा किया हुआ है। और झगड़ा समाप्त हो गया हो यह बात भी नहीं। अब कम्तरसा की शूटिंग स्थगित करना अनिवार्य हो गया। उसने तुरंत ही पार्टी को पैक करने का आदेश दे दिया।

१५

पार्टी शिलाग पहुची। वहाँ नगर से दूर एक पहाडी के पास शूटिंग की जानी थी। दो दिन के आराम के बाद तीन टकों मे सारी पार्टी वहाँ पहुची और शूटिंग की तैयारी करने लगी। तब तक के लिए कटी और विकास घूमने के लिए निकले।

पास ही एक छोटा सी नदी बह रही थी। नदी का पाट चौडा नहीं था। गहराई काफी थी। पानी का बहाव तो बहुत ही तेज था। शायद हाथी के पाँव भी न टिक पाय। बहाव के बीच म एक चट्टान थी। नदी इसकी परिक्रमा सी कर रही थी। नदी तट पर खड व्यक्ति का उस पर जा बठने की अभिलाषा हो तो आश्चर्य नही। किन्तु वहाँ तक पहुँचना कठिन था।

कटी को शूटिंग के लिए बुलावा आया तो वह चली गई। विकास न कुछ दर बाद आन को कहा। वह नदी तट पर बैठकर नसर्गिक सौंदर्य को आँखो म उतारता रहा। नगर सभ्यता से दूर इस वातावरण म उस आन्तरिक सुख मिल रहा था। अतीत का सब कुछ धीरे धीरे विस्मृत होता गया था। आग सामन दखकर भी कुछ नहा दख रहा था। जस बाहर का सब कुछ भीतर उतर आया हो और बहार दखन को कुछ शेष ही न रहा हो।

विकास एक मुग्ध अवस्था म था। जस जन्म जन्म की प्रतीक्षा क बाद यह प्राप्त हुई हो। और वह इस स्थान से तैयार नहीं था। बाहर का सब कुछ दखकर भी वह उस अपनाय रखना चाहता था। इस आराम

सात् करने की सर्वांगीण चेष्टायें उसके अतस् मे उद्वेलित हो रही थी। एकात वहाँ था और एकान्तता उसमे भरी थी। परिवेश उसके लिए अस्तित्व खो चुका था। सब कुछ जैसे होकर भी नही था। या फिर निरर्थक हो गया था। उसकी आखें स्थूल से सर्वथा अतीत किसी सूक्ष्म लक्ष्य पर टिकी हुई लग रही थी। देह का समग्र चैतन्य उस दृष्टि विन्दु पर केन्द्रित हो गया था और नाय देहागो की जैसे उपयोगिता नही रह गई थी

तभी विकास के अगो म हलका सा स्फुरण हुआ। आखो म एक विस्मय सा जगा। आकृति कुछ दीप्त हो उठी। मानो उसे कुछ अलौकिक दीखा हो। और वह भी सर्वथा अप्रत्याशित। उसकी आँखो मे धीरे धीरे भय की एक रेखा स्फुट होने लगी और कुछ ही देर मे भय के अतिरेक स आँखें विस्फारित हो गइ। पता नही वह क्या, किसे और कहाँ देख रहा था? वहाँ कोई पार्थिव अस्तित्व ऐसा था ही नही जिससे वह इतना विस्मित एव भयग्रस्त हो सके। फिर भी कुछ था अवश्य जिस ने उसे उद्वेलित कर दिया था। कुछ नहीं भी था तब भी वह उद्वेलित अवश्य था। शायद एक अनाम भय से। शायद एक अनाम स्थिति से।

उसे पता नही था कि वह अपनी जगह स उठ गया था क्योकि उसके उठने म एक नि सगता नही थी। निष्पक्षता तो थी ही। कम से कम स्थूल दृष्टि स। वह खडा हो चुका था और उसकी आँखें अब भी टकटकी लगाये थी। बाह्य रूप म उसकी दृष्टि घाटी के मध्य मे स्थित शिलाखण्ड पर जमी थी। शिलाखण्ड पर कुछ भी ऐसा नही था, जो उसकी दृष्टि को आकर्षित करे और उतनी दृढता स बाँध पाये। किन्तु आभास यही हो रहा था कि शिलाखण्ड ही उसका आकर्षण बिन्दु था। यह आकर्षण दुर्निवार्य रहा होगा। तभी तो वह उस ओर बढने भी लगा था। बिना यह सोचे कि दो फुट पर ही कगार है और नीचे है, अजस्र जल प्रवाह। और पानी जिस घाटी म बह रहा था

उसकी गहराई का अनुमान न लगाया जाना ही अच्छा था। विकास ने भी अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं समझी होगी। शायद उस समय उसमें अनुमान या प्रत्यक्ष के मध्य अन्तर देख सकने की क्षमता ही नहीं रह गई थी। वह तो धीरे धीरे चलता ही जा रहा था जैसे कोई रस्सी से बाँधकर खींच रहा हो। उसकी चेष्टायें ऐसी थीं मानो मिस्र के पिरामिड से कोई ममी उठकर चलने लगी हो। बिना देखे। बिना सोचे। बिना किसी अनुभूति के।

विकास को पता नहीं चला था कि वह कगार से गिर पड़ा था। पानी में गिरकर वह क्षणार्द्ध में ही सतह पर आ गया था। पर उसकी आँखों में कोई नवीन विभीषिका नहीं दीखी। वही पूर्ववत् विस्मय था और वही पूर्ववत् भय। जल की शीतलता ने उसके विवेक को तो जाग्रत नहीं किया किन्तु उसके हाथ पाँव स्वतः सचालित हो रहे थे। *उसका अवचेतन तैराक संभवतः जाग्रत हो गया था और उसे सतह पर* बने रहने में सहायता कर रहा था। उसकी दृष्टि चट्टान की ओर थी। जल धारा की तीव्रता उसकी देह को झकझोर रही थी, पर वह बराबर अपने लक्ष्य पर दृष्टि जमाये था। मानो चट्टान तो थी—उत्तर दिशा। और उसकी दृष्टि थी—चुम्बक की सूई। दोनों के मध्य एक अटूट सबन्ध था।

वह अनजाने ही जल-प्रवाह से संघर्ष कर रहा था। यह संघर्ष व्यर्थ सा प्रतीत हो रहा था क्योंकि सामान्य मानव और उस जल-प्रवाह के मध्य कोई मुकाबला हो ही नहीं सकता था। पर विकास बिना सोचे लड़ रहा था। तब भी विकास उसने ... डिपाजिट में रख दिये था और वह लड़ना उसकी नियति बन गई थी। ... संघर्ष। ऐसा संघर्ष जो ... की ... में ... था। और जिसमें मानव किसी रूप में अति मानव बन जाता है। जिसमें ... अति मानवीय शक्ति आ जाती है।

विकास चट्टान के पास पहुँच गया था। उसने चट्टान का ...

लिया था। जल दैत्य के अंतिम भयङ्कर आघात से वह उछला और चट्टान पर जा गिरा। वर्ना वह सर्वथा अशक्त हो चुका था और चट्टान पर संभवतः नहीं चढ़ पाता। चट्टान पर गिरने का आघात भी इतना प्रबल था कि वह सर्वथा निःसंज्ञ हो गया और औंधे मुँह पड़ा रहा। अब वह कोई हरकत नहीं कर पा रहा था। पिछले पचपन मिनट के अतिमानवीय संघर्ष में उसकी दैहिक ऊर्जा का अंश अतिमात्र भी व्यय हो चुका था। अब वह हिले भी तो कैसे ?

नहीं वह हिल नहीं सकता था। उसकी देह का समग्र स्पन्दन जैसे चुक गया। हृदय में स्पन्दन हो रहा था या नहीं, यह कहना कठिन था क्योंकि वह औंधे मुँह गिरा था। पीठ की ओर से देखने पर उसकी गतिशीलता का कोई भी आभास नहीं मिल रहा था।

जल-दैत्य शीतल हिम-कणों से उसे होश में लाने का प्रयत्न कर रहा था। मानो शत्रु को पुनः लड़ने के लिए ललकार रहा हो। पर उसके प्रयत्न विफल हो रहे थे। शत्रु जैसे सर्वथा परास्त हो चुका हो। किन्तु दैत्य को अब भी आशा थी। वह प्रयत्न करता रहा और असफल होता रहा। विकास पर इसका कोई भी प्रभाव नहीं पड़ रहा था। वह दैत्य की ललकार सुन ही नहीं रहा था। वह शत्रु के अतिमत्सम् को लेने से इन्कार कर रहा था।

उसे यह भी पता नहीं चल रहा था कि उसे कोई पुकार रहा है। दूर से 'विकास... विकास' की आवाजें आ रही थीं और वह सुनने का प्रयत्न ही नहीं कर रहा था।

आवाज पास आती गई थी और वह फिर भी निश्चेष्ट था। मानो इस या उस आवाज से उसका परिचय ही न हो। मानो कुछ लेना देना ही न हो। आवाज चिल्लाहट में बदल गई, किन्तु उस पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

बटी को पहले तो आश्चर्य हुआ पर अब तो वह डर गई। उसने महसूस किया कि यह परिहास नहीं था। विकास में कभी परिहास करना

ही नही था।   और उस चटटान पर जाने की तो बात ही क्या, ऐसा सोचना भी परिहास की परिधि से बाहर की बात थी।   कहीं ऐसा तो नही कि वहाँ तक पहुँचने के बाद वह बिलकुल ही थक गया हो। या फिर बेहोश हो गया हो।

अब सोचने का अवसर नही था। आवाज देने से कोई सहायता नही आ सकती थी। क्योंकि कप कुछ दूरी पर था। अत वह तेजी से दौडी और कप मे पहुचकर चिल्लाने लगी— अरे विकास को बचाओ'   जल्दी करो'"   दो तीन बडे रस्से ले चलो 'तख्ते भी"   अरे जल्दी करो जल्दी।

कप के सभी लोग रस्से आदि लेकर दौड पडे थे। कटी सबके आगे थी। दूसरी बार तेज भागने से उसका दम फूल रहा था। पर वह ठहरी ही नही। उसे भय था–कही विकास को कुछ हो न गया हो।

पर विकास उसी तरह पडा था। एक सेंटीमीटर का भी फर्क नही था। इससे कटी आश्वस्त हुई। किन्तु दूसरे ही क्षण वह भय से आक्रात हो उठी। यह क्या हो गया है विकास को ? वह चट्टान तक पहुचा कसे ? उसे जाने की आवश्यकता ही क्या थी ? कहीं धारा म बह गया होता तो ?

कटी और अविनाश आदि सब मिलकर चटटान तक पहुँचने की योजना बना रहे थे। पार्टी मे कोई भी व्यक्ति ऐसा न था, जो उस जल धारा म उतरने का साहस करता। केवल कटी ही यह साहस कर सकती थी। और सब लोग यह कहते हुए सकुचा रहे थे। डरते भी हों तो आश्चय नहीं। कटी उनकी मनोभावना को समझ रही थी। बस भी उसे तो साहस करना ही था। उसे अपनी चिता न थी। ख्याल था तो यही कि विकास को कैसे बचाया जाय ? यह तो स्पष्ट था कि विकास बेहोश था। शायद   ?

कटी ने पार्टी को तीन दलो म बाँट दिया। एक दल तो च ट्टान के सामने रहना था। बिलकुल ९० डिग्री पर। बाकी दोनों दल दायें

तथा बायें ४५ डिग्री के कोण पर खडे होने थे। तीनो दलो के हाथो मे एक एक लबा रस्सा था। और इन तीनो रस्सो के सिरे कटी की कमर से बधे थे। कटी ने यह व्यवस्था इसलिये की थी कि जिससे वह चटटान की ओर ही बढ पाये। यदि पानी उसे वहा ले जाने के लिए जोर लगाये तो बाँयी ओर का दल रस्सा खीचकर उसे बह जाने से रोके।

सैद्धान्तिक दृष्टि से तो यह व्यवस्था ठीक थी। पर कटी जब पानी म कूदी तो प्रायोगिक कमी नजर आई। पानी का बहाव बाँयें से दाई ओर था। इसलिये सारा जोर बाई ओर के दल को लगाना पड रहा था। दाहिनी ओर का दल तो कटी को बाहर खीच लाने का ही काम कर सकता था। उधर के केन्द्रवर्ती दल द्वारा ढीला छोडने पर कटी धारा म बहने लगती। और कुल मिलाकर बाई तरफ का दल ही सपूर्ण शक्ति से उसे बह जाने से रोक रहा था। दाहिनी तरफ के दल म से दो तीन आदमी बाई ओर भेज दिये गये जिससे वह दल कुछ अधिक सक्षम हो गया।

कटी इन कमजोरियो को महसूस कर रही थी। और उसे किसी के प्रति क्षोभ भी नही था। उस तो चट्टान तक पहुचना ही था। इसमे जो कुछ सहायता मिल रही थी, वही बहुत थी। यह सहायता न होती तो भी उसे चटटान तक जाना ही पडता। हाँ ! अकेले होने पर एक दिक्कत होती। वह विकास को किनारे तक नहीं ला सकती थी। बस चटटान पर उसके पास बैठी रहती। और शायद रोती भी रहती।

वह धीरे धीरे चटटान की दिशा म आगे बढ रही थी। किंतु प्रगति बहुत धीमी थी। उस अब और भी आश्चर्य हो रहा था कि विकास उस चटटान तक पहुँचा तो कैसे ? वह स्वय तो इतनी सहायता के बावजूद वहाँ पहुँचना दुःसाध्य समझ रही थी।

वह कुछ थकने भी लगी थी। अधिक से अधिक पाँच दस मिनट और खीच सकती थी। यदि इस बीच वह चटटान तक नही पहुँच पाई तो तट पर खींच लिये जाने का इगित कर देगी। पर अभी तो

उतने मिनट शेष पड़े हैं। बाद की बाद में देखी जायेगी।

उसने एक और तरीका सोचा। पानी के ऊपर तैरने में जितनी शक्ति लग रही थी उससे कम शक्ति पानी के भीतर तैरने में लगनी चाहिये। इसका परिणाम भी उसने सोच लिया। सम्भव है—इस चक्कर में शेष बचे पाँच-दस मिनट भी बेकार हो जायें। पर कोशिश तो करनी ही होगी।

उसने अपने निश्चय की सूचना पार्टी को दे दी। और फिर गोता लगाया। सत्य ही उसे पानी के भीतर तैरने में कम शक्ति लगानी पड़ी और वह चट्टान की ओर अधिक गति से बढ़ गई। चट्टान दिखाई देने पर उसने सिर पानी से बाहर निकाला और चट्टान को पकड़ लिया। फिर तो वह कोशिश करके चट्टान पर चढ़ गई और वहीं निढाल होकर गिर पड़ी। पाँच-दस सेकिण्ड बाद उसने विश्वास को सम्हाला। पहले तो उसे सीधा किया। फिर उसकी नब्ज देखी। बहुत मंद थी उसकी गति। उसने पार्टी की ओर देखकर इशारा कर दिया कि चिंता न करें। भावावेश के कारण वह बोल नहीं पा रही थी।

वह दस मिनट चट्टान पर लेटकर आराम करती रही। उसे पता नहीं था कि उस समय कमरामैन सक्रिय हो उठा था। एक रील तो पूरी हो चुकी थी। उसे अफसोस था कि उसने शुरू में ही कमरा चालू क्यों न कर लिया। तैरती हुई और तैरने में संघर्ष करती हुई बेटी के चित्र बहुत ही सुन्दर होते। पर अब क्या हो?

बेटी का कैमरामैन में सहानुभूति नहीं थी। वह उस समय चिल्ला रही थी। बिना चिल्लाये किनारे तक आवाज पहुँच ही नहीं पा रही थी। इसलिए वह चिल्लाने को बाध्य थी। अविनाश भी बेटी तक अपनी बात चिल्लाकर ही पहुँचा रहा था।

यह तय हुआ कि एक और आदमी चट्टान पर भेजा जाय। अब यह काम इतना कठिन नहीं था। पर साहस अवश्य चाहिए। बेटी ने तीनों रस्सों को चट्टान के चारों ओर लपेटकर बाँध दिया था और

उन रस्सो को पकडकर चट्टान तक पहुँचा जा सकता था। सुरक्षा के लिए एक रस्सा कमर से बाँधने का भी कह दिया। पर कोई भी इस अभियान के लिए तैयार नही हुआ। पुरस्कार का प्रलोभन भी किसी को आकर्षित नही कर सका।

कटी को बडा क्षोभ हुआ। उसने अपनी आखो को हथेली से ढक लिया। वह फिल्म-पार्टी के पुरुषत्व हीन व्यक्तियो का मुँह नहीं देखना चाहती थी। फिर तो वह मुँह फेरकर बठ गई। उसने बिना मुडे ही हाथ से इशारा कर दिया कि वे सब वहाँ से चले जायें।

वे लोग गये नही थे। उनकी बातचीत का कुछ अश उसके कानो तक पहुच रहा था। सब एक दूसरे को उकसा रहे थ। स्वय कोई साहस करने के लिए तयार नही था।

डाइरेक्टर अविनाश ने एक बुद्धिमानी की। एक टोकरी मे ब्राडी की बोतल और एक ग्लास रखा और कटी को आवाज दी कि वह रस्से के सहारे टोकरी को खीच ले। कटी ने टोकरी खीच ली किंतु वह उन लोगों की ओर कोई सहायता लेने के लिए तयार नही थी। उसने बोतल खोलकर ब्राडी ग्लास म डाली और फिर विकास का सिर गोद मे रखकर उसके गले म एक घूँट उडेला। थोडी देर बाद एक और घूट गले के नीचे उतारा।

तीसरा घूँट गले मे उतरने के बाद विकास के शरीर म हलकी सी हरकत हुई। कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद कटी न एक और घूँट विकास को पिलाया। इसका असर जल्दी हुआ। अब विकास हाथ-पर हिला रहा था। धीमे धीमे कराह भी रहा था। कटी उसका सिर और सीना सहला रही थी। और ऐसा करते समय उसका शरीर रोमाचित हो उठा। पर गनीमत थी कि उसकी कमजोरी देखने वाला वहाँ कोई नही था।

उसने थोडी सी ब्राडी विकास को और पिलाई। दो घूँट स्वय भी लिये। इसस उसे स्फूर्ति मिली। उधर विकास का कराहना जारी था।

वह हाथ पैर और तेजी स चला रहा था। शायद उसका अचेतन विगत सघर्ष का स्मरण करा रहा था।

और फिर उसन आँखें खोल ली थी। कटी न हर्ष विभोर होकर अपनी आँखें बद कर ली। विकास उसके चेहरे की ओर देख रहा था। शायद पहचानन का प्रयत्न भी कर रहा था। उसे पहचान लिया तो इधर उधर दृष्टि डाली। चट्टान स कुछ नजर नही आया, क्योकि कटी की गोद म वह सिर टिकाये पडा था। उसे देखने की कोई विशेष आवश्यकता भी नही थी क्योकि कटी वहाँ थी ही। वह सब देख लेगी। सब कुछ।

कटी को अहसास हो रहा था कि विकास उस देख रहा है। इस अहसास से उसका प्रत्येक रोम रध्र आभारी था। वह आँखें खोलकर इस अहसास को नष्ट नही करना चाहती थी। बोलना भी उसे भारी हो गया था। किन्तु वह बोली अवश्य—"विकास !"

"हाँ कटी !" कमजोर सा स्वर।

'तबीयत कैसी है ?"

ठीक है। पर कमजोरी बहुत है।"

'लो ब्राँडी ले लो"—कहकर कटी ने ग्लास थमाया और फिर दोनो की आखें मिल गइ। विकास ने ब्राँडी पी ली तो अशक्तता कुछ कम हुई। उसने उठने का प्रयत्न किया पर कटी ने उठने नही दिया। विकास लेटा रहा।

'हम कहाँ हैं कटी ?" विकास को अतीत की याद ही नही थी।

यही। इसी ससार म। स्वार्थ और कायरता स भरे ससार म। कटी के स्वर म मृदुता थी। खीझ और पीडा भी। इन्हे दबाना अशक्य था। आवश्यक भी।

विकास की भौंह चढी और वह जोर लगाकर उठ बठा। कटी न रोका नही। और विकास का झटका सा लगा—चारा ओर देखकर। चट्टान के चारा ओर गजन करती भयावह जलधारा।

और तट पर खड़े लोग। कैमरामैन अभी भी फोटो खींच रहा था। दूसरी रील प्राय पूरी हो चुकी थी।

विकास को सब कुछ याद हो आया। चट्टान का आकर्षण जल में गिरकर तरना संघर्ष टूटन और फिर स्वत चट्टान पर आ गिरना। उसने मन ही मन प्रतिज्ञा की—फिर कभी दिवा स्वप्न नहीं देखेगा। कटी जब पास में है तो उसे दिवा-स्वप्न की आवश्यकता ही नहीं थी। पर कटी ने पूछा तो क्या कहेगा ?यह एक समस्या थी। पर इसका समाधान निकालने के लिए समय मिल जायेगा। और नहीं तो सच सच कह देगा। आखिर ।

'क्या सोच रहे हो विकास ?" कटी ने स्वर में माधुर्य घोलकर पूछा।"

"कुछ नहीं। बस समझ नहीं पा रहा हू कि यहाँ तक आया कैसे ? और फिर तुम भी तो यहाँ बैठी हो। बताओ तुम कैसे पहुच सकी यहाँ तक ?' विकास की जिज्ञासा सहज थी। और आशकायें इससे भी अधिक सहज।

कोई उत्तर नही मिला। उन्होने देखा कि दोनो उस चट्टान पर लेट गये हैं और आकाश को निहारने लगे हैं। किसी को पता नही था कि वे कब तक ऐसा करते रहेंगे। इसलिये धीरे धीरे सब लोग कैप की ओर खिसकने लगे थे। अविनाश ने कुछ देर और प्रतीक्षा की किंतु दोनो की स्थिर मुद्रा मे कोई अंतर न देखकर वह भी चल पड़ा। उसने सोचा—अपने आप आ जायेंगे। तरना तो आता ही है और फिर रस्सा का पुल भी है। उन दोनो की तरफ से वह निश्चित था। यह चिंता अवश्य थी कि शूटिंग का क्या होगा? आज का सारा दिन इसी चक्कर मे बीत गया। बस कटी के ही दो तीन शाट हो पाये थे। अब तो कल ही देखा जायेगा। बशर्ते ।

संध्या घिर आई थी। अंधेरे का झुरमुट सबको घेरने लगा था। तट को। जल धारा को। चट्टान को। और फिर दोनो को। किंतु दोनो उसी तरह चित्त लेटे थे। मानो सदा सर्वदा के लिए। दोनों ने दिन भर कुछ नही खाया था। अब भी खाने की चिंता से निर्मुक्त थे। वर्ना डलिया मे कुछ मगवा सकते थे। ब्रांडी अभी बची थी। पर दोनो को उससे भी अब लेना देना नही था।

वे कुछ सोच भी नही रहे थे। बस पडे थे। कोई बिछौना नही। कोई तकिया नही। दोनो हाथो पर सिर टिकाये थे और निर्विकार मुद्रा मे टिमटिमाते तारो को देख रहे थे। उगता हुआ चांद अपनी किरणो से उन्हे कुरेद रहा था—उठो ना! क्या लेटे ही रहोगे?

उन्होंने सुना नही था। चांदनी के स्पर्श से वे पुलकित भी नही हुए थे। तट के पार जगल से आती अस्फुट ध्वनियाँ उन्हे आतंकित नही कर सकी थी। बाह्य का सब कुछ उनके लिए अस्तित्व हीन हो गया और स्वकीय आ तरिक भी सुषुप्ति चाहता था।

उनके कपडे गीले थे। देह की ऊष्मा उन्हे गरमा नही सकी थी। उलटे स्वय ठडी होती जा रही थी। बाहर की ठडक भी बढी थी और दोनो के पास ओढने को कुछ नही था। दोनो को इसकी चिन्ता भी

नहीं थी। किंतु प्रकृति ने उनकी चिंता की थी। कोहरे की घनी चादर उन्हें ओढ़ानी शुरू कर दी थी। और कुछ देर बाद वे तट से दिखाई नहीं दे रहे थे। रात के ९ बजे के करीब मि अविनाश किनारे पर आये थे। खाना लेकर नौकर भी आया था। डॉक्टर साथ में था।

पर उन्हें न चट्टान दिखाई दी और न ही हीरो हीरोइन। आवाजें व्यर्थ रही थीं। और प्रतीक्षा भी। कोहरा और घना हो गया था। दो फुट से परे की वस्तु दिखाई नहीं दे रही थी। अविनाश चिंतित था। डाक्टर भी। नंगी चट्टान पर गीले वस्त्रों में लेटना खतरनाक था। ऊपर से यह कोहरा! दोनों की हड्डियां तक ठिठुर जायेंगी। पर अब क्या किया जाये? वे तो उत्तर ही नहीं देते। पता नहीं चट्टान पर हैं भी या नहीं। पर होंगे नहीं तो जायेंगे कहाँ? न उन्होंने कुछ खाया है। न ही कपड़े बदले हैं। बिछाने ओढ़ने को भी कुछ नहीं है। अविनाश परेशान हो उठा। उसे अपनी भी कोई गलती नजर आ रही थी। कटी ने चट्टान पर पहुंचकर सहायता मांगी थी और सहायता उसे नहीं मिली थी। अब शायद वह सहायता चाहती ही नहीं। विकास भी नहीं चाहता। इन अनिच्छुकों को अब सहायता दी भी कैसे जाये?

अविनाश ने दो आदमी शहर की ओर भेजे थे। फायर ब्रिगेड की सहायता लाने के लिए। पर अभी तक वे नहीं आये थे। पता नहीं किसी को ला पायेंगे या नहीं। तब तक क्या किया जाय? प्रतीक्षा? वह तो कप में भी की जा सकती है। यहाँ ठंड में खड़े रहने से कोई लाभ नहीं था।

वे सब कप की ओर चले गये थे। और दोनों को इसका अहसास हो गया था। कटी ने विकास की ओर करवट बदली थी। विकास ने भी उसकी ओर देखा था।

कपड़े गीले हैं विकास! उतार डालो इन्हें।

तुम्हारे भी तो गीले हैं

तो?

विकास ने शर्ट उतार डाली। फिर बनियान। दो क्षण बाद कटी की ओर देखा। वह साडी और ब्लाउज उतार चुकी थी। ब्रेसरी की गाँठ नही खुल रही थी। कटी ने विकास की ओर पीठ कर दी। साभिप्राय! और विकास की अगुलियाँ धीरे धीरे गाठ खोलने लगी थीं। एक नया अनुभव! एक नया स्पश! यह कैसी गुदगुदी है? यह कसा सम्मोहन है?

आवरण दूर हो गये थे। अर्थ थया भी। बाहर शीत बढ रहा था। भीतर गर्मी। दो देहो की ऊष्मा के सम्मुख वह शीत अकमण्य हो उठा था। युगो की दूरियाँ क्षणो म अथहीन हो गई थी। अब तो एक सामीप्य था। एक थी अकुलाहट। ऐकात्म्य की अकुलाहट। समपण वहां साकार हो उठा। दोनो ओर का समपण और दोनो ओर का आदान! किसी ने कुछ खोया नही। बस पाया था। वह भी इतना कि जन्म जन्मातरो तक न चुके। युगो की झोली भर जाये।

सच ही अतप्ति का दारिद्रय मिट गया। और तृप्ति को नई अभिव्यक्ति मिल गई। कुछ था, जो अब नही रहा। एक अभाव, जो मिट गया। उसकी जगह आ गया था—भाव। एक अस्तित्व, जो अब तक नही था। साथकता, जो अब तक स्थिति म नही थी। वहा दान किया गया था। प्रतिदान भी। किसी को हानि नही हुई थी। किसी को लाभ नहीं हुआ था। बस कुछ हुआ था। सवथा समानता के स्तर पर। दिया गया था—एक कौमाय। प्रतिदान किया गया था—वह भी कौमाय का। अब न देने का क्षोभ था और लिये का गव। व्यामोह सब टूट गये थे। अवसाद को विदा कर दिया गया।

दोनो एक दूसरे के पाश म बधे थे। चरम उपलब्धि का सुख उनसे लिपटा था। ऐसा सुख, जो समग्र चेतना को अपनी ओर उन्मुख कर रहा हो। ऐसा सुख, जो अन्य उपलब्धियो को अथहीन घोषित कर रहा हो।

'हैव वी एवर बीन सो हैप्पी कटी?' एक बुदबुदाहट। सुख की

एक अभिव्यक्ति । कृतज्ञता का एक प्रकाशन ।

"नो ! एण्ड वी शैल नेवर बी सो हैप्पी अगन" एक स्वीकृति सत्य की एक नकार भविष्य का । सुख की आवृत्ति नहीं हुआ करती । और वह भी एक कुआरे सुख की । सभव हो तो भी नही । यह चाह तो अब रहगी नही । यह तो तृप्त हो गई । सदा के लिए । आवृत्तिया तो अतप्ति को स्थापित करती हैं और वे अतप्त कहा हैं ? कभी होंगे भी नहीं ।

दो तप्तिया एक दूसरे को लपेटे रही । दोनो के बीच मे कोई अत राल नही था । उतना भी नही, जितना शीशे पर पडी बूँद और शीशे के बीच होता है । अब तो एक निकटता थी । एक सामीप्य था । ऐका न्तिक ऐकात्म्य । बाह्य जगत् की कोई भी स्थिति, कोई भी शक्ति इसे छीन नही सकती ।

अभी तो सामीप्य के वे क्षण थे और वे थे । एक शून्य था चारों ओर । और फिर था कोहरा जो सघन हो गया था । देह की ऊष्मा उसकी चोट स टूटने लगी थी और दोनों को इसका अहसास होने लगा था । सूक्ष्म भूमि से वे स्थूल भूमि पर उतरने को बाध्य हो गय थे ।

'शुडट वी क्रॉस ओवर नाउ विकास ?" एक प्रश्न —एक सुझाव ।

'हैवट वी क्रास्ड आल द डिस्टेंसेज आलरैडी ?"

कटी ने परिहास समझा था और एक स्मित के साथ विकास के सीने मे मुँह छिपा लिया था । फिर मुग्ध होकर बोली थी—

'डोन्चू टच इट । इट माइट स्पिल आउट डार्लिंग ।

और विकास बोला नही था । बस कटी को और सटा लिया था । सुख सीमा में नहीं बँध पा रहा था और कटी उसे समीप करना चाहती थी । जो लबालब भरा हो वह कुछ छलक भी जाये तो क्या फर्क पडता है ?

तभी एक आवाज सुनाई देने लगी थी । पहले धीमी । बाद में

१६

डाक्टर के साधारण उपचार के बाद विकास ने आँखें टिमटिमाई और फिर आँखें पूरी तरह खोलकर सबको देखने लगा—जैसे यह क्या हो रहा है? बंटी ने भी उसके अभिनय का अनुकरण किया था। और बाद में दोनों ने उठकर गीले कपड़े बदल डाले थे।

डॉक्टर ने उन्हें दो दिन विश्राम करने का परामर्श दिया था। उन्होंने विश्राम किया भी। निर्माता और निर्देशक हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे थे। कुढ़ना तो था ही। शेड्यूल के मुताबिक काम नहीं हो पा रहा था। कलकत्ता में भी नहीं हुआ था। दोनों परस्पर कह रहे थे कि फिल्म रिलीज करने में दो मास का विलंब और हो जायेगा। अभी तो शूटिंग ही बाकी पड़ी है। दो तीन गाने भी रिकार्ड कराने हैं। कलकत्ता भी दुबारा जाना पड़ेगा। इतना सारा झंझट। और हीरो हीरोइन आराम फरमा रहे हैं। गनीमत है कि फायर ब्रिगेड वालों को बुला लिया। वर्ना ये दोनों"

नदी-तट की ओर उनका घूमना निषिद्ध था। निर्माता अब और रिस्क लेने को तैयार नहीं था। बंटी और विकास ने बहुत समझाया। पर निर्माता ने एक नहीं सुनी। दोनों को बंद में आराम करना था।

दो दिन बाद शूटिंग प्रारंभ हो गई और एक सप्ताह तक निर्विघ्न चलती रही। निर्माता और निर्देशक खुश थे। बंटी और विकास भी। सोच रहे थे— इस चक्कर से जितना जल्दी छुटकारा मिले, उतना ही अच्छा। इसलिये वे निर्माता निर्देशक से पूर्ण सहयोग कर रहे थे।

शूटिंग पूरी होने पर पार्टी ने कलकत्ता लौटने की तयारी कर दी। इसमे पूरा एक दिन लग गया। वहाँ से रवाना होने लगे तो कटी ने अकस्मात् निर्माता को कहा—

"एक बार बबई चलकर गाना की रिकार्डिंग कर लीजिये। कलकत्ता की शूटिंग बाद मे हो जायेगी।'

निर्माता की भौंह चढ गई — "यह कोई नया स्टट है क्या कटी जी ?'

'नही स्टट नहीं। एक वास्तविकता है। कलकत्ता मे वह पुलिस अफसर फिर कोई गडबडी करने लगेगा तो ? उस समय भी मूड बिगड गया था। अब उसी चक्कर मे फिर क्या पड़ें? इसलिये कलकत्ता का प्रोग्राम स्थगित कीजिये। या फिर इस छोड ही दीजिये। यह शूटिंग बबई के आस पास भी की जा सकती है। वसे कलकत्ता की कई रीलें तो तैयार हो ही चुकी हैं।'

निर्माता सोच म पड गया। कटी की बात मे दम था और इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। यदि पुलिस वाला ने पुन विघ्न डाल दिया तो वह कही का नहीं रहेगा। शेडयूल्ड प्रोग्राम पहले ही गडबडा गया है। अब और विलब हुआ तो डिस्ट्रिब्यूटस हल्ला मचायेंगे।

"अच्छी बात है कटी जी ! कलकत्ता का प्रोग्राम कसिल। अब सीधे बबई चलते हैं। वही बाकी शूटिंग निपटा देंगे।" उसने कहा।

पार्टी का रुख कलकत्ता की बजाय बबई की ओर हो गया। पाँच दिन मे सभी लोग बबई पहुच गये। शूटिंग और रेकार्डिंग का प्रोग्राम निश्चित होने पर सबको सूचना दे दी जायेगी—यह घोषणा निर्माता की ओर से कर दी गई।

कटी सीधे घर गई थी। विकास भी अलग टक्सी मे बठकर सत्येंद्र के यहा गया। पर सत्येंद्र घर पर नही मिला। ताला बन्द था। विकास ने आस पास पूछताछ भी की किंतु कुछ पता नही लगा। हारकर कटी के यहाँ आया। कटी ने एक कमरे म उसकी व्यवस्था कर दी।

कठी ने अपने डैडी को कलकत्ता की सभी घटनायें बता दी। विस्तार सहित। पुलिस अफसर की जांच पड़ताल के बारे में भी। शिलांग के नदी तट की घटना सुनाते समय मि सक्सेना घबरा उठे थे। और कटी को इसका अहसास भी हुआ था। उसने कुछ झूठ का भी सहारा लिया। वह अपने डैडी को नहीं बता पाई कि चट्टान पर लेटे रहने के अतिरिक्त भी कुछ हुआ था। कुछ नहीं, बहुत कुछ। शायद सब कुछ। मि सक्सेना ने अपनी बेटी की ओर देखा था। झूठे सच को पहचानने के लिए। और फिर नजर घुमा ली थी। उनकी मुद्रा से यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि उन्हें सत्य का आभास हुआ अथवा नहीं। कटी ने अपनी ओर से उनकी मदद नहीं की।

मि सक्सेना ने पुलिस अफसर के इरादे को ताड़ लिया था। अत कटी को समझा दिया कि वह रवीन्द्र सरोवर पर जाने की बात स्वीकार ही न करे। उसे चाहिए कि विकास को भी समझा दे। दोनो कह सकते हैं कि उस सध्या को वे विक्टोरिया भवन के सामने मैदान मे बैठे रहे थे। काफी देर तक। शायद ओस मे भीग भी गये हों।

कटी बोली—'अनिल पता लगा सकता है कि हम दोनो लव अर्से तक नर्सिंग होम मे रहे थे। डाक्टर से बीमारी के बारे मे पूछ भी सकता है। और फिर कपनी का ड्राइवर नहीं बक दे तो । नहीं डैडी ! विक्टोरिया भवन के सामने बैठने वाली बात जमेगी नहीं। उस अस्वस्थता के लिए कोई और बहाना सोचना पड़ेगा। वास्तविक और सशक्त बहाना।

मि सक्सेना को बेटी की बात मे दम नजर आया था और वे सोच मे पड़ गये थे। दो तीन महीने की अस्वस्थता बताने के लिए ओस मे भीगने का बहाना वस्तुत लचर था।

'पर कुछ उपाय तो करना होगा कटी !' उनके स्वर से चिंता नजर आई।

"हा डैडी ! अभी से सोचना पडेगा। वर्ना बाद मे समय मिले, न मिले। पर एक बात है। क्या पुलिस यह साबित कर सकेगी कि हम दोनो सरोवर गये थे ? क्या वह सिद्ध कर सकेगी कि हम दोनो की बीमारी का सबध किसी की हत्या से था ? नही डैडी ! यह सिद्ध करना पुलिस के लिए भी कठिन होगा। इसके अतिरिक्त हत्या का प्रत्यक्ष गवाह कहा से आयेगा ?" कटी बोलते बोलते आवेश मे आ गई थी। शायद अच्छे तक खोज लेने के कारण।

'वह सब तो ठीक है बेटी ! फिर भी हमे एडवोकेट से सलाह लेनी चाहिये।

'नही डैडी ! अभी नही। क्या पता पुलिस मामले को आगे बढा येगी या नही। अभी तो प्रतीक्षा करनी चाहिये। वसे विकास को कह दूँगी कि वह कोई उलटा सीधा बयान न दे दे। कटी ने कहा।

विकास को इसकी सूचना दे दी गई। इससे वह भी सावधान हो गया। कुछ चिंतित भी। जब तक इस मामले का अतिम निपटारा नही हो, तब तक वह निश्चित नही हो सकता था। यह उसके हाथ की बात नही थी। पुलिस जब चाहेगी तभी मामला उठायगी और तभी कोई निर्णय होगा। सभव है पुलिस इसे उठाय ही नही। बस यही स्थिति सबसे ज्यादा गडबड थी। व्यक्ति सब कुछ सहन कर सकता है पर अनिश्चय नही। टु बी आर नाट टु बी की स्थिति मरणातक होती है और कटी तथा विकास इस स्थिति म आ गये थे।

फिल्म की शूटिंग पुन शुरू हुई तो कटी और विकास का ध्यान उसी म केंद्रित हो गया। बीच म गानो की भी रिकार्डिंग होती जा रही थी। म्यूजिक डाइरेक्टर ने शास्त्रीय धुनो के साथ साथ पाश्चात्य धुनें भी तैयार की थी। हीरो और हीरोइन ने अपने गाने स्वय गाय थे। बाकी के लिए प्ले बक लिया गया।

फिल्म की अतिम रील जिस समय तैयार हो रही थी उस समय बडे बडे अखबारो और पत्र पत्रिकाओ म उसका विज्ञापन शुरू हो

गया। रेडियो सिलोन से इसके गाना की फरमाइश चालू हो गई थी। और विनापन तो अलग स चल ही रहा था। जिन्होने फिल्म के रगेज देखे थ, उनका कहना था कि फिल्म हिट जायगी। सिल्वर जुबिली की गारटी की जाने लगी और डिस्ट्रिब्यूटस म होड चालू हो गई थी।

दूसरे प्राड्यूसस की उत्सुकता जगी थी। फिल्म म नही। हीरो हीरोइन म। कटी स तो कई प्राडयूसस मिल चुके थे। अपन फिल्मा मे आफस भी दे रहे थ। कटी ने मना कर दिया। उस अब और किसी फिल्म म काम नहा करना था। विशिष्ट उद्देश्य स उसन यह फिल्म लिया था। वह उद्देश्य अब पूरा हो चुका था। बाद म तो और भी उद्देश्य इमम जुड गय थे और उन दिशाआ म भी कटी असफल नही रही थी। प्रोडयूसस को यह सब नही बताया गया था। अत वे कटी के निषय को बवकूफी बता रहे थे। ऐसे अवसर बार बार नही आते। अभी तो पूछ है। बाद म नही हागी।

कटी न सुन लिया। और पुन मना कर दिया। प्रोडयूसस नाराज होकर चले गय। अखबारा म इसकी चर्चा हुई थी और निषय के अनुमानित कारण भी दिये गय थे। एक न स्पष्टत लिखा था— हीरोइन कटी घर बसाने के चक्कर म है। अब तक किसी का फाँस चुकी हा तो आश्चय नही। सभव है—विकास स ही शादी कर डाल। आसाम म शूटिंग क समय दोना की निकटता बढने की चर्चा सुनी जा रही है। कटी का यह निश्चय ठीक भी है और गलत भी। आज उसे आफस मिल रहे हैं क्योकि उम्र है और साथ म है आकषण। अत धनाजन का इससे बढिया अवसर नही मिलेगा। किंतु आज तो कोई हीरो शादी के लिए फँस सकता है। कल का भरोसा नही। शायद यह तथ्य कटी स छिपा नही है। तभी वह गृहस्थी बसाने के चक्कर म है और इसीलिए वह नय काट्रैक्ट नहीं कर रही है।

कटी ने यह सब पढा था और मुस्कुरा उठी थी। विकास को भी दिखाया था। वह भी हँस पडा था—'क्या? सच तो लिखा है बेचारे'

ने। लेकिन एक बात का आश्चर्य है—इन लोगों को यह सब पता कैसे लग जाता है ?"

कटी ने उत्तर दिया था— "अखबार वालों का धंधा यही है कि उलटे सीधे अनुमान लगायें। अफवाह उड़ायें। लग जाये तो तीर वर्ना तुक्का सही। कई बार तीर लग भी जाता है। बहुधा नहीं लगता। सुरैया दिलीप सुरैया देवानंद, कामिनी कौशल दिलीप दिलीप मधुबाला, राजकपूर-नरगिस मीनाकुमारी धर्मेन्द्र और राजेश खन्ना तथा शर्मीला टैगोर आदि के बारे में पता नहीं, कितनी अफवाहें उड़ीं। आज के सितारों के बारे में नित नयी अफवाहें सुन सकते हैं। और इनमें सत्य कितना है, असत्य कितना ? यह देखने की किसी को फुरसत नहीं है। अखबारों का काम है—चटखीले समाचार देना। जिससे कि अखबारों की बिक्री बढ़े। मेरे बारे में जो कुछ लिख रहे हैं वह भी केवल इसी दृष्टिकोण से।

कुछ ही दिनों में ये अफवाहें बन्द हो गई थीं। और नई अफवाहें शुरू हो गई थीं। दूसरे सितारों के बारे में। पाठक एक ही खबर से ऊब जो उठते हैं। अखबारों को उनका ध्यान रखना पड़ता है। कई बार सितारों से पैसे मिल जायें तो किसी दूसरे के विरुद्ध भी लिख सकते हैं। यह उखाड़ पछाड़ भी चलती रहती है। और जानकार लोगों से ये करिश्मे छिपे नहीं।

कटी और विकास से भी यह तथ्य छिपा नहीं रहा कि अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं से प्राप्त ख्याति अल्पकालीन होती है। आज का बहुचर्चित कलाकार कल ही अचर्चित हो सकता है। चोटी पर चढ़ा हुआ व्यक्ति अकस्मात् सबकी नजरों से ओझल हो जाता है। नीचे गिर जाने से। और दुबारा चोटी पर चढ़ना बहुत कठिन होता है। फिल्मों में कम बक की प्रथा ही नहीं। जो चुक गया, वह चुक गया। यदि बैंक बैलेंस बना लिया है, तो किसी बंगले या फ्लैट में शेष जीवन व्यतीत कर लेगा। अन्यथा हीरो से साइड हीरो। साइड हीरो से चरित्र अभि

नय। फिर बूढ़े बाप या माँ का रोल। फिर एक्स्ट्रा। और फिर वह भी नहीं। उस वक्त खुशामदें काम नहीं कर पाती। परिचय की सार्थकता नहीं रह जाती।

कटी और विकास ने इन सभी बातों पर गौर किया था और फिल्म जीवन के प्रति उनका विकर्षण बढ़ता गया था। उनकी वर्तमान फिल्म पूरी हो चुकी थी। एडिटिंग का काम चल रहा था। फिर सेंसर के सामने जायेगी। तब तक दोनों को कुछ करना नहीं था।

प्रोड्यूसर से बाकी रकम वसूल करने के लिए दोनों ही प्रयत्न कर रहे थे। पर वह बहाने बना रहा था। कभी आज का नाम लेता था। कभी कल का। फोन पर तो प्रायः उत्तर मिलता—घर पर नहीं है। और कहने वाले की आवाज प्रोड्यूसर की ही होती। घर या दफ्तर में घुसने से पहले ही कहला दिया जाता कि बाहर गये हैं।

सच ही दोनों को घृणा हो आई। फिल्म शुरू होने और पूरी होने में कितना बड़ा फर्क होता है, यह उनको मालूम हो गया। कांट्रैक्ट करते समय तो कितनी खुशामदें और कितनी मिन्नतें की गई थीं और आज उसे मिलने की भी फुरसत नहीं। ठीक है वे भी देख लेंगे। प्रोड्यूसर समझता है—नये हैं, अतः टरकाया जा सकता है। पर उसे पता चल जायेगा कि नया सदा नया नहीं होता।

कटी ने अपने वकील को बुलाकर कह दिया — प्रोड्यूसर को नोटिस भेज दो। पन्द्रह दिन के भीतर बकाया राशि का पेमेंट न करे तो मुकद्दमा दायर करके फिल्म का प्रदर्शन रुकवा दो।

वकील तो यही चाहता था। ऐसे मुकद्दमों में पैसा और ख्याति दोनों मिलते हैं। अतः उसने नोटिस तो दूसरे ही दिन भिजवा दिया और मुकद्दमा दायर करने के लिए कागजात तैयार कर डाले।

नोटिस पाकर प्रोड्यूसर भागता आया था। कटी ने उससे मुलाकात नहीं की। विकास ने भी कह दिया — 'हमारे वकील से बात करो।

प्रोड्यूसर ने वकील से बात की थी। उसे फुसलाना भी चाहा था। पर वकील ने दो टूक बात कह दी— बताया रकम का चेक काट दीजिये। वर्ना फिल्म रिलीज नहीं हो सकेगी। यह कहने के बाद उसने तैयार शुदा कागजात सामने रख दिये।

प्रोड्यूसर को बात समझ में आ गई थी और उसने दो चेक काट दिये थे। वकील ने उसे धन्यवाद दिया और मुकद्दमे के कागजात फाड़कर रद्दी की टोकरी में डाल दिये।

कटी और विकास ने चेक बैंक में जमा करा दिये। फिल्म जीवन से सन्यास लेने की घोषणा पूर्वत कर चुके थे। अब उनके सामने विचारणीय बात एक ही थी। वह बात थी—भावी जीवन की। गृहस्थी बसाने की। मि सक्सेना को इसमें कुछ कहना नहीं था और उन्होंने विवाह की तिथि एवं अन्य मुद्दों पर निर्णय करने का भार दोनों पर छोड़ दिया था।

विकास ने अपने माता पिता को बंबई बुला लिया और महीने भर के लिए उनके साथ होटल में रहने का प्रबन्ध कर लिया। शादी के लिए रजिस्ट्रार के दफ्तर में जाकर नोटिस जारी करवाया और फिर कटी से मिलकर भविष्य की योजना पर विचार शुरू किया। शादी के बाद कहाँ जाने का निश्चय हुआ। हनीमून के लिए। वहां से लौटकर एक बार तो दोनों को विकासके गांव जाना था। विकास के माता पिता के साथ। वृद्ध माता पिता की बड़ी तमन्ना थी कि गांव जाकर सबको बड़ी सी दावत दें ताकि सबको पता चल जाये कि उनके सुपुत्र ने कितनी तरक्की कर डाली है। लोग यह भी देख लें कि उनकी बहू लाखों में एक है। ऊँचे घराने की तो है ही। और दहेज । यहाँ अनुमान लगाना कठिन था। मि सक्सेना या कटी ने इसके बारे में कोई संकेत नहीं दिया था। पर यह निश्चित था कि कटी के पास पचास हजार रुपये खुद के थे और पिता की संपत्ति भी उसी को मिलनी थी। सत्य ही वृद्ध दंपति इन सुखद कल्पनाओं में आकंठ निमग्न थे।

शादी का दिन आ पहुंचा। दो चार घनिष्ठ मित्रों को ही इसकी सूचना थी। सत्येन्द्र के यहा भी सूचना भेजी गई थी, किंतु वह घर पर नहीं मिला। किसी को पता नही था कि वह कहा है?

रजिस्टार के दफ्तर में शादी सपन्न हो गई। बिलकुल सादगी के साथ। उपस्थित मित्रों ने नव दपति को बधाइयाँ दी। कटी के लिए उपहार भी थे। मि सक्सेना ने विवाह भोज के लिए ताज होटल मे प्रबन्ध किया था। वहा पहुँचने पर प्रेस रिपोर्टस की भीड खडी हुई देखी। पता नही उन्हे कैसे गध मिल गई? शायद होटल से टिप मिली हो।

कटी और विकास के सैकडो फोटो क्षणभर मे खीच लिये गये। कुछ सवाद दाताओ ने इटरव्यू के रूप मे प्रश्न भी कर डाले। दोनो के प्रथम परिचय और प्रणय आदि के बारे मे। उत्तर विकास को ही देने पडे। कटी सिमटी सी खडी रही। शायद विकास को अधिक महत्त्व दिलाने के लिए।

एक व्यक्ति कोने मे खडा दूर से सब कुछ देख रहा था। उसके पास न कमरा था और न ही नोट बुक व पेंसिल। स्पष्टत रिपोर्टर नहीं था। उसकी आखो मे दपति के प्रति न तो प्रशसा थी, न ही ईर्ष्या। एक विचित्र सा भाव आखो से प्रगट हो रहा था। शायद एक अनिश्चय था। या फिर होगी करुणा। या होगा अवसाद। जो कुछ था, स्थिर था। स्थायी था।

जाये। उसके पास दो तीन व्यक्ति और आ गए थे। धीरे धीरे उनमें कुछ बातचीत हुई थी और फिर अन्य लोग दूर हट गये थे। अकेला वही व्यक्ति वहीं खड़ा रहा। करीब एक घंटे तक। उसने सवाद दाताओं को धीरे धीरे बाहर निकलते देखा था। सब प्रसन्न लगे। समाचार-सामग्री से तुष्ट और भोज्य सामग्री से सर्वथा संतुष्ट।

वह व्यक्ति फिर भी वहीं खड़ा था। पता नहीं किसकी प्रतीक्षा थी? सवाद-दाताओं के साथ आया तो था पर गया नहीं। न होटल के भीतर जाने को उत्सुक था न वहां से हटने को। या खड़ा था जैसे धरती से चिपक गया हो।

पर वह निरुद्देश्य नहीं खड़ा था। उसे शायद समय की प्रतीक्षा थी। एक निश्चित समय की। प्रतीक्षा की अवधि लंबी थी पर बीत ही गई। तब वह सक्रिय हो उठा। वह सधे कदमों से होटल में प्रविष्ट हुआ। रिसेप्सनिस्ट के पास जाकर संक्षिप्त सी बात की और फिर एक स्लिप पर कुछ लिखकर रिसेप्सनिस्ट को कहा कि यह स्लिप मि सक्सेना के पास भिजवा दी जाये। रिसेप्सनिस्ट को पता था कि मि सक्सेना होटल में दावत दे रहे हैं। उसने स्लिप भीतर भिजवा दी।

पांच मिनट बाद मि सक्सेना वहां आ गये। उन्हें पार्टी में विघ्न डाला जाना पसंद नहीं आया था। किन्तु स्लिप की संक्षिप्त भाषा में कुछ ऐसा संकेत था कि उन्हें बाहर आने को बाध्य होना पड़ गया।

प्रतीक्षा रत व्यक्ति ने आगे बढ़कर कहा— हलो मि सक्सेना! आपने शायद मेरा नाम सुना हो। अनिल मजूमदार!' उसने देखा कि मि सक्सेना की भौंहें खिंच गई थी और आंखों में हलका सा भय छा गया था 'अच्छा हो हम बाहर चल कर बातें कर लें।"

मि सक्सेना को विकल्प नहीं सूझा था। वे उसके पीछे हो लिये थे। बेटी के विवाह की जो खुशी उनके चेहरे पर कुछ क्षण पहले थी वह लुप्त हो गई थी। एक मुर्दनी सी उसकी जगह आ बैठी थी। आंखों में नैराश्य और विभीषिका का सम्मिश्रण सा दिखाई देने लगा था।

धन्ना की यह आकस्मिकता उन्हें बड़ी दारुण प्रतीत हुई थी। विशेषत इसलिए कि वे इसके लिए प्रस्तुत नहीं थे। आज तो कतई नहीं। आज तो वे सबका स्वागत करने के मूड में थे। पर वे इस व्यक्ति का स्वागत नहीं कर सके। यह संभव ही नहीं था।

फरमाइये मि मजूमदार ! कैसे पधारना हुआ ?' उन्होंने साहस करके पूछा। 'शायद आप जान गये होंगे। आपकी आकृति से लगता है कि आपको संपूर्ण घटनायें ज्ञात हैं। वस्तुतः मुझे अफसोस है मि सक्सेना ! मुझे सुबह आने पर भी पता नहीं था कि आज ही दाना की शादी है। वह तो सन्ध्या को ही जान पाया कि शादी हो चुकी है और आज ही यहाँ पार्टी का आयोजन है। ड्यूटी की बाध्यता न होती तो तुरत कलकत्ता लौट जाता। सच ही मुझे अफसोस है मि सक्सेना !'' कहते समय अनिल का अफसोस साकार हो उठा था।

मि सक्सेना से यह तथ्य छिपा नहीं रहा—"मि अनिल ! आप सहृदय नजर आते हैं। इसलिए अर्ज करना चाहता हूँ। क्या आपका कार्य कुछ दिनों के लिए मुल्तवी नहीं हो सकता ? दोनों कल चले जायेंगे। एक माह के लिए। वहाँ से सीधे विकास के गाँव पहुँचेंगे। गाँव वालों को दावत देनी है। उसके दूसरे दिन स्वयं कलकत्ता में आकर आपसे मिल लेंगे।

अनिल ने दो क्षण इस प्रस्ताव पर विचार किया। फिर पूछा—'इसकी गारंटी क्या है कि दोनों निश्चित तिथि को मेरे पास आ ही जायेंगे ?'

भोले मत बनो मि अनिल ! मैं आपकी क्षमता से अपरिचित नहीं हूँ। जानता हूँ कि आपको गारंटी की आवश्यकता नहीं है। आपको तो एक निर्णय करना है। और करनी है एक कृपा। एक वृद्ध पिता पर। इकलौती बेटी के पिता पर। कहते कहते मि सक्सेना की आँखें गीली हो आई।

अनिल दूसरी ओर देखने लगा था। जब तक कि मि सक्सेना ने

आँखें याद ही रहा डाला। फिर मुस्कराकर कहा था— अच्छी बात है मि० सक्सेना! इट्स ए डील बिट्वीन यू एण्ड मी। नो थैंक्यू प्लीज।

मि० सक्सेना ने स्वीकृति की मुद्रा में सिर हिलाया था और फिर अनिल से हाथ मिलाकर आभार प्रगट किया था। अनिल बिना बोले चला गया था और मि० सक्सेना भीतर जाने को मुड़े थे। तभी उन्होंने देखा कि भीतर की पार्टी समाप्त हो गई थी और सभी मेहमान बाहर आ रहे थे। कटी और विकास सबके पीछे थे। मि० सक्सेना के चेहरे पर मुस्कुराहट ओढ़नी पड़ गई।

सबने उनसे पूछा कि इतनी देर तक बाहर खड़े रहकर क्या कर रहे थे। मि० सक्सेना ने कहा था—एक परिचित से बातें करती थी। पर उनकी बात जमी नहीं थी। सबकी उत्सुकता वहीं खड़ी रही पर किसी ने कुछ पूछा नहीं। कटी ने भी नहीं। विकास ने भी नहीं। पर दोनों कुछ सोच रहे थे। शायद सही। शायद गलत।

मि० सक्सेना ने सब मेहमानों को धन्यवाद दिया और फिर समधी तथा समधिन को कार में बठाकर उनके होटल की ओर रवाना किया। कटी और विकास उनके साथ घर की ओर चल पड़े। रास्ते में किसी ने कुछ भी नहीं पूछा। मानो पूछने को कुछ शेष ही नहीं रहा। घर पहुंचकर बरामदे में कुछ देर को तीनों बैठे थे। फिर मौन की असह्यता से तीनों घबरा उठे थे। मि० सक्सेना नींद का बहाना करके अपने कमरे में चले गये तो कटी और विकास को वहां बठे रहने की आवश्यकता नहीं रह गई। वे भी ऊपर की मंजिल पर कटी के कमरे में जा बैठे।

कमरे में विशेष सजावट नहीं थी। नौकर ने सफाई जरूर कर दी थी। छोटी मोटी आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर दी थी। किंतु न वहां पुष्प शय्या थी और न ही झाड़ फानूस। एक गमला था जिसमें किसी अनाम पौधे का अंकुर दीख रहा था। दो छोटे छोटे पत्ते। इन पत्तों

म न रग था और न ही गध। बस एक चमक थी। और था शायद एक आकर्षण—एक दूसरे के प्रति। पत्ते हलकी हवा से हिल रहे थे। शायद काप रहे हो। फिर भी दोना पास पास थे।

यह निकटता ही दोना की आधार थी। बाह्य स्तर पर और आत रिक स्तर पर। दोना वड पर पास पास वैठ थे। सामने देखते हुए। मानो दृष्टि के विनिमय से बचने का प्रयत्न कर रह हो। दोनो को न कुछ पूछना था न कुछ जानना था। स्थिति का अहसास दोनो कर रहे थे। वतमान निरथक हो गया था। साथक था तो भविष्य। कल का भविष्य। प्रात का भविष्य।

'कनी।" विकास ने मौन तोड डाला था।

'हाँ विकास।"

'चवा चलकर क्या करेंगे?'

'हाँ व्यथ है वहा चलना।" कटी की सहमति सहज थी।

तो कल अनिल स मिल ल? उत्तर भी जैस ज्ञात था पर पूछ डाला।

'अभी फोन पर कह दें तो कैसा रहे?" एक प्रस्ताव कटी का।

ठीक है। अभी फोन करके कह देता हू कि सुबह हम उसके पास पहुँच रह हैं।"

विकास न दो तीन जगह फोन करके अनिल का पता मालूम कर लिया। अनिल न फोन उठाया तो विकास का नाम सुनकर चक्कर में आ गया। वह मान ही नही सका कि मि सक्सेना उसके विश्वास को इतना जल्दी चोट पहुँचा सकते हैं? निश्चय के लिए उसन पूछा था—परमादय क्या कहना चाहत हैं आप? विकास ने उत्तर दिया था—'हम दोना सुबह आठ बजे आपके पास पहुच रहे है। और मि सक्सेना ने हम कुछ नही कहा है। यह कहकर फोन रख दिया था

अनिल के हाथ म फोन अभी था। वह समझ नही पा रहा था कि क्या करे? उसके भीतर के मानव पर कही चोट लगी थी। और

पता नहीं चल रहा था कि चोट किसने लगाई ? चोट थी भी बडी। और चोट लगी जगह से कुछ रिसने लगा था। रिसने की प्रक्रिया बद नही हुई थी और उसकी सपूर्ण सवेदना इसम गीली हो उठी थी। एक ओर था दायित्व। दूसरी ओर थी मानवीय सवेदना। टकराहट नही थी पर सघषए फिर भी था। स्फुलिंग निकल रहे थे और उसकी चट चट से वह बार बार चौंक उठता था। उसने फोन टेबल पर रख दिया था और दोनो हाथो पर सिर टिकाये कुर्सी पर बैठा रहा था। कोई अस्थिरता यहाँ नही दीख रही थी। शायद सो गया हो।

प्रात आठ बजे विकास और कटी ने आकर उसे उठाया था। वह हडबडाकर खडा हो गया था। फिर होश आया तो दोनो को बठने को कहा। कॉग्रेच्युलेट भी किया। फिर पूछा— कसे आना हुआ ? रात भी बिना बताये फोन बद कर दिया। आखिर बात क्या है ?

कटी ने उत्तर दिया— जान बूझकर भोले मत बनो। कलकत्ता स इतनी दूर घूमने तो आये नही हो। जो कुछ कहना है कह डालो। हम दोनो तयार होकर आये हैं।

अनिल उस प्रखर दृष्टि का सामना नही कर सका। उसे सोचने और *निश्चय करने के लिए कुछ क्षणो की आवश्यकता थी। अत* उसने दो मिनट मे आने को कहा और बाथ रूम मे चला गया। लौटकर आया तो सहज हो चुका था। निर्णायक मुद्रा उसकी आकृति से स्पष्टत आभासित थी।

'देखिये म आपसे कुछ छिपाना नही चाहता। मेरे पास तथ्य हैं और प्रमाण भी। कुछ सूत्र बीच म कटे हुए हैं किन्तु उन्हें जोडना कठिन नही है। अत आप दोनो समझ लीजिए कि मुझसे कुछ छिपा नही है। अब मैं चाहता हू कि आप वास्तविकता को पहचान और मेरी सलाह माननी शुरु कर दें।'

आपकी सलाह न एक क्या है ?' विकास ने जिज्ञासा की।

मेरी पहली सलाह यह है कि आप मुझसे सहयोग करें। और

सहयोग का अर्थ है—पूर्ण सहयोग। अर्थात् आपके मुँह से सत्य जानना चाहूँगा। उस दिन रवीन्द्र सरोवर पर पहुंचने के बाद जो कुछ आपके साथ घटा, वह सब मुझे बता दीजिये। विवरण के साथ। फिर सलाह न दो की प्रतीक्षा कीजिये।"

विकास और कटी ने एक दूसरे की ओर देखा था। फिर कटी ने बोलना शुरू किया और बोलती रही। पूरे डेढ घंटे तक। अनिल सुनता रहा था। विकास भी। सुनते सुनते अनिल के हृदय की धड़कनें बढ गई थीं। विकास की भी। एक की श्रवण से। दूसरे की स्मरण से। कटी का स्वर कई बार बोझिल हो उठा था। भोगे हुए यथार्थ को सजीव करते समय वह स्वयं निर्जीव सी अनुभव कर रही थी।

और सरोवर के उस पार का सूत्र विकास ने आगे बढाया था। पर दो ही क्षणों में उसकी वाणी अवरुद्ध हो गई थी। वह दोनों आंखों को हथेली से ढककर बैठ गया। कटी ने दृष्टि दीवार की ओर मोड ली। अनिल उठकर बाथ रूम की ओर चला गया।

आधा घंटे बाद वह लौटकर आया था। घंटी का बटन दबाकर उसने नौकर को बुलाया और तीन कप कॉफी मंगवाई। कॉफी आने तक कोई बोला नहीं। कॉफी पीते समय भी नहीं।

बाद में अनिल ने कहा—'मि विकास ! मेरा ख्याल है आप वहाँ से चल कर मि सक्सेना के पास पहुँचे और फिर सहायता लेकर सरोवर के किनारे लौट आये। वहाँ से लाकर दोनों को नर्सिंग होम में दाखिल करवाया गया। क्यों ठीक है न !

विकास ने सिर हिलाकर हाँ भरी। फिर अपनी ओर से जोड़ा—पहले घर गये थे। डाक्टर वहाँ मौजूद था। उसने कटी की हालत देखकर नर्सिंग होम ले जाने को कहा था।'

मुझे मालूम है। कटी के डाक्टर से बात कर चुका हूँ। डॉक्टर ने प्रोफेशनल नैतिकता की आड़ लेकर कुछ भी कहने से इन्कार कर दिया किंतु उसका रिकार्ड कभी भी कब्जे में किया जा सकता है

ग्रौर फिर डाक्टर को सारे तथ्य बताने पड़ जायगे।" ग्रनिल साधिकार कह रहा था।

फिर उसने ऊपर से एक फोटो निकाला ग्रौर दोना को दिखाकर पूछा— क्या यही वह ग्रादमी है?"

दोना ने फोटो देखा ग्रौर कहा—'ग्रधेरे म उसे ठीक से देख नही सके थे। पर ग्राकार प्रकार से लगता है—वही है।"

ग्रनिल ने फोटो डाग्रर मे डाल दिया ग्रौर फिर कहने लगा— 'देखिये! मुझे ग्राप दोनो ग्रपना मित्र समझिये। ग्रापने सच कहकर मेरी कई मुश्किलें हल कर दी हैं। ग्रत मैं भी चाहूँगा कि ग्राप दोना को व्यर्थ की परेशानी न हो। इसके लिए मैं ग्रापको सलाह देता हू ग्रर्थात् सलाह न दो कि ग्राप लोग एक ग्रच्छा सा वकील कर लें। ऐसा वकील जो केवल मडर-केस ही लेता रहा हो। मुझे विश्वास है कि सेशन कोर्ट से ही ग्रापको बरी कर दिया जायेगा। मुझे ग्रफसोस भी है कि ग्रापके विरुद्ध मुकद्दमा दायर करना होगा। पर ग्राप मेरी स्थिति पर गौर करके मुझे मुग्राफ कर दें। ग्रभी तो ग्राप जा सकते हैं। चाहे चवा जायें चाहे कही ग्रौर। मैं इस बीच किसी भी प्रकार की रुकावट या व्यवधान नही डालू गा। हां! ग्रगले महीने की ११ तारीख को ग्राप कलकत्ता ग्रा जायें। मेरे दफ्तर म। नमस्कार।"

कटी ग्रौर विकास चले ग्राये थे। मि सक्सेना चिंतित थे ग्रौर उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। दोनो को देखा तो कुछ तसल्ली हुई। फिर सब बातें सुनी। इससे उन्हे ग्राशा की एक किरण दिखाई दी। उन्होंने तुरत कारवाई करने को बात कही ग्रौर कार लेकर हाइकोर्ट की ग्रोर चल पडे। उन्होंने वकीलो की पूरी फौज खडी कर देने का फैसला कर लिया था।

१७

कटी और विकास चंबा पहुंच गये। होटल में सामान रखकर घूमने निकले। चारों ओर प्रकृति का सौंदर्य उन्मुक्त रूप में बिखरा था। पर्वत, नदियां, झरने और हरित सम्पत्ति। बरबस दृष्टि को बांध लें। कटी और विकास को भी यह सब आकर्षक लगा था। जो कुछ अनुमान लगाया था वह सब सही निकला। अब वे चाह रहे थे कि इस सुरम्यता को बटोर लें। जितना संभव हो उतना ही।

पर उनके मानस पर एक बोझ था, जिसे चंबा की प्रकृति भी हटा नहीं पाई। वे प्रतिदिन सोचते—एक मास बाद की चिंता अभी क्यों की जाये। बाद की बाद में देख ली जायगी। अभी तो भोग और उपभोग के क्षण हैं। इन्हें आशंकाओं की ज्वाला में क्यों झुलसाया जाये? और भी इतने पर्यटक हैं यहां। क्या उन्हें आने वाले कल में सब कुछ सुखद और स्वर्णिम ही आभासित हो रहा है? क्या कोई भी कटुता उनकी प्रतीक्षा नहीं कर रही होगी? पर ये सब तो जीने में लगे हैं। कम से कम जीने का प्रयास तो कर रहे हैं। क्या वे दोनों भी नियति को झुठला नहीं सकते? वेदना होनी है तो हो। पर आज ही उसे आमंत्रण क्यों दिया जाय?

कटी ने सुझाव दिया—'यहां से पांगी की ओर चलें और वहां दो तीन दिन किसी छोटे गांव में रहें। किसी कृषक के यहां। झोंपड़े में। सर्वथा उसके अनुरूप। हम भूल जायें कि बंबई से आये हैं और होटल के बिना रह ही नहीं सकते। सामान साथ ले चलने की आवश्यकता

नहीं है। वस्त्र भी सामान्य होने चाहिये ताकि आवश्यक आकर्षण के बिन्दु न हो जाय।"

विकास ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। बाजार से कटी के लिए सस्ती सी सूती साडी खरीदी और स्वयं के लिए भी सस्ता खाकी पट और एक सूती कमीज। दो सस्ते कंबल भी खरीद लिए।

दूसरे दिन इन कपड़ों में बाहर निकले तो होटल के मैनेजर ने आँखें उठाकर प्रश्न मुद्रा में देखा था। विकास ने संक्षेप में कह दिया—घूमने जा रहे हैं दो तीन दिन के लिए। मैनेजर ने सावधान रहने की सलाह दी। विकास ने उसे धन्यवाद दिया और कटी के साथ बाहर निकल पड़ा।

पर्यटकों ने उन्हें पहचाना नहीं था। अन्यथा वहाँ मजमा लग जाता। और उनका उन्मुक्त भ्रमण धरा रह जाता।

विकास के कंधे पर एक हैवर सैक था। खाकी रंग का। शायद मिलिटरी का नीलाम किया हुआ। इसमें दोनों की जरूरी चीजें थी। पर तड़क भड़क वाली नहीं। सिगरेट के दो तीन पैकेट उसमें थे। उन्होंने सुना था कि कृषकों को सिगरेट बहुत पसंद होती है। देशी शराब की एक बोतल भी रख ली थी। उसी दृष्टिकोण से। सत्य ही वे आतिथ्य कर्ता का खयाल रखकर चले थे।

पर उन्हें यह पता नहीं था कि वे किसके यहाँ ठहरेंगे या फिर कोई उन्हें ठहराने को सहमत भी होगा या नहीं? वे तो एक सामान्य धारणा को आधार बनाकर जा रहे थे कि पहाड़ी लोग आतिथ्य में कसर नहीं उठा रखते।

उन्होंने चंबा से बाहर निकलकर पांगी की दिशा में कदम बढ़ाये। पांगी काफी दूरी पर है, यह उन्हें पता चल गया था। अतः उन्होंने दो खच्चर किराये पर ले लिये। इससे दुहरा काम हुआ। खच्चरों का स्वामी साथ होने के कारण उन्हें रास्ता नहीं पूछना पड़ा। खच्चरों के मालिक ने उन्हें यह जरूर चेतावनी दी थी कि पांगी में ठंड बहुत

है। पर विकास ने मुस्कुरा कर कहा कि वहाँ पहुंचने पर ठंडक दूर करने की व्यवस्था कर देंगे।

खच्चर दिन भर चलते रहे। बीच में दो जगह चाय पानी के लिए विकास और कटी उतर गये थे। उन्होंने खच्चर वाले को भी चाय पिलाई। सिगरट भी। सिगरेट पाकर वह खुश हो गया था और दोनों के प्रति उसकी नम्रता और बढ़ गई थी।

फिर सब आगे बढ़ गये थे। सन्ध्या होने से पूर्व ही उन्हें घाटी पार कर लेनी थी। यह घाटी नहीं एक दर्रा था। हिमपात के दिनों में यह दर्रा बिलकुल बन्द हो जाता था। फिर तो पांगी का शेष संसार के साथ संपर्क सूत्र ही टूट जाता था। काफी दिनों के लिए। कई बार तो महीनों के लिए। खच्चर वाले ने ये सब बातें बताई थीं और कहा था—अभी हिमपात होने में करीब १५ दिनों की देर है। उसने परामर्श दिया कि वे दोनों इससे पूर्व ही वापस लौट जायें। वर्ना पांगी में उन्हें संपूर्ण शीत ऋतु काटनी पड़ सकती है।

दोनों ने सिर हिलाकर उसे सूचित किया कि वे समझ गये। परस्पर निर्णय भी कर लिया कि उन्हें शीघ्र ही लौटना है। वे अनिल को दिए वचन का पालन करने के लिए संकल्पित थे।

दर्रा बहुत संकड़ा था। एक बार में एक ही खच्चर निकल सके, बस इतना चौड़ा। इसलिए खच्चरों को आगे पीछे चलना पड़ रहा था। सबसे आगे थी कटी। फिर विकास। खच्चरों का मालिक पीछे पीछे था। उसने बताया कि यहाँ मार्ग पर इतना भयंकर हिमपात होता है कि हटाए नहीं हटता। मौसम में गर्मी आने पर बर्फ पिघलनी शुरू होती है। तभी यह रास्ता खुलता है। इसलिये पांगी के निवासी करीब ६ महीने का खाद्य और ईंधन आदि एकत्र करके रख लेते हैं।

दोनों उसकी बातें सुन रहे थे और स्थिति की भयावहता भी समझ रहे थे। एक बार तो दोनों ने वापस लौटने की भी सोची। पर कायरता का ध्यान करके इसे कार्यान्वित नहीं किया। और आगे

रहे। तब तक सूरज पहाड़ियों की ओट हो गया था और छाया के दस्ते उन्हें दबोचने लगे थे। सच ही पहाड़ों में सन्ध्या जल्दी हो जाती है और प्रात विलम्ब से।

दूर से गांव की धुंधली-धुंधली रोशनी नजर आ रही थी। टिमटिमाती सी रोशनी। कुत्तों का भौंकना भी कभी-कभी सुनाई पड़ जाता था। किंतु गांव अभी दूर था। वहां पहुंचने में उन्हें एक घंटा लग गया। घुमावदार रास्ता था और सकरा भी। खच्चरों का मालिक इस समय आगे-आगे चल रहा था। कटी के खच्चर की लगाम उसके हाथ में थी। एक छोटा सा नाला आया तो दोनों को उतरना पड़ा। दोनों को हलकी सी छलांग लगाने की आवश्यकता थी। विकास तो उस पार पहुंच गया, किंतु कटी हिचकिचा रही थी। कहीं लड़खड़ा न जाय इस आशंका से।

विकास ने दोनों हाथ फैलाकर कहा- आओ। मैं सम्हाल लूंगा। खच्चर वाले ने भी उत्साहित किया तो कटी उछली और विकास की सशक्त भुजाओं में जा पहुँची। विकास को सुख मिला। उसने देखा कि कटी इतने में ही कांप उठी है। उसके हृदय की बढ़ी हुई धड़कन उसे सुनाई पड़ रही थी। इस पर उसने कटी को और भींच लिया और कटी ने कतई प्रतिरोध नहीं किया। वह कई क्षणों तक यों ही चिपटी रही।

"चलिये बाबू जी!" खच्चर वाला कह रहा था। उसके स्वर में उपेक्षा भरी खिन्नता सी थी। दृश्य की अनावश्यक नाटकीयता के कारण। दोनों चौंककर अलग हो गये थे और पैदल ही चल पड़े थे। खच्चरों की लगाम उनके मालिक ने थाम रखी थी।

वह पूछ रहा था— किसके यहां ठहरोगे बाबू जी?

'यह तो हम क्या कह सकते हैं? कोई ठहरायगा, उसी के यहां ठहर जायगे। वसे तुम बताओ—किसके यहां ठहरा जा सकता है? विकास ने कहा था।

'यदि मुझसे पूछें तो चौधरी के यहां मत ठहरना। वह अच्छा आदमी नहीं है। आप तो चनसी के यहां ठहरिये। बाल-बच्चेदार आदमी है। भगवान् से डरता है। सच बाबू जी! बड़ा ही अच्छा आदमी है। रूखा सूखा जैसा उसके घर में है आपको खिला देगा। एक दो दिन से ज्यादा तो आप यहां ठहरेंगे नहीं। ठीक है ना बाबू जी?'

विकास ने हां भरी ली और फिर वे चैनसिंह के घर के आगे जा पहुंचे। चनसिंह घर पर ही था। आगंतुकों को देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रगट की और दोनों को आदर से भीतर ले गया। खच्चर वाला भी भीतर आ गया और खच्चरों को एक ओर बांध दिया। चैनसिंह ने खच्चरों के आगे घास लाकर डाल दी। फिर एक चारपाई छप्पर के नीचे डाल दी जिस पर विकास और कटी बैठ गये। चनसिंह की बहू पहले तो दूर से देखती रही। फिर कटी के पास आकर खड़ी हो गई। वह मुग्ध दृष्टि से कटी को निहार रही थी। पहाड़ों में भी ऐसा सौंदर्य नहीं होता यह तथ्य उसकी मुखमुद्रा से व्यक्त हो रहा था। फिर वह कटी को भीतर की ओर ले गई।

चैनसिंह के घर में उस छप्पर के अलावा एक पक्का ओसारा भी था। पत्थरों से बना। करीब १२×१० फुट का। उसमें भी एक चारपाई थी और चारपाई पर दो बच्चे लेटे थे। एक तो पांच साल के करीब और दूसरा दो तीन साल का। चनसिंह की बहू ने बच्चों को उठाकर धरती पर बिछे कपड़ों पर लिटा दिया और फिर कटी को चारपाई पर बैठने को कहा। स्वयं नीचे ही बैठी रही।

कटी उसकी भाषा समझने का प्रयत्न कर रही थी। इसमें हिन्दी के शब्दों की संख्या नाम मात्र की थी। और फिर इनका उच्चारण बहुत ही विचित्र था। कटी तो बस इतना समझी कि वह विकास के बारे में पूछ रही है। कौन है? क्या लगता है? कटी ने उसे संक्षेप में समझाया कि दोनों की शादी तीन चार दिन पहले ही हुई है और यह

घूमने आये हैं। एक दो दिन के लिए। सुनकर चैनसिंह की बहू के चेहरे पर लालिमा छा गई थी। किसी सुखद स्मृति के कारण। उसने मुस्कुराकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और बढ़ी के उसके हाथों को अपने हाथ में लेकर कृतज्ञता प्रकट कर दी।

चैनसिंह आवाज लगा रहा था— चाय बना लो। फिर रोटियाँ भी। आटा न हो तो बता दो। चौधरी के यहाँ से ले आऊँगा।

आटा अभी के लिए तो है। कल के लिए इन्तजाम कर लो। उसकी बहू ने अपनी बोली में उत्तर दे दिया।

फिर उसने चाय बनानी शुरू की और बन्ना उसे देखती रही। चाय का बरतन साफ नहीं था। पर वह बोली नहीं। पीतल के ग्लास में चाय लाकर रखी तो पहले उसका जी मितलाने लगा। ग्लास पर मैल की परत चढ़ी थी। किनारे टूटे थे। पर उसने चाय की चुस्की लेनी शुरू कर दी। चाय बुरी नहीं थी। शायद पत्तियाँ अच्छी थीं। बन्द डिब्बों वाली न होने पर भी बढ़िया। पहाड़ की असली चाय। वह पीती रही और पीकर उसने ग्लास नीचे रख दिया। चाय से शरीर के भीतर गर्मी सी आ गई थी।

विकास और चैनसिंह की अस्पष्ट सी बातें सुनाई पड़ रही थीं। सिगरेट के धुएँ की गंध भी मालूम पड़ी थी। शायद चैनसिंह सिगरेट की तारीफ कर रहा था। वह सुबह के आटे का इंतजाम करने बात कर रहा था और विकास ने उसे पैसे देने चाहे थे। इस पर चैनसिंह के स्वरों में करुणा प्रतीत हुई थी। अपमानित की सी ध्वनि थी वह— 'बाबूजी! ऐसा मत कहिये। गरीब हूँ पर गया बीता नहीं।' सुनकर विकास चुप हो गया था। शर्मिन्दगी के कारण। वह पहाड़ी रीति रिवाज से परिचित नहीं था। वर्ना पैसे की बात नहीं उठाता।

कुछ देर में चैनसिंह लौट आया था। आटा साथ लेकर। चौधरी बहादुरसिंह साथ में था। चौधरी ने विकास से राम राम की और उलाहना दिया कि उसके यहाँ क्यों नहीं रुके। इस पर विकास ने

बहाना बनाया कि वह चर्नसिंह के बारे में किसी से सुन चुका था। इसलिए सीधे उसके यहाँ चला आया। इस पर चौधरी कुछ नहीं कह पाया। उसने कुछ देर बात की और फिर सुबह आने को कहकर चला गया।

चर्नसिंह की घर वाली ने तब तक रोटियाँ बना ली थीं। आलू की एक सब्जी भी, जिसमें पहाड़ी पत्ता का अंश अधिक था। रोटियाँ जौ की थीं उन पर घी चुपड़ा था जिससे एक विचित्र गंध आ रही थी। विकास और वटी ने गंध की परवाह किये बिना खाना शुरू कर दिया था और उन्हें खाना अच्छा लगा था। शायद दिन भर की थकावट के कारण। भूख के कारण भी। चर्नसिंह की बहू परोसती गई थी और वे दोनों खाते गये थे। उन्हें बाद में आश्चर्य हुआ कि वे चार चार रोटियाँ खा गये थे। बम्बई में वे इतनी बड़ी दो भी नहीं खा सकते थे।

चर्नसिंह की घरवाली ने दोनों के सोने का प्रबन्ध भीतर के ओसारे में कर दिया। बच्चे नीचे सोते रहे। चर्नसिंह और उसकी घर वाली छप्पर में सो गये। खच्चर वाला चौधरी के यहाँ सोने चला गया था।

विकास और वटी ओसारे में अकेले थे। चारपाई उनके बोझ से चरमराई थी और वे सहम गये थे। फिर धीरे से लेट गये थे। तकिये पर सिर रखा तो सरसों के तेल की गंध नाक से आ टकराई। बिछौने से भी विचित्र गंध आ रही थी। शायद बच्चों के उपयोग के कारण। पर एक दूसरे के आलिंगन में बंध जाने के कारण वह गंध दूर होती गई थी। शायद उनके देह में ही भर गई हो और उनको पता न चल रहा हो।

बाहर चर्नसिंह और उसकी बहू की घुसर फुसर हो रही थी। पहले मेहमानों के बारे में। फिर खुद के बारे में। और फिर खाट चरमराने लगी थी। एक लय के साथ। लय पहले मन्द थी। कुछ देर बाद वह मध्यम तक आ गई। और फिर वह तीव्र हो उठी थी। तीव्रता एक

निश्चित बिन्दु पर पहुँचकर विस्वर हो गए थी और बाद में की स्थिति और अधिक स्पष्ट हो आई। फिर सब शान्त हो गया था।

अब कोई आवाज नहीं आ रही थी। और दोनों ने राहत की सांस ली थी। पर तभी दोनों को पता चला कि वे स्वयं हांफ रहे थे। भुज पाश और कस गया था। होंठों पर दबाव बढ़ता गया था और विकास की अंगुलियां कुछ टटोलने लगी थीं। ब्रेसरी के बंधन खुल गए थे और दो छोटे पहाड़ों पर विकास की हथेलियां टिक गई थीं। पहाड़ों की सतह चिकनी थी और दृढ़ता लिए थी। कटी ने विकास का सिर झुकाकर पहाड़ों पर टिका दिया था और विकास को उनकी गंध ने उन्मत्त कर डाला था। वह बुदबुदाया था— मादकता। कटी ने उत्तर में दोनों हाथों से उसे दबोच लिया था। विकास की हड्डियों को नीचे के डबल स्पंज पर दबोचे जाने से सुखातिरेक का अनुभव हुआ।

विकास अपने रक्त में एक उबाल अनुभव कर रहा था। उसका अंग अंग उत्तप्त था। सांस भी तेजी से चल रही थी। खाट की चरमराहट के प्रारंभ का दोनों को ही पता नहीं चल पाया था। स्वर क्व मद से मध्यम और फिर तार हो उठे यह चनसिंह और उसकी बहू ही बता सकते थे। पर कटी और विकास इन भौतिक विवरणों से अपरिचित हो रहे। वे सुख की उन सीमाओं में प्रवेश कर गए थे जहाँ वे दो ही थे। अन्य कोई नहीं था। न पुरानी चारपाई थी। न टीसता बिछौना था। चनसिंह या उसकी बहू का सामीप्य भी वहाँ न था। वे तो बस श्रान्ति में विश्रान्ति के अंक में जा पहुंचे थे और सुख निद्रा ने दोनों प्राकृत मानव मानवी का चर्परियां लेना शुरू कर दिया था।

सूरज आसमान में दो मीटर ऊपर आ गया था पर दोनों को पता ही नहीं चला। चनसिंह और उसकी बहू कई बार ओसारे में झांक गए थे किन्तु उन्हें जगाया नहीं। एक दूसरे की बांहों में लिपटे प्राणियों का अनंग करना गुनाह जो होता। वैसे भी कोई काम तो था नहीं कि उन्हें जगाया ही जाय। सोने दो उनको, जब तक जी चाहे, स्वर्ग यह

निश्चय कर चुके थे। बच्चे पहले ही जाग गये थे और बाहर आंगन में खेल रहे थे।

चर्नसिंह खेत की ओर चला गया तो उसकी बहू ओसारे में आकर खड़ी हो गई। वह बच्ची की देह की ओर देख रही थी। अब नग्नता में भी कितनी पवित्रता दीख रही थी? एक एक अंग जैसे सांचे में ढला था। निष्पाप दिव्य नग्नता रंग और उसके संग संग दीप्ति एक आभा जो २० वर्ष में पूर्व ही दिखाई देती है। बच्ची की देह में दीप्ति थी। विशेषतः चेहरे पर। एक अनंत दमके गौर वर्ण कपोल पर आ गई थी। यह विश्राम की सांस से प्रकंपित हो उठती थी।

चर्नसिंह की बहू को बच्ची पर बड़ा प्यार हो आया। वह अपने ऊपर जब्त नहीं कर सकी तो झुककर बच्ची को धीरे से चूम लिया। इससे बच्ची चौंककर जाग उठी। उसने मुड़कर देखा तो चर्नसिंह की बहू बाहर जा रही थी। बच्ची हड़बड़ाकर उठी। उसने देखा कि दस बजे का सा वक्त हो गया है। वह शरम गयी उसे। अब तक वह कैसे सोती रही? और वह भी एक अनजाने जगह पर! उसके अवचेतन ने कोई आपत्ति ही व्यक्त नहीं की। मानो वह अपने घर में ही हो।

उसने विश्राम को जगाना चाहा तो ऊँ ऊँ करते हुए उसने बच्ची को खींचकर सीने पर लिटा लिया। बच्ची ने क्षण भर बाद विश्राम के कान में कहा— चर्नसिंह की बहू देख रही है।

विश्राम ने तुरत ही बंधन ढीला कर दिया और उठ उठा। चर्नसिंह की बहू वहां नहीं था। वह बच्ची की ओर देखकर सिर हिलाने लगा। मानो वह रहा हो—देख लूंगा। पर तब तक घर की मालकिन भीतर आ गई। उसे पता लग गया था कि दोनों जाग गए हैं और चुहल कर रहे हैं।

चाय उसने कहा। दोनों सुनकर कुटी से बाहर निकले। मुँह हाथ धोया और बाहर पड़ी चारपाई पर बैठ गये। तभी बच्ची का दूध

ध्यान आया। उसने मालकिन के पास पड़े गिलास उठाये और मिट्टी से अच्छी तरह माँज लाई। गिलास अब चमक रहे थे। और चनसिंह की बहू उसके चातुर्य पर मुग्ध हो गई थी। साथ ही उसे लज्जा का अनुभव हो रहा था। अब वह चाय के बतन की ओर देख रही थी। बतन बिलकुल काला हो रहा था। शायद महीनों से नहीं मांजा गया था।

कटी ने चाय पीकर वह बतन भी मिट्टी से साफ कर डाला। पर उसकी कालिमा गहरी थी। कई बार साफ करने पर ही जा सकती थी। गीद का छिलका होना तो अभी दस दूर किया जा सकता था। वह इस पर विचार कर रही थी। तभी मालकिन ने पास आकर वह बतन कटी से ले लिया और फिर पास उगी हुई घास उखाड़कर उससे बतन साफ करने लगी। सच ही कालिमा हट गई थी और पीतल नजर आने लगा था। चनसिंह की बहू ने कटी की ओर हँसकर देखा। मानो पूछ रही हो—क्या अब तो ठीक है ना?

कटी भी हँस पड़ी और कहने लगी— तुम तो बहुत होशियार हो। इसे रोजाना क्यों नहीं साफ करती हो?

टेम नहीं चनसिंह की बहू ने उत्तर दिया और फिर कुछ सोच कर हँस पड़ी। भला उस समय की क्या कमी थी?

कटी और विकास ने उसकी हँसी में योग दिया और फिर पूछा—चनसिंह कहाँ गया है?'

खेत संक्षिप्त सा उत्तर।

विकास ने खेत का रास्ता पूछा तो बड़े बच्चे को साथ कर दिया। खेत दूर नहीं था। बड़ा भी नहीं। वस्तुतः बहुत छोटा था। करीब दो बीघे का। मक्का बोया था उसमें। और मक्का करीब करीब पक चुका था।

कटी और विकास को देखकर चैनसिंह लपकता आया। 'जाग गये बाबू जी!" उसने स्नेहिल स्वर में पूछा, चाय वाय पी या नहीं?'

दोनों ने उसे बताया कि चाय पी आये हैं। अब विकास ने उसे

एक ओर ले जाकर कुछ पूछा। चैनसिंह ने गर्दन हिलाई समझने की मुद्रा म। उसने पास की पहाड़ी की ओर सकेत किया। यहाँ तो इसी तरह काम चलाया जाता है। ओपन लैवेटरी' के सकेत से विकास चौंक उठा। विशेषत कटी के खयाल से। पर कटी ने उसे यह कहकर आश्वस्त कर दिया कि राम म रहते समय रोमन लागा का अनुकरण करना पड़ता है।

फिर वे घर लौट आये थे। चैनसिंह साथ था। उसकी बहू ने दाल रोटी के अलावा चावल भी बनाये थे। शायद पड़ोस से माँग लाई थी। आलू का भुरता भी तैयार किया था। बतन भी साफ नजर आ रहे थे। गाव की दृष्टि से यह बड़ा ही भव्य लच था और कटी तथा विकास ने खाते समय आभास भी यही दिया। वे बार बार खान की प्रशसा कर रहे थे और गृहिणी की ओर साभिप्राय देख रहे थे। वह बेचारी इतनी प्रशसा आचल म समेट नही पा रही थी। और फिर तो उसने शर्माकर आचल म मुँह ही छिपा लिया। उसने पहले कभी इतनी प्रशसा नही सुनी थी। और आज । उसे कटी और विकास बहुत ही अच्छे लगे।

भोजन म निपटे तो कटी ने गृहिणी को काम समेटने म मदद कर दी और फिर उसके साथ ओसारे म बात करने लगी। विकास बाहर बैठा चनसिंह से बात कर रहा था।

क्यो चनसिंह? तुम्हारा खेत तो बहुत छोटा है। गुजारा कसे होता है?' उसने जानना चाहा था।

छोटा तो है ही। पर उसी से काम चलाना पड़ता है। रूखा सूखा मिल जाता है बस। चैनसिंह ने हकीकत छिपाई नही।

विकास स हकीकत छिपी थी भी नही। एक खयाल दिमाग म कौंधा तो पूछने लगा— यहाँ जमीन महँगी है या सस्ती?'

बहुत महगी है बाबू जी! पचास रुपया बीघा है। भला इतनी महँगी जमीन दुनियाँ म और कही भी है?' कहते समय वह समझ

पराठे। गृहिणी तो बेचारी देखती रह गई थी। उसे यह सब बनाना आता ही नहीं था। पर वह दख जरूर रही थी। सीखने की कोशिश भी कर रही थी।

खाना बढ़िया बना था। सब हाथ चाटते रह गये थे। प्रशंसा करने कराने की जैसे फुर्सत ही नहीं मिली किसी को। और कटी चाहती भी नहीं थी।

दूसरे दिन विकास और कटी ने जाने की इजाजत माँगी तो चैन सिंह की आँखें भर आईं। उसकी बहू तो कटी के गले लगकर सुबकने ही लगी। दो दिन का परिचय कितनी घनिष्ठता में बदल सकता है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण कटी और विकास को मिल गया था। दोनों ने शीघ्र ही लौटने की बात कही तो चनसिंह और उसकी बहू न आसू पोछ डाले थ। पर उह पूरा विश्वास नहीं हो रहा था।

चैनसिंह कह रहा था — पद्रह बीस दिना म बफ गिरने लगेगी और घाटी बद हो जायेगी। फिर आप आयेंगे कैसे बाबू जा !

विकास न इस पहलू पर गोर नहीं किया था। पर अब बात बिगाडनी नहीं थी। अत जवाब दिया— वह ता मुझे भी मालूम है। हम दोना बफ गिरने से पहले ही लौटने की कोशिश करगे। पर यदि देर हो जान से रास्ता बद हा गया तो कुछ दिना बाद आ जायेंगे। हा ! इसका अथ यह नहीं कि खेत पर काम ही शुरू न हो। यह कहकर उसन ५००) रु चनसिंह का दे डाले। फिर बोला— देखा चनसिंह ! खेत का काम तुरत शुरू कर देना। मुझे तुम पर विश्वास है। जब आऊँगा तुमस आधा हिस्सा ल लूँगा। क्या ठीक है न ? लाओ मिलाओ हाथ।

चनसिंह न विकास स हाथ मिलाया और फिर उसक गल स लिपट गया। विकास न बडी कठिनाई स विदा ली। खच्चर वाला बाहर प्रतीक्षा म खडा था। कटी और विकास खच्चर पर बठकर चल पडे। मुडकर देखा—चनसिंह और उसकी बहू उह ही देख रह थ।

रास्ते मे कटी ने पूछा — "यह जमीन वाली बात समझ म नही आई विकास ! क्या यहाँ रहने का फैसला कर लिया है ?"

विकास ने देखा कि खच्चर वाला पास म नही है। तो हँसकर बोला— किसको पता है कि कलकत्ता जाने के बाद क्या होगा ?" यह तो बस चैनसिंह की सहायता के लिए कुछ करना था। अब कर दिया। बेचारा कितने कष्ट म था ? और कितना भला ? हा ! कागजात भी वही छोड आया हू।"

कटी ने प्रशसा के अन्दाज मे विकास की ओर देखा। फिर कृत्रिम गुस्सा प्रगट करते हुए बोली — "मुझसे पूछा क्या नही श्रीमान् जी ? क्या आप भूल गये कि मुझसे आपकी शादी हो चुकी है ? आपको मुझसे पूछे बिना यह नही करना था।'

विकास भी उसी अदाज मे कहने लगा — अजी श्रीमती जी ? आपसे इसलिए नही पूछा कि कही आप दस बीघे की जगह बीस बीघे की बात न कह दें।

कटी खिलखिला उठी थी। विकास भी अट्टहास कर उठा। खच्चर वाले ने मुडकर देखा—क्या बात है ? पर कुछ भी दिखाई नही पडा तो पुन आगे बढ गया।

रास्ता मस्ती म कट गया था। अधेरा होते होते अपने होटल म आ पहुचे थे। उन्हे देखकर होटल मनेजर ने गहरी की सास ली थी। अब उसे विश्वास हो गया कि कमरे का किराया आदि वसूल करने के लिए उसे ताला नही तोडना होगा। आजकल बारह आने म कम का ताला आता भी तो नही।

१८

कँटी और विकास दूसरे दिन ही चंबा से रवाना हो गये थे। कुछ दिन धर्मशाला में ठहरे। फिर वहाँ से श्रीनगर चले गये थे। पहलगाव में एक तंबू में डेरा जमाया और फिर इधर उधर भ्रमण के लिए जाते रहे। अमरनाथ की भी यात्रा कर आये।

ये दिन इन्होंने तनाव हीनता में बिताये थे। पागी के संक्षिप्त से दो दिनों में उन्होंने जीना सीख लिया था। वे जानते थे कि भविष्य निकट आ रहा था। किंतु अब यह भविष्य पुराकथात्मक दैत्य की आकृति में नहीं बल्कि एक शून्य के रूप में आना था। इसकी रूप विहीनता उन्हें आतंक से मुक्त रखे थी। और वे जी रहे थे।

शीत प्रदेश की जलवायु ने उन्हें नया स्वास्थ्य भी दिया था। दिन भर के भ्रमण के कारण उन्हें थकान और क्षुधा की विचित्र सी अनुभूति होती थी और उठकर खाने के बाद एक दूसरे के आगोश में थकावट दूर करने का प्रयत्न करने लगते थे। वे एक दूसरे के चेहरे पर आ रही लालिमा को देखकर अनुमान लगा पा रहे थे कि उनके स्वास्थ्य में किस क्रमिकता से अंतर आ रहा है। कँटी के कपोलों पर अनायास आये लाल धब्बों को तो वह मजाक उड़ाता था—कहो आज किसने मसल डाला इन्हें? और वह बड़े प्यार व नखरे से धत् कहती थी। इस पर वह स्वयं हलके से उन कपोलों को सहला देता था। मानो मसल रहा हो।

फिर वह भविष्य एक वर्तमान बन गया था और वे कलकत्ता की

ओर चल पड़े थे। बिना किसी अंतर्द्वन्द्व के। बिना किसी विभीषिका के। जीवन में उन क्षणों को एकान्तिक रूप से भोग लेने पर जीवन में कुछ शेष तो रह नहीं गया था, जिनका व्यामोह हो कि जिनके लिए संत्रास को ढोते फिरें।

हवड़ा स्टेशन पर मि. सक्सेना उन्हें लेने आ गये थे। दो बड़े एडवोकेट उनके साथ थे। बैरिस्टर मुकर्जी और बैरिस्टर घोष। दोनों कलकत्ता हाइकोर्ट में प्रैक्टिस करते थे। दोनों ने परामर्श के लिए एक-एक हजार रुपये लिये थे और दो हजार रुपये एक-एक दिन की पैरवी के लिए निश्चित किये थे। खर्चा अलग।

मि. सक्सेना ने परिचय करवाया और फिर वहां से चनकग ग्रैंड होटल आये। मि. सक्सेना वहीं ठहरे थे। वहां से तैयार होकर अनिल के दफ्तर की ओर गये। अनिल प्रतीक्षा कर रहा था।

मुकर्जी ने तपाक से हाथ मिलाया और कहा— हमें आने में विलंब तो नहीं हुआ मि. मजूमदार?

ोर ंगा। समर्थन के लिए।

'शुक्रिया। मैं हार्दिक धन्य हुई थी पार्टी। अगर आज ना रौशन इंतज़ार इस शुरू थी। आप न जाने कहाँ ही शुरू कर देती।

की शुरू की हुई पटिया शुरू करना में यहाँ। यह मि. सक्सेना और आप के दफ्तर में ... हो उठा था। फिर बोला— वाकर और ... कल पेश किया जायगा। आप सब उस समय यहीं उपस्थित रहें।

यह कहकर पुलिस उठ गया था। मि. सक्सेना और उनके साथ के वकील सभी वहाँ से बाहर आ गए। आप और मुकर्जी ने बरामदे में खड़े होकर कानूनी पहलू पर परस्पर विचार किया और फिर दोनों बैरिस्टर दूसरे दिन प्रातः होटल में प्रातः ६ बजे आने की कहकर चले गये। वे तीनों टैक्सी में बैठकर होटल पहुँचे। रास्ते में मि. सक्सेना ने बताया कि मुकदमे में जान नहीं है। परिस्थितिजन्य साक्ष्य के अतिरिक्त पुलिस के पास और कोई प्रमाण नहीं है। वे प्रत्यक्ष गवाहों के बिना कुछ भी प्रमाणित नहीं कर सकेंगे। और तुम दोनों की गवाही एक दूसरे के विरुद्ध इस्तेमाल की नहीं जा सकती। हाँ जमानत कल हो जायगी। इसके लिए चिन्ता की गुंजाइश नहीं है।

मि. सक्सेना की बातों से लग रहा था कि दोनों बैरिस्टरों से उनकी काफी बातें हुई हैं। और वकील जितना आश्वासन दे सकते हैं उतना उन्होंने दिया भी है। बटी और विकास यह सब महसूस कर रहे थे। पर आश्वासन उन्हें नहीं मि. सक्सेना को चाहिए था। और मि. सक्सेना पूर्णतः आश्वस्त थे। कम से कम बाह्य रूप में।

दूसरे दिन वे सब कोर्ट में पहुंच गये थे। ११ बजे पुलिस ने इस्तगासा पेश किया और मुलजिमान की तरफ से जमानत की दरख्वास्त की गई। दरख्वास्त में दो मुद्दे विशेष थे। एक तो यह कि इल्जाम केवल शक पर लगाया गया है। दूसरे यह कि दोनों मुल्जिमान एक माह की पूर्व सूचना के बावजूद सही वक्त पर अदालत में हाजिर हो

गये हैं। यदि उन्हें भागना होता तो कभी के भाग गये होते।

पुलिस ने विशेष आपत्ति नहीं की और कोर्ट ने जमानत की अर्जी मंजूर कर ली। इसके तुरत बाद दोनों बैरिस्टरों ने एक कानूनी नुक्ता उठाया— रवीन्द्र सरोवर कांड की जाँच एक कमीशन द्वारा सम्पन्न की गई थी। कमीशन ने यह निष्कर्ष निकाला था कि रवीन्द्र सरोवर पर कोई अप्रिय घटना नहीं हुई। अब इस मुकदमे के चलाये जाने पर ऐसे तथ्य सामने आ सकते हैं जिनसे कि कमीशन की रिपोर्ट का खंडन होता हो। क्या यह कोर्ट उस स्थिति का सामना करने को तैयार है?' लोअर कोर्ट का न्यायाधीश यह सुनकर चौंका था। उसने जल्दी जल्दी इस्तगासे के कागजात पर निगाह डाली और फिर पुलिस के पी आई से दो चार बातें पूछीं। इसके बाद इस कानूनी नुक्ते का निर्णय एक सप्ताह बाद देने का एलान किया। पुलिस को भी सलाह दी गई कि वे तब तक इस मुकद्दमे को दायर करने की अनुमति सरकार से प्राप्त कर लें।

विकास और कटी इस कानूनी नुक्तों से आश्वस्त हो सकते थे। मि सक्सेना तो इस प्रथम विजय से फूले नहीं समाये। दोनों बैरिस्टर बाहर शान्त थे। आन्तरिक रूप से प्रसन्न भी रहे हों तो पता नहीं। फिर वे दोनों दूसरे मुकद्दमे निपटाने के लिए चले गये।

ये तीनों अपने होटल में लौट आये। एक सप्ताह की पूरी अवधि के लिए वे मुक्त थे। उन्हें कुछ करना भी नहीं था। किन्तु वकीलों के जिम्मे थी। व्यय इनके जिम्मे। दूसरे दिन अखबारों में इस मुकद्दमे की खबरें और अभियुक्तों के चित्र मुख पृष्ठ पर छपे थे—

फिल्मी हीरो हीरोइन गिरफ्तार
रवीन्द्र-सरोवर काण्ड
की
घृणित सन्ध्या का एक और पृष्ठ
अनावृत

आज लोअर कोर्ट में पुलिस ने हत्या का एक मुकद्दमा पेश किया। आरोप पत्र के अनुसार रवीन्द्र सरोवर काण्ड की रात्रि को फिल्मी हीरो विकास और हीरोइन कटी ने सलीम नामक एक नागरिक की हत्या कर डाली और पुलिस से बचने के लिए एक प्रसिद्ध नर्सिंग होम में दाखिल हो गये। वहां से ये दोनों बंबई भाग गये और 'रात एक सरोवर की" फिल्म में हीरो हीरोइन बन बैठे। रवीन्द्र-सरोवर पर शूटिंग देखते समय ए. एस. पी. अनिल मजूमदार को कुछ सन्देह हुआ और महीनों की जांच पड़ताल के बाद यह मुकद्दमा दायर किया गया है।

कोर्ट ने दोनों अभियुक्तों को पच्चीस पच्चीस हजार रुपये की जमानत लेकर रिहा कर दिया है।

अभियुक्तों के वकीलों ने कानूनी नुक्ता खड़ा करके लोअर कोर्ट द्वारा इस मुकद्दमे की सुनवाई को गलत करार दिया है।

इस नुक्ते पर कोर्ट का फैसला अगले सप्ताह होगा।

सारे महानगर में इस खबर की चर्चा थी। कोई कहता था—"अब जनता को पता चल गया कि कमीशन की जांच कितनी खोखली थी? कमीशन की रिपोर्ट तो कहती है—वहाँ उस दिन कुछ हुआ ही नहीं। फिर यह हत्या कैसी?'

दूसरा वाला— अरे! आजकल के ये हीरो हीरोइन भी ऐसे ही हैं। सदा मार पीट और खून खराबे की एक्टिंग करते ही रहते हैं। बस उस दिन एक असली मर्डर करके भी देख लिया कि बचते हैं या नहीं? आखिर सात छः महीने तो पुलिस को पता नहीं लग पाया। और अब भी इन पुलिस वालों का क्या लगता है? कुछ ले देकर छूट जायेंगे। मुकद्दमे में जान ही नहीं रखेंगे तो सजा होने का सवाल ही नहीं उठता।'

एक और तीसमारखाँ कहने लगा—'मैं इन पुलिस वालों की रग रग पहचानता हूँ। कल ही एक दोस्त ने मुझे बताया है कि हीरोइन कटी को कल उस पुलिस अफसर ने अपने दफ्तर में बुलाया था। हीरोइन का बाप खुद उसे वहाँ छोड़ आया। करीब एक घंटे वह पुलिस अफसर के कमरे में रही। अब आप ही बताइए—क्या कर रही होगी वहाँ ?" यह कहकर वह आँख मारकर मुस्कुरा दिया।

अन्य लोग अट्टहास कर उठे। अब वे कानूनी नुक्ते को लेकर बहस करने लगे। सब अपने आपको वकालत के क्षेत्र में सी आर दास और मोतीलाल नेहरू समझ रहे थे और इतनी गंभीरता से बोल रहे थे मानो जज को संबोधित कर रहे हों।

ज्यों ज्यों बहस में तेजी आती गई, लोगों के तेवर बदलते गये। बहस का बिन्दु लगातार बदलता गया और फिर आधे लोग अभियुक्तों के पक्ष में हो गये। आधे विरुद्ध। अब केवल बातों से काम नहीं चला। व्यंग्य से गाली गलौज और गाली गलौज से हाथा पाई और फिर मार पीट।

हुड़दंग की खबर पाकर पुलिस आई और दस बीस को पकड़ ले गई। पर जनता की जबान नहीं पकड़ी जा सकती। वह और जोरों से इस मुकद्दमे की चर्चा करने लगी।

ग्राड होटल में भी अखबार पढ़ा गया। जिस बात की आशंका थी वही हो रहा था। यह मुकद्दमे की पब्लिसिटी ही नहीं थी। इसमें विकास और कटी के चरित्र पर भी कीचड़ उछाला गया था। इसका जवाब देना या खंडन करना न संभव था, न उचित। कम से कम अभी तो नहीं। जब रिहा हो जायगे तो लंबा वक्तव्य देकर कीचड़ को धो डाला जायगा। पर इसकी भी शायद आवश्यकता न पड़े। क्योंकि तब तक तो पब्लिक सब कुछ भूल जायगी। जनता की स्मरणशक्ति कमजोर जो होती है। फिर वक्तव्य में उसे याद करा ताजा करने से क्या लाभ ? तो जो होता है, होने दो।

मि सक्सेना सोच रहे थे कि दोनों कहीं जायें तो अच्छा। वर्ना होटल में पड़े पड़े तो उनका दम घुट जायेगा। ऊपर से अखबारों की यह बेहूदगी। उन्होंने दोनों को कहा तो जवाब मिला—"यही ठीक है। बाहर मजमा जो लग जायेगा। बस हफ्ते दो हफ्ते की तो बात है। और वैसे भी बाहर इतना घूम आये हैं कि कलकत्ता में घूमने फिरने की जगह ही नजर नहीं आती।'

मि सक्सेना ने जिद नहीं की। वे स्वयं तैयार होकर बाहर निकले। उनके लिए न खुद की पाबन्दी थी। न दूसरा की। उलटी सीधी पब्लिसिटी भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती थी। पर उन्होंने बाहर निकलने से पहले बेटी और दामाद दोनों को बाह्य संपर्क का निषेध कर दिया।

होटल के बाहर कुछ मनचलों ने आवाजें कसी थीं किंतु मि सक्सेना ने उधर ध्यान ही नहीं दिया। एक टैक्सी में बैठकर जू की ओर चल पड़े। वहाँ पहले कई बार जा चुके थे। बेटी के साथ। या फिर किसी मेहमान के साथ। पर आज वहाँ अकेले ही जा रहे थे।

उनके पास फालतू समय काफी था और जू के एक एक स्थल पर थोड़ी थोड़ी देर ठहरने से भी सारा दिन कट सकता था। यही उन्हें करना था। दिन काटना था।

जू में सारा दिन बिता चुकने पर उन्हें लगा कि इन पशु-पक्षियों का जीवन भी अपने आप में पूर्ण है। उनकी आवश्यकतायें इनकी सीमाओं के भीतर ही होती हैं और इन्हें ये बढ़ाते नहीं। उच्च अभिलाषायें इन्हें मानव की तरह सुलाती नहीं और सहज अभिलाषाओं में क्षेत्र में ये मन का दमन नहीं करते। जो चाहते हैं कर लेते हैं। जितना चाहते हैं पा लेते हैं। अधिक चाहते नहीं अधिक करते नहीं अधिक पाते नहीं। चाह और प्राप्ति के बीच किसी व्यवधान या बाधा को न पसन्द करते हैं न ही सहते। ये नहीं ठहरेंगे बाधा को हटाना पड़ेगा। वर्ना इन्हें हटा दिया जायेगा।

कभी कभी बाधायें सरलता से नही हटनी। दोनों तरफ सहज द्वन्द्वाओं का सघर्ष हो जाता है। सामान्यत क्षुधा को लेकर। चाहे वह क्षुधा पेट की हो चाहे इन्द्रियों की। क्षुधा का प्रश्न अहम प्रश्न है। सीधा अस्तित्व स जुडा प्रश्न। इसम समझौते की गुजाइश नही रहनी। दो प्राणियों को अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए दूसरे का अस्तित्व मिटाना पडता है और इस आधार पर दो अस्तित्वों का सघर्ष मरणान्तक होता है। उस दृष्टि की प्राप्ति तभी सभव होती है।

इनके सघर्ष मे कोई मध्यस्थता नही करता। अन्य प्राणी केवल दर्शक हो सकते है। कम से कम सघर्ष की समाप्ति तक। बाद म कोई विजेता से भिड जाये तो भल ही। किंतु पहले नही, और बाद मे नही।

विजेता पर कोई मुकद्दमा नही चलता। कोई दण्ड नही मिलता। पुरस्कार या मडल नही मिलते। मिलती है बस एक समाप्ति। सघर्ष की समाप्ति। अस्तित्व के प्रति सकट की समाप्ति। किन्तु यह समाप्ति भी एक नये सघर्ष का प्रारम्भ होती है। अस्तित्व का सकट कभी समाप्त नही होता। हाँ ! अस्तित्व समाप्त हो जाता है। और इस समाप्ति को टालने के लिए सघर्षरत रहना पडता है।

जगल में ऐसे कानून का प्रावधान ही नही होता जो दूसरो को सरक्षण दे पाय। प्राणी को अपनी रक्षा स्वय करनी पडती है। जो इसमें असावधानी करता है, उसे अस्तित्व स वचित होना पडता है।

इसके ठीक विपरीत है यह सभ्य ससार। इस सभ्यता मे नियम ही नियम हैं। कानूनों की इयत्ता नही। दण्ड विधान तो कदम कदम पर है। और सरक्षण ? वह किताबो मे है। कानून की मोटी मोटी किताबो म। पर सरक्षण इनके बाहर है ही नहीं। आज कोई आपकी जेब काट ले, चाहे नाक काट ले, या फिर गर्दन काट ले। आप बदले म उस व्यक्ति की न जेब काट सकते हैं न ही नाक। और गर्दन का तो प्रश्न ही नहीं उठता। आप केवल उसके विरुद्ध शिकायत कर सकते हैं। सभव है, उसको कोई सजा मिल जाय, यद्यपि यह सभावना भी पाँच प्रतिशत

से अधिक नहीं पर गिरायत करने पर भी आपकी जेब, नाक या गदन वापस नहीं की जायगी। उसकी जेब, नाक और गदन भी बहुधा सुर क्षित रहेगी। उनसे उसे बर्षों तक सरकारी आतिथ्य मिलेगा। आतिथ्य म कमी हो तो अपराधी शिकायत कर सकता है। हड़ताल कर सकता है। मार पीट भी। वाडरा का कत्तव्य हो जाता है कि उनसे पिट और उफ न करें।

जगल का कानून इतना नरम नही होता। वहाँ अपराधी का दण्ड मिलता है। उसी मात्रा म और बिना विलब क। वहा दण्ड की सभा वना नही नियति होती है। वहाँ ला आफ एविडेंस लागू नही होता। वहाँ अपराध स्वत साक्षी होता है और अपराधी को दण्ड मिलता ही है, बशर्ते कि वह सघष म विपक्षी से तगडा सिद्ध न हो जाये।

मि सक्सना दिन भर जू मे घूमते रहे और इन निष्कर्षों पर पहुँचते रहे। उन्ह बडी कचट हो रही थी कि आज के सभ्य कानून मे न किसी को सरक्षण प्राप्त है और न कोई न्याय ही। आज कोई कानून के इन रक्षको से पूछे कि कटी और विकास न क्या अपराध किया है? यदि वह दो कौडी का बदमाश कटी की इज्जत लूट लेता और फिर उसे मारकर झील मे फेंक जाता ता क्या यह कानून उस बदमाश को सजा दे पाता? इस कानून ने कितने बदमाशा का उस दिन की बदमाशिया पर सजा दी? कानून के व्याख्याता तो उलटे यह कहते हैं कि वहाँ न कोई बदमाश था और न कोई बदमाशी हुई।

तो कटी और विकास ने जा देखा और जो कटुतायें भोगी हैं वह सब तो है असत्य? और सत्य है वह सब जो राजनीति स निर्दिष्ट होकर ढूँढा जाता है कहा जाता है और लिखा जाता है? इसीलिए तो इन दोनों को ता कटघर म खडा कर दिया गया है और सकडों बदमाश और उनके सफेदपाश आका लाग मूँछों पर ताव दे रहे हैं तथा फिर किसी नय सरोवर-काण्ड की योजना बनाने मे लगे हैं। कुछ तो पहले ही बन चुकी हैं। पूर्ण सफलता क साथ। दो वष पहले ३१

दिसम्बर की अधरात्रि के समय दिल्ली के कनाट सर्कस में एक महिला के साथ हुए सामूहिक बलात्कार के प्रत्यक्षदर्शी तो वे स्वय थे। मि सक्सेना ने देखा था कि गुण्डो ने वह कार रोक ली थी। और उसमे बठी महिला को घसीटकर सडक पर डाल दिया था। और गुडों मे पिटा हुआ महिला का पति खून के घूँट पीकर रह गया था। सुना था, महिला ने दूसरे दिन आत्महत्या कर ली थी। पर कोई गुडा नही पकडा गया। किसी बदमाश को सजा नही मिली। अरे हा ! वहा कुछ हुआ ही नही ! ! !

कुछ होगा तो उनको, जो आत्म सरक्षण का प्रयत्न करते हैं और फिर भाग्य से बच जाते हैं। नही, भाग्य से नही, दुभाग्य स ! क्योंकि बच जाने पर कानून के हाथ उनका गला थाम लेंगे। बदमाश को कोई छुयेगा भी नही। चाहे वह बच जाये तो और न बचे तो !

सदा से यही होता आया है। सभ्यता ने मानव को शारीरिक दृष्टि से कमजोर बना दिया और सभ्यता के कानून ने तो मानव को पगु ही बना डाला। अब यह लुज-पुज मानव न स्वय की रक्षा करने मे क्षम है और न ठुक पिट कर न्याय प्राप्त कर सकता है।

अब वह कैसे तो जिये और कैसे अपना अस्तित्व बनाये रखे ? मि सक्सेना को इन प्रश्नो का उत्तर नही सूझ रहा था। उनका ध्यान जक लडन की प्रसिद्ध कहानी Call of the wild की ओर जा रहा था। क्या उस कहानी के कुत्ते की तरह यह मानव भी उस आदिम जीवन की ओर उ मुख होगा, जहा वह आत्मरक्षा मे समथ होगा और दण्ड देने का अधिकारी भी।

शायद मानव इसके लिए प्रस्तुत नही है। सभवत उसका क्षोभ, उसकी उत्पीडन जन्य घुटन और अस्तित्व का सकट, अभी ऐकान्तिक नही हो पाया है। जब यह स्थिति आयेगी, तो विवशता उसको कचोटेगी। अतस् की आवाज चिल्लाहट मे बदल जायगी और उसकी हर साँस म मृत्यु की सडांध एव अपरिहाय दबाव लेकर आने लगेगी।

तब मानव क्या करेगा ? वस्तुस्थिति से कब तक पलायन करता रहेगा ? आत्म रक्षण की कौन सी पचवर्षीय योजना उसे भुलावा दे पायगी ? कोई भी नही । पर क्या नही ?

इसलिए कि मानव तब तक टूट चुका होगा । अपनी क्षमताओं की ससीमता उसे निराश कर चुकी होगी । विरोधो और समस्यों की विशालता के सामने उसकी स्वतीय शून्यता उसे और अधिक लघु मानव सिद्ध कर चुकी होगी । और वह कुछ नही कर पायेगा । वह घुटने डाल देगा और विरोधो के सामने नतमस्तक हो जायगा ।

मि सक्सेना मोटी मोटी सू के फाटक के पास आ पहुचे थे । उन्होंने कैंटीन म जाकर चाय पी की गोली ओर तभी उनका ध्यान अपनी कटी हुई जेब पर गया । अच्छा हुआ कि चाय नहीं पी वे सोच रहे थे । वर्ना । हाँ ! उन्होंने जेब कटने की शिकायत नही की !

बाहर आकर टक्सी म बठे और होटल चले आये । वहाँ पता चला कि अनिल का फोन आया था । दोनो को बुलाया था—होम कमिश्नर के पास चलने के लिए । उ होने कह दिया था कि मि सक्सेना के लौटने पर आ सकेंगे । यह बात तीन घटे पहले की थी ।

मि सक्सेना ने बरिस्टर घोष और बरिस्टर मुखर्जी को फोन करके होटल म बुलाया । उनके आने पर अनिल के टेलिफोन की बात कही ।

इस पर घोष उछल पडे— मजा आ गया । सरकार को भी पता चलेगा कि हम कहीं म पाना नही पडा है । लगता है मुकद्दमा वापस लेने की सोची जा रही है और सरकार चाहती कि हम कुछ लिखकर दें ।'

विकास न पूछा —'सरकार क्या लिखवाना चाहेगी ?'

उत्तर मुखर्जी न दिया — यही कि मुकद्दमा वापस लेने पर तुम लोगो की ओर म मिनिस्टर पर मानहानि का मुकद्दमा दायर नहीं किया जायगा ।"

मि सक्सेना न गम्भीर स्वर म काम लिया— आप क्या करते

की सलाह देते हैं ?"

दोनों बैरिस्टरों ने राय दी कि लिखकर कुछ भी नहीं देना है। होम कमिश्नर को कह दिया जाये कि सरकार बिना शर्त मुकद्दमा वापस ले ले। बाद को देखा जायेगा कि मानहानि का मुकद्दमा दायर करना है या नहीं।

विकास ने अनिल को फोन किया और कहा कि वे आने को तैयार हैं। पर अच्छा हो कि वह पुलिस वैन आये, ताकि रास्ते में लोग बाग परेशान न करें।

अनिल आ गया था। पुलिस वन और सशस्त्र पुलिस के साथ। अनिल और कटी उसके साथ बैठ गये और मि सक्सेना टैक्सी में बैरिस्टरों के साथ बैठकर उनके पीछे पीछे चले। रायटर्स बिल्डिंग दूर नहीं थी। अन पांच मिनट में होम कमिश्नर के दफ्तर में पहुँच गये।

कमिश्नर ने पांच मिनट प्रतीक्षा करवाई और फिर उन्हें कमरे में बुला लिया। वह एक बुजुर्ग और संजीदा सा दिखाई दे रहा था। उसने सबको बैठने को कहा। फिर बिना भूमिका के बोलने लगा—कल जो मुकद्दमा लोअर कोर्ट में इन दोनों (कटी और विकास की ओर इंगित करते हुए) के विरुद्ध गलती से दायर हो गया है, सरकार उसे वापस लेने को तैयार है। आप लोगों को इसमें आपत्ति तो नहीं है ?

बैरिस्टर घोष ने कहा—'नहीं।'

कमिश्नर जैसे आश्वस्त हो गया। क्षणार्ध में बाद बोला—'तो आप लिखकर दे दीजिये कि

बैरिस्टर मुकर्जी बात काटते हुए बोला— वी वांट गिव एनीथिंग इन राईटिंग।"

कमिश्नर ने उसकी ओर देखा। करीब पाँच सेकंड तक। फिर बारी बारी से सबकी ओर। वह समझ गया कि ये सब तय करके आये हैं और टस से मस नहीं होंगे। उसने प्रयास करना व्यर्थ समझा।

फिर एक बात कही—"ठीक है। मैं आपकी स्थिति का अनुमान लगा सकता हू। पर यह जानना चाहूगा कि आपका अगला कदम क्या होगा ?"

बैरिस्टर घोष ने उत्तर दिया—"वी वुड थिंक अबाउट इट आफ्टर वड स। बट इफ यू वाट ए डफिनेट कमिटमेट यू शल हैव टु कमिट टू-दैट द विदड्रामल आॅफ द केस इज फाइनल एण्ड फॉर एवर।

कमिश्नर ने इस बात को स्वीकार कर लिया और अनिल को आदेश दिया कि मुकद्दमे की वापसी मे इसका उल्लेख करना न भूले। उसने सैल्यूट के साथ यह आदेश ग्रहण किया।

फिर कमिश्नर ने सबसे हाथ मिलाते हुए कहा—'नो इल फीलिंग प्लीज।" उन लोगो ने इस सौहार्द की वास्तविकता को अनुभव किया और इसकी चर्चा करते हुए होटल पर लौट आये। अनिल ने जाने से पहले कष्ट के लिए क्षमा याचना की। कटी और विकास की ओर उसने विशेष दृष्टि डाली थी और उन दोनो तक इसका अथ सप्रेषित हो गया था।

अनिल के जाने के बाद मि सक्सेना और दोनो बैरिस्टर विचार विमश करते रहे। बरिस्टरो ने कहा कि सिविल सूट दायर करन के लिए पर्याप्त कारण विद्यमान नही है। इसके अतिरिक्त ऐस मुकद्दमो का निर्णय होने मे सुदीघ अवधि तक व्यय और प्रतीक्षा करनी पडती है। और फिर निर्णयो के विरुद्ध अपीलो का रास्ता तो खुला ही है। सक्षेप मे वे ऐसा मुकद्दमा दायर करने के पक्ष म नही थे।

मि सक्सेना उनके सत्परामश स सहमत थ और सतुष्ट भी। उन्होंने दोनो बरिस्टरो को पाँच पाँच हजार रुपय का चैक भेंट किया और वे दोना यह कहकर चले गये कि आवश्यकता पडने पर उन्हे याद अवश्य करें।

दूसरे दिन मुकद्दमा वापस ल लिया गया और लोअर कोर्ट ने दोनो अभियुक्तो को लगाये गये आरोपो स सदा सवदा के लिए मुक्त कर

दिया। उस समय कोर्ट में अनेक रिपोर्टर्स वहां मौजूद थे। उन्होंने कटी और विकास के अनेक चित्र खींचे और उनमें मुक्ति प्राप्त करने की प्रतिक्रिया जाननी चाही। पर दोनों ने कह दिया— नो कमेंट्स।

दूसरे दिन अखबारों में फिर से दोनों के फोटो छपे थे। दोनों को मुक्त किये जाने के बारे में स्वतन्त्र टिप्पणियाँ छपी थीं। किसी ने मुकद्दमे की वापसी राजनैतिक प्रभाव के कारण संभव बताई थी और किसी ने लिखा था—साक्षी के अभाव में मुकद्दमा खारिज होना ही था। अतः ऊपर के अधिकारियों ने बुद्धिमत्ता से काम लेते हुए मुकद्दमा वापस लेने का आर्डर दे डाला'। एक समाचार पत्र ने सत्य का अन्वेषण कर डाला और लिखा— अभियुक्तों के बैरिस्टरों ने एक नुक्ता उठाया था और सरकार को अहसास करा दिया था कि यह मुकद्दमा चलाना एक बहुत बड़ी कानूनी भूल है। मुकद्दमा इसीलिए वापस लिया गया होगा।"

कुछ भी हो। मि. सक्सेना, कटी और विकास तीनों प्रसन्न थे। इसके उपलक्ष्य में मि. सक्सेना ने एक बड़ी पार्टी का आयोजन किया और इसमें पुराने मित्रों को आग्रह के साथ बुलाया। कटी ने भी अपनी सहेलियों को बुलाना चाहा। क्रिस्टी आ गई थी पर मोतिमा का पता नहीं चला। विकास ने लाला रामदास और विमला को आमन्त्रित किया। पर वे नहीं आये। उन्हें तो विकास की शक्ल से ही चिढ़ हो गई थी।

१९

वे सब दूसरे दिन बबई प्रस्थान करने वाले थे। किन्तु उन्हें प्रात ही तार मिला कि अगले शुक्रवार को कलकत्ता मे फिल्म का प्रीमियर शो होगा, जिसमे हीरो हीरोइन की उपस्थिति चाही गई थी। अत एक हफ्ते तक रुकने का प्रोग्राम बन गया।

तभी विकास को एक बात सूझी। क्यो न इसी बीच गाँव का एक चक्कर लगा लिया जाये? माँ बाप को बबई स हवाई जहाज द्वारा बुलाया जा सकता है और उनकी चिर आकाक्षा को पूरा किया जा सकता है। बस यह सोचकर उसने तुरत तार दिया और तीसरे दिन प्रात उसके माँ बाप कलकत्ता आ पहुचे। उन्ह यह जानकर प्रसन्नता हुई कि व पुत्र और पुत्रवधू के साथ गाँव जा रहे है। सच ही उनका हर्ष छिपाय नही छिप रहा था।

विकास ने एक इपाला कार का प्रबन्ध कर लिया। गाव के लिए आवश्यक वस्तुयें भी खरीद डाली और पूरी तयारी के साथ दोपहर को गाँव की ओर चल पड। उनका गाँव बदवान जिले मे था। कलकत्ता से करीब ढाई सौ मील दूर। पक्की सडक तो तीन घटे म पार कर ली किन्तु कच्ची सडक पर आखिरी तीस मील पार करने म उन्ह डेढ घटा लग गया। वस्तुत वह कोई सडक ही नही था। वह तो एक कच्चा रास्ता था, जिस पर बलगाडिया के चलने स गड्ढे पडे थे। इपाला कार बार बार धचके द रही थी मानो स्तर विहीनता पर विरोध प्रगट कर रही हो।

घचके तो कटी को भी लग रहे थे, किन्तु वह शान्त बैठी थी। पूरे प्रयत्न से। वह महसूस कर रही थी कि वह बहू के रूप मे पहली बार ससुराल जा रही थी। शायद आखिरी बार भी। अत तीन दिन के प्रवास की सभी असुविधाओ को स्वीकार करली जा रही थी।

उसे यह भी पता लग रहा था कि विपन्नता का साम्राज्य वहाँ व्याप्त था। छोटे छोटे बच्चे झोपडो के छपर जीर्ण शीर्ण हो रहे थे। लोगो के वस्त्र भी। बच्चे तो नगे अधनगे थे ही। काली चमडी। पिचका पेट। सूनी सूनी निगाहे। बडी कार देखकर भी न कोई विस्मय न कोई आशा। शायद बडी कार-वालो से पूर्ववत निराश हो चुके थे।

कटी ने चाहा कि उनकी निराशा को दूर कर दे। या फिर बँटा ही ले। पर कैसे? सास ससुर की उपस्थिति में वह विकास से कह भी नहीं सकी। और कहती भी क्या? विकास सुनता भी तो क्या कर पायेगा उसे पता नहीं था।

शाम होते होत गाव आ गया था। पीछे छूटे हुए अनेक गावो की तरह का ही एक गाव। वैसा ही जीर्ण शीर्ण! वसी ही विपन्नता! निराशा भी उससे कम नहीं। क्या सारा बगाल ऐसा ही है, कटी ने सोचा। वह बगाल, जिसे सोनार देश' कहा जाता है क्या यही है? कटी को विश्वास नहीं हो पाया। वह तो बगाल के नाम पर अब तक कलकत्ता से ही परिचित थी। हाँ! कलकत्ता मे भी उसने विपन्नता देखी थी किंतु इस विपन्नता के सम्मुख शायद वह एक सपन्नता ही थी।

कार एक कच्चे से घर के आगे रुक गई थी। विकास के माँ बाप कार से बाहर निकलकर घर के आगे खडे हो गये। कटी और विकास कार मे ही बैठे रहे। पता नहीं क्यों?

कार के आस पास गाँव के छोटे बडे बच्चे खडे थे। कभी कार को देखने, कभी कटी और विकास को देखने। उनकी दृष्टि मे एक नवीनता थी। विस्मय और उत्सुकता से परिपूर्ण दृष्टि। आगन्तुको से जैसे

अपरिचय नहीं था। एक आत्मीयता थी। सम्पूर्ण दूरियों के बावजूद।

विकास के पिता के पास एक वृद्ध आया और उसने एक चाबी निकालकर घर का ताला खोला। कटी ने उधर देखा। उत्सुकता से नहीं बस यूँ ही। और कुछ था भी नहीं करने को।

घर छोटा सा था। बाहर एक कच्चा बरामदा और उसके भीतर दो छोटी कोठरियाँ। ग्वारन मे नही। एक ओर रसोई भी थी पर वह गिर चुकी थी। और बस और कुछ नहीं था। कम से कम कटी को तो और कुछ दिखाई नहीं दिया।

चारों ओर अंधेरा छा रहा था। कटी के भीतर भी। विकास शायद अभ्यस्त था। कम से कम ग्रामीणता के संस्कार तो उसमें थे ही। इसीलिए वह निश्चेष्ट बैठा था। कटी ने उसकी निश्चेष्टता को भंग नहीं किया। और अभी तक किसी को उनका खयाल नहीं आया था। या फिर

मकान में एक दिया जलाया गया था। और लालटेन मंगवाने का प्रयत्न किया जा रहा था। ऐसा प्रयत्न जो व्यर्थता के लिए अभिशप्त था। सारे गाँव में लालटेन थी ही नहीं। फिर प्रयत्न किस बात का?

तब तक गाँव के कुछ और लोग आ गए थे। कुछ जवान बूढ़ी औरतें भी। विकास के मा बाप के कारण नहीं। कटी और विकास के कारण। उनकी इम्पाला कार के कारण। और इसलिए कि दोनों अभी कार से बाहर नहीं आए थे। जरूर कोई ऊँचा मामला होगा, लोगों ने सोचा।

तब कुछ औरतों को साथ लेकर विकास की माँ आई और कहा—बहू! बाहर आओ।

कटी सहज होकर बाहर निकली और साड़ी का पल्लू जूड़ पर टाँग लिया। उसे पता नहीं था कि आगे क्या करना चाहिए। पर उसकी सास ने उसकी दुविधा दूर कर दी। वह उसे बाँह थामकर घर के भीतर ले गई। कुछ गुनगुनाने लगी। और औरतें भी गुनगुना रही थीं।

एक ताल में। शायद मांगलिक गीत की कोई स्वर लिपि थी। कटी ने कनखियों से देखा—विकास मुस्कुरा रहा था। पता नहीं क्यों ?

सास ने पूरी औपचारिकता से बहू को गृह प्रवेश कराया था और या उसके अरमान पूरे हो गये थे। सर्वथा अकस्मात् और पूरा अन पेक्षित रूप से। उसने कटी को कई वृद्धाओं का चरण-स्पर्श करने को कहा और दो-दो चार चार रुपये भी दिलवाये। कटी ने सब कुछ किया पर बिना किसी लगाव के। मैले कुचले, नंगे और बिवाई फटे पाँव भी वंद्य हो सकते हैं, यह अहसास उसे पहली बार हुआ।

फिर उसे भीतर जाकर बैठने को कहा गया। और वह भीतर चली गई। एक बांस की चारपाई थी। मैली कुचली एक दरी उस पर बिछी थी। शायद पड़ोसी ने उदारता दिखाई थी। कटी उस पर बैठ गई। वह देख रही थी कि कोठरी की दीवार खोखली हो चुकी थी और कभी भी गिर सकती थी। पर कहीं आज ही नहीं ? उसे आशंका सी हुई।

थोड़ी देर में एक नवयुवती भीतर आई। मैले और फटे से कपड़े पहने। रिश्ते में विकास की बहन। नाम अर्चना। शादीशुदा। उसने ठेठ बंगला में बात शुरू की तो कटी के लिए मुश्किल हो गई। वह बंगला तो उसने कभी सुनी ही नहीं थी। इसलिए न समझ पाई और न जवाब दे पाई। बस मुस्कुराती रही। अर्चना समझ गई और टूटी फूटी हिन्दी में बोलना शुरू किया। अब कटी के लिए सुविधा हो गई। कम से कम समझने में तो सुविधा थी ही। अब यह जवाब भी दे पा रही थी। वस कुछ अधिक था भी नहीं कहने या सुनने को। बस यौवन सुलभ कुछ जिज्ञासायें थीं जिनका उत्तर दिया जाना आवश्यक नहीं था। कुछ उत्तर तो प्रश्नकर्त्ता को मालूम थे और कुछ के उत्तर मिलने नहीं थे। पर प्रश्न होते रहे। और कुछ समय कट गया। विकास बीच बीच में झांक गया पर भीतर नहीं आया। शायद निषेध का पूर्वाभास था।

फिर प्रचना ने विकास को आवाज दी थी। और विकास से ११) के नोट लिये थे। पूरे अधिकार के साथ। बंटी को आश्चर्य हुआ था विकास को नहीं। उसने रुपये दे दिये थे और प्रचना का हाथ पकड़ कर बाहर निकालने का अभिनय किया था। फिर कोठरी को उढका दिया था। भीतर से बन्द करने को कुंडी नहीं थी। पहले रही होगी पर अब नहीं।

बाहर विकास की माँ और गाँव की कुछ औरतें मंगल गीत गा रही थीं। बंटी ने ये गीत कभी नहीं सुने थे। वह उन्हें समझ भी नहीं पा रही थी। अधिक ध्यान देने पर कुछ रसिकता का अनुभव हो रहा था। फिर उसने विकास से पूछना चाहा था, पर उसने टाल दिया—क्या परेशान होती हो? तुम्हें करना ही क्या है इन गीतों से? दो तीन दिनों का मामला है। बस निपटा ही देंगे किसी तरह।

बंटी को यह टालू बिलकुल अच्छा नहीं लगा। उसे गाँव के प्रति लगाव नहीं तो घृणा भी नहीं थी। हाँ! वह इस वातावरण से अपरिचित थी। पर इसमें अभ्यस्त होना असम्भव नहीं था। एक क्षण को तो उसने सोचा भी—यहीं क्यों नहीं रहा जाये? क्या बुराई है यहाँ रहने में? लोग पिछड़े हैं तो क्या हुआ? क्यों नहीं उन्हें प्रगति के लिए निर्देशित किया जाय?

विकास ने सिर हिलाते हुए कहा था—नहीं बंटी! तुम इन्हें नहीं जानती। इनके संस्कार बड़े दृढ़ हैं। शासन होने पर भी। इनकी रूढ़िवादिता के सामने सुधारवादिता कभी सफल नहीं हो सकती। एक तो कभी के पराजित हो चुके। और दूसरे परिणाम इस भाँति [illegible] नहीं कर पाते।

फिर भी प्रयत्न तो करना ही चाहिये—बंटी ने कहा।

विकास ने विवश मुद्रा में सिर हिलाया और कहने लगा—नहीं! शताब्दियाँ बीत जायेंगी और प्रयत्न व्यर्थ होते रहेंगे। [illegible] अरे! छोड़ो इस चर्चा को। तुम तो यह बताओ—घर पर क्या कहा?

"ठीक तो है। वैसे मैंने अधिक आशा भी नहीं की थी।'

मैं सब समझता हूँ कटी ! तुम केवल सहन कर रही हो। क्योंकि करना ही चाहिए। पर मैं देख रहा हूँ—ये दीवारें गिरने गिरने को हैं। सारा मकान जीर्ण शीर्ण है। इसकी मरम्मत नहीं हो सकती। इसे तो गिराया ही जा सकता है। यदि यहाँ रहना हो तो नया बनाना पड़ेगा। इस सारे गाँव की यही हालत है। यहाँ सुधार या मरम्मत नहीं, पुनर्निर्माण की जरूरत है। पर इतना धैर्य किसमें है? कौन इतना परिश्रम करे? इतना पैसा भी कहाँ से आये कि सारा मकान सारा गाँव नये सिरे से बनाया—बसाया जाय? कटी ! यह असंभव है।'

'वह सब तो ठीक है। पर असंभव कहना उचित नहीं। यह तो पलायन वाली प्रवृत्ति ही है। यह ठीक है कि यहाँ की समस्या कठिन है और अधिक श्रम तथा धन की आवश्यकता है। किन्तु प्रयत्न की सार्थकता तो ऐसी ही समस्याओं का सामना करने में होती है। सफलता और असफलता भी दृष्टि भेद की ही परिचायक हुआ करती है। यह भारत की स्वतंत्रता को ही देखो। क्या इसे प्राप्त करना सहज था? पर इसके लिए प्रयत्न ही न करते तो? राजाओं और उनकी रियासतों को समाप्त करना आसान था क्या? सोचो तो सही विकास ! इन उपलब्धियों की तुलना में इस गाँव की समस्या अति सामान्य प्रतीत होती है। बस जरा धैर्य चाहिए। श्रम और पैसा भी। किंतु आवश्यकता होगी तो आविष्कार करते देर नहीं लगेगी।'

विकास बोला नहीं। कुछ सोचता रहा। कभी कटी की ओर देखता। कभी जीर्ण दीवारों को। फिर कटी के आगे उसका सिर झुकने लगा। बिलकुल झुक गया— तुम ठीक कहती हो कटी ! महत्त्व प्रयत्न का होता है परिणति का नहीं। मैं भूल गया था कि मेरा इस गाँव के प्रति भी कोई दायित्व है। मैंने अभी तक इस गाँव से लिया ही लिया है। कभी कुछ दिया नहीं। अभी तक देने की स्थिति में था ही नहीं।

अब स्थिति म हू तो खतरा रहा हूँ। उफ ! कितना स्वार्थी हू मैं ? और कितना कायर ? कटी ! तुम्हारे बिना मैं कितना अपूर्ण रहता और कितना अज्ञान ग्रस्त ? तुमने मुझे एक नया प्रकाश दिया है। एक नई दृष्टि और एक नवीन शक्ति भी। एक नया उत्साह भीतर से प्रस्फुटित हो रहा है और मैं चाहता हू कि कुछ करू । इस गाव के लिये। यहा के लोगो के लिए। और कहूँ तो अपने लिए। तुम्हारे लिए।'

यह सब कहते समय विकास का सिर कटी के आगे झुका था। कटी ने इसे धीरे धीरे अपने सीने से लगा लिया और फिर सधे स्वरो मे कहने लगी— विकास ! मानव स्वभावत सरल विकल्प का चयन करता है। किंतु आवश्यक नही कि यह चयन उचित भी हो। कठिन चयन से सब कतराते हैं। और व भूल जाते हैं कि औचित्य बहुधा ऐसे चयन का ही होता है। या भी चयन करना ही होता है। पचास प्रतिशत गलती का खतरा उठाकर भी। और गलती होगी ही। पर गलती के डर से कुछ न करना भी तो एक गलती ही है। अत कुछ करना ही उचित है। बिना परिणाम की चिंता किये। उलट परिणति जन्य वेदनाओ को स्वीकार करने के लिए भी तयार रहना होगा। और फिर हम दोनो साथ होगे। शाता की प्राप्ति दोनो का उपभोग्य होगा। फिर तो तुम्हे आपत्ति नही होनी चाहिये।"

मेरी आपत्तियाँ तुम्हारे कदमो म झुककर निरस्त होती रहेगी यह मुझे विश्वास है। और यह जानता हूँ कि तुम अपनी आपत्तियाँ को अपने तक रखना चाहोगी। मुझे मौका ही नहा दोगी कि उन्ह निरस्त कर सकू ।' विकास की वाणी म शिकायत थी दयनीयता नहा।

'असत्य मत बोलो विकास ! मेरे जीवन की सबसे बडी आपत्ति तुम्हारे ही कधा पर तो डाली थी। मैं जानती हू तुम उस भूले नहीं हो। कभी भूल ही नहीं सकते। मैं भी नही भूल सकती। अब वसी आपत्ति न आये तो अच्छा। वर्ना मुझे स्वय ही इसे निरस्त करना

पड़ता। तुम्हारे कँधों पर वैसा भार पुन नहीं डालूँगी " पर यह कहते कहते कटी रुक गई। उसने देखा कि विकास को यह सुनकर पीड़ा हुई है।

कटी !" विकास कह रहा था इतना दुराव मत रखो। उस समय ही नहीं रखा तो अब क्या ? क्या तब और अब के बीच अंतराल बढ़ गया है ?'

"नहीं मेरा यह मतलब नहीं था विकास ! क्षमा याचना के स्वर में कटी ने प्रतिवाद करना चाहा। मैं तो यही कहना चाहती थी कि पुन वैसी आपत्ति में तुम्हें डालने का दुस्साहस नहीं कर सकती। अब तुम्हीं बताओ — क्या तुम्हें उस संकट में डालना मेरे लिए उचित होगा ?'

देखो कटी ! स्वयं को धोखा मत दो। मैं जानता हूँ कि वैसा संकट बार बार नहीं आता। पर यदि आ ही गया तो ? तुम कहती हो—तुम मुझे वैसे संकट में नहीं डालना चाहोगी। ठीक है। मैं किनारे पर खड़ा देखता रहूँगा क्योंकि तुम तो मुझे संकट में पड़ने के लिए कहोगी नहीं और स्वत मैं संकट में पड़ूँगा भी क्या ? बस सुनता रहूँगा तुम्हारा क्रन्दन। देखता रहूँगा दुष्ट भेड़ियों को तुम्हें नोचते हुए। और फिर शायद तालियाँ बजाने लगूँ। क्यों ठीक है न कटी ?

विकास का व्यंग्य कटी को छलनी कर गया। पीड़ा से वह कराह उठी— विकास ! इतने क्रूर मत बनो। तुमने बात को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया ? तुमने तो जैसे प्रमाणित कर दिया कि मैं तुम्हें पराया समझती हूँ। नहीं पराया भी नहीं। पराये से भी लोग सहायता माँग लेते हैं। तो मैं तुम्हें दुश्मन समझती हूँ ? खैर ! गलती मेरी ही थी। मैंने शायद अपनी बात ठीक से सम्प्रेषित नहीं की और तुमने इस कमजोरी का लाभ उठाना अच्छा समझा। विकास ! मुझे समझने की कोशिश करो। मैं सशक्त नहीं हूँ। सुरक्षित भी नहीं। मुझे

तुम्हारा सहारा चाहिये। सदा सवग के लिए। जब आपत्ति आयेगी तब तुम्ह ही पुकारूँगी। और किसी को न ी। अब तो खुश हो ना? कहते हुए क ी गे नहीं पनी यनी बहुत था। पर रो देती ता अच्छा होता। भीतर का गुबार निकल जाता। शायद उसे रोने देख विकास का पौरुष दप तुष्ट हो जाता।

विकास ने अब उत्तर प्रत्युत्तर की न खना समाप्त कर दी। उसने सिर उठाया और फिर कटी को भुजपाश म जकड लिया। कटी के भी आँसू निकल पडे। और विकास का सीना भीगता रहा। गरम आँसुओं से।

'कटी !"

'हाँ विकास !'

'एक बात कहूँ ?'

'कहो। पर वह सब नहीं।" एक आपत्ति तथ्या पर आधारित सी।

' "

'क्या ? चुप क्या हो गय विकास ?' एक उत्सुकता — एक जिज्ञासा।

'तुम्हें एक विश्वास दिलाना चाहता हू।

क्या विश्वास ? मुझे तुम पर असीम विश्वास है। कोई अविश्वास नहीं है।

वह सब नहीं कटी ! विश्वास यह दिलाना चाहता हू कि तुम पर कोई आपत्ति विपत्ति आन ही नहीं दूँगा। इसम तुम्हारी भावना भी बनी रह जायेगी और मेरी भी।'

ठीक है विकास ! कटी न उत्तर दिया था पर वह जानती थी कि यह आश्वासन निरथक है। मानवीय भावनाओं की असीमता स वह परिचित थी। फिर एस आश्वासन लेन या देने की सार्थकता ही कहाँ रह जाती है ? पर वह बोल नहा सकी। यह सब कहना पुन

विवाद खडा कर देना और ।

नेना मौन ही रह थे और सा जान का प्रयत्न कर रह थे। बाहर मगल गीत चालू थे। और भीतर थी एक खिन्नता। अकारण खिन्नता। और दोनो को इसका अहसास था। इस घर म प्रवेश की यह प्रथम रात्रि और सबघो म माधुर्य के स्थान पर यह कटुता!

कटी को अचानक सत्येन्द्र का स्मरण हो आया। वह कटी का कहा अनकहा सब समझ जाता था और विकास! और विकास कहने पर भी नही समझता। अनुभव और विचारणा का वहा ऐकात्म्य था जबकि यहा इसका अभाव है। शायद उसन गलती कर डाली, कटी सोच रही थी। दो विकल्पो मे से एक के चयन की गलती या फिर बाध्यता! उसने स्वीकार किया कि सत्येन्द्र को ठुकराकर उसने कुछ खोया ही है। शायद विकास को अपनाकर भी वह उतना पा नही सकी है।

पर अब क्या हो? सत्येन्द्र का पता नही कहाँ है? और पता लगन पर भी न जान । कोई भरोसा नही। न वतमान का न भविष्य का। और अतीत तो विश्वसनीय था ही नही।

कटी चाहती थी—किसी निश्चय पर पहुच जाय। बिना विकल्प का चयन किय। वर्ना फिर दुविधा मे फस जायगी। इसके लिए आवश्यक थी एक निर्लिप्तता। एक लगाव हीनता। विकास के सीने स चिपटी हुई कटी इसकी खोज म लगी थी। लिप्त होकर भी निर्लिप्तता की तलाश कर रही थी कि जिसस वेदना न रहे। नैराश्य भी नही। बस वह स्वय रहे। बिना किसी वशिष्टय के। बिना किसी अनिश्चय के। बस तभी वह रह पायगी और तभी उसका रहना सार्थक होगा।

विकास को नीद आ गई थी। कटी रात के उन अथहीन क्षणो को सहेजती गई थी और दिय को धीरे धीरे चुकते हुए देखती रही थी। फिर वह दिया भक स बुझ गया था और उसकी बत्ती के किनारे पर की चिनगारी भी बुझ गई थी। धुँआ फेंककर। कटी भी बुझ गई

थी—एक निश्चय का उच्छ्वास फेंककर।

दूसरे दिन प्रात विश्राम के माता पिता प्रीति भोज के प्रबन्ध म जुट गय थ। शाम को रखा था वह भोज और उसमे सारा गाँव आमन्त्रित था। पास क गावो स भी कुछ निकट के रिश्तेदार आय थे। चारो ओर उत्साह था। विश्राम उसम योग दन क लिए बाध्य था। वह दिन म सब गाव वालो क सामने कोठरी म जाकर नही बठ सकता था। शायद चाहता भी नही था। कटो भी नही चाहती थी कि वह भीतर आकर बैठे।

२०

दोनों कलकत्ता आ गये थे। प्रीमियर के एक दिन पहले। पूरी फिल्म-पार्टी वहाँ पहले ही आ पहुची थी और उन दोनों की प्रतीक्षा कर रही थी। ग्रंड होटल में। उन्हें भी डबल रूम बेड मिल गया था।

तब तक विकास को एक धक्का लग लगी थी। उस कटी के व्यवहार म एक कृत्रिमता का आभास हो रहा था। वह मुस्कुराती तो लगता कि रा पत्नी। बोलती तो लगता कि वह बोलने से थक गई है। और बाहों में आकर भी लगता कि वह शताब्दियों की दूरी पर है।

विकास समझ नहीं पा रहा था — ऐसा क्यों है? उस दिन के विवाद को वह महत्त्व नहीं दे पा रहा था। वह समझता था कि उसका निर्णय तो बाद में हो ही गया था वर्ना उस रात कटी । फिर नया क्या कुछ हो गया वह नहीं कह सकता। उसने कटी को एक दो बार टटोलना भी चाहा, पर वह मुस्कुराकर टाल गई। उस मुस्कुराहट को देखते तो विकास आश्वस्त रह सकता था पर वह मुस्कुराहट ओढ़ी हुई सी लगती थी। मानो उसका उत्स कभी था ही नहीं।

दूसरे दिन प्रीमियर के समय वे दोनों सिनेमाघर के पास पहुँचते ही भीड़ से घिर गये। पहले तो परिचित छात्र छात्राओं ने दोनों को पहचान लिया और निकटता जाहिर करनी चाही। फिर जनता ने उन्हें घेर लिया। उधर पुलिस लगी थी इसलिए हीरो हीरोइन के पास पहुँचने का उन्हें अधिकार था। कुछ लोगों ने उन्हें मुकदमे में हाजिर होते देखा था। वे भी उन्हें घेरे हुए थे। कटी और विकास ने उस भीड़

री निकलने का पूरा प्रयत्न किया, किंतु असफल रहे। कुछ दूरी पर पुलिस के सिपाही खड़े थे किंतु किसे प्रेमिका के उद्धार का देखकर व पास न आ सके।

भीड़ और विराम पश्चात् हो उठे। प्रीमियर का समय हो गया था और सामने टीन रु० सिनामाघर के पास पर उनकी प्रतीक्षा हो रही थी। किंतु वहाँ खड़े निर्माता व निर्देशक को अनुमान नहीं हो पाया कि सामने की भीड़ ने किस घेर रखा है।

फिर कुछ ग्रामीण उठ हुई। और उन्होंने अनिल मजूमदार को फोन किया। पाँच मिनट बाद पुलिस स्क्वड की आहट सुनाई दी। इसी गुजर सिनेमाघर के पास खड़े पुलिस वाले मुस्तैद हो उठे। व भीड़ की तरफ बढ़े किन्तु भीड़ के घेरे को तोड़ नहीं सके। घेरे के भीतर क्या हो रहा था उन्हें पता नहीं चला। किंतु नारी-क्रन्दन और चीख सुनाई दे रही थी।

पुलिस स्क्वड के साथ साथ घुड़सवार भी आ पहुँचे थे और उन्होंने भीड़ पर धावा बोल दिया। अब भीड़ को छटना ही पड़ा। पर कुछ साहसी अब भी जमे थे। हीरोइन को नोचने-खसोटने में लगे थे। हीरो एक ओर बेहोश पड़ा था। उसके कपड़े चिथड़े चिथड़े हो गये थे और सिर से खून बह रहा था।

पुलिस ने गोलियाँ चलानी शुरू कर दी तो साहसी लोगों का साहस भी छूट गया। वे गालियों की भाषा समझते थे। एक मात्र भाषा जो कि सुसभ्य सुसंस्कृत और कलाप्रिय जनता को समझ में आती थी। मनुहार निवेदन और धमकियों की भाषा को दो शताब्दी पीछे छोड़ देने वाली कलकत्ता की एक मात्र भाषा।

पुलिस इस भाषा के प्रयोग में दक्ष थी। दो राउंडस में ही लोगों को बिछाकर रख दिया। उन लोगों को जो मात्र मनोरंजन के लिए भीड़ में आ मिले थे। धक्का मुक्की में पता नहीं चल सकता था कि वे कटी का स्पर्श भी कर सके थे या नहीं। किंतु लौटकर गर्वोक्ति तो कर

ही सकते थे—हमने यह किया वो किया । पर उनम से अनेक लौटे नहीं लौट गय थे। गर्वोक्ति का अवसर आते आते रह गया था।

पुलिस ने विरास और क्टी को उठाकर गाड़ी म रक्खा और अस्पताल ले गई। पर भीड म कुचले हुए लोग और मरे हुए लाशो की लाशें वही पडी रही। माना फुटपाथ पर लेटे ता और सड़क पर लेटे तो। किसी को उनकी चिंता नहीं थी। बस भी साठ-सत्तर लाख का महानगर मात्र सौ पचास आवारा लाशा के लिए परेशान हो यह उचित नहीं। आखिर पुलिस नहीं तो म्युनिसिपल कार्पोरेशन तो है। प्रात कार्पोरेशन के ट्रक आयेंगे ही। कूड़ा उठायेंगे तो क्या लाशा को नहीं उठायेंगे?

सच ही महानगर आश्वस्त था। पुलिस भी। कार्पोरेशन भी। *अखबारा को अतिरिक्त बिक्री का आधार मिल गया था और अखबार की इन खबरो स जनता का नाश्ता और अधिक स्वादिष्ट हो सकता था।*

आपत्ति मे पड़ने म रोग गयी । किन्तु दोनों रहे थे
दोना तो निराश कर गई थी।

पर निराश ता नीरा भ दस मारगा थाड ही करी
व पच ी र गा— स पति पत्नी पर मुझे नी याप करन
पुकारा। किंतु अब नायक न भी वह। उसका रूप था।
ही है ।

दा ि न रा नाना यो समताज स छुट्टी मिल गई
होटल म कुछ दिन विश्राम करने के लिए व आये थ। फिल्म
निर्देशक का मन थ। प्रीमियर नही हो पाया था, किंतु फि
गई थी। अनिरिक्त विज्ञापन क बल पर। कहानी क व
उत्कृष्ट अभिनय क बल पर। निर्माता निर्देशक का यही
हीरो हीरोइन अब बाह भाग म जायें। उनकी बला से।

वटी और विलास भा म भा ही गिरे थे। एसा भ
ज्वालायें अवश्य रहकर जलाती रहती हैं और राम नहीं व
तिल तिल जलता और जलत ही रहता दोनो की नियति थ

एक सप्ताह बाद दोनो स्वास्थ्य लाभ कर चुके थे। नार
से। मानसिक दृष्टि स नहीं। होटल म पडे रहने से कोई ल
और जान का कुछ त नही था। त करने को कोई तयार भ
कम से कम विलास तो नही। वह इसकी चर्चा के प्रारभ
भीत था। भीतर की किसी आवाज न उसे चेतावनी दे दी
की चर्चा मत कर बठना।

वटी उसके ऊहापोह को पहचान रही थी। स्वय भी
रही थी कुछ वह डालन को। आखिर कहना तो है ही, उ
वैसे भी एक सप्ताह का विलब हो गया है। प्रीमियर के दू
कहना था वह आज कहा जा सकता है। और सप्ताह
न यह कहना आसान कर दिया है। इस कथ्य का कृ
विकास को हो गया था, वटी के सपूर्ण प्रयत्नो के बावद

कृत्रिमताओं के बावजूद। पर इससे फर्क भी क्या पड़ता है ? समझदारी उसे कहते हैं कि बिना कहे समझ जाय। विकास समझदार है तो समझ गया होगा। वर्ना ।

'विकास !"

हां कटी !"

'कुछ कहना है तुम्हें'

'जानता हूं"

"चलो अच्छा हुआ। मुझे कहना नहीं पड़ा।' कटी को तसल्ल सी हुई।

'नहीं, इतना ही जानता हूं कि तुम कुछ कहना चाहती हो। कई दिनों से। शायद उस रात के बाद से ही।

हां विकास ! उस रात को ही फैसला कर लिया था। किंतु यहां आकर ही बताना था। बीच में हो गया वह सब कुछ। यों एक सप्ताह और मिल गया। पर इसका मिलना मेरे निर्णय को पुष्ट ही करता है।

'क्या निर्णय किया है तुमने ? विकास ने साहस करके पूछ लिया।

निर्णय तुम्हें मालूम है विकास ! मैं जाना चाहती हूं। बिलकुल एकाकी। सारी कटुतायें छोड़ कर। मैंने चाहा था—कुछ यादगारें बटोर लूं। पर लगता है वह मेरा भागधेय नहीं है। मुझे रिक्त ही जाना होगा। जानती हूं यह रिक्तता सदा रहेगी। खाली जगह भरेगी नहीं। बस तुमसे एक ही अनुरोध है कि मेरा जाना आसान कर दो।

विकास ने सुन लिया और चुप रहा। तो उसकी आशंका सच थी। बस उसे पता नहीं चला कि उसका दोष क्या था। पूछना व्यर्थ था। जब जाने का निर्णय कर ही चुकी है तो उसे पूछना कैसा ?

'कहां जाओगी कटी !'

'कहीं भी। कुछ सोचा ही नहीं है इस बारे में।

आखा म थी। पर उसने नमी को पोछा नही। इस नमी से आँखो मे एक जलन हो रही थी। पर यह जलन मन की जलन के सामने नगण्य थी। इसीलिए विकास न इसे पोछा नही। वह जानता था—यह नमी एक सुदीघ अवधि तक रहगी।

वह सोचता रहा और रोते रोते सीढिया पर चढता रहा। और बटारता रहा अवसाद खिनता ग्लानि वेदना ।

श्राखा मे थी। पर उसने नमी को पाछा नहीं। इस नमी से आँखो म एक जलन हो रही थी। पर यह जलन मन की जलन के सामने नगण्य थी। इसीलिए विकास ने इसे पाछा नहीं। वह जानता था—यह नमी एक सुदीर्घ अवधि तक रहेगी।

वह सोचता रहा और रोते रोते सीढ़िया पर चलता रहा। और बटोरता रहा अवसाद खिन्नता ग्लानि वेदना ...।

'सत्येन्द्र के पास ?"

कटी ने उसकी ओर देखा। एक पीडा उभर आई आँखो मे—'मेरा जाना मुश्किल न बनाओ विकास! व्यंग्य सहने की ताकत नही रह गई है। उत्तर तलाशन की क्षमता भी नही है। बस मुझ पर मेहरबानी करो और अतीत का मत कुरेदो।'

कब जाना चाहती हो ?'

आज शाम को। ट्रेन से चली जाऊँगी।"

किस ट्रेन स ?'

स्टेशन पर जाकर सोचूँगी।"

क्या यही स बिदा कर दूँ ?'

बडी मेहरबानी होगी विकास!

विकास चुप हो गया था। अब कुछ कहना शेष नही रहा था। *शाम होने की प्रतीक्षा करनी थी। वह भी हो ही जायेगी,* उसने सोचा।

कटी अटैची मे सामान जमाने लगी थी और विकास देख रहा था। कटी जा रही थी। उसके साथ ही एक सुख भी। वह जानता था—*यह सुख फिर नही मिलेगा। शायद सुख की अपेक्षा भी नहीं* रहेगी।

शाम को टक्सी म सामान रख लिया गया था और विकास न कटी को टक्सी म बठा लिया था। दो पल वह लि ^ सम्कर स्वता रहा। शायद कटी को। शायद जाते हुए सुख क .

टक्सी चल पडी थी और वह खडा रहा था। टक्सी को जाते देख रहा था। एक निकटता दूरी म बदलती जा रही थी। और निकटता नही रही थी। अब वहाँ था। एक दूरी। ऐसी दूरी, जिसको पार करना विकास के वश में नही था।

फिर वह होटल म जान के लिए मुड गया था। एक नमी उसकी

आँखों में थी। पर उसने नमी को पोछा नहीं। इस नमी से आँखों में एक जलन हो रही थी। पर यह जलन मन की जलन के सामने नगण्य थी। इसीलिए विकास ने इसे पोछा नहीं। वह जानता था—यह नमी एक सुदीर्घ अवधि तक रहेगी।

वह सोचता रहा और रोते रोते सीढ़ियों पर चढ़ता रहा। और बटोरता रहा अवसाद खिन्नता ग्लानि वेदना ।